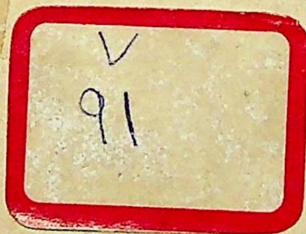

V
91

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या .... आगत संख्या...........

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

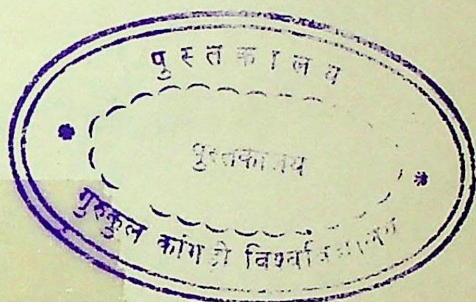
[illegible] जी को
सप्रेम भेंट
[illegible]
30-1-69.

संक्रान्तिकाल



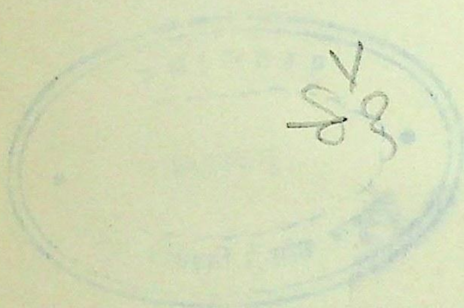
संक्रान्तिकाल

उपन्यासकार
यज्ञदत्त शर्मा





१९६८
साहित्य प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली ।



मूल्य : बारह रुपया

प्रकाशक : साहित्य-प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली।

मुद्रक : रामाकृष्णा प्रेस
कटरानील, दिल्ली।

समर्पण

संक्रान्तिकाल के राष्ट्रनायक
टीपूसुलतान
को
सादर समर्पित

पात्र-परिचय

लॉर्ड क्लाइव, वेरेल्स्ट, कारटियर, वारेनहेस्टिंग्स, सर जॉनशोर, मैक्फ़रसन, लॉर्ड कॉर्नवालिस, मार्क्विस वेल्सली (१७६५ से १८०० तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी के गवर्नरजनरल।)

कर्नल कीटिंग, कर्नल अप्टन, करनल लेसर्ली, करनल गॉडार्ड, जरनल इजर्टन, जनरल मनरो, करनल वेली, सर आयरकूट, जनरल हैरिस, जनरल स्टुआर्ट, जनरल मीडरोज़ (कम्पनी के सेनापति।)

मॉस्टिन, मैलेट, करनल पामर (कम्पनी के राजदूत।)

स्पेन्सर (बंगाल-कौंसिल का मेम्बर)

विलियमजोन्स (कम्पनी का भारतीय भाषाओं का विशेषज्ञ।)

क्लिक (गवर्नरजनरल का सैक्रेट्री)

जोन्सटन (कम्पनी का बैरिस्टर)

रॉबर्ट चेम्बर्स (सुप्रीम कोर्ट का जज)

एलिजाह इम्पे (चीफ़ जस्टिस)

स्तीफ़ेन (नाचघर का मालिक)

फ़िलिप (नाचघर का सीन-पेण्टर)

डेंनियल (वेलसली का सलाहकार)

मिसेज़ स्पेन्सर (स्पेन्सर की पत्नी)

शाहआलम (मुग़ल बादशाह)

शुजाउद्दौला, आसफ़उद्दौला (अवध के नवाब)

अवध की बेग़में (शुजाउद्दौला की बेग़म और माँ)

महाराजा चेतसिंह (बनारस का राजा)

नवाब नज़मुद्दौला (बंगाल का अंतिम नवाब)

मोहम्मदरज़ाखाँ, महाराजा नन्दकुमार (बंगाल के दीवान)

बेग़म नज़मा (मोहम्मदरज़ाखाँ की बेग़म)

बद्री पंडित, इस्माइल (मोहम्मदरज़ाखाँ के सेवक)

आनन्दकुमार (महाराजा नन्दकुमार का छोटा भाई)

महारानीजी (महाराजा नन्दकुमार की पत्नी)

पेशवा माधोराव, पेशवा नारायणराव, पेशवा माधोराव नारायण, पेशवा बाजीराव (पूना के पेशवा); महारानी अहिल्याबाई होलकर, (होलकर राज्य की महारानी) तुकाजी होलकर, काशीराव होलकर, माधोजी सिंधिया, दौलतराव सिंधिया, दमनजी गायकवाड़, फ़तहसिंह गायकबाड़, मूदाजी भोंसले, (मराठा-सरदार)

राघोबा	(पेशवा बाजीराव के पिता)
नाना फड़नवीस	(पेशवा के मंत्री)
सखाराम बापू	,,
हरिपन्तफड़के	(मराठा सेनापति)
परशुराम भावे	,,
दी बौयन	(सिंधिया का सेनापति)
हैदरअली, टीपू	(मैसूर के सुलतान)
कृष्णराव, मीरसादिक	(मैसूर के मंत्री)
मीर मुईउद्दीन,	(मैसूर के सेनापति)
पूर्निया,	,,
कमरुद्दीन,	,,
सय्यद ग़फ्फ़ार	,,

मोमिन (मैसूर का राजदूत)

मोहम्मदअली (अरकाट का नवाब)

लिबिदेव (रूसी यात्री)

क्रूसेन्सटर्न (रूसी नेवीगेटर)

भूमिका

प्रस्तुत उपन्यास की रचना सन १७६५ से १८०० के मध्य क्लाइव, वेरेल्स्ट, कारटियर, हेस्टिंग्स, सरजान शोर, मैक्फ़रसन, कॉर्नवालिस और वेलसली के उन छल, कपट, लूट और विश्वासघातपूर्ण षडयंत्रों की पृष्ठभूमि पर हुई है जिनके कारण भारतीय राष्ट्र को दो सौ वर्ष की दासता, यंत्रणा, अपमान और आत्मग्लानि के बीच से गुज़रना पड़ा।

मुगल-साम्राज्य का वैभव, संगठन और शक्ति नष्ट होचुकी थी। बंगाल, अवध और हैदराबाद केन्द्र से प्रथक होगये थे। महाराष्ट्र, गुजरात, बरार और मध्यभारत में पेशवा, भोंसले, गायकवाड़ और सिंधिया के मराठा-राज्य थे। मैसूर सुलतान हैदरअली के आधीन था। भरतपुर और उसके निकटर्ती क्षेत्र पर जाटों ने प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। राजपूताने के राजे मुग़ल-बादशाह से सम्बन्ध विच्छेद कर चुके थे। पंजाब में सिख-शक्ति प्रबल थी। ऐसी स्थिति में मुग़ल बादशाह केवल नाममात्र का ही सम्राट रहगया था।

भारत की यह दशा देखकर अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण

किया। पानीपत के मैदान में मराठों ने उससे टक्कर ली परन्तु विजय प्राप्त न कर सके, क्यों कि मुग़ल-बादशाह और अवध का नवाब अहमदशाह से मिल गये और भरतपुर के राजा ने युद्ध में भाग नहीं लिया। युद्ध में अहमदशाह की भी बहुत क्षति हुई। वह भारत में न ठहर सका। क़ाबुल लौटते समय उसने शाहआलम को दिल्ली का बादशाह बना दिया। अंग्रेज़ों ने मुग़ल बादशाह की इस दुर्बलता से लाभ उठाकर मीरजाफ़र और मीरक़ासिम की अदलाबदली की और शाहआलम से बंगाल के दीवानी अधिकार लेकर नज़मुद्दौला को मरवा डाला। इस तरह बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा पर अंग्रेज़ों का अमली अधिकार हो गया। महकमा माल उनके हाथ में आगया।

बंगाल को हस्तगत कर अंग्रेज़ों ने खुली डकैतियाँ डालनी आरम्भ करदीं। क्लाइव के पश्चात वारेनहेस्टिंग्स ने निर्लज्जतापूर्ण विश्वासघात, घूसखोरी, दग़ाबाज़ी, खुली लूट और षडयंत्रों को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। क्लाइव ने शाहआलम से जो संधि की थी, उसपर उसने ख़ाक़ डालदी और उसे रुपया भेजना बन्द कर दिया। पटना के दीवान महाराजा शिताबराय, मुर्शिदाबाद के दीवान मोहम्मदरज़ाखाँ और उड़ीसा के दीवान जसारतखाँ पर ग़बन के अभियोग लगाकर उन्हें क़ैद में डाल दिया और फिर कई-कई लाख रुपया रिश्वत का लेकर उन्हें मुक्त कर दिया। निरपराध रुहेलों का संहार कर उन्हें लूटा और उनको उनके घरों से खदेड़ दिया।[1] लॉर्ड मैकाले लिखता है कि बेईमानी या ईमानदारी, जैसे भी

---

1. "Every man who had the name of Rohella was either put to death or forced to seak safty in exile" Torrents, Empire in Asia. page 110.

हो, हेस्टिंग्स का उद्देश्य रुपया लूटना था।[1] हेस्टिंग्स के इन अमानुषिक कृत्यों के लिये कम्पनी के डाइरेक्टरों ने उसे पुरस्कृत करके मद्रास, बम्बई और कलकत्ता, तीनों जगह का गवर्नर बना दिया। महाराजा नन्दकुमार ने उसके बंगाल के रईसों और नवाबों को लूटने की एक सूची कलकत्ता कौंसिल के समक्ष सप्रमाण प्रस्तुत की और कौंसिल के सदस्यों ने उसे स्वीकार किया[2] परन्तु हेस्टिंग्स ने कौंसिल के निर्णय को अवैध घोषित कर महाराजा नन्दकुमार पर जालसाज़ी का झूठा अभियोग लगाकर चीफ़जस्टिस इम्पे से उन्हें फाँसी पर लटकवा दिया। हेस्टिंग्स की अमानुषिक निरंकुशता बंधन-मुक्त होगई। उसने महाराजा चेतसिंह के बनारस और रामनगर के क़िलों को अकारण लूटा, अवध की बेग़मों पर चेतसिंह के साथ साज़िश करने का झूठा अभियोग लगाकर चीफ़जस्टिस इम्पे से उन्हें दोषी सिद्ध कराया और उनका सब सम्पत्ति लूट ली। गोरखपुर में उसने इतनी भयंकर लूट की कि इलाक़ा-का-इलाक़ा वीरान होगया।

यह सब करने के पश्चात हेस्टिंग्स ने दक्षिण-भारत पर दृष्टि डाली। उसने देखा दक्षिण में सर्वाधिक शक्तिशाली मराठा-मण्डल था। इस लिये उसने पहला हाथ उसी पर डाला। अंग्रेज़ों के दूत मॉस्टिन ने राघोबा को फोड़कर माधोराव और नारायणराव की हत्यायें कराईं और राघोबा को पेशवा बनाने का प्रयास किया परन्तु नानाफड़नवीस ने उसके प्रयत्नों को विफल कर दिया। इस कूटनीति में विफल होकर हेस्टिंग्स ने एक ओर गायकवाड़, भोंसले और सिंधिया से गुप्त संधियाँ करके उन्हें देशद्रोही बनाया और दूसरी ओर गॉडार्ड को पूना पर

---

1. The object of mr. Hasting's diplomacy was at this time simply to get money······by fair means or foul". Critical Historical Essays by Lord Macaulay. vol. III Pege 244.

2. Minute of counicl, 16th April, 1775

आक्रमण करने के लिये भेजा। नानाफड़नवीस ने उसकी यह चाल भी विफल करदी। मराठों से कई युद्धों में परास्त होकर इन्होंने उनके पास संधि का प्रस्ताव भेजा, जो हैदरअली की मृत्यु के पश्चात सालबाई की संधि के रूप में फलीभूत हुआ।

अंग्रेज़ों की ये चालें देखकर नानाफड़नवीस ने सुलतान हैदरअली और निज़ाम हैदराबाद से संधि की। तीनों ने यह निश्चय किया कि वे अपने-अपने निकटवर्ती प्रदेशों से अंग्रेज़ों को खदेड़कर उन्हें दक्षिण-भारत से निकालकर बाहर कर देंगे। इस संधि के अनुसार हैदर-अली ने अरकाट पर अधिकार कर लिया और समुद्र-तट की अंग्रेज़ मंडियों और क़िलों पर अधिकार करना आरम्भ कर दिया। हैदरअली की मार से अंग्रेज़ थर्रा उठे, परन्तु भारत के दुर्भाग्य और अंग्रेज़ों के सौभाग्यवश उसी समय अचानक हैदरअली मृत्यु होगई।

हैदरअली की मृत्यु होते ही नानाफड़नवीस ने अंग्रेज़ों से सालबाई नामक स्थान पर संधिकरली परन्तु टीपू सुलतान अंग्रेज़ों को उसी तरह पराजित करता रहा। अंग्रेज़ों ने घबराकर टीपू सुलतान से भी संधि की प्रार्थना की और टीपू सुलतान ने भी उसे स्वीकार कर लिया।

अंग्रेज़ों ने मराठों और टीपू सुलतान से युद्ध और कूट-नीति दोनों में परास्त होकर संधियाँ तो कीं परन्तु उनका दिल साफ़ नहीं था। वे बराबर तोड़-फोड़ की कार्यवाहियाँ करते रहे। ये संधियाँ केवल समय निकालने के बहाने मात्र थीं। कार्नवालिस ने दक्षिण-भारत की इन शक्तियों को एक-एक करके नष्ट करने का षडयंत्र रचा और मराठों तथा निज़ाम हैदराबाद से टीपू के विरुद्ध संधि कर, अकारण उसपर आक्रमण कर दिया। टीपू सुलतान को बंगलौर में पराजित होकर श्रीरंगपट्टन लौटना पड़ा। अंग्रेज़ टीपू को समाप्त कर देना चाहते थे परन्तु मराठे इसके लिये उद्यत न हुए। परिणामस्वरूप श्रीरंगपट्टन की संधि हुई, जो टीपू सुलतान के लिये निहायत अपमानजनक थी।

टीपू पर लगभग चार करोड़ रुपये का तावन लादा गया और उसका आधा राज निज़ाम, अंग्रेज़ और मराठों ने आपस में बाँट लिया।

टीपू सुलतान के विरुद्ध मराठों ने अंग्रेज़ों से गठबन्धन कर टीपू को अशक्त करके अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारली। कहा नहीं जा सकता नानाफड़नवीस ने किस दबाव में आकर अपनी नीति के विरुद्ध यह कार्य किया जो निकट भविष्य में ही उनके अपमान और मराठा-शक्ति के विनाश का कारण बना। अंग्रेजों ने मराठा-मण्डल में अपने षडयंत्रों का जाल पूर दिया और सिंधिया तथा माधोराव नारायण पेशवा को मरवाकर राघोबा के पुत्र बाजीराव को पेशवा बनवा दिया। बाजीराव ने नानाफड़नवीस को जेल में डाल दिया। उस समय दौलतराव सिंधिया ने समझदारी से काम लिया। वह अपनी सेना लेकर पूना पहुँचा और नाना साहब को मुक्त कराकर फिर पेशवा का प्रधानमंत्री बनवाया। दौलतराव ने टीपू सुलतान से भी मराठा-सम्बन्ध सुधारने का प्रयत्न किया परन्तु अंग्रेज़ों ने उसके राज्य की उत्तर-सीमा पर कम्पनी की सेना खड़ी करके उसे पूना छोड़ने पर मजबूर कर दिया, जिससे टीपू पर आक्रमण के समय वह टीपू की सहायता न कर सके। अंग्रेज़ों ने हैदराबाद और करनाटक की सेनाओं की सहायता से टीपू सुलतान पर फिर आक्रमण किया और मराठे चुप बैठै रहे। परिणाम स्वरूप टीपू सुलतान की पराजय हुई और वह वीरगति को प्राप्त हुआ। इसके कुछ ही दिन पश्चात अंग्रेज़ों ने मराठा-राज्यों को भी समाप्त कर दिया।

भारत के इस संक्रान्ति-काल में गरेसिम स्तीपेनोविच लिबिदेव नामक रूसी यात्री भारत आया। यह सन् १७८५ में मद्रास पहुँचा और दो वर्ष तक कैप्टेन विलियम सिडेनहेम के निजी गायक के रूप में कार्य करता रहा। लिबिदेव वायलन बजाने में प्रवीण था। भारत में आकर उसकी इच्छा संस्कृत और अन्य भारतीय भाषायें सीखने की हुई, परन्तु

मद्रास में उसे कोई ऐसा व्यक्ति न मिला जो अंग्रेज़ी के माध्यम से उसे संस्कृत सिखा पाता।

दो वर्ष पश्चात लिबिदेव कलकत्ता चला गया। वहाँ उसे मद्रास की अपेक्षा अपनी कला के अधिक प्रशंसक मिले। वे भारतीय तथा अंग्रेज़, दोनों ही थे। लिबिदेव ने भारतीय वाद्य साजों का भी अभ्यास किया और अपने आरचेस्ट्रा में उनका प्रयोग किया। भारतीय और यूरोपीय साजों से युक्त होकर लिबिदेव का आरचेस्ट्रा कलकत्ते के कला-प्रेमियों के लिये एक विशेष आकर्षण को चीज़ बन गया।

लिबिदेव ने कलकत्ता आकर ऐसे व्यक्ति की खोज की जो उसे संस्कृत या बंगला सिखा सके। उसके घरेलू नौकर ने उसका पंडित गोकलनाथ से परिचय कराया। पंडित गोकलनाथ ने लिबिदेव को संस्कृत-वर्णों और व्याकरण का ज्ञान कराया। लिबिदेव ने धीरे-धीरे संस्कृत और बंगला सीख कर उनके साहित्य के माध्यम से भारतीय धर्म और दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया। उसने भारत के प्राचीन और आधुनिक इतिहास का भी अध्ययन किया।

बंगला भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लिबिदेव ने एक अंग्रेज़ी नाटक का बंगला में अनुवाद किया। पंडित गोलकनाथ ने उसे मंच पर प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी। नाटक की भाषा में गोलकनाथ तथा कुछ अन्य विद्वानों ने सुधार किया।

लिबिदेव ने बंगाली नाटक मंच पर प्रस्तुत करने के लिये एक अंग्रेज़ी नाचघर का हॉल लेने का प्रयास किया परन्तु वह उसे प्राप्त न हो सका। तब उसने अपनी पूँजी लगा कर थियेटर-हॉल बनाया और उसमें यह नाटक खेला। नाटक बहुत सफल रहा। उससे भारतीय भाषा और कला का प्रसार हुआ। भाषा के प्रचार की दृष्टि से नाटक खेलने का यह नवीन और प्रशंसनीय प्रयास था। भारतवासियों द्वारा लिबिदेव के इस कार्य की जितनी भी प्रशंसा की जाये, कम है।

लिबिदेव के नाटक की सफलता ने उसे कम्पनी के भाषा-विशेषज्ञ विलियम जोन्स का शत्रु बना दिया। लिबिदेव के भारतीय भाषा में नाटक प्रस्तुत करने से उसकी भारतवासियों के प्रति सद्भावना ही नहीं झलकती थी, वरन् महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसने भारतीय भाषा का यह सफल प्रयोग कर विलियम जोन्स के एकाधिकार को जो ठेस पहुँचाई उसे विलियम जोन्स सहन न कर सका। वह अपने आपको ही भारतीय भाषाओं का एक मात्र आचार्य कहता और समझता था, जब कि उसने अपनी योग्यता के जो प्रमाण प्रस्तुत किये थे वे सब कम्पनी के भारतीय मुन्शियों द्वारा लिखे हुए थे। विलियम जोन्स की द्वेशपूर्ण भावना को समझने में लिबिदेव असमर्थ रहा। वह छल-छिद्र रहित कलाकार और भारतीय भाषा तथा संस्कृति का सरल जिज्ञासु था। न वह राजनीतिज्ञ था, न चालबाज़ अफ़सर और न ही चतुर व्यापारी।

विलियमजोन्स ने लिबिदेव को बरबाद करने का एक षड़यंत्र रचा। उसने एक अंग्रेजी नाचघर के सीन-पेण्टर को अपने षड़यन्त्र में मिलाकर लिबिदेव के पास भेजा, जिसने लिबिदेव से कहा कि उसे उसके मालिक ने काम से हटा दिया है। लिबिदेव ने सहानुभूतिपूर्वक उसे अपने थियेटर में रख लिया। उस सीन-पेण्टर ने लिबिदेव के थियेटर में नये कलाकार रखने आरम्भ कर दिये और उन्हें अपने पास से अग्रिम रुपया दे दिया। इस प्रकार उसने लिबिदेव को ऋण से लाद दिया।

लिबिदेव भयंकर आपत्ति में फँस गया। एक दिन उस सीन-पेण्टर ने लिबिदेव के थियेटर में, उस समय आग लगवादी जब लिबिदेव वहाँ नहीं था और स्वयँ वहाँ से भाग गया। उसके साथ उसके साथी कलाकार भी भाग गये। किसी प्रकार लिबिदेव के जो कुछ भारतीय कलाकार और कार्यकर्त्ता थे, उन्होंने आग बुझाकर थियेटर-हॉल को बचाया, परन्तु उसके अन्दर का सब सामान जलकर राख होगया।

विलियमजोन्स को इतने मात्र से ही सन्तोष न हुआ। उसने लिबिदेव पर सीन-पेण्टर से और अन्य बहुत से लोगों से झूठे दावे करा दिये। यह सब लिबिदेव को बरबाद करने के लिये किया गया था। लिबिदेव ने अदालत की शरण ली तो सब दावों के फैसले उसके विरुद्ध हुए, क्योंकि जोन्स की न्यायाधीशों के पास भी पहुँच थी। मुख्य न्यायाधीश सर राबर्ट चेम्बर्स विलियमजोन्स का मित्र था और उसी के इशारे पर फ़ैसले देता था।

लिबिदेव के सामने भयंकर स्थिति पैदा होगई। उसके सब अंग्रेज मित्रों ने उसका साथ देने से इन्कार कर दिया। उसी समय यूरोप में यह अफ़वाह फैली कि रूस फ्रांसीसियों के साथ मिलकर अंग्रेजों को भारत से भगाना चाहता है। तभी टीपू सुलतान की फ्रांसीसियों से साँठ-गाँठ के समाचार भी कलकत्ता पहुंचे। लिबिदेव को रूसी होने के नाते रूसी जासूस समझा जाने का भय होगया। इस स्थिति में वह किसी भी भयंकर आपत्ति में फँस सकता था।

इस स्थिति में लिबिदेव का कलकत्ते में रहना कठिन हो गया। वहाँ उसे किसी भी समय अंग्रेज रूसी गुप्तचर समझकर बन्दी बना सकते थे। लिबिदेव इस भयंकर स्थिति का अनुमान लगाकर कलकत्त से शाहआलम के दरबार में दिल्ली चला आया। शाहआलम संगीत और कला का प्रेमी था। उसने लिबिदेव को अपने संगीतज्ञों में स्थान दिया। लिबिदेव के जीवन पर प्रकाश डालने वाले जो विवरण मिलते हैं, उनमें उसे मुग़ल-थियेटर का मैनेजर और संगीत-निर्देशक कहा गया है। इस विषय में सम्भव है लिबिदेव ने लन्दन जाकर वोरोंन्स्टोव को सूचित भी किया हो। एडीलंग (Adelung) ने लिखा है कि वह कई वर्षों तक मुग़ल-दरबार में ड्रामा-डाइरेक्टर रहा।[1] लिबिदेव ने अपनी किसी पुस्तक में इस बात का उल्लेख नहीं किया

१, He was for several years theatrical Director of the Great Mughal

और न ही रूसी विदेश-मंत्रालय के किसी विवरण में इसका उल्लेख है। सम्भव है राजनीतिक कारणों से ऐसा न किया गया हो, परन्तु बकलैंड ने उसे मुगल-दरबार का थियेटर-मैनेजर कहा है।[1]

एडीलंग को यह सूचना क्रूसेन्सटर्न से प्राप्त हुई, जो लिबिदेव के भारतीय जीवन से पूर्ण परिचित था। जिस समय लिबिदेव शाहआलम के दरबार में गया, उस समय शाहआलम मराठों के प्रभाव में था। इस लिये लिबिदेव निश्चय ही कलकत्ते के संकट से अपने आप को बचाकर अपने भारतीय मित्रों की सहायता से शाहआलम के दरबार में चला गया होगा।

जिस समय लिबिदेव भारत से लन्दन पहुँचा उस समय भी अंग्रेजों और रूसियों के सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। यह स्थिति अप्रैल सन् १८०१ तक रही। उस समय लिबिदेव ने अपने पैसे से अपने हिन्दुस्तानी व्याकरण का प्रकाशन किया। इसके कुछ ही समय पश्चात् लिबिदेव को लन्दन से रूस भेज दिया गया और विदेशी दूतावास में अनुवादक के पद पर नियुक्त किया गया, जहाँ वह अपने जीवन के अन्तिम काल तक कार्य करता रहा।

लिबिदेव पेंतीस से पेंतालीस वर्ष की आयु तक भारत में रहा। उसने भारतीय भाषाओं के साथ-साथ दर्शन, गणित और ज्योतिष का भी अध्ययन किया। यह कार्य उसने पूर्ण सहानुभूति के साथ किया। उस समय भारतीय विद्वानों से यह ज्ञान प्राप्त करना सरल कार्य नहीं था, क्योंकि वे यूरोपियनों को अविश्वासपूर्ण, निर्दय और अत्याचारी समझते थे। लिबिदेव ने अपने सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से इन विद्वानों का विश्वास प्राप्त किया था। लिबिदेव ने उन विद्वानों में, जिन्होंने उसे उसके कार्य में सहयोग प्रदान किया गोलकनाथ दास, जगनमोहन वैद्य, पंचानन्द भट्टाचार्य, जगन्नाथ ठाकुर इत्यादि का उल्लेख किया है।

---

1. Theatrical Manager of the Great Mughal.

लिबिदेव ने कहीं इस बात का उल्लेख नहीं किया कि उसे अपने इस अध्ययन-कार्य के लिये कोई पैसा खर्च करना पड़ा। इससे स्पष्ट है कि शिक्षण-कार्य उस समय भी भारत में बिना शुल्क किया जाता था। लिबिदेव ने लिखा भी है कि ब्राह्मण लोग विद्या को बेचते नहीं थे। इसके ठीक विपरीत विलियमजोन्स का, जो भारतीय भाषाओं का प्रथम विशेषज्ञ कहलाता है, भाषा-अध्ययन पिस्तौल हाथ में लेकर होता था और तलवार उसकी बगल में लटकी रहती थी। वह बल-पूर्वक लोगों से ज्ञान प्राप्त करता था। उसने जो पांडुलिपियाँ एकत्रित कीं, वे सब धोखे से या भय दिखाकर प्राप्त कीं। लिबिदेव ने सुविधा प्राप्त होने पर भी रूसी पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने के लिये भारतीय पांडुलिपियाँ हस्तगत करने का प्रयास नहीं किया। लिबिदेव ने भारतीय सभ्यता का विवरण अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावाद के आधार पर प्रस्तुत किया है। अपनी पुस्तक ज़ार (Czar) को समर्पित करते हुए लिबिदेव ने प्रार्थना की है कि भारतीय सभ्यता के अध्ययन को बढ़ावा दिया जाय।

लिबिदेव ने भारत में व्यतीत किये दस वर्षों में भारत-रूस मैत्री के उस सांस्कृतिक भवन का निर्माण किया, जिसका निकितिन अफ़नासी ने पन्द्रहवीं शताब्दी में शिलान्यास किया था। गरेसिम स्तीपेनोविच लिबिदेव (Gerasim Stepanvich Lebedev) प्रस्तुत उपन्यास का एक प्रमुख पात्र है, जिसने सर्व-प्रथम संस्कृत और भारतीय जन-भाषाओं का अध्ययन ही नहीं किया, उनके प्रचार और प्रसार में भी योग दिया। उसने अठारहवीं शताब्दी के उत्तरकालीन भारतीय जीवन पर प्रकाश डाला और भारतीय संस्कृति तथा शिक्षा के प्रति सद्भावना व्यक्त की। लिबिदेव हमारी श्रद्धा का पात्र है, क्योंकि उसने हमारी संस्कृति के प्रति प्रेम और सद्भावना व्यक्त की।

भारत-रूस मैत्री के जिस महत्वपूर्ण कार्य को भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात् पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सम्पन्न किया, उसकी शृंखला बहुत प्राचीन है। यह शृंखला यूरोपियन देशों में सबसे प्राचीन है। भारत-रूस मैत्री सम्बन्धों का आधार अन्य यूरोपियन देशों के समान भारत में अपने उपनिवेष स्थापित करना अथवा भारत को अपने साम्राज्य का अंग बनाना नहीं रहा। अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में जब अंग्रेज़, फ्रांसीसी और डच अपने विशाल साम्राज्य स्थापित करने के लियें विश्व के विभिन्न देशों में संघर्ष-रत थे, तो यूरोप में इस भ्रान्ति ने जन्म लिया कि रूस एक विशाल सेना भेज कर अंग्रेज़ों को भारत से उखाड़ फेंकना चाहता है परन्तु यह भ्रान्ति भ्रान्ति मात्र सिद्ध हुई, क्योंकि इसमें कोई वास्तविक तथ्य नहीं था।

भारत और रूस के पारस्परिक मैत्री-सम्बन्धों की शृंखला को लड़ीबद्ध करने वाले लिबिदेव जैसे व्यक्तियों के ही प्रयास हैं जिन्हें कुछ स्वतन्त्र प्रकृति के रूसी और भारतीय व्यापारियों तथा अन्य यात्रियों ने सम्पन्न किया। इन यात्रियों की यात्राओं का कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं था। इन्होंने भारत की जनता से सम्पर्क स्थापित किया और जो कुछ देखा-सुना, उसका विवरण प्रस्तुत किया। इन विवरणों की शृंखला ने पारस्परिक सम्बन्धों को लड़ी-बद्ध कर दो देशों की सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे के निकट लाने में योग दिया। ये विवरण गिनती में असंख्य नहीं हैं, बहुत कम हैं, परन्तु जितने हैं, वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनका महत्व इसलिये और भी अधिक है क्योंकि इनमें दो महान् देशों की सभ्यता और संस्कृति के प्रति सम्मान और सद्भावना का संदेश मिलता है। इनमें एक-दूसरे देश की जनता के प्रति सद्भावना व्यक्त की गई है और कहीं भी अविश्वास और द्वेष की भावना नहीं मिलती।

इस विषय पर प्रकाश डालने वाली प्रथम पुस्तक जो रूस में उप-

लब्ध हुई वह 'स्काज़िनिये आव इन्दिय बोगेनोय' (Skazaniye of Indiy Bogatoy-The Relation adout India or the Indian Rich) है। इस पुस्तक के नाम से जैसा स्पष्ट है उस समय रूसी जनता की धारणा भारत के विषय में यह थी कि भारत एक बहुत सम्पन्न देश है। केवल रूस में ही नहीं, विश्व के अन्य देशों में भी उस समय भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। इस धारणा के आधार 'मेगेस्थनीज़' और 'फ़ाहियान इत्यादि यात्रियों के वे विवरण हैं जो उन्होंने भारत की यात्रा करने के पश्चात् प्रस्तुत किये। ये विवरण चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य और हर्षकालीन हैं। उस समय भारत वास्तव में धन-धान्यपूर्ण था। उसी काल में भारतीय साहित्य और संस्कृति का चरम विकास हुआ। निकितिन अफ़नासी ने भी इन्दीकोप्लोव द्वारा लिखित कास्मोग्राफ़ी में भारत का चन्द्रगुप्त-कालीन चित्र ही देखा था, जिसने उसे भारत आने की प्रेरणा दी।

निकितिन अफ़नापी प्रथम रूसी यात्री था जिसने भारत से रूस लौट कर अपनी यात्रा का प्रामाणिक विवरण रूस में प्रस्तुत किया। अफ़नासी से पूर्व भी रूसी यात्री किसी-न-किसी रूप में दूर देशों की यात्रा करते रहे हैं। नवीं-दसवीं शताब्दी के पश्चात् रूसी दासों के व्यापारी दरबन्द, त्रीबीजोंड और तेब्रिज़ में विभिन्न जातियों के दासों का व्यापार करते थे। ये दास ईरान, भारत, सीरिया, ईजिप्ट और स्पेन तक भेजे जाते थे। इन दासों में घरेलू दासों के अतिरिक्त कारीगर लोग भी होते थे, जिन्हें आक्रमणकारी राजे अपने साथ ले जाते थे। तैमूर अपनी नई राजधानी समरक़न्द को बसाने के लिये रूस और भारत से बहुत से कारीगरों को अपने साथ ले गया था। सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में तातार लगभग दो लाख रूसियों को उठा कर ले गये। जेनकिन्सन (Jenkinson) बतलाता है कि बुखारा (Bukhara) आने वाले भारतीय व्यापारी दास, घोडे, रूसी खालें और पर्शिया का

रेशम लाते थे। मुग़लों के शासन-काल में भी बग़दाद और बुख़ारा से भारत में दास लाये जाते थे। 'तारीख़-ई-फ़ख़रुद्दीन मुबारकशाह' (Tarikh-e-Fakhruddin Mubarkshah) में दरियाये रूस बोलगा (Volga) का ज़िक्र है। रूसी दासों का ज़िक्र अमीर खुशरो ने भी किया है। सत्रहवीं शताब्दी में अकबर के दरबार में जानेवाले यूरोपवासियों ने वहाँ रूसी दास देखे थे।

इब्न फ़धलान (Ibn Fadhlan) लिखता है कि जब उसने वोलगा (Volga) के बन्दरगाहों की यात्रा की तो उसने वहाँ भारतीय तथा रूसी यात्रियों को देखा। सातवीं शताब्दी से पंद्रवीं शताब्दी के बीच इतिल (Itil Capital of Khxaria) में दासों के व्यापारी आकर मिलते थे। नवीं शताब्दी में रूसी व्यापारियों का मुख्य केन्द्र बुलगार (Bulagr) बना। दसवीं शताब्दी के अन्त में रूसी फ़र, मोम, शहद, खालें इत्यादि अन्य चीज़ें भी विदेश भेजी जाने लगीं। उस समय कीएव (Keiv) में भारतीय रेशमी कपड़े, जवाहिरात, शीशे की चीज़ें, इत्र, शराब, सोना, चाँदी, जड़ी-बुटियाँ तथा अन्य चीज़ें आने लगीं। हुदूद अलआलम (Hndud-al-Alam) में रूसी तलवारों का उल्लेख मिलता है। चौदवीं शताब्दी के अन्त तक रूसी ऊँटों के काफ़िले तेब्रिज से बग़दाद (Tabriz to Baghdad) तक जाने लगे थे। इस समय रूस से भारत के लिये घोड़े बहुत बड़ी संख्या में भेजे जाते थे और बदले में भारत से बहुत सी चीज़ें मंगाई जाती थीं। प्राचीन काल में भारतीय यात्रियों के रूस जाने के बहुत से प्रमाण मिलने हैं। ये लोग त्वेर और मास्को तक पहुँचे। वासीलिय तृतीय (Vasiliy III) के शासन काल में १५३२-३३ में बराबर का राजदूत रूसी दरबार में गया था।

भारत-रूसी सम्बन्धों की इस श्रंखला का अध्ययन करने पर निकितिन अफ़नासी वह प्रथम यात्री था जिसने भारत-रूस मंत्री का शिलान्यास किया। सन् १४६६ में वह होर्मुज के रास्ते से भारत आया था।

जिस समय लिबिदेव भारत आया, उस समय की राजनीतिक स्थिति और जब निकितिन अफ़नासी भारत आया था, उम समय की स्थिति में विशेष अन्तर नहीं था। दोनों ही समय राष्ट्रीय जीवन पतनोन्मुख था। वह सुल्तान-साम्राज्य का पतन-काल था और यह मुगल-साम्राज्य का। देश में उस समय भी कोई केन्द्रीय शक्तिशाली शासन-व्यवस्था नहीं थी और इस समय भी। देशी राजे, नवाब, सूबेदार, सरदार और ताल्लुकेदार उस समय भी परस्पर लड़-झगड़ रहे थे और इस समय भी। धार्मिक द्वेष से उस समय भी भारतीय वातावरण विषाक्त था और इस समय भी। राजे और नवाब उस समय भी जनता का रक्त चूस रहे थे और इस समय भी। दुर्भिक्षों से उस समय भी लाखों लोग मर रहे थे और इस समय भी। परन्तु एक विशेष संकट, जो इस समय राष्ट के समक्ष था वह था विदेशी साम्राज्य का।

यज्ञदत्त शर्मा

एक

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डाइरेक्ट्रों ने क्लाइव को लार्ड क्लाइव के रूप में फ़ोर्ट विलियम का गवर्नर बनाकर भारत भेजा। कम्पनी के कार्य की वर्तमान परिस्थितियों में उन्हें क्लाइव से उपयुक्त अन्य कोई व्यक्ति दिखाई न दिया। उसे विशेष अधिकार दिये गये।

लार्ड क्लाइव इस बार नये-नये मन्सूबे बाँध कर भारत आया था। उसकी आकांक्षायें गगनचुम्बी हो चुकी थीं। वह स्वयं को कम्पनी का भाग्य-निर्माता समझता था।

लार्ड क्लाइव का जहाज़ मद्रास-बन्दरगाह पर आकर लगा। मद्रास-कौंसिल के सब मेम्बर उसके स्वागत के लिये डेक पर उपस्थित थे। जहाज़ के किनारे पर लगते ही तोपों की सलामी दी गई और सैनिक पंक्तिबद्ध खड़े हो गये।

लार्ड क्लाइव बड़ी शान के साथ जहाज़ से उतरा। कौंसिल के मेम्बरों ने एक-एक करके उससे हाथ मिलाया। क्लाइव धीरे-धीरे आगे बढ़ा। कौंसिल के मैम्बर उसके पीछे-पीछे थे।

मद्रास के रेज़ीडेण्ट ने आगे बढ़कर सूचना दी, "सर! एक खुशखबरी देता हूँ आपको।"

"क्या?"

"मीरजाफ़र मर गया।"

"वण्डरफुल, कब ?"

"अभी एक वीक पहिले।"

लार्ड क्लाइव ने बड़ी शान के साथ कहा, 'आधा काम पूरा हो गया। बंगाल, विहार और उड़ीसा कम्पनी के कब्ज़े में आ गये।' यह कह कर उसने आकाश पर दृष्टि घुमाई। उसे लगा जैसे वह इङ्गलैण्ड से अपने मस्तिष्क में जो निश्चय कर के चला था, वह ईसा मसीह ने पूरा कर दिया। उसने अपने मन में ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद दिया।

लार्ड क्लाइव ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के शासन की पूरी योजना अपने मस्तिष्क में निश्चित करली। मीरजाफ़र के लड़के नज़मुद्दौला को कम्पनी के डाक्टर से पागल घोषित कराकर नज़मुद्दोला के छः वर्ष के लड़के को नवाब घोषित किया जायेगा। उस नाबालिग़ बच्चे की संरक्षक कम्पनी रहेगी। इस तरह बंगाल का असली शासन-प्रबन्ध कम्पनी के हाथों में आजायेगा। नवाब एक खिलौना मात्र रहेगा बंगाल के गवर्नर का।

लार्ड क्लाइव की दृष्टि मोहम्मदरज़ाखाँ पर गई, जो कम्पनी और विशेष रूप से क्लाइव का वफ़ादार रहा था। उसकी मार्फ़त क्लाइव ने लाखों रुपया कमाया था। मोहम्मद-रज़ाखाँ को दीवान बनाकर नवाब के ख़ज़ाने पर अपना अधिकार किया जायेगा।

रेज़ीडेण्ट बोला, "सर ! मिस्टर स्पेन्सर और कौंसिल के अन्य मेम्बरों ने मीरजाफ़र के मरने पर उसके लड़के नज़मुद्दौला को बंगाल का नवाब बना दिया है। नज़मुद्दौला की तख्तपोशी की रस्म भी अदा हो चुकी है।"

"तख्तपोशी की रस्म ! यह कैसे हो सकता है ?"

"यह तो हो चुका सर !"

"नानसेन्स ! हम यह सब नहीं माँगता ।" लार्ड क्लाइव ने झल्ला कर कहा ।

लार्ड क्लाइव के मुख पर, मीरजाफ़र की मृत्यु का समाचार प्राप्त कर, जो प्रसन्नता की लहर दौड़ गई थी, वह नज़मुद्दौला के गद्दी पर बैठने का समाचार प्राप्त कर काली रेखाओं में विलीन हो गई । लार्ड क्लाइव का चेहरा एक खूँख़ार जानवर का जैसा प्रतीत होने लगा । उसे क्रोध आ गया । उसके नेत्र अङ्गारों के समान दहकने लगे । उसका बदन क्रोध से काँपने लगा ।

रेज़ीडेण्ट की समझ में न आया कि लार्ड क्लाइव की ऐसी दशा क्यों हो गई । उन्हें इतना क्रोध क्यों आगया और वह यह सब क्या नहीं माँगते ? वह आश्चर्यचकित सा लार्ड क्लाइव के चेहरे पर देखता रह गया ।

लार्ड क्लाइव का सामान जहाज़ से उतारा जा रहा था ।

लार्ड क्लाइव वहीं से वापस लौट कर बोला, "हमारा सामान जहाज़ पर लगा रहने दो । हम इसी समय कलकत्ता जायेंगे ।"

"कलकत्ता !"

"यस, कलकत्ता ।"

"जहाज़ तैय्यार है सर !"

मद्रास-कौंसिल के सब मैम्बर क्लाइव के पीछे-पीछे वापस लौट लिये । क्लाइव जहाज़ पर सवार हो गया । उसका चेहरा वैसा ही गम्भीर बना रहा । जहाज़ चल पड़ा ।

लार्ड क्लाइव के अचानक कलकत्ता पहुँचने के समाचार ने कलकत्ता-कौंसिल के मेम्बरों को आश्चर्य में डाल दिया ।

लार्ड क्लाइव को कलकत्ता दो सप्ताह पश्चात् पहुँचना था ।

कौंसिल के मेम्बरों, अफ़सरों और सेना के जनरल ने डेक पर पहुँच कर लार्ड क्लाइव को सलामी दी । सैनिक कमाण्डर ने सैल्यूट दिया और तोपें दाग़ी गईं । लार्ड क्लाइव के इस प्रकार समय से पूर्व आने से सब लोग सशंकित थे और चिन्ता की रेखायें सबके चेहरों पर अङ्कित थीं ।

लार्ड क्लाइव की त्यौरी उस समय भी चढ़ी हुई थी । वह किसी मैम्बर से सीधे मुँह नहीं बोला और न ही किसी से हाथ मिलाया ।

लार्ड क्लाइव फ़ोर्टविलियम में पहुँचा और उसने उसी समय कौंसिल के मैम्बरों की एक मीटिंग बुलाने का आदेश जारी किया ।

कौंसिल के सब मैम्बर मीटिंग में उपस्थित हुए ।

"कितना रुपया हाथ लगा ?" क्लाइव ने प्रश्न किया ।

क्लाइव का प्रश्न सुनकर सब मैम्बर सहम गये । किसी की समझ में न आया कि क्या उत्तर दें । सब लोग प्रस्तर-मूर्तियों के समान अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे रहे ।

स्पेंसर, जो कौंसिल का सब से पुराना मैम्बर था, लार्ड-क्लाइव के गम्भीर चेहरे को देख कर मन-ही-मन मुस्कराया । उसने अपने मन में कहा, 'कैसा पाक-साफ़ बन कर आया है । दाई से पेट छिपाने की कोशिश कर रहा है । लाखों रुपया मेरे हाथों से घूस का खागया और लाखों रुपया कम्पनी का डकार कर साँस नहीं ली । अब हम से पूछता है कि हमने नवाब से कितना रुपया लिया ।' वह समझ रहा था कि लार्ड क्लाइव के क्रोध और इस गाम्भीर्य का कारण मात्र यह है कि उसे उस रुपये में से कोई हिस्सा नहीं मिला जो नवाब नजमुद्दौला से कौंसिल के मैम्बरों ने वसूल किया ।

"कोई ख़ास दौलत हाथ नहीं लगी। सिर्फ़ पच्चीस लाख रुपया लिया गया है।" स्पेंसर ने खड़ा होकर कहा।

"डेम पच्चीस लाख ! सब खेल ख़राब कर दिया।"

स्पेंसर की समझ में न आया की उन्होंने कम्पनी का क्या खेल ख़राब कर दिया। वह दृढ़तापूर्वक बोला, "हमने और कोई खेल ख़राब नहीं किया।"

"तुम लोग सब मूर्ख हो।"

लार्ड क्लाइव के इन शब्दों को सब मैम्बर शर्बत के घूँट की तरह पी गये। स्पेंसर ने भी इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपने मन में लार्ड क्लाइव के क्रोध का जो कारण समझ चुका था, उसमें भी कोई परिवर्तन न हुआ।

लार्ड क्लाइव ने कौंसिल के मेम्बरों से अन्य कोई प्रश्न नहीं किया। वह वहाँ से उठ कर अपने अङ्गरक्षकों के साथ विश्राम-गृह में चला गया।

लार्ड क्लाइव के जाने पर स्पेन्सर बोला, "हमें लार्ड क्लाइव को ख़ुश करना होगा।"

"अवश्य करना होगा।" कुछ ने कहा।

"कैसे करना होगा?" एक ने पूछा।

"ख़ुश किसी आदमी को रुपया देकर किया जाता है।"

"रुपया !" सब की ज़ुबान से निकला।

"हाँ रुपया।"।" स्पेन्सर बोला। "लार्ड क्लाइव के आ-जाने पर पच्चीस लाख का पच्चीस लाख हम लोग हज़म नहीं कर सकते। अगर सीधी तरह न दिया तो यह हमारे हलक़ से निकाल लेगा।"

"बहुत बुरी बात है।" एक गुर्राया।

"रियली बैड़" दूसरा बोला।

"बट, हमें करना ही होगा। वरना हमारे सब रास्ते बन्द हो जायेंगे। लार्ड क्लाइव फिर किसी को एक कौड़ी नहीं लेने देगा।"

स्पेन्सर बोला, "रुपया देना ही होगा।"

"कितना देना होगा ?"

"दस लाख।"

"दस लाख !" सबके चेहरे पीले पड़ गये। कुछ क्षण के लिये किसी को साँस नहीं आया। फिर धीरे-धीरे सब होश में आये और यही निश्चय किया कि भविष्य में रुपया कमाने के लिये लार्ड क्लाइव को दस लाख रुपया देना आवश्यक है।

स्पेन्सर कौंसिल के मैम्बरों के निर्णय की लार्ड क्लाइव को सूचना देने के लिये उसके विश्राम-गृह में गया। उसने देखा लार्ड क्लाइव बेचैनी के साथ घूम रहा था।

"सर !"

लार्ड क्लाइव ने स्पेन्सर की ओर देखा।

"सर ! कौंसिल के मेम्बरों ने नवाब नजमुद्दौला से जो पच्चीस लाख रुपया लिया है, उसमें से दस लाख रुपया आपकी नज़र किया जायेगा।"

लार्ड क्लाइव फिर कमरे में घूमने लगा। उसने स्पेन्सर की बात का कोई उत्तर न दिया।

"सर ! कौंसिल के मैम्बरों ने आपके फ़ोर्ट विलियम का दुबारा गवर्नर बन कर आने की ख़ुशी में आज एक शानदार जशन करने का फ़ैसला किया है।" स्पेन्सर बोला।

लार्ड क्लाइव ने स्पेन्सर की इस बात का भी कोई उत्तर न दिया।

स्पेन्सर की समझ में न आया कि इस बार यह क्लाइव

क्या बन कर आया है जो सीधे मुँह बात ही नहीं कर रहा। उसे मन-ही-मन क्लाइव पर क्रोध सा आ गया और वह चुपचाप कमरे से बाहर चला गया। वह कौंसिल के कमरे में प्रवेश कर ही रहा था कि लार्ड क्लाइव के अङ्गरक्षक ने उसके निकट आकर कहा, "सर! लार्ड आप को याद फ़रमा रहे हैं।"

यह सुनकर स्पेन्सर की आतमा प्रसन्न हो गई। वह समझ गया कि क्लाइव पर उसके चाँदी के जूते ने असर किया।

स्पेन्सर तुरन्त लार्ड क्लाइव के कमरे में पहुँचा। लार्ड क्लाइव ने पूछा, "आजकल मोहम्मदरज़ाखाँ कहाँ है ?"

"सर! वह तो कलकत्ते में ही है इस वक्त। आज ही तो आया था मेरे पास। आपके कलकत्ता आने की ख़बर मैंने उसे दी तो वह उछल पड़ा। न मालूम क्या दौलत मिल गई उसे। वह पूछ रहा था कि आप कलकत्ता कब तक तशरीफ़ लाने वाले हैं। मैंने उसे दस-पंद्रह दिन का वक्त दे दिया है।"

"मोहम्मदरज़ाखाँ को इसी वक्त अर्दली भेज कर उसकी हवेली पर दिखवाओ। अगर वह वहाँ हो तो उसे बाअदब आज के जशन में आने की दावत दो।"

"अर्दली को अभी भेजता हूँ सर! बहुत मुमकिन है वह यहीं हो।" स्पेन्सर बोला और वह कमरे से जाने लगा।

स्पेन्सर कमरे के द्वार पर पहुँचा तो लार्ड क्लाइव बोला, "मिस्टर स्पेन्सर!"

"यस सर!"

"देखो, मोहम्मदरजाखाँ के साथ उसकी बेग़म भी आई होंगी। अगर वह आई हों तो उन्हें भी जशन में आने की दावत देना। उनसे कहना कि उन्हें हमने ख़ास तौर पर याद किया है। और हाँ! अर्दली को न भेज कर तुम ख़ुद उसके पास

जाओ।"

"अभी लीजिये सर !" स्पेन्सर प्रसन्न होकर बोला। उसने अपने मन में समझ लिया कि लार्ड क्लाइव का मूड ठीक हो गया। दस लाख रुपये से अधिक उस पर जशन का प्रभाव पड़ा। स्पेन्सर लार्ड क्लाइव की रंगीन तबियत और नाच-गानों के शौक से परिचित था। वह शराब की मेज़ पर ही नवाबों और राजाओं से याराने पक्के करता था और उसी पर उन्हें हलाक़ कर डालता था। मोहम्मदरजाखाँ की बेग़म का नाम बीच में आ जाने से वातावरण में सरसता आई। स्पेन्सर के चेहरे पर कुछ-कुछ मक्कारी भरी मुस्कान सी खिल उठी। वह बोला, "सर ! मैं सब कुछ समझ गया। मैं अभी जाता हूँ।"

"तुम क्या समझ गये ?"

"कुछ नहीं सर ! सब कुछ सर !"

"सब कुछ क्या ?"

"यही सर ! आप मोहम्मदरज़ाखाँ ने नहीं, उसकी बेग़म को दावत दे रहे हैं।"

"फ़ुलिश ! दोनों को दावत पर बुलाओ। बड़ी इज़्ज़त के साथ बुलाना। समझे ?"

"यस सर !"

स्पेन्सर ने तुरन्त मोहम्मदरज़ाखाँ की हवेली की दिशा में प्रस्थान किया। एक हिन्दुस्तानी को अंग्रेज़ी जशन में बुलाना वह अपना अपमान समझता था, परन्तु लार्ड क्लाइव की आज्ञा का पालन न करना सम्भव नहीं था।

स्पेन्सर के चले जाने पर क्लाइव आरामकुर्सी पर बैठ गया और उसने अपना कार्य-क्रम निश्चित किया। कौंसिल के मैम्बरों ने, उसकी दृष्टि में जो भयंकर भूल की थी,

उसका उसे सुधार करना था। उसे कम्पनी के डाइरेक्ट्रों ने किसी भी क़ीमत पर कम्पनी का शासन सुदृढ़ करने के लिये भेजा था। वह इस बार इङ्गलैण्ड से निश्चय करके चला था कि कम्पनी की जड़ों को पाताल में पहुँचा कर दम लेगा।

लम्बी यात्रा के कारण लार्ड क्लाइव कुछ थक गया था। अपने भावी कार्य-क्रम की रूपरेखा मस्तिष्क में निश्चित करके उसे कुछ शान्ति मिली। वह आरामकुर्सी से उठ कर पलंग पर लेट गया।

लार्ड क्लाइव के कलकत्ता आने का समाचार जैसे ही अंग्रेज़-बस्तियों में फैला, वैसे ही कौंसिल के मेम्बरों, अफ़सरों, व्यापारियों और अन्य लोगों की स्त्रियाँ फ़ोर्ट विलियम की दिशा में रेंगने लगीं।

जो स्त्री सर्वप्रथम लार्ड क्लाइव के पास पहुँची वह स्पेन्सर की पत्नी थी। उसी को लेकर एक बार स्पेन्सर और क्लाइव में मन-मुटाव हो गया था, परन्तु फिर बाद में सन्धि होगई। क्लाइव ने स्पेन्सर की घबराहट को देख कर कहा था, 'पागल कहीं का! क्या तू समझता है कि क्लाइव कभी किसी औरत का जंजाल अपने गले में फँसायेगा? औरत मेरे लिये सिर्फ़ तफ़री की चीज़ है, मन को बहलाने का खिलौना नहीं।'

क्लाइव की यह बात मिसेज़ स्पेन्सर को चाहे जितनी भी बुरी क्यों न लगी हो परन्तु स्पेन्सर का क्लान्त मस्तिष्क शान्त हो गया था और उसने दोस्ती का हाथ आगे बढ़ा कर क्लाइव से कहा था, 'इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। इसके लिये मैंने इन्हें आज़ादी दी हुई है। यह जहाँ चाहें जायें और जिससे चाहें मिलें। इनकी इन मुलाकातों से मेरी आय बढ़ती ही है, घटती नहीं।'

लाड क्लाइव मिसेज़ स्पेन्सर की ओर देख कर बोला, "तुम तो दिन-पर-दिन ख़ूबसूरत होती जा रही हो मिसेज़ स्पेन्सर !"

लार्ड क्लाइव के मुख से अपने रूप की प्रशंसा के शब्द सुनकर मिसेज़ स्पेन्सर का दिल गुदगुदा उठा। उसने इठलाकर अपनी मांसल बाहें लार्ड क्लाइव के गले में डालकर कहा, "ख़ूबसूरती को सँवार कर रखना हर औरत नहीं जानती। यह भी एक आर्ट है डालिंग !"

लार्ड क्लाइव मक्कारी से भरे स्वर में बोला, "मिसेज़ स्पेन्सर ! स्पेन्सर तो एक दम बूढ़ा हो गया। उसके सब बाल पक गये। दाँत भी शायद बनावटी हैं।"

मिसेज़ स्पेन्सर लार्ड क्लाइव की मक्कारी को ख़ूब समझती थी। वह जानती थी कि क्लाइव के इन शब्दों में सहानुभूति न हो कर केवल मनोरंजन था। वह बोली, "स्पेन्सर का दिल जवान है लार्ड ! मैं उसे प्यार करती हूँ।"

"ग़लत बात मिसेज़ स्पेन्सर ! जवानी बुढ़ापे को कभी प्यार नहीं करती, बुढ़ापा जवानी को प्यार करता है।"

मिसेज़ स्पेन्सर लार्ड क्लाइव के इस कठोर सत्य को ग़लत नहीं कह सकती थी। वह धीरे से बोली, "तुम ठीक कहते हो।"

क्लाइव बोला, "कोई बात नहीं। तुम्हारे ऐश करने के लिये दौलत तो है स्पेन्सर के पास। जवानी तो दुनियाँ में बिखरी पड़ी है। पैसा बड़ी मुश्किल से मिलता है।"

"तुम ठीक कहते हो। इसी लिये स्पेन्सर मुझे प्यारा लगता है। रियली आई लव हिम (मैं वास्तव में उसे प्यार करती हूँ)।"

"करना ही चाहिये।"

जब मिसेज़ स्पेन्सर और लार्ड क्लाइव की ये बातें हो रही थीं, तभी अन्य कई स्त्रियों ने कमरे में प्रवेश किया और फिर आने वालियों का ताँता बँध गया।

मिसेज़ स्पेन्सर को उनका आना अच्छा नहीं लगा, क्यों कि उन्होंने उसकी बातों में विघ्न डाल दिया। वह अभी क्लाइव से अपने तन-मन की बातें नहीं कर पाई थी। वह कुढ़ कर एक ओर जा खड़ी हुई।

आने वाली अन्य स्त्रियों ने अपने-अपने उपहार लार्ड क्लाइव को भेंट किये, जो अधिकांश में फूलों के थे।

लार्ड क्लाइव की मेज़ फूलों से भर गई।

लार्ड क्लाइव के कमरे से लगा हुआ वह बड़ा कमरा था, जिसमें जशन का प्रबन्ध किया जा रहा था। स्पेन्सर मोहम्मद-रजाखाँ को जशन में भाग लेने का निमंत्रण देकर लौट आया था और अब वह जशन के अन्य प्रबन्ध में संलग्न था।

आरचेस्ट्रा के साजिन्दे आगये थे और वे अपने साज़ों का स्वर मिला रहे थे। नृत्य-मंच की व्यवस्था ठीक हो चुकी थी। बार के प्रबन्धक ने शराब का सब समान मेज़ों पर लगा दिया था। जशन में भाग लेने के लिये आमंत्रित लोग आने शुरू हो गये थे।

लार्ड क्लाइव ने भी जशन में जाने की तय्यारी की। सिल्क का नया सूट पहिना। शीशे के सामने खड़ा होकर टाई की गाँठ ठीक की। बालों में कंघा किया और तय्यार हो गया।

क्लाइव बन-ठन कर कमरे से बाहर निकला। स्पेन्सर ने कौंसिल के अन्य मेम्बरों के साथ आगे बढ़ कर क्लाइव का स्वागत किया। सब लोग रास्ते से एक ओर हट गये।

"मोहम्मदरज़ाखाँ से मुलाकात हुई ?"

"वह जशन में तशरीफ़ लायेगा।"

"और बेग़म !"

"वह भी आयेंगी।"

लार्ड क्लाइव आगे बढ़ गया।

नगर के अंग्रेज व्यापारियों ने लार्ड क्लाइव से हाथ मिलाये। स्पेन्सर ने नये व्यापारियों का लार्ड क्लाइव को परिचय दिया।

लार्ड क्लाइव ने मुस्करा-मुस्करा कर उनकी ओर देखा।

आरचेस्ट्रा का स्वर वायुमण्डल में थिरक उठा। बैरे थालियों में शराब और कुछ उसके साथ खाने का सामान लेकर हॉल में इधर-उधर घूमते दिखाई देने लगे। कुछ स्त्री-पुरुष अपने जोड़ों के साथ नृत्य-मंच की ओर बढ़ गये और नृत्य करने लगे।

लार्ड क्लाइव, किसी विचार में निमग्न सा, द्वार की ओर देख रहा था। उसने स्पेन्सर से कहा, "मोहम्मदरज़ाखाँ नहीं आया।"

"आता होगा सर ! हिन्दुस्तानी लोग हमारी तरह वक्त के पंक्च्वल नहीं होते।"

स्पेन्सर की पत्नी ने लार्ड क्लाइव को नृत्य के लिये आमंत्रित किया परन्तु लार्ड क्लाइव ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

मिसेज़ स्पेन्सर को निराश होकर किसी अन्य व्यक्ति को अपने साथ के लिये लेना पड़ा।

लार्ड क्लाइव हॉल के बीच में खड़ा रहा।

दो

मोहम्मदरज़ाख़ाँ नवाब मीरजाफ़र के शासन-काल में, माल के महकमे में, एक साधारण कारिन्दे के रूप में भर्ती हुआ था। वह धीरे-धीरे माल के महकमे में एक छोटा सा पदाधिकारी बन गया।

मोहम्मदरज़ाख़ाँ का यह पद मीर जाफ़र के शासन-काल कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं था परन्तु मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने इसे महत्त्वपूर्ण बना लिया था। उसका कार्य केवल ख़ज़ाने में आने वाली और वहाँ से जाने वाली रक़मों को दर्ज करना मात्र था। इसका उपयोग उसने यह किया कि जब मीर जाफ़र के ख़ज़ाने में कहीं से रुपया आता था तो वह उसकी सूचना क्लाइव को जाकर दे आता था और क्लाइव उसी समय अपने किसी पदाधिकारी को मीरजाफ़र की छाती पर सवार कर देता था। वह पदाधिकारी जब तक उस रक़म की पाई-पाई मीरज़ाफ़र से नहीं ऐंठ लेता था, तब तक मुर्शिदाबाद से नहीं हिलता था।

मोहम्मदरज़ाख़ाँ के इस काम ने उसे लार्ड क्लाइव की नज़रों में काफ़ी ऊँचा उठा दिया था। उसकी बदौलत क्लाइव ने मीरजाफ़र से दस-पंद्रह लाख रुपया वसूल किया, जो सब

उसकी व्यक्तिगत जेब में गया। मीरक़ासिम के शासन-काल में भी उसका यही सिलसिला बना रहा और पद भी कुछ अधिक सम्मानपूर्ण हो गया।

इस उलटफेर में मोहम्मदरज़ाखाँ ने अच्छी-ख़ासी रक़म पैदा की। इसी की बदौलत उसने कलकत्ते में एक हवेली और एक कोठी बनवाई और नक़द रुपया भी उसके पास काफ़ी होगया।

मीरजाफ़र के स्थान पर मीरक़ासिम और फिर मीरक़ासिम के स्थान पर जब मीरजाफ़र तख्तनशीन हुए तो सूबे का शासन-प्रबन्ध काफ़ी ढीला पड़ गया। इस ढिलाई के ज़माने में मोहम्मदरज़ाखाँ को भी लम्बे-लम्बे हाथ मारने का अवसर मिला। उसने अच्छी पैदा की और उसकी गिनती मुर्शिदाबाद के बड़े रहीसों में होने लगी। लार्ड क्लाइव की उसपर विशेष कृपा-दृष्टि होने कारण नवाब को भी कभी-कभी उससे कुछ कहने में संकोच करना पड़ता था। वह जानता था कि यदि उसे नाराज़ किया तो उसकी शिकायत क्लाइव से हो जायेगी।

जिस समय मीरजाफ़र के स्थान पर मीरक़ासिम को नवाब बनाया गया था तो मोहम्मदरज़ाखाँ ने क्लाइव के इशारे पर मीरक़ासिम का साथ दिया था और जब फिर मीरक़ासिम के स्थान पर अंग्रेजों ने मीरजाफ़र को नवाब बनाया तो उसने मीरजाफ़र का खैरख्वाह बनना चाहा, परन्तु मीरजाफ़र को उसका विश्वास न हुआ।

उसने महाराजा नन्दकुमार को अपना दीवान नियुक्त किया और मोहम्मदरज़ाखाँ नायब के ही पद पर रह गया। उसकी पदोन्नति न हो सकी।

नवाब मीरजाफ़र के अपने प्रति इस व्यवहार को

मोहम्मदरज़ाखाँ ने अपना अपमान समझा। वह सोच रहा था कि मीरजाफ़र के दुबारा नवाब बनने पर वह दीवान बन जायेगा। उसका यह स्वप्न पानी के बुलबुले की तरह फूट गया, परन्तु उसने धैर्य और आशा का परित्याग नहीं किया। उसने मुस्करा कर कहा,'अभी वक्त नहीं आया है शायद! वक्त आने पर देखा जायेगा। इस बार नवाब साहब और महाराजा साहब, दोनों की तबियत साफ़ करनी है।'

"किस चीज़ का ?" बेग़म नज़मा ने पूछा।

"किसी चीज़ का नहीं बेग़म ! नवाब ने हम पर महाराजा नन्दकुमार को तरजीह दी। हमने नवाब को दुबारा गद्दी दिलाने के लिये इतनी कोशिश की, क्लाइव के सामने इनकी तारीफ़ के पुल बाँधे, लेकिन क्या नतीजा निकला ? कुत्ते की पूँछ बारह साल बाद भी जब नलकी से निकाली तो तिरछी ही निकली है। ख़ैर देखा जायेगा।"

"क्या देखा जायेगा ?" मुस्कराकर नज़मा ने पूछा।

"क्लाइव के रहते नवाबी और दीवानगीरी चलाना ख़ाला जी का घर नही है बेग़म ! लोहे के चने चबाना है।"

समय कुछ आगे बढ़ा। महाराजा नन्दकुमार ने नवाब मीरजाफ़र को सलाह दी, "आपको शहंशाह शाहआलम और वजीरेआज़म शुजाउद्दौला से बाज़ाप्ता अपनी नवाबी हासिल करनी चाहिये। जब तक आपको उनकी सनद नहीं मिल जाती है, तब तक मीरक़ासिम का ख़तरा बना ही रहेगा। वह किसी भी वक्त नवाबी को हथिया सकता है।"

यह बात मोहम्मदरज़ाखाँ के कानों में भी पड़ी। वह सीधा कलकत्ता पहुँचा और क्लाइव से जाकर बोला, "क्या सो रहे हैं आप ? कुछ सुना नहीं आपने ?"

"क्यों, क्या नहीं सुना हमने ?"

"आपका रेज़ीडेंट क्या करता है ? इतनी अहम बातें हो जाती हैं और उसे इत्तला तक नहीं की जाती।"

क्लाइव ने चौकन्ना होकर पूछा, "क्या बात है ?"

"नवाब साहब के दीवान साहब ने उन्हें सलाह दी है कि वह शहंशाह शाहआलम और अवध के नवाब शुजाउद्दौला से अपने सीधे ताल्लुक़ात बनाकर सनद हासिल करें।

मैं पूछता हूँ कि अगर नवाब साहब ने ऐसा कर लिया तो फिर आपको कौन पूछेगा ? आपकी क्या वक़त रहेगी ?"

मोहम्मदरज़ाखाँ की यह बात क्लाइव के कलेजे में तीर की तरह लगी। उसने उसी समय एक सैनिक दस्ते को मुर्शिदाबाद भेज कर मीरजाफ़र को कलकत्ता बुलवा लिया और महाराजा नन्दकुमार को उसी समय दीवानी से पृथक कर दिया।

मोहम्मदरजाखाँ की इस महत्वपूर्ण सूचना ने उसे क्लाइव की दृष्टि में बहुत ऊपर उठा दिया। वह क्लाइव की नाक का बाल बन गया और मीरजाफ़र की इच्छा के विरुद्ध उसे में सूबे का दीवान बना दिया।

दीवान बनकर मोहम्मदरज़ाखाँ ने नवाब मीरजाफ़र से अपने अपमान का जी खोलकर बदला लिया। उसने ऐसी ठाट की दीवानी की, जैसी बंगाल के पहिले किसी दीवान को नसीब नहीं हुई थी। वह दीवान क्या, अच्छा ख़ासा नवाब ही बन गया बंगाल का।

मोहम्मदरज़ाख़ाँ कभी मीरजाफ़र के महल में नहीं गया और न ही कभी उसके दरबार में पेश हुआ। उसका दरबार अलग लगता था। उसका दरबार ही वास्तव में सूबे

का दरबार था। नवाब के दरबार का कोई महत्व नहीं रह गया था। जो आदमी उसके पास आता था, उसका काम हर क़ीमत पर होता था और जो नवाब के दरबार में जाता था, उसे निराश होकर लौटना पड़ता था। परन्तु एक बात अवश्य थी कि मोहम्मदरज़ाखाँ के दरबार में पूरी गाँठ वाले आदमी की बात सुनी जाती थी। बिना पैसे के वहाँ कोई काम नहीं होता था।

इस दीवानी के समय में मोहम्मदरज़ाखाँ ने क्लाइव को दोनों हाथों से रुपया दिया और अपनी भी जेब ख़ूब गर्म की।

मीरजाफ़र की मृत्यु के पश्चात् उसके बेटे नज़मुद्दौला को नवाब बनाने में मोहम्मदरज़ाखाँ का विशेष हाथ रहा। स्पेन्सर को पच्चीस लाख रुपया उसी की बदौलत प्राप्त हुआ था, जिससे कलकत्ता-कौंसिल के सब मेम्बर उसकी इज्जत करने लगे थे। वह केवल दीवान ही नहीं, एक तरह से बंगाल का नवाब बन गया था क्योंकि नज़मुद्दौला हर समय शराब के नशे में धुत्त अपने हरम में पड़ा रहता था। राज के काम-काज का उसे कुछ पता नहीं था। काम जो कुछ भी था, उसे मोहम्मद-रज़ाखाँ ही देखता था। इसीलिये सब लोग उसे दीवान साहब न कह कर नवाब साहब ही कहने लगे थे। बेग़म नज़मा पहिले से ही उसे नवाब साहब कह कर पुकारती थी।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने इस बीच में अपनी सम्पत्ति और बढ़ा ली। बीस-पच्चीस लाख रुपया भी उसके पास होगया। उसका और नज़मा का प्रेमपूर्ण जीवन चल रहा था।

इतनी दौलत एकत्रित करने पर भी और नवाबी का ठाठ होजाने पर भी मोहम्मदरज़ाखाँ नवाबों के उन दुर्गुणों से दूर था, जो उनके विनाश के कारण बनते थे।

बंगाल की शतरंज के नित्य नये मोहरे बदलते देख कर

मोहम्मदरज़ाखाँ के मन में भी नवाब बनने की ठनक पैदा हो गई थी। उसकी इस दुर्बलता को क्लाइव ने भाँप लिया था। वैसे मोहम्मदरज़ाखाँ की यह इच्छा एक गुप्त रहस्य था, जिसे उसने कभी बेग़म नजमा पर भी प्रकट नहीं किया था, परन्तु क्लाइव जान गया था।

मोहम्मदरज़ाखाँ अपनी हवेली के दीवानख़ाने में मसनद पर बैठा लखनऊ की क़लई में दम लगा रहा था। नज़मा उसके निकट पानदान लिये बैठी थी और सरौते से छालियाँ काट रही थी।

"आप कह रहे थे कि क्लाइव साहब फिर हिन्दुस्तान आने वाले हैं। क्या हुआ ?" नज़मा ने पूछा।

"आज सवेरे ही तो मिला था मैं स्पेन्सर से। कहता था कि वह मद्रास आगये हैं और बहुत जल्द कलकत्ता आने वाले हैं। शायद दस-पंद्रह दिन में आजायेंगे।"

"बहुत तेज़ आदमी है।"

"इसमें क्या शक है, लेकिन बहादुर और बात का पक्का है। हमारे साथ तो उसने हमेशा दोस्ती निभाई है।"

नज़मा मुस्कुरादी मोहम्मदरज़ाखाँ की बात सुनकर।

"तुम मुस्करा क्यों दीं बेग़म ?"

"कुछ नहीं, ऐसे ही।"

"ऐसे ही तो नहीं बेग़म ! क्या तुम मेरी राय से मुत्तफ़िक नहीं हो ?"

"आप की ज़िन्दगी में अभी उनकी आज़माइश करने का वक्त नहीं आया है। वक्त से पहिले असलियत का पता नहीं चलता। क्लाइव साहब नाचीज़ पर हाथ नहीं डालते।"

"बात तो किसी क़दर तुम्हारी ठीक है लेकिन क्लाइव हमारे साथ, हमें उम्मीद नहीं, कोई काम ग़लत करेंगे। हमने कभी उसके साथ कोई ग़लत काम नहीं किया और उन्हें क़रीब पचास लाख की ज़ाती आमदनी कराई है।"

जब नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ की ये बातें हो रही थीं तभी स्पेन्सर वहाँ पहुँचा।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने खड़ा होकर स्पेन्सर की आवभगत की और उसे कुर्सी पर बिठाया। मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने कोट-पेंट वाले साहबों के लिये अपने दीवानख़ाने में कुछ कुर्सियाँ डलवा रखी थीं।

स्पेन्सर ने कुर्सी पर बैठकर कहा, "मोहम्मदरज़ाखाँ, एक खुशख़बरी दूँ तुम्हें ?"

"क्या आगये गवर्नर साहब ?"

"तुम बात को समझते खूब हो मोहम्मदरज़ाखाँ !"

"समझने की ही तो हमारी क़ीमत है स्पेन्सर साहब ! इस तरह उड़ती चिड़िया को न पहिचानें तो हमें कौन पूछे ? नवाब मीरजाफ़र और महाराजा नन्दकुमार की साँठ-गाँठ का राज़ समझना कोई मामूली बात नहीं थी। नवाब का शुजाउद्दौला और शाहआलम से सीधा ताल्लुक़ हो जाता तो कम्पनी को यह दिन देखना नसीब न होता जिसमें आप लोग आज ऐश कर रहे हैं।" शान के साथ मोहम्मदरज़ाखाँ ने छाती में उभार लाकर कहा।

"इसमें कोई शक नहीं मोहम्मदरज़ाखाँ ! वह काम तो तुमने क़ाबिलेतारीफ़ किया था। तुमने कम्पनी की बुनियाद को पुख्ता कर दिया। इसीलिये लार्ड क्लाइव तुम्हारी तारीफ़ करते हैं और यहाँ आये बाद में हैं पहिले तुम्हें याद किया है।"

"क्या सच ?"

"हाँ-हाँ ! हम लोगों ने उनके आने की खुशी में एक जशन का इन्तज़ाम किया है। मैं उस में शरीक होने की आप को दावत देने आया हूँ।"

"मिस्टर स्पेन्सर ! मैं तुम्हारे जशन में शरीक न हूँगा तो फिर किस के जशन में शरीक हूँगा ?"

"जशन में शरीक होने की दावत सिर्फ़ मेरी ही ओर से नहीं है मोहम्मदरज़ाख़ाँ !"

"और किसकी ओर से है ?"

"गवर्नर साहब ने ख़ास तौर पर आपको याद फ़रमाया है। सिर्फ़ आपको ही नहीं, बेग़म साहिबा को भी जशन में शरीक होने की दावत दी है।"

यह बात स्पेन्सर ने काफ़ी गम्भीरता से कही, परन्तु व्यंग्य उसके शब्दों से साफ़ झलक रहा था।

मोहम्मदरज़ाखाँ और बेग़म नज़मा स्पेन्सर के व्यंग्य को समझकर भी ऐसे बने रहे मानो वे उसके तीखेपन को समझे ही नहीं और सरलतापूर्वक उत्तर दिया, "हम लोग जशन में ज़रूर शरीक होंगे।"

स्पेन्सर के वहाँ से चले जाने पर मोहम्मदरज़ाखाँ बोला, "तुम लार्ड क्लाइव को याद कर रही थीं बेग़म ! उम्र बहुत है क्लाइव की।"

"इसमें क्या शक है ?"

"चलोगी न जशन में ? तुम्हें ख़ास तौर पर याद किया है। अब तो तुमने अंग्रेज़ी डांस भी सीख लिया है।"

नज़मा कुछ खिन्न सी होकर बोली, "आपका मतलब है कि मैं क्लाइव के साथ डांस करूँ ?"

"क्या हर्ज है ? क्लाइव खुश होकर हमारे बहुत काम आ सकता है।"

नज़मा वहाँ से उठकर अन्दर चली गई।

मोहम्मदरज़ाखाँ समझ गया कि नज़मा को उसकी यह बात अच्छी नहीं लगी। उसके दिमाग़ में उस समय बंगाल का नवाब बनने की सनक थी। उसके लिये लार्ड क्लाइव को वह हर तरीक़े से खुश करना चाहता था। उसने सोचा अगर वह नज़मा के साथ एक बार डांस करले तो उससे नज़मा जो कहेगी सो वह कर देगा। अपनी इस सनक में वह भूल ही गया कि नज़मा इस बात को कैसा महसूस करेगी।

मोहम्मदरजाखाँ अन्दर नज़मा के पास जाकर बोला, "तुम नाराज़ होगईं बेग़म ! मैंने किसी मतलब से यह बात कही थी।"

"मैं आपका मतलब खूब समझती हूँ। खुदा के वास्ते उस मतलब को हल करने के लिये मेरा इस्तेमाल न करें। अंग्रेज़ी डांस मैंने इस लिये नहीं सीखा है कि मैं क्लाइव के साथ डांस करूँ।"

"फिर किस लिये सीखा है बेग़म ?"

"सीख लिया है बस ! शौकिया सीख लिया है। इसका आप किसी से ज़िक्र भी न करें।

आपके अलावा मैं किसी दूसरे आदमी पर यह बात ज़ाहिर भी नहीं करना चाहती।"

मोहम्मदरज़ाखाँ अपने दोनों कान पकड़ कर बोला, "ग़लती मुआफ़ ! आइन्दा कभी किसी से इस बात का ज़िक्र न करूँगा।"

नज़मा मुस्कुरादी।

"मेरी हुस्न की मलिका ! तुम मुझसे नाराज़ न हुआ करो। तुम्हें उदास देखकर, तुम नहीं जानतीं, मेरे दिल पर कैसी गुज़रती है।"

"बस रहने दो इन बातों को। यह शायरी करने का वक्त नहीं है। आपको जशन में जाना है।"

"क्या तुम नहीं चलोगी बेगम ?"

"चलूंगी, ज़ुरूर चलूंगी।"

मोहम्मदरज़ाखाँ ख़ुश होगया। वह जशन में चलने की तय्यारी करने लगा।

नज़मा भी कपड़े बदल कर तय्यार होगई।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने एक पालकी मँगवाई और दोनों ने उसमें बैठकर फ़ोर्ट विलियम की ओर प्रस्थान किया।

आज का जशन बहुत शानदार था। शराब का दौर चल रहा था। कौंसिल के मेम्बर लार्ड क्लाइव को घेरे खड़े थे। उनकी पत्नियाँ भी उसके साथ थीं। कुछ लोग नृत्य में मग्न थे। चुम्बनों की झड़ी लगी हुई थी। भारत-भूमि पर भारतीयता के ठीक विपरीत एक नई सभ्यता का उदय हो रहा था। सब लोग मस्त थे। ऐश के जीवन का एक रंगीन दृश्य था, जिसमें लज्जा के लिये कोई स्थान नहीं था।

लार्ड क्लाइव के हाथ में एक मोटा सिगार था, जिसमें कभी-कभी कश लगाकर उसका छल्लेदार धुँआ वह हॉल की छत की ओर उड़ा देता था।

स्पेन्सर ने अपने कुछ साथी मेम्बरों के साथ आगे बढ़कर लार्ड क्लाइव को दस हज़ार की थैली भेंट की।

क्लाइव ने उसे अपने अंगरक्षक को देकर स्पेम्सर से कहा, "इसकी क्या ज़ुरूरत थी स्पेन्सर ? तुम लोग खा-पी लेते।"

"ज़रूरत आपको नहीं सर! हम लोगों को थी।"

क्लाइव मुस्करा दिया।

लार्ड क्लाइव के चेहरे पर मस्ती थी। उसकी दृष्टि में शिकारी की दृष्टि का तीखापन था। इसी का आभास कम्पनी के अन्य अफ़सरों की दृष्टि में भी था। क्लाइव शिकारियों के इस गिरोह का सरदार था, जो हिन्दुस्तान के लम्बे-चौड़े जंगल में शिकार खेलने आया हुआ था।

लार्ड क्लाइव बार-बार हॉल के द्वार की ओर देखकर फिर अपनी दृष्टि उन परियों पर घुमा देता था जो रंगीन तितलियों की तरह हॉल में उड़ रही थीं।

उसी समय मोहम्मदरजाखाँ की पालकी हॉल के पोर्टिगो में आकर रुकी। लार्ड क्लाइव के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

स्पेन्सर की दृष्टि लार्ड क्लाइव के मुस्कानपूर्ण चेहरे पर गई तो वह बोला, "सर! बेग़म आ गईं।"

लार्ड क्लाइव के क़दम अनायास ही आगे बढ़ गये। उसने स्वयं द्वार पर जाकर मोहम्मदरज़ाखाँ से भेंट की।

यह विचित्र बात थी। नज़मा की कुछ समझ में न आया। लार्ड क्लाइव का इतना सभ्य व्यवहार उसने पहिले कभी नहीं देखा था।

"तुम आगये मोहम्मदरज़ाखाँ! बड़ी देर करदी।"

"जी, पालकी वाले ने आने में कुछ देर करदी।" मोहम्मद-रज़ाखाँ ने बात पालकीवाले पर डालदी।

लार्ड क्लाइव ने बेग़म नज़मा की ओर देखकर कहा, "बेग़म! तुम्हारी याद हमें इङ्गलैण्ड जाकर भी आती रही। इसी लिये हमें दुबारा हिन्दुस्तान आना पड़ा।"

नज़मा कुछ लजाकर बोली, "आपकी याद हम लोगों ने भी नही भुलाई। आप भी हमें हमेशा याद आते रहे हैं।"

"सचमुच गवर्नर साहब! बेग़म के दिल में आपकी याद बराबर बनी रही। आज जब मिस्टर स्पेन्सर जशन में शरीक होने की दावत देने गये तो बेग़म मुझसे यही दरियाफ्त कर रही थीं कि आप कब तक कलकत्ता तशरीफ़ ला रहे हैं।"

लार्ड क्लाइव बड़े क़रीने से मुस्कराया और फिर नज़मा के निकट आकर बोला, "इस बार हम तुम्हारे लिये एक नया तोफ़ा लेकर आये हैं।"

"वह क्या ?"

"यह इस वक्त नहीं बतलायेंगे। वक्त आने पर तुम्हें ख़ुद मालूम हो जायेगा।"

लार्ड क्लाइव का बेग़म नज़मा की ओर इस प्रकार आकर्षित होना अंग्रेज-स्त्रियों को अच्छा नहीं लगा। वे घूर-घूर कर नज़मा की ओर देख रही थीं।

लार्ड क्लाइव मोहम्मदरज़ाखाँ और बेग़म नज़मा को अपने निजी कमरे में ले गया। उसने इस बात की चिन्ता नहीं की कि जशन में कितने ही अंग्रेज उससे मिलने के लिये आये थे।

मिसेज़ स्पेन्सर ने स्पेन्सर से कहा, " आउट आफ़ एटीकेट। लार्ड को ऐसा नहीं करना चाहिये।"

"बिलकुल नहीं करना चाहिये।"

"यह हमारा इन्सलट है।"

"इसमें कोई शक नहीं।"

"परन्तु किया क्या जा सकता है ?"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं बट............"मिसेज स्पेन्सर

तिलमिला कर चुप हो गई । एक बार उसके मन में आया कि वह क्लाइव के कमरे में जाकर उससे कहे कि उसे इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिये, परन्तु फिर रुक गई । वह जानती थी कि क्लाइव क्रुद्ध होकर उसे कमरे से बाहर भी निकाल सकता है ।

लार्ड क्लाइव ने नज़मा की ओर देख कर कहा, "बेग़म, आज बहुत खूबसूरत लग रही हो ।"

"कोई ख़ास बात तो नहीं है" कहकर नज़मा मुस्करा दी ।

लार्ड क्लाइव ने मोहम्मदरज़ाखाँ से कुछ रहस्यपूर्ण बातें कीं । नज़मा उसकी बातों को बड़े ध्यान से सुन रही थी । इन तीनों के अतिरिक्त वहाँ विलियम जोन्स, कम्पनी का भाषा-विशेषज्ञ भी था, जो दुभाषिये का काम कर रहा था ।

"मोहम्मदरज़ाखाँ ! हम तुमसे बहुत खुश हैं । इस बार हम तुम्हें तुम्हारी उन सब ख़िदमतों का इनाम देना चाहते हैं जो तुमने कम्पनी और हमारे लिये की है । कम्पनी के सब अफ़सर और कौंसिल के मेम्बर तुमसे बहुत खुश हैं । सब की मर्ज़ी यही है कि तुम्हें बंगाल का नवाब बनाया जाय ।"

लार्ड क्लाइव की यह बात सुन कर नज़मा सहम गई; परन्तु उसने अपने चेहरे पर कोई भाव न आने दिया । उसकी समझ में न आया कि लार्ड क्लाइव क्या कह रहा था और किस अभिप्राय से यह बात कह रहा था । इस प्रकार की बातें उसने पहिले कभी नहीं सुनी थीं । नवाब नज़मुद्दौला के रहते मोहम्मदरज़ाखाँ के नवाब बनने की बात कैसे खड़ी हुई ।

मोहम्मदरजाखाँ का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा । उसे अपनी मन-माँगी मुराद मिल गई । उसने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से लार्ड क्लाइव की ओर देखा और अपने मन में कहा, 'दोस्त हो

तो क्लाइव जैसा हो, जिसने नाचीज़ को कुछ चीज़ बना दिया।'

लार्ड क्लाइव नज़मा की ओर देखकर बोला, "अब तुम बंगाल की बेग़म बनोगी !"

नज़मा चुप रही। उसने क्लाइव की बात का कोई उत्तर न दिया।

"हम बहुत जल्द मुर्शिदाबाद आयेंगे मोहम्मदरजाखाँ ! तुम्हें फ़ौरन मुर्शिदाबाद पहुँचना है।"

"जी, मैं कल ही रवाना हो जाऊँगा।"

लार्ड क्लाइव ने अपने दौरे के विषय में मोहम्मदरजाखाँ को आवश्यक बातें समझाईं तो नज़मा थरथरा उठी। वह अन्दर-ही-अन्दर भयभीत हो गई।

लार्ड क्लाइव मोहम्मदरजाखाँ और नज़मा को पालकी के पास तक छोड़ने गया।

मिसेज़ स्पेन्सर को लार्ड क्लाइव का यह कार्य बिलकुल अच्छा न लगा। वह कुढ़ कर बोली, "वैरी बेड, लार्ड लव्ज़ एन इंडियन वोमेन (बहुत बुरी बात है। लार्ड हिन्दुस्तानी स्त्री को प्यार करता है)।"

"रियली बैड (वास्तव में बुरी बात है)।" एक अन्य स्त्री बोली।

मोहम्मदरजाखाँ उस समय सातवें आसमान पर था। वह स्वयं को बंगाल का नवाब समझ रहा था। वह नवाबी के नशे में झूम रहा था। उसके बदन की नसें प्रसन्नता से फड़क रही थीं।

कहारों ने पालकी को ऊपर उठा कर उसके डण्डे अपने कंधों पर रख लिये और 'रामहि राम' कहकर आगे बढ़ने लगे। मोहमम्दरज़ाखाँ और नज़मा क्लाइव को आदाब बजा लाये।

लार्ड क्लाइव ने हाथ हिला कर कहा, "मुर्शिदाबाद।"

पालकी आगे बढ़ गई ।

जब पालकी फ़ोर्ट विलियम की चारदीवारी से बाहर निकल गई तो नज़मा बोली, "क्या ख्वाब देख रहे हो ?"

"बंगाल की नवाबी का बेग़म ! क्या तुमने नहीं सुना, लार्ड क्लाइव ने क्या कहा ?"

"सुना था, लेकिन सोच-समझ कर क़दम बढ़ाना । इन अंग्रेज़ों की दोस्ती और दुश्मनी, दोनों ख़तरनाक हैं, और दुश्मनी से दोस्ती ज़ियादा ख़तरनाक है।"

"तुम्हें इसमें क्या ख़तरा नज़र आरहा है नज़मा ? अंग्रेज़ी फ़ौज हमारी मदद करेगी । फिर ख़तरे की क्या बात है ?"

नज़मा हँसकर बोली, "जो नवाबी अंग्रेजी फ़ौज की ताक़त से हासिल होगी, वह आपकी नवाबी कैसे होगी ? वह तो लार्ड क्लाइव की नवाबी होगी । हुकूमत भी कहीं ख़ैरात में हासिल की जाती है । तोफ़ा समझ कर हुकूमत को क़ुबूल करना दानिशमन्दी नहीं । इस नवाबी से दीवानी ही बेहतर है।"

मोहम्मदरजाखाँ ने नज़मा के चाँद जैसे चेहरे पर बड़े ध्यान से देखा । आज से पूर्व उसने नज़मा का रूप देखा था, मधुर संगीत सुना था और नृत्य देखा था । उसकी आज की बातें सुन कर वह आश्चर्यचकित रह गया ।

"मेरे चेहरे पर आप इस तरह क्या देख रहे हैं ?"

"मैं देख रहा हूँ कि यह चेहरा चाँद है या आफ़ताब । क्यों बेग़म ! क्या तुम्हें मेरे नवाब बनने की बात पसन्द नहीं आई ? क्या तुम्हें इससे खुशी हासिल नहीं हुई ?"

"क्या आपकी तरक्की की खुशी मुझसे ज़ियादा भी किसी दूसरे को हो सकती है ? लेकिन असलियत बयान करना भी मेरा फ़र्ज़ है ! अब आप नाचीज़ से कुछ चीज़ बनने जारहे हैं । इसे

लिये ख़तरा है।"

मोहम्मदरजाख़ाँ की समझ में कुछ न आया। वह बोला, "बेग़म ! तुमने पहिले तो कभी इस तरह की बातें नहीं कीं।"

"पहिले कभी आपने अपना मंसूबा भी तो मुझे नहीं बतलाया। आज जब मैंने यह नई बात सुनी तो अपनी नाक़िस राय ज़ाहिर कर दी। क्या मुझे इसका हक़ हासिल नहीं है ?"

बातें करते-करते मोहम्मदरजाख़ाँ और नज़मा हवेली पर आगये। रात्रि में इस बात को लेकर कोई चर्चा नहीं चली।

दूसरे दिन दोनों ने मुर्शिदाबाद के लिये प्रस्थान किया।

तीन

नवाब नज़मुद्दौला अपने हरम की ऐश ले रहे थे। मीरजाफ़र और मीरक़ासिम का सारा जीवन उधेड़-बुन में निकल गया। इस लिये उन्हें कभी अपने हरमों की ओर ध्यान देने का अवसर न मिला। सियासत ने उनकी हुस्नपरस्ती को नाकारा कर दिया था।

नवाब नज़मुद्दौला ने सियासत से सम्बन्ध विच्छेद करके अपना पूरा ध्यान हरम को खूबसूरत बनाने की दिशा में लगाया। सूबे के सब काम की बागडोर उसने मोहम्मदरज़ाखाँ के हाथों में छोड़ दी।

नज़मुद्दौला को तख्तपोशी के दिन दरबार में आना पड़ा था। यदि यह काम भी उसके बिना वहाँ आये ही सम्पन्न हो जाता तो शायद वह उस दिन भी दरबार में न आता। उसके पश्चात उसने कभी दरबार की ओर झाँक कर भी नहीं देखा।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने अपने नवाब की सब ज़िम्मेदारियाँ अपने सिर पर लेली थीं। नवाब के ऐशोआराम में वह कभी कोई कमी नहीं आने देता था ताकि उन्हें हरम से बाहर आने की आवश्यकता न महसूस हो।

मोहम्मदरज़ाखाँ कलकत्ता से लौटकर मुर्शिदाबाद पहुँचा। उसने देखा हरम में रौनक़ आ रही थी। नवाब नज़मुद्दौला मसनद पर आराम फ़रमा रहे थे और चन्द हसीनायें उन्हें पंखा झल रही थीं। साक़ी शराब ढाल रही थी और एक हसीना शराब का जाम लिये उनकी बगल में बैठी थी।

नवाब साहब मदहोश थे। उनके इधर-उधर दो हसीनायें बैठी सितार बजा रही थीं। सारंगी का स्वर हरम के वायुमण्डल में भर रहा था। तबले पर हलका-हलका ठेका लग रहा था और नर्तकी नृत्य कर रही थी। नर्तकी के हर ठुमके पर नवाब साहब की ज़ुबान से निकलता था, "वाह, कमाल कर दिया।"

हसीनाओं की मांसल बाहों में लिपटे नवाब साहब जिन्दगी की ऐश ले रहे थे और मोहम्मदरज़ाखाँ को, दुआ दे रहे थे जिसने उन्हें यह खुशनसीब ज़िन्दगी बख्शी। यह ऐश की ज़िन्दगी उसी की बदौलत उन्हें प्राप्त हुई थी।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने हरम में प्रवेश किया तो हरम का वातावरण एक दम शान्त हो गया, मानो सब को साँप सूँघ गया हो।

नज़मुद्दौला ने मोहम्मदरज़ाखाँ को अपने सामने खड़ा देखा तो वह खड़ा होकर उसके गले से लिपट गया। फिर बोला, "तुम आगये मोहम्मदरज़ाखाँ ! बहुत दिन लगा दिये कलकत्ते में। आख़िर क्या करते रहे इतने दिन तक ?"

"कुछ ज़रूरी काम थे वहाँ।"

"तुम कलकत्ते में इतने दिन न ठहरा करो। हमने सुना है वहाँ बहुत से अंग्रेज़ आकर बस गये हैं। न मालूम तुम इन लोगों के बीच में इतने दिन कैसे रह लेते हो। मुझे तो डर लगता है इनसे। इनकी शक्ल देख कर मैं काँपने लगता हूँ। बड़े ही खूँख़ार

लोग हैं। हम लोगों का ख़ून पीने के लिये ख़ुदा पाक ने न मालूम इन्हें कहाँ से इस सरज़मीन पर भेज दिया हैं।"

मोहम्मदरज़ाखाँ बड़े तपाक से नज़मुद्दौला के पास मसनद पर बैठ गया। वे औरतें, जो नवाब को घेरे बैठी थीं, पीछे हट गईं। सब साज ख़ामोश होगये। नर्तकियाँ नृत्य बन्द करके साजिन्दों के पास चली गईं।

"अंग्रेज़ कोई डरने की चीज़ नहीं हैं नवाब साहब ! ये लोग भी हम जैसे ही इन्सान हैं।"

"नहीं मोहम्मदरज़ाखाँ ! ये लोग ऐसे ही ख़तरनाक हैं जैसे जंगल के शेर, चीते। इन्हें हम लोगों के साथ कोई हमदर्दी नहीं है। ये इन्सान का ख़ून पीकर ख़ुश होते हैं। इनमें रहम-दिली का ज़रा भी माद्दा नहीं है।"

"इनसे इतना ख़ौफ़ खाने की कोई बात नहीं है नवाब साहब ! आप ऐश किये जायें। इन्हें मैं सब देख लूँगा। मुझे इन लोगों से ज़रा भी डर नहीं लगता। ये लोग उसी वक्त तक ख़तरनाक होते हैं जब तक किसी के दोस्त नहीं बन जाते। दोस्त बनने के बाद ये दोस्ती का हक़ अदा करते हैं। मैं अपनी ज़िन्दगी में इनकी दोस्ती का ख़ूब इम्तहान ले चुका हूँ। मेरे साथ इन लोगों ने कभी दग़ा नहीं की। जब मैं आपके साथ हूँ तो ये आपके साथ भी कोई दग़ा नहीं करेंगे। आप फ़िक्र न करें किसी बात की।"

मोहम्मदरज़ाखाँ की इस बात का नज़मुद्दौला को विश्वास न हुआ। वह बड़ी घबराहट के साथ उसके चेहरे पर एक टक देख रहा था।

"घबराइये नहीं। लार्ड क्लाइव बड़ा दियानतदार आदमी है। मैंने उसे ख़ूब पहिचान लिया है। आपकी उसके दिल में

बड़ी इज्जत है। इस बार हिन्दोस्तान आने पर वह सब से पहिले आप से मुलाक़ात करने मुर्शिदाबाद आरहे हैं।"

"मुझसे !" नजमुद्दौला उठ कर खड़ा हो गया। उसे लगा जैसे जंगल से खूँखार चीता निकल कर उसे खाजाने के लिये उसकी ओर को लपका चला आ रहा था।

"आप अंग्रेजों से बहुत डरते हैं।" यह कह कर मोहम्मदरज़ाखाँ ने नवाब नजमुद्दौला का हाथ पकड़ कर उन्हें अपने पास बिठा लिया।

"भाई मोहम्मदरजाखाँ ! मुझे तो तुम इन लोगों से दूर ही रखो तो अच्छा है।"

मोहम्मदरजाखाँ हँसकर बोला, "इस तरह डरने से काम नहीं चलता है नवाब साहब ! मैं लार्ड क्लाइव को आपकी ओर से मुर्शिदाबाद आने की दावत देकर आया हूँ। बड़े ज़ुरूरी काम थे उन्हें, फिर भी उन्होंने मेरी इल्तजा पर ग़ौर फ़रमाया और आने को राजी होगये। इस बार उन्हें हम यहाँ से खुश करके भेजेंगे। फिर आपके मन का सब डर निकल जायेगा।"

नवाब चुपचाप बैठा मोहम्मदरज़ाखाँ की बातें सुनता रहा। उसने फिर कुछ न कहा, परन्तु दिल उसका बड़ी तेज़ी से धड़क रहा था और मन में बेचैनी पैदा होगई थी।

मोहम्मदरज़ाखाँ उसी दिन से लार्ड क्लाइव के स्वागत की तय्यारी पर जुट गया और नवाब एक दर्शक के समान वह सब देखता रहा। मुर्शिदाबाद के बाज़ारों को सजाया गया। नवाब के महलों और दीवानी की खास तौर पर सजावट की गई। सात दिन यही सब-कुछ होता रहा।

मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने इस अवसर का उचित उपयोग किया। अवसर पर चूकना मोहम्मदरजाखाँ ने नहीं सीखा था। उसने

सब ताल्लुक़ेदारों पर फ़रमान भेज दिये कि वे अपनी जायदादों के कागज़ात दीवानी में दाख़िल करें। गवर्नर साहब तशरीफ़ ला रहे हैं। उनका हुक्म है।

ताल्लुकेदारों ने अपने कागज़ात दीवानी में दाख़िल कर दिये।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने दूसरा फ़रमान जारी किया, जिसमें ताल्लुकेदारों से उनकी हैसियत के अनुसार उनसे रुपया दाखिल करने को कहा गया और उनकी जायदादों के कागज़ दीवानी से तभी लौटाये गये जब उन लोगों ने वे रक़में जमा करदीं।

दो दिन में मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने पचास हज़ार रुपया एकत्रित कर लिया। वह बड़े गर्व के साथ बेग़म नज़मा से बोला, "बेग़म! देखा तुमने हमारा रुपया इकट्ठा करने का तरीक़ा। दो दिन में रुपयों का ढेर लग गया।"

"आप दौलत इकट्ठी करने में बहुत माहिर हैं।"

"दौलत बहुत बड़ी चीज़ है नज़मा! इसके पीछे हर शख्श दीवाना है। किसी का कोई काम दौलत के बिना नहीं चलता। नवाब को अय्याशी के लिये दौलत चाहिये। कम्पनी को दौलत चाहिये। उसके अफ़सरों को घूस चाहिये। यह सब कैसे चले अगर मैं दौलत इकट्ठी न करूँ तो?"

"कितना रुपया इकट्ठा कर लिया आपने?" नज़मा ने मुस्करा कर पूछा।

"क़रीब पचास लाख तो आगया है।"

"इसमें से नवाब साहब को कितना मिलेगा?"

"दस-पाँच लाख नवाब को दे दिया जायेगा।"

"और लार्ड क्लाइव को?"

"पाँच लाख का अन्दाज़ है। चार-पाँच लाख शहर की रौनक़ पर ख़र्च होगा।"

"और बाक़ी ?"

मोहम्मदरज़ाखाँ मुस्करा दिया। फिर बोला, "बाक़ी ! बाक़ी हमारी अक्ल की क़ीमत है नज़मा ! रुपया इकट्ठा करने के लिये बड़ी तिकड़में लड़ानी पड़ती हैं। मैं तुम्हें एक बार दौलत के ढेर पर बिठा कर देखना चहाता हूँ नज़मा कि दौलत के ढेर पर बैठ कर मेरी हुस्न की मलिका कैसी लगती है।"

नज़मा कुछ बोली नहीं।

"क्या तुम्हें दौलत अच्छी नहीं लगती नज़मा ?"

"आपके मुक़ाबिले में नहीं। जो दौलत मुझे आपसे जुदा करती दिखाई देती है वह मुझे ख़तरनाक मालूम देती है।"

"क्या मतलब नज़मा ! यह सब तो मैं तुम्हारी ही ख़ातिर कर रहा हूँ। मेरा मक़सद तो तुम्हारी ख़ुशी के अलावा और कुछ नहीं है। क्या तुम मेरी इस बात को ग़लत समझती हो ?"

"अगर मैं कहूँ 'हाँ।"

मोहम्मदरज़ाखाँ तिलमिला उठा। उसने कहा, "नज़मा ! तुम इस तरह 'हाँ' नहीं कह सकतीं। तुम जानती हो, मैंने आजतक तुम्हारे अलावा कभी किसी औरत के चेहरे पर प्यार भरी नज़र से नहीं देखा। मेरी उम्मीदों की दुनियाँ सिर्फ़ तुम तक ही महदूद है। मैं जो कुछ भी करता हूँ, सिर्फ़ तुम्हारी ही ख़ातिर करता हूँ।"

"यह सब मैं जानती हूँ। मैं यह भी जानती हूँ कि आप जैसा पाक इन्सान आज की दुनियाँ में मिल नहीं सकता। मैं यह भी जानती हूँ कि आपका प्यार सिर्फ़ मुझी तक महदूद है। लेकिन यह दौलत आप मेरे लिये नहीं अपनी हविस को पूरी

करने के लिये इकट्ठी करते हैं। इसकी वजह से आप रियासत के दीगर अफ़सरों की आँखों के ख़ार बनते जा रहे हैं। मैं डरती हूँ कि कहीं किसी दिन यह दौलत आपको कम्पनी के अफ़सरों की आँखों का ख़ार बनाकर मुझसे जुदा न कर दे।"

मोहम्मदरज़ाखाँ नज़मा की बात सुन कर हँस दिया। उसने नज़मा को अपने निकट कर लिया। वह बोला, "मेरी यह हविस भी तुम्ही को लेकर है नज़मा! रही बात उन अफ़सरों की, जिनका तुम ज़िक्र कर रही हो, वे हैं क्या चीज़? मेरा एक इशारा उनकी हस्ती को नेस्तोनाबूद कर सकता है। कम्पनी के अफ़सर चाँदी के जूते के यार हैं। उनकी तुमने ख़ूब परवाह की। तुम फ़िक्र न करो।"

लार्ड क्लाइव का मुर्शिदाबाद में ऐसा स्वागत हुआ, जैसा पहिले कभी नहीं हुआ था। सूबे के सब ताल्लुक़ेदार और ज़मीदारों ने जशन में हिस्सा लिया। लार्ड क्लाइव ने सब से हाथ मिलाया। नवाब नज़मुद्दौला ने उसे पाँच लाख की थैली भेट की।

"हम तुमसे बहुत ख़ुश हैं नवाब साहब!" लार्ड क्लाइव ने कहा।

अन्य ताल्लुक़ेदारों और ज़मीदारों ने भी नज़राने भेट किये।

यह नाटक बहुत सफल रहा। मोहम्मदरज़ाखाँ ने अपनी भूमिका अदा करने में कमाल कर दिया। सब लोग 'वाह-वाह' कर उठे। उसकी योग्यता की सभी ने सराहना की। नवाब नज़मुद्दौला भी ख़ुश नज़र आ रहे थे। उनके दिल से अंग्रेज़ों का भय कुछ-कुछ दूर हो गया था, परन्तु फिर भी वह कुछ

सहमे हुए थे।

संध्या-समय मोहम्मदरज़ाखाँ बेग़म नज़मा को साथ लेकर लार्ड क्लाइव के डेरे पर गया। क्लाइव को घायल करने के लिये मोहम्मदरज़ाखाँ नज़मा को एक पैना तीर समझता था। वह क्लाइव के स्वभाव से काफ़ी परिचित हो गया था।

नज़मा को देखकर क्लाइव बोला, "अरे बेग़म! तुम कहाँ रहीं? हमें यहाँ आये कितनी देर हो गई और तुम अब दिखाई दी हो।"

"जी! ख़िदमत में लगी हुई थी मेहमानों की। सभी ताल्लुक़ेदारों की बेग़में आई हुई हैं।"

"लेकिन हमने तो किसी को नहीं देखा।"

"जी सब पर्दानशीन औरतें हैं। हम हिन्दुस्तानी लोगों की औरतें उस बेपर्दगी से नहीं रहतीं, जैसा आप का रिवाज़ है।"

"वैरी बैड़ (बहुत बुरी बात है) बेग़म! ख़ूबसूरत फूलों को ताज़ा हवा में रहना चाहिये। हमारे यहाँ सब लोग आज़ादी-पसंद होता है।"

नज़मा मुस्करादी, कोई उत्तर न दिया।

"हमने सुना है तुम्हारे नवाब साहब के हरम में बहुत ख़ूबसूरत-ख़ूबसूरत औरतें हैं। बड़ा शौकीन आदमी है तुम्हारा नवाब। हम ऐसे आदमी को बहुत पसन्द करते हैं।"

नज़मा ने क्लाइव की इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं ली। वह सुनती रही, मुस्कराती रही और सोचती रही कि क्लाइव का यह सब कहने का क्या तात्पर्य है।

लार्ड क्लाइव ने मोहम्मदरज़ाखाँ से कुछ बातें उसे नज़मा

से अलग लेजाकर भी कीं, जिनके विषय में नज़मा कुछ न जान सकी। उसने कोई विशेष ध्यान भी नहीं दिया।

दूसरे दिन लार्ड क्लाइव ने बनारस के लिये प्रस्थान किया।

अवध का नवाब शुजाउदौला उस समय बनारस में ठहरा हुआ था। लार्ड क्लाइव को पता चला तो उसने शुजाउद्दौला से भेंट की। क्लाइव ने उससे बातों के दौरान कहा, "नवाब साहब! हमारे पास आपके यहाँ की बहुत ग़लत रिपोर्ट है।"

"वह क्या ?"

"हमारे रेज़ीडेण्ट ने हमें लिखा है कि आपकी रियासत-में बहुत बदइन्तज़ामी चल रही है।"

क्लाइव की बात सुनकर शुजाउद्दौला आग हो उठा, परन्तु उसने संयम से काम लिया। उसने मुस्कराकर कहा, "रुपये की ज़रूरत मालूम देती है लार्ड !"

क्लाइव मुस्करा दिया।

शुजाउद्दौला उस समय अंग्रेज़ों को नाराज़ नहीं करना चाहता था क्योंकि शाहआलम को वह जानता था कि वह अंग्रेज़ों के हाथों की कठपुतली बन चुका था। बक्सर की लड़ाई में अगर शाहआलम उसे धोखा न देता तो उसने अंग्रेजों का सफ़ाया कर दिया होता। मराठों से भी उसे कोई विशेष आशा नहीं थी। फिर बनारस में उसकी स्थिति वैसे ही कमज़ोर थी क्योंकि वहाँ अंग्रेजों की काफ़ी सेना पड़ी हुई थी। वह बोला, "इन बातों में कुछ नहीं रखा है, क्लाइव! हमारे साथ तुम्हारी सुलह हुए बहुत दिन नहीं हुए हैं। तुम्हें अपने मुआयदों पर क़ायम रहना चाहिये। रुपये की तुम्हें ज़रूरत है तो हम कुछ रुपया दे देंगे।"

क्लाइव का मतलब रुपया मिलने से था। वह कम्पनी को

मिलने वाले रुपये से ज़ियादा अपनी जेब में जाने वाले रुपये को अहमियत देता था। रुपया मिलते ही उसका चेहरा खुश नज़र आने लगा।

शुजाउद्दौला बोला, "अब तो हमारी रियासत में किसी बदइन्तज़ामी की ख़बर नहीं है तुम्हारे पास मिस्टर क्लाइव ?"

"कोई बात नहीं नवाब साहब ! हम सब ठीक कर देगा। हम अपने रेज़ीडेण्ट को बोल देगा कि वह आपके ख़िलाफ़ रिपोर्ट लिखकर न भेजा करे।"

लार्ड क्लाइव बनारस से इलाहाबाद पहुँचा और वहाँ जाकर उसने एक नया नाटक रच दिया।

शहंशाह शाहआलम उन दिनों इलाहबाद में ही ठहरे हुए थे। दिल्ली में रुहेले और मराठे उन्हें चैन नहीं लेने देते थे। इस लिये उन्होंने इलाहबाद में ही रहना आरम्भ कर दिया था।

शायर लोगों के बीच काफ़िये कसे जारहे थे और बन्द लगाये जा रहे थे। शाहआलम भी अपने शेर सुना रहे थे, परन्तु आजकल मन बहुत खिन्न था। इस खिन्नता का कारण यह था कि उनका हाथ रुपये की ओर से बहुत तंग हो गया था।

सल्तनत के सब सूबे खुदमुख़त्यार हो गये थे। वह अब नाममात्र के ही शहंशाह थे। कोई सूबेदार उन्हें एक कौड़ी नहीं भेजता था। ऐसी दशा में उन्हें अपना निजी ख़र्च चलाना भी कठिन हो गया था।

इसी तंगदस्ती के समय लार्ड क्लाइव ने शाहआलम से भेंट की और पाँच लाख रुपया बतौर नज़राने के उन्हें दिया। ऐसे समय में पाँच लाख रुपया प्राप्त कर शाहआलम को क्लाइव फ़रिश्ता सा नज़र आया। शाहआलम ने लार्ड क्लाइव की ओर विशेष दृष्टि से देखा।

"शहंशाह ! हम लोग व्यापारी हैं। हम अपनी ज़ुबान के पायबन्द रहते हैं। हम हिसाब-किताब में हमेशा सचाई से काम लेते हैं। हमने सुना है कि आप आजकल अपने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के सूबेदार से बहुत परेशान हैं। वह आपको रुपया नहीं भेजता। अगर आप दीवानी का काम हमें सौंप दें तो हम आप को २६ लाख रुपया सालाना दिया करेंगे।"

लार्ड क्लाइव के इस प्रस्ताव पर सहमति प्रकट करने में शहंशाह को एक क्षण न लगा। पाँच लाख रुपया देकर क्लाइव अपनी दियानतदारी का सुबूत पहिले हो पेश कर चुका था। इस लिये भविष्य के लिये उसका विश्वास न करने का कोई कारण नहीं था।

शाहआलम इस विषय में कुछ सोच ही रहे थे कि तभी लार्ड क्लाइव ने उनके सामने पाँच लाख रुपया रख कर कहा, "यह रुपया कम्पनी की ओर से पेशगी के रूप में आपकी खिदमत में पेश है।" यह कहकर निहायत अदब के साथ क्लाइव ने घुटने टेक दिये।

इस तंगदस्ती के ज़माने में शाहआलम ने समझा उन्हें क्लाइव के रूप में खुदा मिल गया। जब वह पैसे-पैसे से मुहताज थे, उस समय दस-लाख रुपये का मिल जाना एक बड़ी बात थी। उन्होंने अपने दीवान को तुरन्त फ़रमान का मसौदा तय्यार करने की आज्ञा की।

फ़रमान तय्यार किया गया। लार्ड क्लाइव ने शाहआलम के दीवान की भी भेट पूजा में कमी नहीं आने दी। शहंशाह के सब मुसाहिबों को उसने क़ाबू में कर लिया। सभी ने इस काम का समर्थन किया।

दूसरे दिन शाहआलम ने फ़रमान पर हस्ताक्षर कर दिये।

इस दस्तावेज़ ने मुग़ल साम्राज्य की जड़ों पर वह भीषण प्रहार किया जिससे साम्राज्य का विशाल वृक्ष बेसहारा हो गया और एक दिन उखड़ कर कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

इस फ़रमान ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी-अधिकार कम्पनी को दे दिये। अब वहाँ का नवाब अपने सूबे से मालगुज़ारी या कोई कर वसूल नहीं कर सकता था। उसे अपने ख़र्च के लिये भी कम्पनी के गवर्नर का मुँह ताकना होता था। नवाब अब एक प्रकार से कम्पनी का पेंशनयाफ्ता मुलाज़िम था, जिसकी पेंशन देने या न देने का अधिकार भी कम्पनी को था। इस फ़रमान ने नवाब की रही-सही कमर भी तोड़ कर रख दी।

लार्ड क्लाइव ने अपनी इस यात्रा के दौरान अपने उद्देश्य में जो सफलता प्राप्त की उसकी आधारशिला पर अंग्रेज़ी साम्राज्य की नींव पड़ी।

यह कार्य समाप्त कर लार्ड क्लाइव ने कलकत्ते के लिये प्रस्थान किया। वह इलाहाबाद से बनारस होकर पटना पहुँचा और वहाँ से मुर्शिदाबाद। उसके अचानक मुर्शिदाबाद पहुँचने ने वहाँ सबको आश्चर्य में डाल दिया परन्तु मोहम्मद-रज़ाखाँ को यह आश्चर्यजनक प्रतीत न हुआ।

नवाब नज़मुद्दौला को कुछ आश्चर्य तो हुआ परन्तु बनारस जाने से पूर्व जब क्लाइव मुर्शिदाबाद आया था तो उसका नज़मुद्दौला के प्रति बहुत समय व्यवहार रहा था। इसलिये इस बार वह भयभीत न हुआ।

नवाब नज़मुद्दौला ने लार्ड क्लाइव की तहेदिल से आवभगत की और बड़ी संलग्नता से दावत का प्रबन्ध कराया। नज़मुद्दौला अब पहिले की तरह क्लाइव से भयभीत नहीं था।

दावत के साथ शानदार जशन का भी प्रबन्ध था, जिसमें नृत्य और संगीत के लिये नवाब नज़मुद्दौला के अपने हरम की बेहतरीन नर्तकियाँ और गायिकायें संलग्न थीं। एक-से-एक हसीना शराब पेश कर रही थी।

दावत के बाद लार्ड क्लाइव ने कहा, "अब इजाज़त चाहता हूँ नवाब साहब!"

"क्या आप आज ही चले जायेंगे?" मोहम्मदरज़ाखाँ ने पूछा।

"आज ठहरिये लार्ड! कल चले जाइये।" नज़मुद्दौला बोला।

"हम ठहर नहीं सकेंगे नवाब साहब! हमें कलकत्ता बहुत जल्द पहुँचना है।"

नवाब नज़मुद्दौला और मोहम्मदरज़ाखाँ लार्ड क्लाइव को उसके डेरे तक छोड़ने गये।

डेरे पर लार्ड क्लाइव ने कहा, "आइये नवाब साहब! एक-एक पैग और ले लिया जाये।"

बैरा शराब लेकर आ गया। तीनों ने साथ-साथ बैठ कर शराब पी।

लार्ड क्लाइव ने कलकत्ता के लिये प्रस्थान किया और नवाब नज़मुद्दौला अपने महल में लौट आये।

महल में लौटने पर नवाब साहब की तबियत कुछ ख़राब होने लगी।

मोहम्मदरज़ाखाँ भी उस वक्त वहीं था। वह क्लाइव के डेरे से उनके साथ आया था। उसने तुरन्त हकीम साहब को बुलवाया।

नवाब साहब की तबियत ख़राब ही होती गई। उनके पेट

में भयंकर दर्द होने लगा।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने महल के पुराने नौकरों को वहाँ से बाहर निकलवाकर महल पर सैनिक पहरा लगवा दिया। अब महल में किसी को प्रवेश करने की आज्ञा नहीं थी।

रात्रि का अंधकार चारों ओर छा गया था। हाथ-को-हाथ दिखाई नहीं दे रहा था। बड़ी सुनसान रात थी, परन्तु फिर भी नवाब नज़मुद्दौला की तबियत ख़राब होने की ख़बर सारे नगर में फैल गई थी।

महल के एक नौकर ने महाराजा नन्दकुमार को जाकर नवाब नज़मुद्दौला की तबियत ख़राब होने की सूचना दी तो वह एकदम उठकर खड़े हो गये। उन्होंने पूछा, "क्यों, तबियत कैसे ख़राब हो गई?"

"जी, मालूम नहीं कुछ। वह जैसे ही लार्ड क्लाइव के पास से दीवान जी के साथ महल में दाख़िल हुए, वैसे ही उनके पेट में ख़तरनाक दर्द होने लगा।"

"फिर क्या हुआ?"

"दीवान जी ने महल के सब मुलाज़िमों को महल से निकलवा दिया और फ़ौजी जवानों का पहरा बिठा दिया।"

महाराजा नन्दकुमार चिंतित हो उठे। वह समझ गये कि अवश्य ही यह कोई षडयंत्र है लार्ड क्लाइव का। इसमें मोहम्मदरज़ाखाँ का भी हाथ है।

महाराजा नन्दकुमार अपने मकान से बाहर निकलकर नवाब साहब के महल की ओर बढ़ गये। उन्होंने देखा नवाब साहब के अंग-रक्षकों को भी महल से निकाल दिया गया था। महाराजा ने उनके निकट जाकर पूछा, "तुम लोग यहाँ कैसे खड़े हो? नवाब साहब का क्या हाल है?"

"कुछ पता नहीं महाराजा साहब ! हम लोगों को महल से निकाल दिया गया। यहाँ तक कि बेग़मसाहिबा को भी नवाब साहब से मिलने की इजाज़त नहीं है।"

"क्या हकीम साहब को इत्तला कर दी गई है?"

"जी, सुना है, वह अन्दर हैं।"

महाराजा नन्दकुमार वहाँ से अपने मकान की ओर लौटे तो उन्होंने सुना, कुछ लोग अंधेरे में बातें कर रहे थे।

"नवाब को ज़हर दिया गया है।"

"दिया नहीं, दिलाया गया है।"

"क्लाइव ने नवाब साहब की हत्या कराई है।"

"बचने की कोई उम्मीद नहीं है।"

"सुना है, हकीम जी और दीवान जी का भी इसमें हाथ है।"

"बच भी जाते तो उन्हें बचने नहीं दिया जा रहा।"

"किसी को उनके पास जाने की इजाज़त नहीं है।"

महाराजा नन्दकुमार इस प्रकार की बातें सुनते हुए अपने मकान पर जा पहुँचे। वह समझ चुके थे कि यह सब काम लार्ड क्लाइव और मोहम्मदरज़ाखाँ का करवाया हुआ है।

कुछ देर पश्चात शहर में यह समाचार फैल गया कि नवाब नजमुद्दौला अन्तकाल कर गये। लोग-बाग अपने-अपने घरों से बाहर निकल आये। सब के चेहरों पर आश्चर्य की रेखायें खिची हुई थीं।

मोहम्मदरज़ाखाँ नवाब साहब की मृत्य पर ज़ार-ज़ार रो रहा था। रोते-रोते उसका बुरा हाल था।

बेग़म नज़मा को जब नवाब साहब की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ तो उसका कलेजा धक्क-धक्क करने लगा। उसके

दिल पर भयंकर आघात हुआ। कुछ क्षणों के लिये तो वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ सी घुटनों के बल ज़मीन पर बैठी रही और जब होश आया तो उसकी ज़ुबान से निकला, 'या ख़ुदा! यह क्या हुआ?'

तभी कुछ बाँदियाँ और दौड़कर अन्दर आईं और उन सब की ज़ुबानों पर भी ये ही शब्द थे, "बेग़म साहिबा! ग़ज़ब हो गया। नवाब साहब अन्तकाल कर गये।"

"मगर कैसे?" बेग़म नज़मा ने पूछा।

"कुछ पता नहीं बेग़म साहिबा, कुछ पता नहीं। कहते हैं कि अचानक जैसे ही वह लार्ड क्लाइव को विदा करके अपने महल में वापस आये तो उनके पेट में दर्द हुआ और दर्द बराबर बढ़ता ही गया।"

"क्या हकीम जी को नहीं बुलवाया किसी ने?"

"जी बुलवाया क्यों नहीं! दीवान साहब वहीं मौजूद थे। हकीम जी को फ़ौरन बुलवाया गया, लेकिन ख़ुदा पाक को जो मंज़ूर था, उसमें हकीम जी बेचारे क्या कर सकते थे?"

सारे शहर में मातम छा गया। तरह-तरह की चर्चायें चलने लगीं। सब अपने-अपने मन की बातें कह रहे थे, लेकिन बहुत दबी ज़ुबान से। मोहम्मदरज़ाखाँ के विरुद्ध खुलकर एक शब्द भी कहने का किसी में साहस नहीं था।

महाराजा नन्दकुमार नवाब साहब के महल में पहुँचे। अब शहर के अन्य बड़े-बड़े लोग भी वहाँ आ-जा रहे थे। नवाब साहब का शव कफ़न से ढक दिया गया था।

महाराजा नन्दकुमार की दृष्टि मोहम्दरजाखाँ पर गई तो वह उनसे आँखें न मिला सका। उसकी आँखों में आँसू थे। महाराजा नन्दकुमार बोले, "रास्ते का काँटा साफ़ हो गया।"

केवल इतना कहकर वह महल से बाहर निकल आये।

महाराजा नन्दकुमार की बात को किसी ने शायद नहीं समझा, नहीं सुना, लेकिन मोहम्मदरज़ाखाँ ने उसे अच्छी तरह सुना, परन्तु बोला वह एक शब्द नहीं। उसने महाराजा नन्दकुमार को महल से बाहर निकलते देखा और फिर नवाब नज़मुद्दौला के शव को देखने लगा।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने नाटक का अन्तिम दृश्य समाप्त करते हुए बिलख-बिलख कर कहा, "नवाब साहब! आप भी धोखा दे गये। हम लोगों को बेसहारा छोड़ गये। अब इस नवाबी की गद्दी को कौन सँभालेगा?"

चार

नवाब नज़मुद्दौला की मृत्यु के पश्चात् मोहम्मदरज़ाखाँ सोच रहा था कि अब लार्ड क्लाइव अपने वचन को पूरा करेगा। इसीलिये वह नज़मा को साथ लेकर कलकत्ता गया। परन्तु लार्ड क्लाइव ने कौंसिल के मैम्बरों की एक मीटिंग कराई, जिसका सभापति स्पेन्सर था। लार्ड क्लाइव ने उस मीटिंग में भाग नहीं लिया।

मीटिंग ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि नवाब नज़मुद्दौला के स्थान पर उसके नाबालिग़ छोटे भाई को नवाब बनाया जाय और कम्पनी उसकी वारिस बने।

इस निर्णय के अनुसार नज़मुद्दौला के नाबालिग़ छोटे भाई को नवाब घोषित कर दिया गया।

मोहम्मदरज़ाखाँ पर इस समाचार से बिजली सी गिरी परन्तु लार्ड क्लाइव ने उसे धैर्य बँधाते हुए समझाया, "तुम पालेटिक्स को नहीं समझते हो मोहम्मदरज़ाखाँ! हमने जो कुछ बात की है वह तुम्हारे हक़ में की है। अगर हम इस वक्त तुम्हें नवाब बना देते तो जानते हो क्या होता?"

"क्या होता?"

"सब लोग यही कहते कि मोहम्मदरज़ाखाँ ने नवाब बनने

के लिये नज़मुद्दौला को मरवा डाला। तुम्हारे साथ हमारा भी नाम गन्दा होता।"

ये बातें बेग़म नज़मा के सामने हो रही थीं।

लार्ड क्लाइव ने बेग़म की ओर देख कर पूछा, "मैं ग़लत तो नहीं कह रहा हूँ बेग़म!"

नज़मा ने लार्ड क्लाइव की बिल्ली जैसी नीली आँखों में झाँक कर देखा तो उसे उनके अन्दर एक खूँखार आकृति दिखाई दी। उसका दिल हिल गया। उसने मोहम्मदरज़ाख़ाँ की ओर देखकर कहा, "मौजूदा हालात में वाक़ई आपको नवाब बनने का ख्वाब नहीं देखना चाहिये।"

"यू अण्डरस्टैंड दी सिचुवेशन (तुम स्थिति को समझती हो) बेग़म! इन्हें समझाओ। हमने जो कुछ किया है तुम्हारे हक़ में किया है। जिसे नवाब बनाया गया है, वह नाम का नवाब है। असल नवाब ये ही हैं बेग़म!"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ अपने दिल को मसोस कर रह गया। उसे अपने मन में अपने आप से ग्लानि सी होने लगी। उसने नवाब के मरवाने में जो भूमिका अभिनीत की थी उसका प्रयोजन मात्र नवाबी हासिल करना था। यह करने के पश्चात् भी जब नवाबी उसके हाथ से खिसक गई और कामयाबी हासिल न हुई तो उसे बहुत निराशा हुई। उसने किसी की बात का कोई उत्तर न दिया।

नज़मा बोली, "मुर्शिदाबाद और कलकत्ता, दोनों जगह यही अफ़वाह है कि नवाब साहब की हत्या आपने और लार्ड क्लाइव ने मिलकर कराई है। ऐसी हालत में अगर आप नवाब बने तो यह अफ़वाह सच मानी जायेगी।"

"यू आर राइट (तुम ठीक कहती हो) बेग़म! मैं भी यही

कहता हूँ। मोहम्मदरज़ाखाँ पालेटिक्स नहीं जानता। यह सिर्फ़ दौलत बटोरना जानता है। हम ख़ज़ाने का सब काम मोहम्मद-रज़ाखाँ को सौंपते हैं। नवाबी में क्या रखा है ? असल चीज़ तो खज़ाना है। नवाब के हाथों में कुछ नहीं रहेगा। सब रुपया तुम्हारे पास आयेगा।" लार्ड क्लाइव बोला।

मोहम्मदरज़ाखाँ नज़मा के साथ चुपचाप अपनी हवेली पर चला आया। उसका मन बहुत खिन्न था। नज़मा भी उस के दुःख में दुखी थी। वह अपने मन से मोहम्दरज़ाखाँ के नवाब बनने के विरुद्ध थी परन्तु क्योंकि वह उसके लिये दुखी था, इस-लिये उसका मन भी कुछ भारी हो उठा था।

लार्ड क्लाइव ने अपने मन में मुस्कराकर कहा, 'गधा कहीं का। नवाब बनना चाहता है। चार कौड़ी के आदमी को यह रुतबा दे दिया और फिर भी तसल्ली नहीं।' उसने बड़ी शान से अपना सिगार जलाया और कश खींचकर धुँआ आसमान में उड़ाता हुआ अपने कमरे की ओर बढ़ा तो सामने मिसेज़ स्पेन्सर उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थी।

"ओ मिसेज़ ! स्पेन्सर ! यू आर रियली बियुटीफुल (तुम वास्तव में सुन्दर हो)। लेकिन बेग़म नज़मा तुम से ज़ियादा ख़ूबसूरत है।"

"डेम इण्डियन (हिन्दुस्तानी)।" मिसेज़ स्पेन्सर ने कुढ़कर कहा और फिर नाटकीय ढंग से इठलाकर बोली, "एम आई नॉट लवली ?"

"यू आर (तुम हो)।" कहकर क्लाइव ने उसके होठों पर चुम्बन अंकित कर दिया।

लार्ड क्लाइव ने भारत में ऐश का जीवन व्यतीत किया। अनेकों अंग्रेज़ और भारतीय स्त्रियों को अपने जाल में फँसाकर

ख़राब किया।

लार्ड क्लाइव ने नवाब सिराजुद्दौला और नजमुद्दौला को ही नहीं, न जाने कितने निर्दोष व्यक्तियों को धोखे से मरवाया।

लार्ड क्लाइव ने भारतीय अमीरों, नवाबों, राजाओं और ताल्लुकेदारों को ही नहीं लूटा वरन् कम्पनी को भी नहीं बख्शा।

मोहम्मदरज़ाखाँ के साथ लार्ड क्लाइव ने केवल यही धोखा किया कि उसे नवाब नहीं बनवाया। इसके अतिरिक्त उसने उसे कोई धोखा नहीं दिया,—यह बात मोहम्मदरज़ाखाँ उस वक्त तक समझता रहा जब तक लार्ड क्लाइव हिन्दुस्तान में रहा।

जिस दिन लार्ड क्लाइव इङ्गलेण्ड के लिये रवाना हुआ, उस दिन मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा उसे विदा करने गये और जब तक उसका जहाज बन्दरगाह से रवाना नहीं होगया तब तक डेक पर खड़े रहे।

मोहम्मदरज़ाखाँ को लार्ड क्लाइव के जाने का खेद था क्यों कि नवाबी उसे चाहे नहीं मिली परन्तु इस बीच में दौलत उसने ख़ूब कमाई। अब वह दौलत की दृष्टि से अपने आपको किसी नवाब से कम नहीं समझता था।

मुर्शिदाबाद की दीवानी में उसने दोनों हाथों से दौलत बटोरी। उसने अपनी हालत भी मजबूत बनाई और लार्ड क्लाइव की भी जेबें ख़ूब गर्म कीं। क्लाइव ने जब भी उससे रुपया माँगा, उसने मना नहीं की। ताल्लुकेदारों से रुपया ऐंठने का उसने एक-से-एक नया तरीका अपनाया। उसके इस काम को सफल बनाने में लार्ड क्लाइव ने पूरा-पूरा साथ दिया।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने अधिकांश रुपया क्लाइव को बिना रसीद-पर्चे के ही दिया था परन्तु जो मोटी रक़में थीं वे सरकारी

रजिस्टर में दर्ज की गई थीं और उन पर लार्ड क्लाइव के हस्ताक्षर थे।

मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा कलकत्ता से मुर्शिदाबाद लौट आये।

दूसरे दिन मोहम्मदरज़ाखाँ जब अपने कार्यालय में गया तो उसने सोचा कि उन रक़मों का हिसाब लगा लिया जाये जो लार्ड क्लाइव को दी गई थीं क्यों कि हो सकता है नया गवर्नर हिसाब-किताब चैक कराले।

यह विचार मन में आते ही मोहम्मदरज़ाखाँ ने अपने नायब को बुलाकर वह रजिस्टर मँगवाया जिसमें वे रकमें दर्ज थीं।

नायब ने जाकर वह रजिस्टर मालख़ाने में देखा वह वहाँ नहीं था। वह रजिस्टर उसे वहाँ नहीं मिला तो नायब के होश उड़ गये। उसे पसीना आगया। वह परेशान हालत में मोहम्मद-रज़ाखाँ के पास आया। उसकी ज़ुबान से एक शब्द न निकला।

"क्या बात है इतनी परेशानी की ?"

"जी, रजिस्टर तो आलमारी में नहीं है।"

"नहीं है !" घबराकर मोहम्मदरज़ाखाँ के मुख से निकला।

"जी नहीं।"

"रजिस्टर कहाँ गया ?"

"जी, समझ में नहीं आ रहा।"

"रसीदों की फ़ाइल उठाकर लाओ।"

नायब फिर तुरन्त अन्दर गया और रसीदों की फ़ाइल उठाकर लाया।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने मोटी-मोटी रक़में अपने निजी हिसाब में भी दर्ज की हुई थीं। उसमें तारीखें देखकर रसीदों का फ़ाइल

उल्टा पलटा, परन्तु उसमें लार्ड क्लाइव के नाम की एक भी रसीद न मिली।

मोहम्मदरज़ाखाँ के पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गई। वह पागल की तरह नायब की ओर कुछ देर तक देखता रहा। कुछ होशोहवास दुरुस्त होने पर पूछा, "उस रोज़ जब लार्ड क्लाइव मुर्शिदाबाद आये थे तो क्या उन्होंने इन काग़-ज़ात को मँगवाया था?"

"जी, मँगाया तो था।"

"कौन ले गया था?"

"स्पेन्सर साहब। उनके साथ विलियम जोन्स भी था।"

"विलियम जोन्स कौन?"

"जी वही, जो अपने आपको अरबीदाँ, फ़ारसीदाँ, संस्कृत-दाँ, बंगालीदाँ और न जाने क्या-क्या दाँ कहा करता है। वही जो मुझसे अरबी और फ़ारसी के तर्जुमे कराकर ले जाता है। अरबी, फ़ारसी का एक हरुफ़ नहीं जानता और समझता है कि उससे आलिम कोई आज तक पैदा ही नहीं हुआ।"

नायब और भी न जाने क्या-क्या कहता रहा परन्तु मोह-म्मदरज़ाखाँ का ध्यान उस ओर नहीं था। वह पसीने से तर-बतर था। उसका सिर चकरा रहा था। उसने नायब से कहा, "पालकी मँगवाओ, हम घर जायेंगे।"

नायब ने चपरासी को भेज कर तुरन्त पालकी मँगादी और मोहम्मदरज़ाखाँ उसी दशा में अपने मकान पर पहुँचा।

बेग़म नज़मा मोहम्मदरज़ाखाँ की यह दशा देखकर परेशान हो उठी। उसकी समझ में कुछ न आया। उसने उसे पलंग पर लिटाकर एक दासी से कहा, "पंखा झलो" और दूसरी दासी को एक गिलास शिकंजवी का बनाकर लाने की आज्ञा दी।

शिकंजवी पीकर मोहम्मदरज़ाखाँ की तबियत कुछ ठीक हुई, परन्तु वह घबराया हुआ था।

"आप इतने परेशान क्यों नज़र आ रहे हैं?"

"नज़मा! ग़जब होगया?"

"क्या हुआ?"

"लार्ड क्लाइव ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा।"

"लार्ड क्लाइव ने!"

"हाँ नज़मा! क्लाइव ने मुझे बहुत बड़ा धोखा दिया। जिस आदमी को मैंने अपना दोस्त समझा और करोड़ों रुपये की आमदनी कराई, उसने मेरे साथ इस तरह की दग़ाबाज़ी की। उसने मुझे बर्बाद कर दिया। तुम्हारी बात ठीक निकली नज़मा! मैंने तुम्हारी बात पर ग़ौर नहीं किया, यह ज़िन्दगी में सबसे बड़ी भूल हुई।"

"आख़िर हुआ भी कुछ?" नज़मा ने पूछा।

"सब कुछ होगया नज़मा! आज तक जो कुछ किया था उस सब पर पानी फिर गया। लार्ड क्लाइव को हमने जो मोटी-मोटी रक़में दीं, वे जिस रजिस्टर में दर्ज थीं, वह रजिस्टर और उनकी रसीदें मालख़ाने से ग़ायब हैं।"

"रसीदें और रजिस्टर ग़ायब हैं!"

"हाँ नज़मा! रसीदों के फ़ाइल से वे रसीदें गायब हैं जिनपर क्लाइव के दस्तखत थे और वह रजिस्टर भी मालख़ाने में नहीं है जिसमें वे रक़में दर्ज की गई थीं। उस दिन लार्ड क्लाइव और स्पेन्सर मुर्शिदाबाद इसी काम के लिये आये थे।"

नज़मा कुछ बोली नहीं। फिर फुसफुसा कर कहा, "यह तो वाक़ई ग़ज़ब हो गया। ये रक़में तो करोड़ों की होंगी।"

"क़रीब दो करोड़ रुपये की रक़में हैं।"

"यह तो ग़बन समझा जायेगा।"

"बिलकुल ग़बन। बचने का कोई रास्ता नहीं।"

"नायब कैसा आदमी है?"

"अपना आदमी है।"

"उसे हाथ में रखना होगा और जिस तरह भी हो सके यह रक़म मालख़ाने में जमा करानी होगी।"

"इतनी बड़ी रक़म मैं कहाँ पाऊँगा नज़मा! क्लाइव के रहते तो फिर भी मेरे हथकण्डे चल जाते थे। अब ऊपर से कोई मदद न रहने पर यह सब कैसे होगा?"

क्लाइव के पश्चात् वेरेल्सट और कारटियर जब तक गवर्नर रहे तब तक बात दबी रही।

इस बीच मोहम्मदरज़ाखाँ ने हाथ-पैर मारने में कोई कसर नहीं की परन्तु उसका यह हाथ-पैर मारना डूबते का प्रयास मात्र ही रहा। इतनी बड़ी रक़म को पूरा करना कोई सरल काम नहीं था।

दो अमली शासन-व्यवस्था में, जो क्लाइव ने शाहआलम से दीवानी अधिकार प्राप्त करके क़ायम की थी, बंगाल के हर आदमी की जान और सम्पत्ति ख़तरे में पड़ गई। बंगाल के वे उद्योग-धन्धे, जिनकी ओर कभी विश्व चकित दृष्टि से देखता था, चौपट हो गये। व्यापार ठप्प हो गया, मंडियाँ अंग्रेजों द्वारा दिन दहाड़े लूटी जाने लगीं। सुरक्षा का कोई प्रबन्ध न रहा क्योंकि नवाब नाकारा हो चुके थे और उनके हाथों से दीवानी अधिकार निकल जाने पर आय की कमी में, उनकी सेना की शक्ति कम होगई थी।

प्रदेश की सब तिजारत हिन्दुस्तानियों के हाथों से अंग्रेज़ों के हाथों में चली गई। उनकी यह तिजारत, तिजारत नहीं, लूट

थी, क्यों कि भारत से जो माल बाहर भेजा जाता था, उसके बदले में बाहर से कोई माल नहीं आता था। इस तरह देश दिन-पर-दिन निर्धन होता जा रहा था।

दुर्भाग्यवश उसी समय बंगाल में सूखा के कारण भयंकर अकाल पड़ गया। अकाल और महामारियों ने बंगाल की जनता को घेर लिया। एक ओर यह दैविक विपत्ति और दूसरी ओर अंग्रेज़ों की लूट—इन दो चक्की के पाटों के बीच में जनता पिस रही थी। भारतवासियों के इस विपत्ति-काल में अंग्रेज़ों ने चावल ख़रीद-ख़रीद कर गोदामों में भर लिया और ख़ूब रुपया कमाया।

मोहम्मदरज़ाखाँ, जो पहिले अंग्रेज़ों को अपना दोस्त समझता था और बेग़म नज़्मा के कहने पर भी सोच-विचार न करके लार्ड क्लाइव का विश्वास करता रहा था, उसका दिल अब उनकी ओर से हट चुका था। उसके दिल में उनके प्रति नफ़रत पैदा हो गई थी। क्लाइव के इस विश्वासघात ने मोहम्मदरज़ाखाँ का जीवन ही बदल दिया था। अब वह हर समय इस घात में रहता था कि किस तरह उन्हें हानि पहुँचाये। नवाब नज़्मुद्दौला को मरवाने की कसक उसके दिल में उस समय भी हुई थी जब क्लाइव ने उसे नवाबी का झाँसा देकर दीवानी से आगे नहीं बढ़ने दिया था, परन्तु अब वह कसक और भी तीव्र हो उठी थी। वह उसका प्रायश्चित करना चाहता था।

गर्मी का मौसम था। सूर्य आग उगल रहा था। सूबे में त्राहि-त्राहि मची हुई थी। गाँवों की भूखी जनता शहरों की ओर दौड़ रही थी। मुर्शिदाबाद में कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिस दिन दस-बीस भूखे आदमियों के शव सड़कों पर पड़े हुए न मिलते हों। लाखों आदमी भूख के ग्रास हो चुके थे और

नित्य होते जा रहे थे, परन्तु अंग्रेज़ों के ऐश, लूट और रंगरलियों में कोई अन्तर नहीं था।

नज़मा बोली, "मालूम नहीं क्या होने वाला है। लगता है जैसे बंगाल में एक भी आदमी ज़िन्दा नहीं बचेगा। अंग्रेज़ों ने सूबे का सब चावल अपने कब्ज़े में कर लिया। इस तरह तो ये लोगों को तड़फ़ा-तड़फ़ा कर मार डालेंगे।"

"देख तो रहा हूँ नजमा! लेकिन समझ में यह नहीं आ रहा कि किया क्या जाये। कोई बात समझ में नहीं आ रही। मैं सोचता हूँ कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। ऐसे मौक़े पर अगर मैं अंग्रेज़ों की ज़रा भी मुख़ालिफ़त कर बैठा तो ये लोग मुझे दीवानी से बरतरफ़ कर देंगे और दीवानी से बर-तरफ़ होते ही सब राज़ खुल जायेगा।"

"यह बात ठीक है आपकी।"

जब ये बातें चल रही थीं तभी मोहम्मदरज़ाखाँ ने देखा मिस्टर स्पेन्सर छड़ी घुमाता हुआ चला आ रहा था।

मोहम्मदरज़ाखाँ और बेग़म नज़मा ने बड़े तपाक से उसकी आवभगत की। उसका हालचाल ज्ञात किया और बाद में पूछा, "क्या लार्ड क्लाइव साहब का कोई ख़त नहीं आया?"

"उनका ख़त तो कल ही मिला है मुझे। तुम्हें सलाम लिखा है। वह तुम्हारे बहुत-बहुत एहसानमन्द हैं। अगर सच पूछा जाये तो तुमने ही उन्हें लार्ड बना दिया।"

"इतनी बड़ी बात न कहो मिस्टर स्पेन्सर! बनाने वाला ख़ुदा है। इन्सान क्या कर सकता है? फिर भी उनकी जो ख़िदमत मुझसे बनी, करता रहा।"

स्पेन्सर बोला, "तुम्हारी बदौलत आज ऐश कर रहा है। क्लाइव था क्या जब हिन्दुस्तान आया था? तुमने उसे इतनी

दौलत दी कि नवाबों जैसी ऐश कर रहा है। कमबख्त ख़ूबसूरत तो है ही। रुपया पास होने से ख़ूबसूरती को चार चाँद लग गये। कभी इस डाइरेक्टर की बीवी को बगल में दबा कर घूमता है। और कभी उस डाइरेक्टर की। यहाँ रह कर भी उसने क्या नहीं किया? हमारी मेम साहब भी उस पर बुरी तरह लट्टू थीं। यहाँ कौन कौंसिल का मैम्बर ऐसा है जिसकी औरत को उसने अपने पहलू में नहीं रखा। लेकिन एक बात कहूँगा मोहम्मद-रज़ाखाँ! तुम्हारी बेग़म ने क्लाइव को खूब चक्कर दिया।"

"वह कैसे?"

"कैसे-वैसे मैं कुछ नहीं जानता। मैं तो यह जानता हूँ कि जिस औरत पर उसने हाथ रख दिया, वह खुद खिचकर उसके पास आ गई। एक तुम्हारी बेग़म में ही हमने यह खूबी देखी जो क्लाइव की ओर झुकी नहीं।"

स्पेन्सर की यह बात सुनकर मोहम्मदरज़ाखाँ ने गर्व का अनुभव किया और उसकी दृष्टि में बेग़म नज़मा के प्रति आदर की भावना जागृत हुई। इस रूप में उसने उसके विषय में कभी पहिले नहीं सोचा था।

स्पेन्सर बोला, "मोहम्मदरज़ाखाँ! तुमने क्लाइव को इतनी दौलत बख्शी तो कुछ हमारा भी काम कराओ। हम भी कुछ रुपया कमा कर अपने देश को लौट जायें।"

"वाह स्पेन्सर साहब! यह आपने खूब कहा। आपके लिये तो जान भी हाजिर है। कहिये क्या करूँ आप के लिये।"

"बीस-पच्चीस लाख का। चावल ख़रीदवा दीजिये सुना है इसमें बड़ा मोटा मुनाफ़ा है।"

"बहुत मिस्टर स्पेन्सर! देख नहीं रहे हो तुम्हारे साथी सब अंग्रेज़ इसी काम में मालामाल हो गये। मुर्शिदाबाद में उन

लोगों के गोदाम-के-गोदाम भरे पड़े हैं। तुम भी एक गोदाम में चावल भरवा दो। एक-एक चावल एक-एक रुपये का बिकेगा।"

"यह बात है।"

"बिलकुल।"

बात निश्चित हो गई। स्पेन्सर के पास जितना भी पैसा था, उस सब का चावल ख़रीदवा कर गोदाम में भरवा दिया गया।

मोहम्मदरज़ाख़ाँ स्पेन्सर पर कुढ़ा हुआ तो था ही क्यों कि मालख़ाने से क्लाइव की रसीदें वही उड़ा कर ले गया था, परन्तु ऊपर से उसने उस पर प्रेम-भाव ही प्रदर्शित किया।

मोहम्मदरज़ाखाँ का मुर्शिदाबाद में प्रभाव था। एक दिन उसने देखा कि शहर में देहात के भूखे लोगों की भीड़ जमा थी और अंग्रेज़ी फ़ौज उस दिन किसी देहात में गई हुई थी। उसने कुछ लोगों को उकसाकर चावलों के गोदामों के ताले तुड़वा दिये। तालों के टूटते ही लूट मच गई। बात-की-बात में सब गोदाम ख़ाली हो गये।

गोदामों के ख़ाली होने पर मोहम्मदरज़ाखाँ ने उन सब में आग लगवा दी और इरादा उसका यह था कि मालख़ाने को भी जलवा कर राख कर दे परन्तु तभी अंग्रेज़ी फ़ौज शहर में लौट आई।

मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने अंग्रेज़ों को दिखाने के लिये अपने मकान के एक हिस्से में भी आग लगवा दी।

इस बलवे की सूचना जब कलकत्ता पहुँची और स्पेन्सर के कानों में उसकी भनक पड़ी तो वह सीधा मुर्शिदाबाद के लिये लपका। यहाँ आकर उसने देखा, सब भस्म हो चुका था। स्पेन्सर उसे देखते ही अचेत होकर गिर पड़ा और

उसने वहीं दम तोड़ दिया।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने यों ऊपर से हमदर्दी ही ज़ाहिर की परन्तु दिल में उसने शांति और प्रसन्नता का अनुभव किया। उसने अपने मन में कहा, 'बदमाश ! तुझे ठीक सज़ा मिली।'

नज़मा की समझ में न आया कि मोहम्मदरज़ाखाँ ने यह कैसा भयंकर काण्ड रच दिया। वह यह सब देखकर आश्चर्य-चकित रह गई। उसे स्पेन्सर के विनाश से तनिक भी कष्ट न हुआ क्यों कि वह उससे घृणा करती थी।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने नज़मा को स्पेन्सर की मृत्यु का समाचार मुस्कराकर दिया।

नज़मा यह सुनकर बोली, "स्पेन्सर मर गया, वह कोई बात नहीं, लेकिन आपने इस काम में हिस्सा क्यों लिया ?"

"इसलिये कि मुझे यह काम कराना था। स्पेन्सर ने ही वे रसीदें लेजाकर क्लाइव को दी थीं।" यह कहकर मोहम्मद-रज़ाखाँ गम्भीर हो गया। वह कुछ ठहर कर बोला, "नज़मा ! मैंने नवाबी का ख्वाब देखकर अपनी ज़िन्दगी में एक ज़बर-दस्त गुनाह किया है।"

"क्या वाक़ई नवाब साहब को ज़हर दिलाने में आपका हाथ था ?" नज़मा की ज़ुबान से निकला।

"इसमें कोई शक नहीं नज़मा ! वह ग़द्दारी इसी बेग़ैरत मोहम्मदरज़ाखाँ ने की। इसके लिये तुम मुझे जो लानत देना चाहो दो, लेकिन मैं अब अपने उस गुनाह को छिपाकर नहीं चल सकता। यह बात तुम्हें बताकर मैंने अपने दिल का बोझ हलका किया है।"

नज़मा कुछ देर चकित दृष्टि से मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर देखकर बोली, "मुझे शक तो इस बात में पहिले भी नहीं

था लेकिन क्यों कि आपने मुझ पर ज़ाहिर नहीं किया था, इस लिये मैं कभी ज़ुबान पर नहीं लाई।"

"नज़मा! वह काम मैं क्लाइव के कहने पर कर तो गया लेकिन उसे करने के बाद से आज तक चैन नहीं पाई। नवाब ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा था। वह मुझ पर यकीन करता था। मैंने उसके साथ नहीं, अपनी ज़मीर के साथ ग़द्दारी की। उसकी सज़ा मुझे एक दिन ज़ुरूर भुगतनी होगी नज़मा! और मैं उसके लिये हमेशा तय्यार रहूँगा।"

नज़मा मोहम्मदरज़ाखाँ की इसी दिलेरी और मुस्तकिल-मिजाज़ी पर फ़िदा थी। उसने लापरवाही से कहा, "जो होगया वह वापस नहीं आ सकता।

उसे हर वक्त दिमाग़ में रखना कोई दानिशमन्दी की बात नहीं है।"

"स्पेन्सर के मरने की मुझे अज़हद खुशी है। ख़ुदापाक ने मुझे मौक़ा दिया तो मैं अंग्रेज़ों को जितना भी हो सकेगा नुक-सान पहुँचाने की कोशिश करूँगा। दौलत की हविस मेरे अन्दर थी बेग़म! मैं नवाब भी बनना चाहता था। यह हविस और ख्वाहिश क्लाइव की पैदा की हुई थी। उसके चले जाने पर इनका भी जनाज़ा निकल गया। अब मेरी इस तरह की कोई तमन्ना नहीं है।"

उस दिन बहुत देर तक बातें चलती रहीं। अंधेरी रात थी। नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ पलंग पर बैठे हुए थे। आकाश तारों से भरा था।

"नज़मा! वारेनहेस्टिंग्स, जो अब फ़ोर्ट विलियम का गवर्नर बना है, बहुत मामूली हैसियत में हिन्दुस्तान आया था। वह यहीं मुर्शिदाबाद में एक बैरिस्टर के पास चालीस रुपया

माहवार पर मुलाज़िम था। कुछ ख़ास पढ़ा लिखा आदमी नहीं है यह। इसकी मैंने हज़ारों बार रुपये-पैसे से मदद की है।"

"तब तो आपको वह खूब जानता होगा।"

"ख़ूब नज़मा! लेकिन यह यकीन के क़ाबिल आदमी नहीं है। मैं इसे कई बार आज़मा चुका हूँ। रुपये का इतना लालची है कि उसे हासिल करने के लिये यह शर्मोहया को पास तक नहीं फटकने देता।"

"तब तो यह क्लाइव से भी ज़ियादा ख़तरनाक है।"

"इस में कोई शक नहीं। आजकल इसकी नज़र मेरी दीवानी पर है। हमने सुना है कि इसने दो असली हकूमत का ख़ात्मा करके नवाबी को ख़त्म करने का इरादा मुकम्मल कर लिया है।"

"तब तो वह आपसे आगे-पीछे का सब हिसाब तलब कर सकता है।"

"यही करने का तो उसका इरादा है। उसने महाराजा नन्दकुमार को दीवान बनाने का लालच देकर अपनी ओर कर लिया। महाराजा नन्दकुमार सूबे के दीवान रह चुके हैं। उन्हें यहाँ के सब हालात मालूम हैं।"

"तब तो सब राज़ खुल जायेगा।"

"खुल जाने दो नज़मा! जो मुसीबत सिर पर आयेगी उसे रोकर नहीं, हँसकर सहेंगे। तुम परवाह न करो। तुम्हारे लिये मेरे पास सब कुछ है।"

नज़मा की आँखें नम होगईं।

दो-चार दिन पश्चात ही मोहम्मदरज़ाखाँ को मालूम हुआ कि दीवान शिताबराय को गिरफ्तार करके कलकत्ता

भेज दिया गया और उस पर ग़बन तथा अमानत में ख़यानत का दोषारोपण किया गया है। यह समाचार पाकर मोहम्मदरज़ाख़ाँ के कान खड़े हुए। वह नज़मा से बोला, "नज़मा ! लगता है अब किसी भी वक्त हमें गिरिफ्तार किया जा सकता है।"

"क्यों, क्या कोई नई ख़बर है ?"

"हाँ, और बहुत ख़तरनाक।"

"वह क्या ?"

"दीवान शिताबराय को गिरिफ्तार कर लिया गया।"

"दीवान शिताबराय को ! यह तो ग़ज़ब कर दिया हेस्टिंग्स ने। शिताबराय के तो अंग्रेज़ों पर लाखों अह-सानात हैं। महाराजा शिताबराय का लड़का कल्यान सिंह अगर नवाब शुजाउद्दौला की फ़ौज की जानकारी अंग्रेज़ों को न देता तो क्या ये कभी नवाब शुजाउद्दौला को हरा पाते ? शिताब-राय ने ही शुजाउद्दौला की फ़ौज के आला अफ़सर ग़ुलामहुसेन को घूस देकर अंग्रेज़ों की ओर फोड़ा और फिर शाहआलम को नवाब शुजाउद्दौला से अलग करने में भी महाराजा शिताब-राय का हाथ था।"

"सिर्फ़ इतना ही नही बेग़म ! वह शिताबराय की ही फ़ौज थी जिसने इलाहाबाद के क़िले को सर करके शहंशाह शाह-आलम पर अंग्रेज़ों की धाक जमाई और उसी की बदौलत इन्हें बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी के हुक़ूक हासिल हुए। लार्ड क्लाइव को नवाब शुजाउद्दौला से जो रुपया हासिल हुआ वह सब महाराजा शिताबराय ने ही दिलाया था।

हेस्टिंग्स की भी उसने कई बार मदद की है। हेस्टिंग्स जिस पतीली में खाता है उसी को फोड़ता है।"

"मेरा ख़याल ग़लत तो नहीं निकला अंग्रेजों के बारे में? मैंने इसी लिये आप से कहा था कि आप सोच समझकर क़दम बढ़ाना, लेकिन आप क्लाइव के जाल में उस वक्त ऐसे फँस गये थे कि आपने बहुत सी राज़ की बातें मुझसे भी छिपा रखीं। अगर उस वक्त ये बातें मुझसे न छिपाते तो मैं हर्गिज़-हर्गिज़ आपको क्लाइव के चक्कर में न फँसने देती।"

मोहम्दरज़ाखाँ की गर्दन नज़मा के सामने झुक गई। उसकी आँखों में आँसू उभर आये। वह बोला, "नज़मा! मेरा सबसे बड़ा गुनाह यही है कि मैंने तुम पर भी यकीन नहीं किया। मुझे मुआफ़ कर दो नज़मा! मैं तुम्हारा गुनहगार हूँ।"

नज़मा ने मोहम्मदरज़ाखाँ के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, "आपने ख़ादिमा पर जो अहसान किये हैं उनके सामने यह बात नाचीज़ है। आपने कोई गुनाह नहीं किया। इसकी अहमियत इसी लिये है कि इसने हम लोगों को ज़बर-दस्त मुसीबत में फँसा दिया है। जिस दिन हम दोनों को लार्ड क्लाइव ने फोर्टविलियम के जशन में बुलाया था और आप से पोशीदा गुफ़्तगू की थी, मैं उसी दिन समझ गई थी कि वह आपको फँसाने का जाल रच रहा है। इसी लिये मैंने बहुत साफ़-साफ़ उसकी नियत पर शक किया था।"

"मुझे याद है नज़मा! तुम्हारी दूरन्देशी पर अगर मैं ग़ौर से अमल करता तो हमें यह दिन देखना नहीं पड़ता। लेकिन उस वक्त मेरे सिर पर नवाबी का भूत सवार था। मैंने अपने मन में तुम्हारी बात को कोई अहमियत नहीं दी।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी उनका नौकर बद्री पंडित हाँफ़ता हुआ महल में दाख़िल हुआ। वह सीधा उनके कमरे में चला आया और लड़खड़ाती आवाज़ में बोला, "मालिक!

ख़तरा।"

"कैसा ख़तरा ?" मोहम्मदरज़ाखाँ ने हड़बड़ा कर पूछा।

"अंग्रेज सारजेण्ट आया है। मेरे कानों में भनक पड़ी है कि वह आपको गिरिफ्तार करने आया है।"

यह समाचार पाकर मोहम्मदरज़ाखाँ ने होशोहवास नहीं खोये। उसे पहिले से ही शक था कि यह हादिसा किसी भी वक्त हो सकता है। वह गम्भीर वाणी में बोला, "नज़मा! तुम बद्री के साथ कलकत्ता चली जाओ। कहीं ऐसा न हो कि सार्जेण्ट हम दोनों पर हाथ डाल दे और बचाव करने वाला कोई न रहे। तुम बैरिस्टर जोंस्टन से मिलना और बचाव की कोशिश करना। मैं यहाँ से भागूँगा नहीं।"

नज़मा की आँखों में आँसू आगये। वह भर्राई सी आवाज़ में बोली, "मैं आपको छोड़कर नहीं जाना चाहती।"

"नादानी करने का वक्त नहीं है। ये लो कलकत्ते की कोठी की चाबियाँ और फ़ौरन कलकत्ता जाकर जोंस्टन से मुलाक़ात करो। वह मुझे ज़मानत पर छुड़ा लेगा।"

नज़मा ने चाबियों का गुच्छा हाथ में लेकर ड्बड्बाई आँखों से मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर देखा और फिर तेज़ी से बद्री पंडित के साथ महल से बाहर हो गई।

मोहम्मदरज़ाखाँ उसी तरह मसनद पर बैठा रहा। कुछ देर बाद सारजेण्ट कुछ अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहाँ आया। उसके अन्दर आने में किसी ने कोई रुकावट पैदा नहीं की।

सारजेण्ट ने मोहम्मदरज़ाखाँ के सामने आकर उसे सेल्यूट देकर उसकी गिरफ़तारी के काग़ज़ सामने रखकर कहा, "गवर्नर साहब ने आपको कलकत्ता याद फ़रमाया है।"

"इसके लिये तुम्हारे आने की क्या जुरूरत थी ? हमारे

पास ख़बर भेज देते तो क्या हम ख़ुद न चले आते ?"

सारजेण्ट चुप रहा ।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने कलकत्ता जाने की तय्यारी की और चन्द मिनटों में चलने के लिये तय्यार हो गया । उसने फिर सारजेण्ट से कोई बात नहीं की ।

सारजेण्ट ने मोहम्मदरज़ाखाँ को हिरासत में लेलिया । वह उसे हिरासत में लेकर मुर्शिदाबाद के बाज़ार से निकले तो देखने वाले हैफ़ में रह गये । कुछ लोगों की आँखों में आँसू आगये, क्यों कि इधर उसका व्यवहार ग़रीब लोगों के साथ बहुत सदय रहा था ।

पांच

नज़मा बद्री पंडित के साथ कलकत्ता आगई। उसने उसी दिन मोहम्मदरज़ाख़ाँ के दोस्त बैरिस्टर जोन्सटन से भेंट की और उसे सब हालात से आगाह किया।

नज़मा का ख़याल था कि जोन्सटन, मोहम्मदरज़ाखाँ का मित्र होने के नाते केस में दिलचस्पी लेगा, परन्तु उसने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। उसने नज़मा को धैर्य बँधाने के बजाये और निराश करने वाली बातें कीं। वह छूटते ही बोला, "केस निहायत संगीन है। वारेन हेस्टिंग्स की मुख़ालिफ़त कौन जज कर सकता है?"

"इसका मतलब यह हुआ कि ये अदालतें इन्साफ़ करने के लिये नहीं हैं।"

जोन्सटन नज़मा की बात पर मुस्कराया। फिर चश्मा उतारकर नज़मा की ओर देखा। वह ज़रा ठहर कर बोला, "बेग़म! इन्साफ़ तो खुदा के घर जाकर नसीब होता है। यहाँ तो सबको हुकूमत के हाथों में नाचना पड़ता है। फिर यह तो केस ही संगीन है। जिस केस में गवर्नर हिस्सा ले, वह संगीन तो हो ही जाता है।"

"संगीन क्या है? किसी का क़त्ल नहीं किया। कोई डकैती

नहीं डाली। बग़ावत नहीं की। कम्पनी की ख़ैरख़ाही में आज तक ज़िन्दगी गुज़ारी है। फिर संगीन जुर्म क्या है?"

"ग़बन!"

"यह ग़बन भी उन्होंने किया नहीं, कराया गया है और कम्पनी के किसी आला अफ़सर ने कराया है, जिसका नाम नहीं लिया जा सकता। दिल से गवर्नर साहब ख़ुद भी सब कुछ जानते हैं। उनसे छिपा नहीं है कुछ। अपने आदमी को अगर हटाना ही हो किसी जगह से तो बाइज़्ज़त हटना चाहिये, न कि उस पर इलज़ाम आयद करने।"

"बातें आपकी सब ठीक हैं लेकिन गवर्नर जो चाहेगा, होगा वही। अदालत वही करेगी जो वह चाहेंगे। आपकी सफ़ाई में कोई काग़ज़ नहीं है। अदालत को यकीन भी कैसे दिलाया जा सकेगा। अदालत ज़ुबानी बातों पर यकीन नहीं करती। केस बहुत संगीन है और इस तरह के केसों में गवर्नर बहुत सख़्ती बरत रहे हैं।" जोन्सटन ने कहा।

"इसका मतलब है आप कुछ नहीं कर सकते।"

असमर्थता प्रकट करके जोन्सटन बोला, "इसी तरह का केस महाराजा शिताबराय पर भी चल रहा है। उसने भी ग़बन किया है लेकिन उसके ख़िलाफ़ कोई ज़बरदस्त शहादत नहीं है और काग़ज़ों का पेट भी उसने भरा हुआ है। मोहम्मदरज़ख़ाँ के ख़िलाफ़ शहादत भी ज़बरदस्त है और काग़ज़ात से भी साफ़ ज़ाहिर है कि ग़बन किया गया। आपके कहने पर मैं मान भी लूँ कि उसने ग़बन नहीं किया, लेकिन अक्ल गवाही नहीं देती कि मोहम्मदरज़ाख़ाँ जैसा चालाक आदमी इस तरह की भूल कर सकता है।"

"चालाक!" नज़मा की ज़ुबान से निकला। उसके दिल पर

चोट लगी जब जोन्सटन ने मोहम्मदरज़ाखाँ को चालाक कहा। "उन्हें चालाक कहना भारी भूल है। वह चालाक होते तो इतना रुपया बिला रसीद-पर्चे के किसी को दे देते ?"

यह सुनकर जोन्सटन मुस्कराया। फिर बोला, "यह रुपया किसी को दे दिया, यह बात तो आप कहती हैं बेग़म ! गवर्नर साहब का तो ख़याल है कि यह सब रुपया आपकी तिजोरी में बन्द है।"

जोन्सटन का यह उत्तर सुनकर नज़मा अन्दर-ही-अन्दर काँप उठी। बात भी स्पष्ट थी। इस बात पर अदालत कैसे विश्वास कर सकती थी कि वह रुपया मोहम्मदरज़ाखाँ ने किसी को दे दिया। रुपया इस तरह देने की चीज़ नहीं होती और वह भी सरकारी ख़ज़ाने का रुपया। नज़मा ने निराश दृष्टि से जोन्सटन की ओर देखा। वह बोली "क्या आप उनकी ज़मानत भी नहीं करा सकते ?"

"ज़मानत ! इतने संगीन जुर्म में ज़मानत कैसे हो सकती है ? गवर्नर साहब ज़मानत पर किसी को रिहा करने के हक़ में नहीं हैं।"

जोन्सटन का स्पष्ट उत्तर सुनकर नज़मा चिंता में डूबी हुई उसकी कोठी से चुपचाप वापस लौट पड़ी। उसकी समझ में नहीं आरहा था कि वह अब क्या करे। जोन्सटन के पास वह यह आशा लेकर आई थी कि वह ज़मानत तो करा ही देगा। फिर मोहम्मदरज़ाखाँ के बाहर आने पर उपाय सोचा जायेगा।

चिंता में डूबी हुई नज़मा पैदल ही सड़क पर आगे बढ़ रही थी। वह धीरे-धीरे चलती हुई अपनी हवेली पर पहुँची तो बद्री पंडित ने पूछा, "कोई बात बनी बेग़म साहिबा ?"

नज़मा ने निराशापूर्ण दृष्टि से बद्री पंडित की ओर देखा।

उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। उसे आशा न रही कि वह फिर कभी नवाब साहब को दुबारा देख सकेगी।

नज़मा नृत्य-कला में प्रवीण थी। इधर उसने अंग्रेज़ी डांस में भी दक्षता प्राप्त करली थी और अंग्रेजी बोलना भी उसे आ गया था। रंग उसका इतना साफ़ था कि जब वह अंग्रेज़ औरतों के कपड़े पहिन लेती थी तो एक दम मेम मालूम देती थी। कोई पहिचान नहीं सकता था कि वह भारतीय नारी है।

नज़मा के मन में न जाने क्या आया कि उसने अंग्रेजी कपड़े धारण किये और घर से निकल कर चल दी। ये कपड़े उसने अंग्रेजी डांस सीखने के लिये बनवाये थे क्यों कि अंग्रेजी नाच-घरों में हिन्दुस्तानियों का प्रवेश वर्जित था।

नज़मा घर से निकलकर सीधी अंग्रेजी नाच घर में पहुँची और उसके बाहर लगे पोस्टरों को देखने लगी।

नाच-घर के सामने दर्शकों की भीड़ लगी थी। टिकट-घर की खिड़की पर बड़ी भीड़ थी। उस दिन कोई नई नर्तकी वहाँ आई हुई थी।

निश्चित समय पर दर्शक नाच-घर के अन्दर जाकर बैठ गये और कार्य-क्रम आरम्भ हो गया। नाच-घर के बाहर की चहल-पहल समाप्त हो गई। अकेली नज़मा एक पोस्टर के सामने खड़ी उस पर बने चित्र को देख रही थी।

नृत्य आरम्भ होने पर नाच-घर का मैनेजर हाल से बाहर आकर अपने कार्यालय में गया और फिर बाहर निकल आया। उसकी दृष्टि अनाचाल ही नज़मा पर गई तो वह उसके रूप को देखता रह गया। इतना आकर्षक चेहरा उसने अपने जीवन में पहिले कभी नहीं देखा था।

मैनेजर के क़दम धीरे-धीरे नज़मा की ओर बढ़ गये।

मैनेजर ने नज़मा को अंग्रेज़ औरत समझकर कहा, "शायद आपको आने में देर हो गई।"

"जी।"

"आज हमारे नाच-घर में एक नई डांसर आई है।"

"मैंने यही सुना था। मुझे डांस करने का बचपन से बहुत शौक रहा है।"

"क्या आप भी डांस करती हैं।"

नज़मा ने मुस्कराकर कहा, "डांस करना मेरा पेशा नहीं, शौक है।"

"मैं समझा। आपको डांस करने का शौक है। आप किसी दिन हमारे नाच-घर की रौनक़ बढ़ायें। हमारे मालिक, मिस्टर स्तीफ़ेन एमेच्योर्स (नये सीखने वाले) को भी स्टेज पर चांस (अवसर) देते हैं।"

मैनेजर की बात सुनकर नज़मा मुस्कराई।

"चलिये आपको आज का शो (खेल) दिखाऊँ। आप देख हमारे यहाँ कैसे-कैसे आर्टिस्ट आते हैं।"

"चलिये" कहकर नज़मा मैनेजर के साथ चल दी।

"क्या आप बता सकेंगी, मैं आपको किस नाम से पुकारूँ ?"

"क्यों नहीं, मेरा नाम मिस मेरी है।"

"बड़ा प्यारा नाम है।"

नज़मा मैनेजर के साथ अन्दर नाच-घर में चली गई। उसने वहाँ जो नृत्य देखे, उनमें प्रदर्शन और कला नाम मात्र को भी नहीं था।"

"देखा आपने, कैसा लगा ?"

"आर्डिनरी (साधारण)।"

मैनेजर ने आश्चर्य के साथ नज़मा की ओर देखा। वह

बोला, "क्या आप इनसे अच्छा डांस कर सकती हैं ?"

"इट इज़ नो डांस (यह कोई नृत्य ही नहीं है)।"

मैनेजर चमत्कृत हो उठा। उसने पूछा, "क्या आप कलकत्ता में ही रहती हैं ?"

"जी ! यहाँ मेरी अपनी निजी कोठी है। मेरे पिता एक बड़े व्यापारी थे, उनकी मृत्यु हो गई। माता मेरी पहिले ही मर चुकी थीं। मेरा कोई अन्य सम्बन्धी भी हिन्दुस्तान में नहीं है। अकेली ही हूँ।" नज़मा ने कहा और फिर मुस्कराकर मैनेजर की ओर देखा।

"तो क्या आप अकेली ही रहती हैं ?"

"जी, बिलकुल अकेली।"

नृत्य समाप्त होने पर नज़मा मैनेजर के साथ नाच-घर से बाहर आई। वह नज़मा को अपने कार्यालय में ले गया। दोनों काफ़ी देर तक बातें करते रहे। मैनेजर ने पूछा, "क्या आप अपने डांस का कुछ चार्ज करती हैं ?"

"जी नहीं। यह मेरी हाँबी (शौक) है।"

"आप कल सुबह हमारे रिहर्सल में तशरीफ़ लाइये। उस समय हमारे मालिक मिस्टर स्तीफेन से आपकी मुलाक़ात होगी। बहुत अच्छे आदमी हैं। आपको उनसे मिलकर ख़ुशी होगी।"

"मैं ज़ुरूर आऊँगी।" मुस्कराकर नज़मा ने कहा।

"मैं आपको आपकी कोठी तक पहुँचा आऊँ।"

"जी नहीं, मुझे अभी किसी और जगह जाना है।"

नज़मा नाच-घर से सीधी अपनी हवेली पर आई। बद्री पण्डित उसकी प्रतीक्षा में था। नज़मा सीधी अपने कमरे में चली गई। उसने अंग्रेज़ी पौशाक उतार कर भारतीय वस्त्र धारण

किये और चुपचाप पलंग पर लेट गई।

"खाना ले आऊँ।"

"नहीं बद्री ! खाने का मन नहीं हो रहा। मैं सोच रही हूँ कि अब क्या होगा ?"

"बेग़म साहिबाँ ! नवाब साहब को इन लोगों ने क्यों पकड़ लिया ? वह तो अंग्रेज़ों के बहुत गुण गाया करते थे। क्लाइव साहब कितनी इज़्ज़त करते थे नवाब साहब की।"

नज़मा कुछ नहीं बोली। उसके मन में न जाने क्या-क्या आ रहा था।

नज़मा जोन्सटन के विषय में सोच रही थी। उसके मुख से सहानुभूति का एक शब्द भी नहीं निकला। मोहम्मदरज़ाखाँ उसे अपना दोस्त समझते थे। उसके सब अंग्रेज़ दोस्तों की क़लई खुलती जा रही थी। इस जोन्स्टन को मोहम्मदरज़ाखाँ ने लाखों रुपया बनवाया था। कितने ही ताल्लुक़ेदारों के मुक़दमे दिलवाये थे और स्वयँ भी काफ़ी रुपया दिया था। उसे उस पर बहुत भरोसा था क्योंकि वारेनहेस्टिंग्स ने इसी बैरिस्टर के पास सबसे पहिले मुर्शिदाबाद में आकर नौकरी की थी। उसी समय मोहम्मदरज़ाखाँ की इससे जान-पहिचान हुई थी। धीरे-धीरे यह जान-पहिचान मित्रता में बदल गई थी।

जोन्सटन की प्रेक्टिस कलकत्ते में जमवाने और उसे कलकत्ते में बसाने का श्रेय भी मोहम्मदरज़ाखाँ को ही था। उसी ने जोन्सटन को यह कोठी लेकर दी थी, जिसमें वह रह रहा था। वह चाहता तो हेस्टिंग्स पर अपना प्रभाव डालकर कम-से-कम जमानत पर तो मोहम्मदरज़ाखाँ को छुड़वा ही सकता था। जोन्सटन यह भी जानता था कि जिस रुपये के ग़बन का जुर्म मोहम्मदरज़ाखाँ पर आयद किया गया था, वह रुपया लार्ड

क्लाइव को दिया गया था।

नज़मा चित्त की व्याकुलता में पलंग पर लेटी न रह सकी। वह पलंग से उठ कर कमरे में घूमने लगी। वह जोन्सटन के व्यवहार को भुला नहीं पा रही थी। उसका चित्त अब इस विचार पर दृढ़ हो गया था कि अंग्रेज़ क़ौम स्वार्थी और दग़ाबाज़ होती है। इसका विश्वास नहीं किया जा सकता। इसे घूस देकर भले ही इससे कोई अपना काम निकाल सकता है। यह क़ौम पैसे की यार है। इसकी मित्रता का कोई मतलब नहीं। अंग्रेज़ों का जिस-जिसने भी यकीन किया है, वही वर्बाद हुआ है।

नज़मा का दिल टुकड़े-टुकड़े हुआ जा रहा था। उसकी समझ कुछ काम नहीं कर रही थी।

बद्री पण्डित तभी नज़मा के निकट आकर बोला, "बेग़म ! इस तरह भूखी कब तक रहोगी ? कल से आपने कुछ नहीं खाया। भूखी रहकर आप इतनी बड़ी मुसीबत का सामना कैसे कर सकेंगी ?"

बद्री पंडित की आँखें डबडबाई हुई थीं। उसने भी कल से अन्न-जल ग्रहण नहीं किया था।

नज़मा ने बद्री पंडित का उदास चेहरा देखा और उसकी बात सुनी तो यह बात उसकी समझ में आई कि वास्तव में बिला खाये-पिये वह इस आपत्ति के पर्वत को नहीं उठा सकेगी। उसने बद्री पंडित से कहा, "पंडित खाना लगा लाओ और तुम भी खाना खालो। तुमने ठीक कहा कि हमें इस मुसीबत से लड़ने के लिये खाना खाना ही होगा। भूखे रह कर हम नवाब साहब को नहीं बचा सकेंगी।"

बद्री पंडित नज़मा का खाना ले आया। नज़मा भोजन करने बैठी तो टुकड़ा हलक़ से नीचे उतरना दूभर हो गया। फिर भी

उसने खाना खाया, इसलिये कि उसे संघर्ष करना था।

नज़मा भोजन करके बैठी ही थी कि बद्री पंडित ने उसे सूचना दी, "बैरिस्टर साहब आये हैं।"

"उन्हें दीवानख़ाने में बिठाओ।" नज़मा ने कहा।

नज़मा ने कपड़े बदले और दीवानख़ाने में जाने को उद्यत हुई तो उसे ध्यान आया कि बैरिस्टर जोंस्टन, जिसने संध्या को उसे स्पष्ट उत्तर दे दिया था, इस समय क्यों आया। नज़मा को समझाने में विलम्ब न हुआ कि वह रुपये के लालच से उसके पास आया है।

नज़मा दीवानख़ाने में पहुँची तो मिस्टर जोंस्टन ने खड़ा होकर उसे 'गुडईवनिंग' कहा। नज़मा चुपचाप मसनद पर जाकर बैठ गई।

"इस वक्त कैसे तकलीफ़ की बैरिस्टर साहब! क्या कोई नई बात समझ में आई?"

"हमने सोचा कि कोशिश करके देखना चाहिये। मामला सगीन तो है लेकिन शायद कोई रास्ता निकल आये। रुपये में बहुत ताक़त होती है। जो काम किसी चीज़ से नहीं निकलता, वह रुपये से निकल सकता है। लेकिन रुपया आपको पानी की तरह बहाना होगा।"

"पानी की तरह रुपया बहाने वाला तो नज़रबन्द है बैरिस्टर साहब! उसकी ज़मानत करा दीजिये, फिर रुपये की क्या कमी?"

"लेकिन ज़मानत भी तो बिला पैसा ख़र्च किये नहीं हो सकती बेगम!"

"क्यों? क्या आपको यकीन नहीं है कि आपका इस काम में जो रुपया ख़र्च होगा वह आपको मिल जायेगा?"

"यह यकीन की बात नहीं है बेग़म ! रुपया ख़र्च करने की बात है। आप रुपया देंगी, तभी तो मैं ख़र्च करूँगा।"

"मेरे पास रुपया कहाँ से आया बैरिस्टर साहब ! वह तो कहा करते थे कि आपकी उनसे बड़ी दोस्ती है। इसी लिये मैं आपके पास गई थी। क्या आप उनकी इस मुसीबत के वक्त में इतनी भी मदद नही कर सकते ?"

जोन्सटन को मोहम्मदरज़ाखाँ का अभी भी नक़द पचास-साठ हज़ार रुपया देना था। जब उसने कलकत्ते में वकालत आरम्भ की थी तो उसने यह रुपया मोहम्मदरज़ाखाँ से कर्ज़ लिया था। उसमें से एक फूटी कौड़ी भी उसने अभी तक नहीं लौटाई थी।

जोंस्टन बगलें झाँकता हुआ बोला, "बेग़म ! मेरे पास इतना रुपया कहाँ है जो मुक़दमे में ख़र्च करूँ। तुम जानती हो कि मुक़दमा बहुत संगीन है। इसमें फ़ाँसी की सज़ा भी हो सकती है।"

फाँसी की बात सुनकर नज़मा कुछ तिलमिलाई, परन्तु तुरन्त ही उसने निश्चय कर लिया कि वह जोन्सटन को रुपया नहीं देगी। वह मोहम्मदरज़ाखाँ को अपने ही प्रयत्न से बचाने का प्रयास करेगी। उसे जोन्सटन पर विश्वास नहीं रहा था। उसे भय था कि कहीं वह उसके साथ विश्वासघात न कर बैठे।

नज़मा बोली, "बैरिस्टर साहब ! आप बैरिस्टर ठहरे। क़ानून के फ़रिश्ते हैं आप। जिस जुर्म को चाहें संगीन कह सकते हैं, लेकिन मुझे तो इसमें कोई संगीन बात दिखाई नहीं दे रही। मामूलो सी रुपये की बात है, सो रुपये से हल हो सकती है।"

"हाँ-हाँ, यही तो मैंने कहा कि रुपया सब कुछ कर सकता

है। आप रुपये का इन्तज़ाम करें तो क्या नहीं हो सकता ?"

जोंस्टन ने विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया परन्तु नज़मा को उसका विश्वास न हुआ। वह जानती थी कि जोंस्टन मात्र रुपया ऐंठने का प्रयत्न कर रहा था। इसके अतिरिक्त उसका अन्य कोई मक़सद नहीं था।

नज़मा बोली, "बैरिस्टर साहब! आपने उनकी बदौलत लाखों रुपया कमाया है। आपको उन्होंने अपने हाथ से भी कम रुपया नहीं दिया। मेरी इस मुसीबत के वक्त आप जो रुपये का सवाल कर रहे हैं उसे सुनकर मुझे हैरत होती है। औरत को रुपया कौन देता है ? आपको ही उनका पचास-साठ हज़ार रुपया देना है। अगर मैं आप से माँगू तो क्या आप देंगे ? बस यही हाल सब लोगों का है। आप उनकी ज़मानत करादें, फिर देखिये वह कैसे पानी की तरह रुपया बहाते हैं।"

नज़मा की बात सुनकर जोन्सटन का चेहरा लटक गया। उसने बड़े ध्यान से नज़मा की ओर देखा। उसने देखा की यह भोले-भाले चेहरे वाली बेग़म, जिसे नासमझ और हताश समझकर, वह ठगने के लिये वहाँ तक दौड़कर आया था, काफ़ी समझदार और धैर्यशील तथा चतुर थी। जोन्सटन बोला, "बेग़म! मेरे पास तो इस वक्त रुपया बिलकुल नहीं है और रुपये के बिना यह काम हो नहीं सकता। मुझे सख्त अफ़सोस है कि मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता।"

जोन्सटन चला गया।

बद्री पंडित द्वार पर खड़ा जोन्सटन की बातें सुन रहा था। अंग्रेजी वह नहीं जानता था, फिर भी समझ गया कि वह बेग़म से रुपया ठगने आया था। वह बोला, "बेग़म साहिबा!

यह आदमी बड़ा धूर्त्त है। इसने अभी हमारा पहिला रुपया भी नहीं लौटाया है।"

नज़मा मुस्कराकर बोली "अब यह और रुपया ठगने आया था। इसने समझा था कि मैं परेशानी में इसे दौलत बख्श दूँगी।"

दूसरे दिन प्रातःकाल नज़मा ने यूरोपियन वस्त्र धारण किये और नाचघर के लिये रवाना हो गई। वह नाचघर में पहुँची तो मैनेजर ने उसका नाचघर के मालिक मिस्टर स्तीफ़ेन से परिचय कराया।

स्तीफ़ेन की दृष्टि नज़मा पर पड़ी तो उसका चेहरा खिल गया और उसके क़दम आप-से-आप नज़मा की ओर उठगये।

नज़मा एक शब्द न बोली, केवल मुस्करा भरदी उसकी ओर देखकर। इस बीच में उसने अंग्रेज़ी बोलने का काफ़ी अभ्यास कर लिया था, परन्तु फिर भी उसे संकोच होता था। इस लिये वह बहुत कम बोलती थी। वह बहुत ही नपे-तुले शब्दों क उचारण करती थी।

मिस्टर स्तीफ़ेम ने नज़मा के लिये अपना विशेष कमरा खुलवाया।

"हमारे मैनेजर ने हमसे आपका ज़िक्र किया था। उसने कहा था कि डांस आपकी हॉबी (शौक) है। आपको बचपन से डांस करने का शौक रहा है।"

"यस सर! (जी हाँ)।"

"हमारे मैनेजर ने हमसे आपकी बहुत तारीफ़ की थी। आपको देखने पर पता चला कि वह असलियत को बयान नहीं कर सका।"

"मैं समझी नहीं आपका मतलब।"

"मतलब यह कि उसने आप को जितना ख़ूबसूरत बतलाया

था उससे आप कहीं ज़ियादा ख़ूबसूरत हैं।"

"ओह ! यह मतलब है आपका।" कहकर नज़मा मुस्करा दी।

"सचमुच आप बहुत ख़ूबसूरत हैं। इतना ख़ूबसूरत आर्टिस्ट जब हमारे स्टेज पर उतरेगा तो कलकत्ते में धूम मच जायेगी। आपसे मिलने के लिये पागल हो उठेंगे लोग।"

"ओह गॉड (या ख़ुदा) उन पागलों से मेरी जान कैसे बचेगी ?" यह कहकर नज़मा खिलखिला कर हँस पड़ी।

मिस्टर स्तीफ़ेन भी हँसकर बोले, "हम उन पर टिकिट लगा देंगे। हर आदमी को आपसे मिलने की इजाज़त नहीं होगी।"

जब नज़मा रिहर्सल के समय स्टेज पर गई और उसने डांस किया तो स्तीफ़ेन ने मैनेजर से कहा, "यू हेव सर्च्ड ए ज्वेल (तुमने हीरा खोजा)। अब हमारा नाच-घर चमक जायेगा।"

"इनाम दीजिये सर !"

"आफ़कोर्स ! तुमको इनाम मिलेगा। हम तुमारी तनख़ा में तरक्की करेगा।"

मैनेजर प्रसन्न हो गया।

"अब हम फोर्टविलियन के गवर्नर वारेनहेस्टिंग्स को अपने यहाँ बुलायेंगे।" यही बात स्तीफ़ेन ने रिहर्सल समाप्त होने पर नज़मा से भी कही।

नज़मा ने पूछा, "क्या आपके वारेनहेस्टिंग्स से अच्छे ताल्लुक़ात हैं ?"

"बहुत अच्छे मिस मेरी ! मै उन्हें तुम्हारा डांस देखने के लिये इसी हफ़्ते बुलाऊँगा और तुम्हारी उनसे मुलाक़ात कराऊँगा। वह तुम्हें देखकर बहुत ख़ुश होंगे।"

रिहर्सल के पश्चात नज़मा ने मिस्टर स्तीफ़ेन से विदा ली। उसने अपनी हवेली पर पहुँचकर सोचा, 'जब उसने अपने जीवन के दो रूप दुनियाँ के सामने रखने का निश्चय कर ही लिया है तो उसकी ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये, जिससे यह राज़ राज़ बना रहे। हो सकता है किसी दिन मिस्टर स्तीफ़ेन उसके मकान पर आने के लिये उसे मजबूर कर दें। उस वक्त अगर यह राज़ खुल गला तो मुसीबत आ जायेगी और जो कुछ वह करना चाहती है उस सब पर पानी फिर जायेगा।'

मोहम्मदरज़ाखाँ की इस हवेली के अलावा एक कोठी भी थी कलकत्ते में। नज़मा ने अपनी वह कोठी किरायेदार से ख़ाली कराली और उसे अंग्रेज़ी ढंग से सजवाया। उस कोठी के गेट पर एक छोटा सा मिस मेरी के नाम का बोर्ड लगवा दिया।

नज़मा जब नाचघर से लौटती या वहाँ जाती तो उसी कोठी में आती थी और उसी कोठी से जाती थी। इस राज़ को नज़मा के अलावा बद्री पंडित ही जानता था।

नज़मा ने अपने केस की देख-भाल के लिये एक दूसरे बैरिस्टर का प्रबन्ध किया, जो मोहम्मदरज़ाखाँ की ज़मानत तो न करा सका परन्तु उसने नज़मा को मोहम्मदरज़ाखाँ से मिलने की इजाज़त दिला दी।

नज़मा को इससे बहुत राहत मिली। कोई विशेष बात करने का अवसर उसे नहीं दिया गया। केवल आँसू भरी आँखों से वे एक दूसरे को देख भर सके। यही सब कुछ था। जितनी देर नज़मा वहाँ रही, दो अंग्रेज़ सारजेण्ट उसके पाव खड़े रहे।

उसे मोहम्मदरज़ाखाँ से दो-तीन गज़ के फ़ासले पर रखा गया था।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने नज़मा के विदा होते समय कहा, "ख़ुदा हाफ़िज़ नजमा !"

"ख़ुदा हाफ़िज ।" नज़मा बोली । नज़मा की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई । उसके पैर एक क्षण के लिये जड़ हो गये, परन्तु तुरन्त ही वह बड़ी तेज़ी से बाहर चली गई ।

नज़मा को उसके बैरिस्टर ने बतला दिया था कि मोहम्मद-रज़ाखाँ के ख़िलाफ़ शहादत देने के लिये वारेनहेस्टिंग्स ने महा-राजा नन्दकुमार को तय्यार कर लिया है और उसे मुर्शिदाबाद में दीवान बनाने का लालच दिया गया है ।

नज़मा ने दूसरे दिन महाराजा नन्दकुमार से भेंट की ।

महाराजा नन्दकुमार नज़मा को देखकर मुस्कराया ।

नज़मा उसके मुस्कुराने का अर्थ समझकर बोली, "महा-राजा साहब ! मेरे यहाँ आने के मक़सब से आप नावाक़िफ़ नहीं हैं । आप की मुस्कराहट का मतलब भी मैं समझ रही हूँ । नवाब साहब की आपसे शुरू से नाचाकी रही है, यह राज़ भी मुझसे छिपा नहीं है । लेकिन यह बात आप समझलें कि जो ख्वाब आप देख रहे हैं, वह कभी पूरा नहीं होगा ।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यही कि वक्त हाथ से निकल जाने पर इन्सान के पास पछताने के अलावा और कुछ नहीं रह जाता ।"

"तुम्हारा मतलब मैं नहीं समझा बेग़म !"

"मैं ख़ुलासा करके समझाती हूँ । आप जैसे क़ाबिल आदमी को यह नाचीज़ औरत कुछ समझाने की कोशिश करे, यह बात एक मज़ाक ही है लेकिन वक्त की नज़ाकत को देखकर कुछ बयान करना मैं अपना फ़र्ज समझती हूँ ।

सन् १७५७ में अमींचन्द के धन के लोभ में आकर आपने

नवाब सराजुद्दौला, फ्राँसीसियों और अपनी क़ौम के लोगों के साथ ग़द्दारी की। अपनी इस ग़लती को आपने सन् १७६० में महसूस किया। उस वक्त आपने शहंशाह शाहआलम और मराठों का मेल कराकर बंगाल के गले से अंग्रेजों की गुलामी का तौक़ उतार फेंकने की कोशिश की, लेकिन वह ख़ुदा पाक को मंज़ूर न हुआ। सन् १७६१ की पानीपत की तीसरी लड़ाई ने आपके मंसूबों पर पानी फेर दिया।"

"यह बात तुम्हारी सच है बेग़म !"

"उसके बाद जब नवाब मीरजाफ़र दुबारा गद्दीनशीन हुए तो आपने यह कोशिश की कि नवाब साहब शहंशाह शाहआलम और वज़ीरेआज़म शुजाउद्दौला को खुश करके उनसे बाज़ाब्ता शाही फ़रमान हासिल करें। आपके इस सही और नेक इरादे की इत्तला जब अंग्रेजों को मिली तो उन्होंने तुम्हें फ़ौरन दीवानी से बरतरफ़ कर दिया।"

"यह बात भी तुम्हारी सही है।"

नज़मा दृढ़तापूर्वक बोली, "मेरी हर बात सही है और जो बात मैं आइन्दा के लिये आपसे कहकर जाऊँगी वह भी वक्त आने पर सही साबित होगी।

अंग्रेजों ने आपको कभी अपना वफ़ादार आदमी नहीं समझा। इसके बरक्स नवाब मोहम्मदरजाखाँ, महाराजा शिताब-राय और मियाँ जसारतखाँ हमेशा से अंग्रेजों के वफ़ादार रहे हैं। जब अंग्रेजों ने उन्हें नहीं बख्शा तो आपको भी ये बख्शने वाले नहीं हैं। मेरी बात को आप याद रखिये। जिस तरह सन् ५७ की भूल आपने सन् ६० में महसूस की, उसी तरह आज की भूल आप कल महसूस करेंगे।"

महाराजा नन्दकुमार नें नज़मा की बात का कोई उत्तर न

दिया परन्तु उनके मन में कुछ खलबली सी अवश्य मच ई। उनके हाथ कट चुके थे। वह लिखित बयान जज के सामने दे चुके थे। वारेन हेस्टिंग्स का काम पूरा हो चुका था।

नज़मा महाराजा नन्दकुमार से यह कहकर वहाँ से अपनी हवेली पर चली आई। महाराज नन्दकुमार बहुत देर तक सोचते रहे कि क्या वास्तव में उन्होंने ग़लती की। उनके कानों में नज़मा के शब्द गड़गड़ाते रहे। उन्हें लगा जैसे नज़मा उनके मुस्कराने का उन्हें सही उत्तर देकर चली गई। वह नज़मा के शब्दों को अपने मस्तिष्क की तराज़ू पर तौलते और विचार करते रहे। उनके कानों में नज़मा के ये शब्द गूँज रहे थे, 'जब अंग्रेज़ों ने उन्हें नहीं बख्शा तो वे आपको भी बख्शने वाले नहीं हैं ?'

महाराजा नन्दकुमार सोच रहे थे कि सम्भवतः उन्होंने हेस्टिंग्स का विश्वास करके कुछ भूल की। यह बात बेग़म की सच ही है कि जो अंग्रेज मोहम्मदरज़ाखाँ, महाराजा शिताबराय और मियाँ जसारतखाँ के न हुए वे उनके कैसे हो सकते हैं ?

उस दिन रात्रि को महाराजा नन्दकुमार को नींद नहीं आई। वह रात्रि भर इसी समस्या पर विचार करते रहे और सोचते रहे कि अब उन्हें क्या करना चाहिये। उनकी कुछ समझ में नहीं आरहा था। उनके मन में भाँति-भाँति की शंकाएँ जन्म लेती जा रही थीं क्योंकि हेस्टिंग्स ने उनका बयान हस्तगत करने के पश्चात फिर उन्हें एक बार भी याद नहीं किया था। सम्भवतः उसका प्रयोजन समाप्त हो चुका था और उसे अब उनकी कोई आवश्यकता नहीं थी।

महाराजा नन्दकुमार का सिर चकराने लगा। उन्हें हेस्टिंग्स पर क्रोध आगया। उन्हें लगा जैसे हेस्टिंग्स ने यह सब केवल अपना काम निकालने के लिये किया था।

छः

नज़मा ने अब नियमित रूप से नाचघर में जाना आरम्भ कर दिया।

वह नाचघर की अन्य नर्तकियों में बहुत कम मिलती-जुलती थी और बातें तो 'ना' के बराबर ही करती थी। वह सर्वदा सतर्क रहती थी कि कहीं उसका राज़ न खुल जाये।

अंग्रेज़ों के बीच रहने से उसे अच्छी-ख़ासी अंग्रेज़ी बोलनी आगई थी। उसने अंग्रेज़ी शब्दों का उच्चारण भी ठीक अंग्रेज़ों की ही तरह करना आरम्भ कर दिया था। जब वह उन लोगों से बातें करती थी तो कोई स्वप्न में भी यह अन्दाज़ नहीं लगा सकता था कि वह अंग्रेज़ नहीं है।

नज़मा के नृत्यों के फल स्वरूप स्तीफ़ेन के नाचघर की ख्याति कलकत्ता और आस-पास के नगरों में हो गई। स्तीफ़ेन नज़मा का बहुत कृतज्ञ था और विशेष रूप से इस लिये कि नज़मा अपने नृत्यों के लिये कभी कोई पारिश्रमिक की इच्छा नहीं रखती थी।

"मिस मेरी! तुम्हारे डांसेज़ ने हमारे नाचघर को बहुत मशहूर कर दिया। अब हमारे नाचघर में दूर-दूर के लोग आते हैं।"

"आपने गवर्नर साहब को नहीं बुलाया। आप कह रहे थे कि वह आपके दोस्त हैं। क्या आपने उनसे हमारे डांस का ज़िक्र नहीं किया ?"

"आफ़ क़ोर्स ! वारेनहेस्टिंग्ज, माई फास्ट फ्रेंड (वास्तव में वारेनहेस्टिंग्स मेरा घनिष्ट मित्र है।) लेकिन वह आजकल बड़े-बड़े काम करने में लगा हुआ है। लार्ड क्लाइव ने जो बड़े-बड़े जंग जीते उनमें बहुत रुपया सर्फ़ हो गया। उनमें कम्पनी को बहुत रुपया ख़र्च करना पड़ा। इङ्गलैंड में भी हमारी सरकार को सेविन ईयर्स वार में बहुत रुपया ख़र्च करना पड़ा। ऐसी हालत में कम्पनी को अपनी यहाँ की हालत सुधारने और इङ्गलैंड रुपया भेजने के लिये रुपये की बहुत सख्त ज़ुरूरत है। गवर्नर साहब अपनी उन्हीं ज़ुरूरतों को पूरा करने में लगे हुए हैं। अभी-अभी उन्होंने इलाहाबाद और कड़ा का इलाका अवध के नवाब शुजाउद्दौला को पचास लाख रुपये में बेचा है।"

नज़मा आश्चर्य प्रकट करके बोली, "बाप रे बाप ! पचास लाख रुपये में ! इन नवाबों के पास बड़ी दौलत है। इनके पास इतनी दौलत कहाँ से आती है ?"

"आती कहाँ से है मिस मेरी ! ये लोग अपनी रिआया का ख़ून चूसकर दौलत इकट्ठी करते हैं। हमारा गवर्नर ऐसा नहीं करता। हमारी कम्पनी के अफ़सर भी ऐसा नहीं करते। हमारा गवर्नर इन मोटे-मोटे नवाबों का गला दबा कर रुपया वसूल करता है। इनका रुपया लेने में कोई हर्ज़ नहीं है। हम लोग हिन्दुस्तान में इसी लिए आये हैं।"

"वेरी गुड मिस्टर स्तीफ़ेन ! तो फिर गवर्नर साहब को आप कब बुला रहे हैं अपने नाचघर में ? मेरी ख्वाहिश है कि मैं उन्हें अपना डांस दिखलाऊँ।"

"उनका बर्थडे का दिन आने वाला है। उस दिन वह हमारे नाचघर में आयेंगे। उस वक्त उनके पास बेशुमार दौलत होगी।"

"वह कैसे मिस्टर स्तीफ़ेन ?"

"वारेनहेस्टिंग्स साहब ने इस वक्त दोनों हाथों से दौलत इकट्ठी करने का बीड़ा उठाया हुआ है। उनके पास दौलत आनी ही चाहिये। वह चाहे ईमानदारी से आये या बेईमानी से, यह कोई बात नहीं। उन्होंने अवध के नवाब को अपने साथ मिला कर रुहेलों पर हमला किया है। इस हमले से भी उन्हें क़रीब पचास लाख रुपया हासिल होगा।"

"यह रुपया कौन देगा उन्हें ?"

"नवाब शुजाउद्दौला के पास रुहेलों को लूट कर जो दौलत आयेगी उसे हमारा गवर्नर उसके ख़ज़ाने में दाख़िल नहीं होने देगा।" यह कहकर स्तीफ़ेन खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"रुपया तो लार्ड क्लाइव ने भी बहुत कमाया था मिस्टर स्तीफ़ेन ! सुना है वह बड़ी शान से रह रहा है इङ्गलेंड में। उसके ठाट भी हिन्दुस्तानी नवाबों से कम नहीं हैं।"

"नानसेन्स ! क्लाइव छोटा आदमी था। हमारा हेस्टिंग्स क्लाइव जैसा नहीं है। उसने कम्पनी का बहुत रुपया ग़बन किया। मिस मेरी ! आपको शायद मालूम नहीं है, उसने अभी-अभी अपना सुसाइड़ (आत्महत्या) कर लिया।"

"सुसाइड़ !"

"और क्या करता ? उसने एक बार हमारे नाचघर को बरबाद कर दिया था। नानसेन्स, ईडियट कहीं का।"

"वह कैसे मिस्टर स्तीफ़ेन ?"

"वह हमारा आर्टिस्ट को भगाकर लेगया यहाँ से। हमारा

सब काम चौपट होगया। हमने शिकायत किया तो उसने हमको लात मारकर अपनी कोठी से बाहर निकाल दिया। हमारा हेस्टिंग्स लवली आर्टिस्ट को प्यार ज़ुरूर करता है लेकिन उड़ाकर नहीं ले जाता। हेस्टिंग्स हमारी मदद करता है। उसने हमको कई-बार इनाम दिया है।"

"वेरी गुड मिस्टर स्तीफ़ेन ! तब तो हमें गवर्नर साहब की सालगिरह पर अपने नाचघर को ख़ास तौर पर सजाना चाहिये और उस दिन के लिये ख़ास प्रोग्राम तय्यार करना चाहिये।"

"आफ़ कोर्स मिस मेरी। हम उसके लिये स्पेशल एरेंजमेंट करेंगे। हमने अपने सीन पेन्टर मिस्टर स्मिथ को बोल दिया है।"

स्तीफ़ेन ने अपने नाचघर को वारेनहेस्टिंग्स के जन्मदिन के अवसर पर विशेष रूप से सजवाया। नज़मा ने इस सजावट के कार्य में विशेष संलग्नता से भाग लिया। स्तीफ़ेन का नाचघर अब कलकत्ते का सबसे शानदार नाचघर था। उसमें नृत्य के अतिरिक्त कभी-कभी अंग्रेज़ी नाटक भी खेले जाते थे।

वारेन हेस्टिंग्स ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिलकर रुहेलों पर विजय प्राप्त की। रुहेलों की अवध के नवाब और अंग्रेज़ों से कोई पहिली शत्रुता नहीं थी। उन पर आक्रमण करने का व्यर्थ बहाना बनाया गया था। शुजाउद्दौला को भी ज़बरदस्ती इस युद्ध में भाग लेना पड़ा। रुहेले वीरों ने वीरता से युद्ध किया परन्तु उनकी शक्ति शुजाउद्दौला और अंग्रेजों की सेना के सामने कुछ नहीं थी। इस लिये उनकी पराजय हुई और रुहेला-राज्य को अवध में मिला दिया गया। हेस्टिंग्स ने रुहेला-राज्य का इलाका न लेकर शुजाउद्दौला से पचास लाख रुपया कम्पनी के लिये और पाँच लाख रुपया अपनी निजी घूस का वसूल किया।

इस तरह जब हेस्टिंग्स ने शुजाउद्दौला से एक ही वर्ष में एक करोड़ रुपया लेकर कम्पनी के डाइरेक्ट्रों के पास ;विलायत भेजा तो उनकी दृष्टि में हेस्टिंग्स बहुत ऊपर उठ गया और उन्होंने उसे फोर्ट विलियम के साथ-साथ मद्रास और बम्बई का भी गवर्नर नियुक्त कर दिया।

यह सूचना मिस्टर स्तीफ़ेन को मिली तो उसके हर्ष का पारावार न रहा। वह नज़मा से बोला, "वैरी हेप्पी न्यूज़ मिस मेरी! हेस्टिंग्स अब मद्रास और बम्बई का भी गवर्नर हो गया है।"

"ओह! तब तो हमको उनके जन्मदिन पर एक शानदार दावत भी देनी चाहिये।"

"आफ़कोर्स, आई विल।"

वारेन हेस्टिंग्स के लखनऊ से लौटने पर मिस्टर स्तीफ़ेन ने उससे भेंट की और नज़मा की तारीफ़ के पुल बाँधे तो हेस्टिंग्स ने नाचघर में आने की अनुमति देदी।

डांस का प्रोग्राम बहुत शानदार रहा। नज़मा के नृत्य ने हेस्टिंग्स पर जादू जैसा असर किया। वह नृत्य देखकर मुग्ध हो गया। उसके पुराने शरीर में फिर से नई जवानी का जोश उभर आया। उसने अपने पास खड़े नाचघर के मालिक मिस्टर स्तीफ़न से कहा, "रीयली वण्डरफुल! आई हैव नैवर सीन सच ए चारमिंग फ़ेस एण्ड सच ए लवली डांस। (वास्तव में आश्चर्य-जनक! मैंने ऐसा आकर्षक चेहरा और इतना सुन्दर नृत्य पहिले कभी नहीं देखा।) तुम इस आरटिस्ट से ख़ूब दौलत कमा सकते हो।"

प्रोग्राम के पश्चात नज़मा की मिस्टर स्तीफ़ेन ने हेस्टिंग्स से मुलाक़ात कराई। हेस्टिंग्स ने नज़मा के रूप और उसके डांस

की जी खोलकर वार-वार प्रशंसा की। नज़मा ने अपने तीखे नेत्र-वाणों से हेस्टिंग्स के कलेजे पर वार किया। उस चोट को हेस्टिंग्स भुला न सका।

हेस्टिंग्स ने दूसरे दिन स्तीफ़ेन को अपनी कोठी पर बुलाया और नज़मा को वहाँ डांस कराने को कहा। स्तीफ़ेन तुरन्त 'हाँ' न कर सका क्यों कि नज़मा उसकी वेतनभोगी कलाकार नहीं थी।

उसने कहा, "इसके लिये मुझे मिस मेरी से पूछना होगा सर! वह मेरी पेड आर्टिस्ट नहीं है।"

स्तीफ़ेन ने दूसरे दिन नज़मा के सामने यह प्रस्ताव रखा तो वह बोली, "आप जानते हैं मैं शौक के लिये यहाँ आती हूँ। किसी के यहाँ जाकर डांस मैं नहीं करती।"

स्तीफ़ेन यह सुनकर बग़लें झाँकने लगा। उसे भय हुआ कि कहीं वारेनहेस्टिंग्स नाराज़ न हो जायें।

नज़मा मुस्कराकर बोली, "गवर्नर साहब को आप हमारी कोठी पर आने को इनवाइट (निमंत्रित) कीजिये। मैं उन्हें बहुत अच्छा डांस दिखाऊँगी।"

स्तीफ़ेन को संकोच तो बहुत हुआ नज़मा की बात सुनकर परन्तु वह मजबूर भी नहीं कर सकता था नज़मा को हेस्टिंग्स की कोठी पर जाकर डांस करने के लिये।

नज़मा स्तीफ़ेन की दशा देखकर हँस दी। फिर बोली, "आप संकोच छोड़कर मेरी ओर से हेस्टिंग्स साहब को मेरी कोठी पर इनवाइट करें। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि वह ज़ुरूर आयेंगे।"

मिस्टर स्तीफ़ेन ने बहुत डरते-डरते नज़मा का प्रस्ताव वारेन हेस्टिंग्स के सामने रखा, परन्तु उसने आश्चर्य के साथ देखा कि

वारेनहेस्टिंग्स फ़ौरन नज़मा की कोठी पर आने के लिये उद्यत हो गया। उसने कहा, "वैरी हैपीली। हम तुम्हारे आर्टिस्ट का डांस देखने खुद उसकी कोठी पर आयेगा। हमको तुम्हारा आर्टिस्ट बहुत पसंद है।"

मिस्टर स्तीफ़ेन इस शुभ समाचार को लेकर वारेनहेस्टिंग्स की कोठी से सीधा नज़मा की कोठी पर गया तो देखा नज़मा अपनी कोठी के बराँडे में घूम रही थी।

स्तीफ़ेन को आता देखकर वह ड्राइङ्गरूम में चली गई और जाकर कुर्सी पर बैठ गई। उसने देखा स्तीफ़ेन का चेहरा खिला हुआ था। वह छूटते ही बोला, "मिस मेरी! यू हैव चार्म्ड हेस्टिंग्स! (तुमने हेस्टिंग्स पर जादू कर दिया।) उन्होंने तुम्हारा इनविटेशन मंजूर कर लिया। वह तुम्हारे यहाँ आने को तय्यार है।"

नज़मा खुश होकर बोली, "तो कल आप सीन-पेंटर मिस्टर स्मिथ को मेरी कोठी पर भेज दें और इतवार के दिन हेस्टिंग्स साहब को इनवाइट कर दें। मैं कल नाचघर में नहीं आऊँगी क्यों कि मुझे यहाँ का इन्तज़ाम करना होगा।"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं। नाट ओन्ली सीन पेन्टर, माई होल स्टाफ़ विल रिमेन एट योर डिसपोज़ल (केवल सीन-पेण्टर नहीं, मेरे सब मुलाजिम तुम्हारी आज्ञा पर कार्य करेंगे।) एण्ड आई टू (और मैं भी)। इस रिसेप्शन में जो रुपया ख़र्च होगा, वह मैं करूँगा।"

"उसकी ज़रूरत नहीं है मिस्टर स्तीफ़ेन! आप जानते हैं मैं यह सब शौक के लिये करती हूँ। मुझे डांस करने का शौक है। मेरे डैडी और मम्मी को भी डांस का बड़ा शौक था। बहुत बढ़िया डांस करते थे दोनों। मैं आपके नाचघर की तरक्क़ी

चाहती हूँ।"

"आइ एम आबलाइज्ड (मैं कृतज्ञ हूँ) मिस मेरी ! आपने मेरी बहुत मदद की है। हम अपने नाचघर का नया हॉल बनवाना चाहते हैं, लेकिन उसके लिये हमारे पास रुपया नहीं है।"

"रुपया·· लेकिन अफ़सोस !"

"क्यों, आप चुप कैसे हो गईं मिस मेरी ?"

"चुप क्या होगई मिस्टर स्तीफ़ेन ! मैंने सोचा तुम्हारे लिये रुपये का इन्तज़ाम करादूँ,। फिर ख़याल आया कि वह इस वक्त मुमकिन नहीं है, लेकिन हो सकता है मुमकिन।"

"वह कैसे मिस मेरी ?"

"गवर्नर साहब ने मुर्शिदाबाद के दीवान मोहम्मदरज़ाखाँ को क़ैद किया हुआ है। अगर यह उन्हें ज़िन्दगीभर क़ैद में रखेंगे तो इनको क्या हासिल होगा ? आप कह रहे थे कि गवर्नर साहब को इस वक्त रुपये की जुरूरत है। मोहम्मदरज़ाखाँ की बेग़म मेरी वाकिफ़ हैं। अगर गवर्नर साहब दीवान मोहम्मदरज़ा को मुआफ़ करदें तो मैं बेग़म से इन्हें दो लाख रुपया दिला सकती हूँ। गवर्नर साहब आपके दोस्त हैं। आप उनसे बात करके देख लें। अगर आप इसमें कामयाबी हासिल करलें तो मैं बेग़म से एक लाख रुपया आपको आपका नाचघर बनवाने के लिये दिला दूँगी। आप होशियार आदमी हैं, यह सौदा पटा सकते हैं।

नज़मा के मुख से एक लाख की बात सुनकर स्तीफ़ेन चकित रह गया। उसने विचित्र दृष्टि से नज़मा के चेहरे पर देखा।

नज़मा मुस्करा रही थी। वह बोली, "डैडी कहा करते थे कि दीवान मोहम्मदरज़ाखाँ अंग्रेजों के बहुत ख़ैरख़ाह आदमी हैं। ऐसे आदमी से कोई ग़लती भी हो जाये तो उसे मुआफ़

कर देना चाहिये । फिर सबसे बड़ी चीज़ तो दौलत है। उसकी गर्दन ही अगर गवर्नर साहब ने उतरवा डाली तो क्या हाथ आयेगा ? अगर मुआफ़ कर दिया तो ज़िन्दगी भर के लिये इनका ग़ुलाम हो जायेगा और रुपया भी देगा। ख़ैरख़ाह आदमी है, किसी दिन काम भी आ सकता है । फिर सबसे बड़ी बात यह है कि आपका नाच घर शानदार बन जायेगा । मेरा मक़सद तो इस वक्त आपको एक लाख रुपया दिलाना है।"

स्तीफ़ेन के मस्तिष्क में नज़मा की बात चिपक कर रह गई । उसने अपना ध्यान सब ओर से हटाकर इसी बात पर केन्द्रित कर दिया । एक लाख की बात उसके लिये साधारण बात नहीं थी । इतना रुपया तो शायद वह ज़िन्दगी भर नाचघर चलाकर भी न कमा पाता ।

दूसरे दिन नज़मा ने देखा स्तीफ़ेन सवेरे-ही-सवेरे सीनपेण्टर स्मिथ और अपने स्टाफ़ के अन्य लोगों को लेकर उसकी कोठी पर आ पहुँचा और सारा दिन डांसिंग स्टेज तय्यार कराने में लगा रहा । उसने संध्या तक स्टेज बनाकर तय्यार करादी ।

स्तीफ़ेन दूसरे दिन डांस के पश्चात की जाने वाली दावत का प्रबन्ध करने में जुटा रहा । वह बड़ी संलग्नता से यह कार्य करा रहा था ।

नज़मा बोली, "मिस्टर स्तीफ़ेन ! आपने मेरे लिये बहुत पेन्स (तकलीफ़) लीं ।"

"नाट फार यू ।" स्तीफ़ेन ने मुस्करा कर कहा ।

"ट्राँई योर लक (अपने भाग्य को अज़माइये) ।"

"आफ़ कोर्स, आई विल । यह काम मुश्किल नहीं है । ज़ुरूर होगा ।"

रविवार को नज़मा की कोठी पर शानदार जशन रहा ।

नज़मा की कोठी एक शानदार थियेटर-हॉल बनगई थी, परन्तु उसमें आने वालों की संख्या अधिक नहीं थी। दर्शकों से कलाकार अधिक थे। वारेनहेस्टिंग्स भी अपने साथ किसी अन्य व्यक्ति को नहीं लाया था। केवल उसके बॉडीगार्ड्स उसके साथ थे, जो कोठी से बाहर खड़े थे। हेस्टिंग्स ने अन्दर प्रवेश किया तो नज़मा ने उसका विशिष्ट ढङ्ग से स्वागत किया। हेस्टिंग्स नज़मा के रूप को देखकर चमत्कृत हो उठा। मेकप से नज़मा का रूप और भी निखर आया था।

नृत्य से पूर्व नज़मा ने वारेनहेस्टिंग्स को शराब पिलाई तो हेस्टिंग्स बोला, "मिस मेरी ! आपके शराब पिलाने में हिन्दुस्तानी नज़ाकत की बू है। नवाबों के यहाँ इसी तरह शराब पिलाई जाती है।"

हेस्टिंग्स के ये शब्द सुनकर नज़मा कुछ सहम सी गई, परन्तु उसने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया। उसने सोचा कहीं उसे कुछ पता न चल गया हो।

नज़मा ने तिरछी नज़र से हेस्टिंग्स की ओर देखकर कहा, "हिन्दुस्तान की बेग़मों में मेरा आना-जाना रहा है। मेरे पिता जवाहिरातों का काम करते थे। इसी लिये उनकी सोहबत से जवाहिरातों के साथ कुछ नज़ाकत भी मैंने ख़रीद ली।"

नज़मा की बात सुनकर वारेनहेस्टिंग्स बहुत हँसा। वह नज़मा के हाथ से शराब का प्याला लेकर उसमें दो घूँट भर कर बोला, "यह बात तुमने ख़ूब कही मिस मेरी ! हम लोग जब अपने घर से तिजारत करने निकले हैं तो जो चीज़ हमें ख़ूबसूरत लगेगी और जिसके दाम उठ सकेंगे उसे हम ख़रीद लेंगे। तुमने यह नज़ाकत ख़रीद कर अपनी क़ीमत बढ़ाली है।"

"नवावों की नज़ाकत भी अच्छी चीज़ है सर! उनमें यह नज़ाकत न होती तो आप उन्हें शिकस्त कैसे दे पाते ?"

"मिस मेरी! इनकी नज़ाकत की बदौलत ही तो हम लोगों ने फ़तह हासिल की हैं। ये लोग अपनी नज़ाकत में रहे और हमने अपना काम कर लिया।"

नज़मा ने अपने मन में कहा, 'नमक हराम, धोखेबाज़ कहीं के' परन्तु ऊपर से मुस्कराती और वारेनहेस्टिंग्स के प्याले में शराब उडेलती रही।

नज़मा बोली, "गवर्नर साहब! इन नवावों को आपने ही ठीक किया है। बड़ी दौलत इकट्ठी की हुई है हरामखोरों ने।"

"लुटेरे कहीं के। ग़रीबों का खून चूसते हैं। हमने इस बार इन लोगों को खोखला करने का इरादा किया है। कम्पनी को इस वक्त रुपये की सख्त ज़ुरूरत है। लार्ड क्लाइव ने कम्पनी का बहुत रुपया बरबाद कर दिया।"

"आपने कम्पनी का इन्तज़ाम बहुत नाज़ुक वक्त में सँभाला है गवर्नर साहब! आपने लार्ड क्लाइव के ख़राब किये हुए काम को ठीक किया है। इस नाज़ुक वक्त में आप न आते तो कम्पनी का सब खेल बिखर जाता।"

"तुम्हारी सियासत में भी दिलचस्पी मालूम देती है मिस मेरी! तुमने यह बात बहुत ठीक कही। हमने कम्पनी की उखड़ती हुई जड़ों को जमा दिया है। इसी लिये कम्पनी के डाइरेक्ट्रों ने हमें गवर्नर जनरल बनाया है।"

"कुछ-कुछ समझती तो हूँ सर!" नज़मा ने मुस्कराकर कहा।

नृत्य आरम्भ हुआ। नजमा ने कई अंग्रेज़ी डाँस दिखाये और वारेहेस्टिंग्स को भी अपने साथ डाँस में शामिल किया। वारेनहेस्टिंग्स को बड़ा आनन्द आया।

मिस्टर स्तीफ़ेन भी आनन्द ले रहा था। यह इस लिये नहीं कि डांस में कोई विशेष दिलचस्पी थी, आनन्द उसे इस लिये आया कि वह हेस्टिंग्स के काफ़ी निकट आ गया और यह समझने लगा कि उसके हाथ में एक ऐसी चीज़ आगई, जिसे गवर्नर ने मुहब्बत भरी दृष्टि से देखा।

स्तीफ़ेन के मस्तिष्क में अपने नाचघर के लिये एक लाख रुपया प्राप्त करने की बात उस समय चक्कर लगा रही थी। वह अन्य किसी बात के विषय में नहीं सोच रहा था।

डांस के पश्चात हेस्टिंग्स ने नज़मा को अपनी कोठी पर दावत देते हुए कहा, "मिस मेरी ! अब तुम्हारा दूसरा डांस हमारी कोठी पर होगा। आप आयेंगी ना ?"

"आफ़कोर्स ! जब आप कहें।"

"एनी डे।"

"मिस्टर स्तीफ़ेन ! फिक्स अप दी डेट (स्तीफ़ेन, तारीख़ निश्चित करें) मुझे आपके यहाँ आकर डांस करने में बहुत खुशी होगी। उस दिन मैं आपको एक नया डांस दिखाऊँगी।"

वारेनहेस्टिंग्स के चले जाने पर मिस्टर स्तीफ़ेन बोले, "वण्डरफुल मिस मेरी! यू लुक लाइक ए फेयरी (तुम परी मालूम देती हो)।"

यू हेव वन वारेनहेस्टिंग्स (तुमने वारेनहेस्टिंग्स पर विजय प्राप्त करली)। अब हमें अपना काम करने में कोई दिक्कत नहीं आयेगी।"

"बिलकुल नहीं आयेगी। आप अपने थियेटर की बात सोचिये। एक लाख रुपये से आपका शानदार हॉल बनेगा। कलकत्ते के सब नाचघर उसके सामने नाचीज़ मालूम देंगे।"

"इसमें कोई शक नहीं है मिस मेरी ! मुझे पूरी-पूरी उम्मीद

है कि हेस्टिंग्स नवाब को छोड़ देगा। हेस्टिंग्स को रुपये की सख्त ज़ुरूरत है। वह बूढ़ा हो गया है। बुढ़ापे में आदमी के रुपया ही काम आता है।"

"इसमें क्या शक है?" नज़मा बोली। "मैं दो लाख रुपया हेस्टिंग्स को बेग़म से दिला दूँगी। मेरे कहने से वह इन्हें दो लाख रुपया दे देंगी।"

दूसरे दिन मिस्टर स्तीफ़ेन ने वारेनहेस्टिंग्स से इस विषय में बातें कीं तो हेस्टिंग्स तुरन्त राज़ी हो गया। उसने यह काम किया ही रुपये के लिये था।

नज़मा ने दो लाख रुपया हेस्टिंग्स को और एक लाख रुपया मिस्टर स्तीफ़ेन को दिया।

हेस्टिंग्स से वचन लेकर नज़मा ने अपने बैरिस्टर से अदालत में एक दरख़ास्त दिलाई, जिनमें मोहम्मदरज़ाखाँ के उन सब कामों का ज़िक्र था जो उसने अंग्रेज़ों के लिये किये थे और अन्त में क्षमा के लिये प्रार्थना की गई थी।

हेस्टिंग्स ने हिन्दुस्तानी शासकों की अदालत के जज को अपनी कोठी पर बुलाकर कहा, "मिस्टर रॉबर्ट! हमने मोहम्मदरज़ाखाँ का सब रिकार्ड देखा तो हमने पाया कि यह आदमी अंग्रेज़ों का हमेशा से वफ़ादार रहा है। इसे बाइज्ज़त बरी करदो। उसने तुम्हारे नज़राने के बतौर पच्चीस हज़ार रुपया भिजवा दिया है।" यह कह कर हेस्टिंग्स ने रॉबर्ट को पच्चीस हज़ार रुपया दे दिया।

मोहम्मदरज़ाखाँ की अरज़ी पर विचार करने के लिये अदालत ने तारीख़ लगा दी। उस दिन नज़मा अदालत में गई। अदालत में काफ़ी भीड़ थी। जोन्सटन भी फ़ैसला सुनने आया था। महाराजा नन्दकुमार भी अदालत में मौजूद थे। उनकी

दृष्टि नज़मा पर गई तो नज़मा मुस्करादी।

महाराजा नन्दकुमार ने नज़मा से पूछा, "क्या तुम्हारे विचार से मोहम्मदरज़ाखाँ बरी हो जायेगा ?"

"बिला शक !" नज़मा ने दृढ़तापूर्वक कहा। "इसमें शक की कोई गुंजाइश नही है।"

महाराजा नन्दकुमार को विश्वास नहीं हुआ क्यों कि उन्होंने अदालत में मोहम्मदरज़ाखाँ के ग़बन के निश्चित प्रमाण मुर्शिदाबाद की दीवानी से निकाल कर दिये थे। लगभग दो करोड़ से ऊपर रुपया था, जिसे कहीं जमा नहीं किया गया था और उसके भुगतान की कोई रसीद नहीं थी।

जज ने फैसला सुनाया, जिसमें मोहम्मदरज़ाखाँ को निर्दोष घोषित करके बाइज़्ज़त बरी किया गया।

इस फ़ैसले को सुनकर महाराजा नन्दकुमार की आँखें लाल हो गईं। नज़मा उनकी ओर देखकर मुस्कराती हुई धीरे से बोली, "महाराजा साहब ! आपने अँधेरी अदालत को उजाला दिखाने की बेसूद कोशिश की। अब आप अपने केस की तय्यारी करें।" यह कहकर नज़मा मोहम्मदरज़ाखाँ को साथ लेकर अदालत से बाहर चली गई।

महाराजा नन्दकुमार भी कुछ देर अदालत के कोने में चुपचाप खड़े रहकर बाहर निकल आये। उन्हें अब विश्वास हो गया की नज़मा ने उनसे जो कुछ कहा था वह ठीक कहा था और वह इस समय जो कुछ कह गई है, ठीक वही होगा।

सात

महाराजा नन्दकुमार से जब तक हेस्टिंग्स का काम था, तब तक वह उनके पास नित्य अपने आदमी को भेजता था और हर बात में उनकी राय लेता था। जब उसने रुपया लेकर मोहम्मद-रज़ाख़ाँ को बरी करा दिया तो उसका महाराजा नन्दकुमार से कोई मतलब नहीं रह गया।

हेस्टिंग्स ने दो अमली शासन को समाप्त करने का निश्चय कर लिया। इसलिये दीवान का पद समाप्त करके उसने नायबों से ही काम लेने का निश्चय किया। ऐसी दशा में महाराजा नन्दकुमार के दीवान बनने की कोई सम्भावना न रही।

महाराजा नन्दकुमार वारेन हेस्टिंग्स के इस दुर्व्यवहार को सहन न कर सके। उनके दिल में सबसे अधिक पीड़ा इस बात की थी कि उन्हें हेस्टिंग्स ने मूर्ख बनाया। उन्हें हेस्टिंग्स पर क्रोध आना स्वाभाविक ही था।

महाराजा नन्दकुमार ने अपने मन में संकल्प किया कि परिणाम चाहे जो भी क्यों न हो, वह भी वारेन हेस्टिंग्स को ज़लील करने में कोई चीज़ उठा न रखेंगे। वह हेस्टिंग्स के काले कारनामों की एक सूची तैयार करेंगे और उन्हें साबित करने के सबूत खोज कर निकालेंगे।

यह कार्य महाराजा नन्दकुमार ने विशेष संलग्नता के साथ किया और हेस्टिंग्स की घूसखोरी के सुबूत एकत्रित किये।

नज़मा को महाराजा नन्दकुमार के इस इरादे का पता चला तो वह कुछ चिंतित सी हो उठी। मोहम्मदरज़ाखाँ का उनसे विरोध होने पर भी उसके दिल में उनके प्रति हमदर्दी की भावना थी। उसने मोहम्मदरज़ाखाँ से कहा, "महाराजा नन्दकुमार ख़तरनाक खेल खेलने का इरादा कर रहे हैं। हेस्टिंग्स से दुश्मनी करना ठीक नहीं है।"

"ख़याल तो तुम्हारा ठीक है बेग़म! लेकिन महाराजा नन्दकुमार बड़े ज़िद्दी क़िस्म के आदमी हैं। वह जिस काम को करने का इरादा कर लेते हैं, फिर अपने इरादे को बदलते नहीं। नतीजे की वह शख्श कभी परवाह नहीं करता।"

"पहाड़ से टकराना दानिशमन्दी की बात नहीं है। चलिये एक बार चलकर उन्हें इस ख़तरे से आगाह कर दिया जाये। आपके मुआमले में जोन्सटन कह रहा था कि इस में फांसी की सज़ा भी दी जा सकती है।"

"कम्पनी के राज में सब-कुछ मुमकिन है बेग़म! हेस्टिंग्स जो चाहे सो कर सकता है। मुझे महाराजा साहब के पास चलने में कोई ऐतराज़ नहीं है लेकिन मेरे ख़याल से हमारा वहाँ जाना बेसूद होगा। क्या हम लोगों की बातों पर उन्हें विश्वास होगा? वह हमारे वहाँ जाने को ग़लत भी समझ सकते हैं।"

"यह बात मुमकिन तो है लेकिन महाराजा साहब जैसे आलिम और अक्लमन्द इन्सान को ग़लत समझना नहीं चाहिये।"

"तुम्हारी मर्ज़ी चलने की है तो मैं चलता हूँ। चलो इसी वक्त चलते हैं उनके पास। देखते हैं हमारे कहने का कुछ असर होता है या नहीं।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ उसी दिन महाराजा नन्दकुमार के पास गये।

महाराजा नन्दकुमार ने दोनों को आदरपूर्वक अपनी बैठक में बिठाया। फिर बोले, "बेग़म ! हमें तुम्हारी बुद्धिमत्ता और सफलता पर प्रसन्नता है। तुमने इनकी रक्षा कर, एक आदर्श भारतीय नारी का चरित्र प्रस्तुत किया है। तुमसे हमारी भेंट यदि कुछ दिन पूर्व हो गई होती तो सम्भवत: हमने वह बयान न दिया होता जो हेस्टिंग्स ने हमसे दिला लिया।"

नज़मा बोली, "जो हो चुका उसपर ख़ाक डालिये महाराजा साहब ! हम लोग इस वक्त किसी दूसरे काम से आपके पास आये हैं।"

"किस काम से ?"

"हमें पता चला है कि आप वारेनहेस्टिंग्स के ख़िलाफ़ कलकत्ता-कौंसिल के सामने कोई अर्ज़ी पेश करने जा रहे हैं। उस अर्ज़ी के साथ आप हेस्टिंग्स के काले कारनामों की फ़हरिस्त दाख़िल कर रहे हैं। मैं जानती हूँ कि उस फ़हरिस्त में जो वाक़यात आपने दर्ज़ किये होंगे, वे सच होंगे और उनके सुबूत भी आप पेश कर देंगे। लेकिन हमारी अदना राय में आपका इस तरह की अर्ज़ी देना अपने गले में एक मुसीबत फँसा लेने के के अलावा और कुछ न होगा।"

"क्यों, क्या कौंसिल के मेम्बर उस पर विचार नहीं करेंगे ?"

"उनके विचार करने से क्या बनेगा ? पहिली बात तो यह है कि मैं किसी भी अंग्रेज़-अदालत से, जिसका हर मेम्बर घूसख़ोर और लुटेरा है, इन्साफ़ की उम्मीद नहीं रखती। दूसरी बात यह है कि हेस्टिंग्स के सामने कौंसिल के इन मेम्बरों की कोई वक़त नहीं है। यह कौंसिल तो एक तमाशा है। गवर्नर जनरल जो चाहता

है, कर रहा है और जो चाहेगा, करेगा। उसे रोकने की ताक़त किसी में नहीं है।" नज़मा ने संजीदगी के साथ कहा।

महाराजा नन्दकुमार ने नज़मा की ओर बड़े ध्यान से देखा। वह बोले, "बेग़म ! तुमने मुझे अपनी पहिली ही भेंट में प्रभावित किया था। मैंने तुम्हारे जाने के पश्चात अपनी भूल अनुभव की परन्तु उस समय मेरे हाथ में कुछ शेष नहीं था। यदि तुमसे मेरी भेंट एक दिन पूर्व होगई होती तो शायद मैं अदालत में वह बयान न देता जो हेस्टिंग्स की बातों में आकर मैं देगया।

मैंने सचमुच अपने जीवन में कुछ भयंकर भूलें की हैं। उनमें से कुछ भूलें ऐसी हैं जिनके कारण मुझे देशद्रोही कहा जा सकता है परन्तु कुछ ऐसे भी काम किये हैं जिनसे भारत का भविष्य बदल सकता था। लेकिन समय की गति कुछ ऐसी है बेग़म ! कि उसे बदला नहीं जा सकता। पानीपत की तीसरी लड़ाई ने सारे राष्ट्र की भयंकर हानि की और मेरे सब किये-धरे पर पानी फेर दिया।" यह कहकर महाराजा नन्दकुमार चुप हो गये। उनके चेहरे पर उस समय असीम चिन्ता के चिन्ह थे।

मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा महाराजा नन्दकुमार की ओर देख रहे थे। उन्होंने देखा उनके चेहरे पर दृढ़ संकल्प का भाव था।

महाराजा नन्दकुमार फिर बोले, "देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा जारहा है। इन लुटेरों को देश से बाहर निकाल कर फेंकने वाली हमें कोई शक्ति दिखाई नहीं देरही। ऐसी स्थिति में मैंने सोचा है कि मैं अपने रक्त की बूँदों से इतिहास के कम-से-कम वे पृष्ठ तो लिख जाऊँ जो इन लुटेरों की काली करतूतों को भारत की भावी सन्तानों के समक्ष रखकर उनके रक्त में उबाल ला सकें।

मैं जानता हूँ बेग़म ! कि वारेनहेस्टिंग्स के विरुद्ध दीजाने वाली यह अर्ज़ी एक दिन मेरे गले का फन्दा बनेगी। फिर भी मैंने इस काम को करने का निश्चय कर लिया है और मैं अपने इस निश्चय पर अटल रहूँगा।"

महाराजा नन्दकुमार का यह निश्चय जानकर मोहम्मद-रज़ाखाँ और नज़मा की आँखों में आँसू उभर आये। उन्होंने निराशापूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देखा।

नज़मा ने कहा, "मेरे ख़याल से आपने अपना यह विचार हेस्टिंग्स से नाराज़ होकर बनाया है। ग़ुस्से में इन्सान कभी-कभी कुछ ऐसे जल्दबाज़ी के काम कर जाता है जिन पर बाद में पछताना पड़ता है। हिन्दुस्तान में अभी कुछ ऐसी ताक़तें हैं जो इन लुटेरों को यहाँ से नेस्तोनाबूद कर सकती हैं। आप जैसे क़ाबिल लोग उन ताक़तों को इकट्ठा कर सकते हैं।"

"बेग़म ! अब तो मैंने जो मन में ठानली है उसे पूरा ही करके दम लूँगा। वला से नतीजा कुछ भी हो। उसके पश्चात् देखूँगा कि क्या होता है।"

महाराजा नन्दकुमार ने वारेन हेस्टिंग्स के विरुद्ध कलकत्ता-कौंसिल में अर्ज़ी पेश की, जिसमें उसके नवाबों, रईसों, ताल्लुकेदारों और ज़मीदारों से रिश्वत लेने के जुर्मों की फ़हरिस्त थी। उसमें मुर्शिदाबाद के नवाब की माँ और मुन्नी बेग़म से रुपया लूटने और अन्य बहुत से लोगों को धोखा देकर उनसे रुपया वसूल करने के इल्ज़ाम थे। इस अर्ज़ी में उन आदमियों के नाम और पते भी दर्ज थे जिनसे हेस्टिंग्स ने रुपया वसूल किया था और उस रुपये का कम्पनी के काग़ज़ों में कहीं इन्द्राज नहीं था।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने कौंसिल के इजलास में जाकर महाराजा

नन्दकुमार की बहस और उन शहादतों को सुना जो उन्होंने अपने इलज़ामों की पुष्टि में पेश कीं । वह महाराजा नन्दकुमार की निर्भीकता का क़ायल हो गया । वह प्रसन्नचित्त अपनी अपनी हवेली पर लौटकर नजमा से बोला, "बेग़म ! महाराजा नन्दकुमार ने तो कमाल कर दिया ।"

"वह कैसे ?"

"आज कौंसिल के सामने उन्होंने हेस्टिंग्स की वह क़लाई खोली कि कौंसिल के मैम्बर भी दंग रह गये । उन्होंने ऐसी-ऐसी शहादतें पेश कीं कि मेम्बरों को उनकी हर बात तस्लीम करनी पड़ी ।"

"क्या कौंसिल ने हेस्टिंग्स को दोषी मान लिया ?"

"बिलकुल बेगम ! बिलकुल दोषी मान लिया । इस बार हमने देखा कि कौंसिल के मेम्बर भी कुछ हेस्टिंग्स के ख़िलाफ़ थे । उन्होंने महाराजा नन्दकुमार की अर्जी पर ग़ौर ही नहीं किया बल्कि अपना फ़ैसला भी उनकी मुआफ़कत में दिया ।"

नज़मा बोली, "तब तो हेस्टिंग्स ज़रूर इससे परेशान होगा ।"

"होना तो चाहिये ।"

"मुझे आज उसकी कोठी पर नृत्य करने के लिये जाना है । वहाँ जाने पर यह पता चलेगा कि उसपर इस फ़ैसले का क्या असर हुआ । वैसे मेरा ख़याल यह है कि वह इसकी कोई परवाह करने वाला नहीं है ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है बेग़म ? कौंसिल की ताक़त भी कम नहीं है । उसी की राय से तो गवर्नर नामज़द होता है । मेरे ख़याल से इसका हेस्टिंग्स पर काफ़ी असर होगा ।

कुछ भी सही हम महाराजा साहब की दिलेरी को मान

गये।"

"दिलेर तो वह हैं ही और सूझ-बूझ भी वह कम नहीं रखते हैं। मैं तो उनकी उसी वक्त से क़ायल हूँ जब उन्होंने नवाब मीरजाफ़र को शहंशाह शाहआलम और शुजाउद्दौला से सनद हासिल करने की सलाह दी थी। उस वक्त आपने इनके हाथ-पैर काट कर रख दिये।" कहकर नज़मा का मन कुछ अनमना सा हो गया।

"वह काम हमने वाक़ई ग़द्दारी का किया था नज़मा! अव याद न दिलाओ उन बातों की। वह तो एक सिलसिला है हमारी गद्दारियों का।"

नज़मा उस दिन समय से भी कुछ पूर्व वारेनहेस्टिंग्स की कोठी पर पहुँच गई। उसने देखा मिस्टर स्तीफ़ेन उससे भी पूर्व अपने साजिन्दों तथा कुछ अन्य नर्तकियों को लेकर वहाँ पहुँचा हुआ था। सीन-पेण्टर मिस्टर स्मिथ उससे भी पहिले पहुँच चुका था।

हेस्टिंग्स ने नज़मा के स्वागत का प्रथक प्रबन्ध किया हुआ था। वारेनहेस्टिंग्स के चेहरे पर, नज़मा ने देखा, कौंसिल के फ़ैसले का कोई प्रभाव नहीं था। वह नित्य की तरह प्रसन्न-चित्त था।

नज़मा और हेस्टिंग्स एक टेबिल पर बैठे। बैरे ने शराव का जार और दो खूबसूरत काँच के गिलास लाकर रखे। नज़मा ने उन गिलासों में शराब भरी और दोनों ने ली।

नज़मा ने वारेनहेस्टिंग्स की ओर मुस्कानपूर्ण दृष्टि से देखकर पूछा, "सर! यह महाराज नन्दकुमार कौन है?"

"डेम फ़ूल!" वारेनहेस्टिंग्स ने कहा, "गधा।"

"नो डाट।" नज़मा बोली। "गधा न होता तो आपके

खिलाफ़ कौंसिल में अर्ज़ी देता।"

"डेम कौंसिल! कौंसिल को हमारे खिलाफ़ शिकायत सुनने का कोई हक़ नहीं है। हम कौंसिल को बरख़ास्त कर सकते हैं।"

"बिलकुल कर सकते हैं सर!"

"कौंसिल हमारे हाथ का खिलौना है। हम जब चाहें इसे तोड़ सकते हैं। हम सिर्फ़ कलकत्ते के गवर्नर नहीं हैं। हम कलकत्ता, मद्रास और बम्बई तीनों जगह के गवर्नर हैं। कौंसिलें हमारे मातहत हैं।"

"नो डाउट सर!"

शराब का दौर चलता रहा। नज़मा ने ज़रा तेज़ शराब गिलासों में उड़ेली। शराब पीकर वारेनहेस्टिंग्स की आँखों में सुरूर आगया। वह हँस पड़ा। फिर बोला, "हम इस नन्दकुमार के बच्चे को ख़त्म कर देगा। इसने हमारी बेइज्ज़ती की है। हम इसको बरदाश्त नहीं कर सकता।"

नज़मा कुछ नहीं बोली, परन्तु अन्दर से कुछ भयभीत सी हो उठी। वह नन्दकुमार के लिये चिंतित थी।

निश्चित समय पर नृत्य का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। नज़मा आज ठीक से नृत्य न कर सकी।

स्तीफ़ेन ने उसके निकट जाकर पूछा, "क्या कुछ तबीयत ख़राब है आपकी?"

"हाँ, जी जाने कैसा हो रहा है। अचानक ही तबीयत ख़राब हो गई।"

वारेनहेस्टिंग्स भी आज नृत्य देख अवश्य रहा था, परन्तु कौंसिल के अपने विरुद्ध फ़ैसला देने ने उसे कुछ परेशान कर दिया था।

स्तीफ़ेन ने वारेनहेस्टिंग्स से जाकर नज़मा की तबीयत ख़राब होने के विषय में कहा तो वह बोला, "कोई बात नहीं। तुम मिस मेरी को हमारी गाड़ी से उनकी कोठी पर पहुँचादो। डांस का प्रोग्राम फिर किसी दिन रख लेंगे।"

नज़मा वहाँ से अपनी कोठी पर आई और यूरोपियन लिबास बदल कर मोहम्मदरज़ाखाँ के पास पहुँची। मोहम्मदरज़ाखाँ बहुत खुश था। वह बोला, "अरे नज़मा! तुमने कुछ सुना! यह तो सचमुच कमाल हो गया। कौंसिल के मैम्बरों ने वारेनहेस्टिंग्स के खिलाफ़ अपना आख़ीरी फ़ैसला भी दे दिया। यानी महाराजा नन्दकुमार की अर्ज़ी मंजूर कर ली गई और हेस्टिंग्स को मुजरिम मान लिया गया।"

"मैं सुन चुकी हूँ।"

"तुम परेशान सी क्यों हो नज़मा!"

"बात ही कुछ परेशानी की है। कौंसिल के फ़ैसले को वारेन-हेस्टिंग्स ने रद्द कर दिया। वह कहता है कि कलकत्ता कौंसिल को उसके खिलाफ़ अर्ज़ी पर ग़ौर करने का कोई हक़ नहीं है। कौंसिल उसके हाथ का खिलौना है। वह उसे ख़त्म कर सकता है।"

यह सुनकर मोहम्मदरज़ाखाँ चकित रह गया। वह आश्चर्य के साथ नज़मा के चेहरे पर देख रहा था।

"ख़तरनाक बात यह है कि हेस्टिंग्स महाराजा नन्दकुमार को ख़त्म करने का मुकम्मल इरादा कर चुका है। ऐसी हालत में महाराजा नन्दकुमार को फ़ौरन बंगाल से बाहर चला जाना चाहिये। वह यहाँ रहे तो ज़बरदस्त मुसीबत में फँस जायेंगे।"

"हमें क्या करना चाहिये?" मोहम्मदरज़ाखाँ ने पूछा।

"महाराजा नन्दकुमार को इस ख़तरे से आगाह करना

हमारा फ़र्ज़ है। इसके अलावा हम और कर ही क्या सकते हैं ?"

"लेकिन वह तो मुर्शिदाबाद चले गये। क्या हमें वहीं चलना चाहिये ?" मोहम्मदरज़ाख़ाँ बोला।

"ज़रूर चलना चाहिये।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाख़ाँ तुरन्त मुर्शिदाबाद जाने के लिये उद्यत हो गये। उन्होंने रास्ते का सामान लिया और यात्रा पर चल दिये। इस कार्य में उन्होंने एक क्षण का भी विलम्ब न किया।

मुर्शिदाबाद जाकर नज़मा और मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने महाराजा नन्दकुमार से भेंट की। महाराजा नन्दकुमार उन्हें देखते ही समझ गये कि अवश्य कोई गम्भीर बात है। वह नज़मा की ओर देखकर बोले, "बेग़म ! क्या कोई विशेष सूचना है ?"

"जी, विशेष न होती तो मुर्शिदाबाद आने की इस वक्त क्या ज़रूरत थी ?"

"क्या बात है ?"

"बात यही है कि आप फ़ौरन बंगाल छोड़ दें वरना ज़बर-दस्त हादिसा हो जायेगा।"

क्या हेस्टिंग्स ने कलकत्ता-कौंसिल के फ़ैसले को भी निरर्थक कर दिया ?"

"बिलकुल ! वक्त बहुत कम है। मुमकिन है आज रात में ही आपको गिरिफ़्तार कर लिया जाये। हम लोग सिर्फ़ यही ख़बर देने के लिये आये हैं। अब इजाज़त चाहते हैं।" नज़मा ने कहा।

नज़मा और मोहम्मदरज़ाख़ाँ मुर्शिदाबाद में नहीं ठहरे। वे जैसे वहाँ गये थे, वैसे ही वापस लौट लिये।

महाराजा नन्दकुमार सोच रहे थे कि हेस्टिंग्स को उनके आरोपों का उत्तर देना होगा। उत्तर न दे सका, तो दण्ड भगतना पड़ेगा। परन्तु नज़मा और मोहम्मदरज़ाख़ाँ से उन्हें जो सूचना मिली, उसने उन्हें परेशानी में डाल दिया। वह सोचने लगे कि उन्हें क्या करना चाहिये।

महाराजा नन्दकुमार यह सोच ही रहे थे कि तभी उन्हें घोड़ों की टापों का स्वर सुनाई दिया। वह चौकन्ने होकर खड़े हो गये और जब तक वह अपनी सुरक्षा का कोई प्रबन्ध कर सके, उनके मकान को अंग्रेज़-सैनिकों ने घेर लिया।

महाराजा नन्दकुमार को बन्दी बनाकर कलकत्ता लाया गया और उनपर पाँच वर्ष पूर्व का एक झूठा जालसाज़ी का मुक़दमा चलाया गया। यह मुक़दमा चीफ़जस्टिस इम्पे की अदालत में लिया गया। इम्पे हेस्टिंग्स का बचपन का दोस्त था।

महाराजा नन्दकुमार के विरुद्ध कोई प्रामाणिक सुबूत नहीं था। कोई दस्तावेज़ नन्दकुमार के विरुद्ध अदालत में पेश नहीं की गई। सिर्फ़ झूठें गवाहों की गवाही के आधार पर उन्हें दोषी ठहराया गया। अदालत का फ़ैसला उनके विरुद्ध हुआ। उन दिनों जालसाज़ी के मुक़दमे में अधिक-से-अधिक क़ैद की सज़ा दी जाती थी, फाँसी की नहीं, परन्तु महाराजा नन्दकुमार को फाँसी की सज़ा दी गई।

नज़मा को जिस समय सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय की सूचना मिली तो उसका दिल दहल गया। उसने घर जाकर मोहम्मद-रज़ाख़ाँ से कहा, "यह ज़ुल्म की इन्तहा है। लार्ड क्लाइव और वारेनहेस्टिंग्स दोनों ही निहायत ज़ालिम निकले।"

"इसमें कोई शक नहीं। कितनी शर्मनाक बात है कि जो अंग्रेज़ अपनी सल्तनत की बुनियादें ही जालसाज़ी से भर रहे हैं,

वे एक आज़ाद हिन्दुस्तानी को जालसाज़ी के जुर्म में फाँसी पर लटका रहे हैं। क्लाइव को जालसाज़ी करने पर 'लार्ड' का ख़िताब दिया गया और महाराजा नन्दकुमार को फाँसी के तख्ते पर लटकाया जा रहा है।" मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने दर्द भरे शब्दों में कहा।

जब महाराज नन्दकुमार को कलकत्ता में फाँसी दी गई तो नज़मा ने मोहम्मदरज़ाख़ाँ से कहा, "जानते हो यह सब क्या है? यह सब हम लोगों की आपसी ख़ुदग़र्ज़ी और फूट का नतीजा है। अंग्रेजों ने हम लोगों को आपस लड़ा-लड़ा कर अपनी जड़ें जमाई हैं और अब वे इतनी गहरी चली गई हैं कि इतने बड़े-बड़े जुल्म भी उन्हें उखाड़ने में कामयाब नहीं हैं।"

"तुम ठीक कह रही हो बेग़म! हिन्दुस्तानियों ने खुद अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार कर अपनी जड़ों को काटा है और हमारी इस कमज़ोरी का अंग्रेज़ों ने फ़ायदा उठाया है।"

नज़मा दर्द भरे शब्दों में बोली, "जो वक्त आपने क़ैद में गुज़ारा था वह बंगाल के लोगों के लिये और भी ख़तरनाक था। इतना ज़बरदस्त अकाल शायद पहिले कभी नहीं पड़ा। यहाँ कलकत्ता में भूख से मरे आदमियों की रोज़ाना दस-पाँच लाशें देखने को मिलती थीं। सुना है देहातों में मरने वालों की तादाद का कोई अन्दाज़ नहीं लगाया जा सकता।

एक दिन मैं अदालत के लिये मुर्शिदाबाद से कुछ काग़ज़ात लेने गई तो जो दर्दनाक़ नज़ारा मेरी आँखों के सामने से उस दिन गुज़रा उसे बयान नहीं कर सकती। मैंने मुर्शिदाबाद की सड़कों और रास्ते में कई जगह इन्सानी लाशों को पड़ा देखा, जिन्हें चीर-फाड़कर जानवर खारहे थे। मुर्दा जानवरों की लाशों की गिनती करना नामुमकिन था।"

"यह हालत तो उसी वक्त पैदा हो गई थी नज़मा जब मैं क़ैद से बाहर था। उसी वक्त तो स्पेंसर ने चावलों की तिजारत की थी।"

स्पेंसर का नाम बीच में आजाने से वातावरण का गाम्भीर्य कुछ कम हुआ। नज़मा के चेहरे पर हलकी सी मुस्कान की रेखा खिचगई। वह बोली, "स्पेंसर को आपने अच्छा सबक़ दिया। आपके उस काम को मुर्शिदाबाद के लोग अभी तक याद रखे हुए हैं। उस लूट में थोड़ा बहुत चावल सभी लोगों के हाथ लग गया था। काफ़ी चावल लूटा गया था उस वक्त।"

मोहम्मदरज़ाखाँ ने दर्दपूर्ण स्वर में कहा, "मुझे क़ैद में डाल दिया नज़मा! वरना मुर्शिदाबाद और उसके आस-पास के नगरों में जितने चावलों के गोदाम अंग्रेज़ों ने भरे थे, मैं उन सब को लुटवा देता।"

नन्दकुमार को फाँसी देकर वारेनहेस्टिंग्स ने केवल बंगाल के भारतीय राजे और नवाबों को ही भयभीत नहीं किया वरन् कलकत्ता-कौंसिल के मेम्बरों के दिलों में भी दहशत पैदा करदी। अभी तक उनमें से कुछ, जो अपने आप को हेस्टिंग्स से बड़ा नहीं तो उसके दर्जे का अवश्य समझते थे, अब सिर झुकाकर उसके सामने से निकलने लगे। उन्हें अपने फ़ैसले पर स्वयं शर्म आने लगी।

नज़मा ने मोहम्मदरज़ाखाँ के बन्दीगृह से मुक्त हो जाने पर भी स्तीफ़ेन के नाचघर से अपना सम्बन्ध विच्छेद नहीं किया था।

इसका मुख्य कारण यह था कि जो रहस्य उसे नाचघर में जाकर ज्ञात होते थे वे अन्यत्र नहीं मिल सकते थे। वह नाचघर एक प्रकार से कलकत्ते का दैनिक-पत्र था, जिसमें जाकर देश और

विदेशों के सब समाचार मिल जाते थे। नाचघर का मालिक मिस्टर स्तीफ़ेन इन समाचारों का सबसे बड़ा ख़ज़ाना था। वह दुनियाँ भर की बातें एकत्रित करके लाता था और नज़मा को बड़ी दिलचस्पी के साथ सुनाता था।

स्तीफ़ेन की आयु चालीस से अधिक नहीं थी, परन्तु उसकी चाँद के सब बाल उड़ गये थे। रंग उसका अन्य सब अंग्रेज़ों की ही तरह गोरा था परन्तु बहुत साफ़ नहीं था। उसके चेहरे और बदन पर लाल-लाल चकत्ते से बने हुए थे, जिनकी वजह से वह गोरापन सुन्दर न लगकर भद्दा प्रतीत होता था। स्तीफ़ेन का क़द ठिगना और बदन ज़रा भारी था। उसकी आँखें कंजी और भवें बहुत घिनकी थीं। दोनों भवें मिलकर एक होगई थीं।

मिस्टर स्तीफ़ेन रंगीन तबियत का आदमी था। इसी लिये उसने नाचघर का काम आरम्भ किया था। उसके विचार से इस काम में जितनी तफ़री और ज़िन्दादिली थी, उतनी अन्य किसी काम में नहीं थी। रुपया भी इसमें ख़ूब आता था, अगर आर्टिस्ट अच्छे हों। आर्टिस्ट अच्छे होने पर स्तीफ़ेन के बदन में जवानी फिर से लौट कर आने लगती थी।

नज़मा को स्तीफ़ेन ने जिस दिन प्रथम बार देखा था, उस दिन उसे उसमें कुछ ऐसी चीज़ दिखाई दी थी जिसे उसने अपनी कहा था। वह जीवन की व्याख्या कुछ विचित्र ढंग से किया करता था। एक दिन वह नज़मा से बोला, "मिस मेरी! तुम जानती हो लव (प्यार) क्या चीज़ है?"

नज़मा स्तीफ़ेन की बात सुनकर मुस्कुरादी परन्तु वह गम्भीर ही बना रहा। उसने यह प्रश्न अपने विचार से किसी विशेष रहस्य का उद्घाटन करने के लिये किया था। वह आम लोगों की तरह 'लव' की व्याख्या नहीं करता था।

स्तीफ़ेन फिर बोला, "यह मामूली सवाल नहीं है मिस मेरी ? मेरे इस सवाल का जवाब कोई आर्टिस्ट नहीं दे पाया है। यू नो, हमारे पास लाखों आर्टिस्ट आया है। बट (लेकिन)" मुँह बना कर कहा, "कोई नहीं जानता 'लव' क्या होता है।"

"सवाल तो वाक़ई पेचीदा है आपका।"

नज़मा का यह वाक्य सुनकर स्तीफ़ेन कुर्सी से उछल पड़ा। हँसा और फिर बोला, "बहुत पेचीदा है मिस मेरी ! इतना पेचीदा जितना आसाम का स्नेक (साँप) होता है। उसमें पायज़न (विष) भी साँप का ही मानिन्द होता है। लेकिन वह हिन्दुस्तानी की तरह काला नहीं होता, अंग्रेज़-जैसा गोरा-चिट्टा होता है।"

"बहुत ख़ूब, 'लव' को आपने ख़ूब डिफ़ाइन किया।"

मिस्टर स्तीफ़ेन बोला, 'लव' एक ख़ूबसूरत फ़व्वारा होता है मिस मेरी, ख़ुशी का फ़व्वारा। यह इन्सान के दिल से छूटता है। इसकी बूँदें ख़ूबसूरत चिड़ियों की तरह उड़ती हैं और दूसरों के दिलों में जाकर अपने घोंसले बनाती हैं। ये घोंसले रोज़ बनते और रोज़ टूटते हैं, लेकिन 'लव' का फ़व्वारा छूटना बन्द नहीं होता। वह रोज़ नई-नई चिड़ियाँ उड़ाता रहता है।"

"मैं समझ गई मिस्टर स्तीफ़ेन !"

"तुम क्या समझीं मिस मेरी ?"

"यही कि 'लव' आसाम का साँप है, 'लव' दिल से छूटने वाला फ़व्वारा है और एक ख़ूबसूरत चिड़िया है ?"

मिस्टर स्तीफ़ेन नज़मा की बात सुनकर हँस पड़ा। वह नज़मा को एक भोलीभाली नादान लड़की समझ कर बोला, "तुम प्रेम की ख़तरनाक समस्या को समझने के लिये अभी

बच्ची हो।"

"लार्ड क्लाइव भी यही कहा करते थे मिस्टर स्तीफ़ेन !" नज़मा चालाकी से क्लाइव का नाम बीच में ले आई।

"डेम क्लाइव ! 'लव' सियासतक की बात नहीं है। लव हमारे नाचघर में पलता है। वारेहेस्टिंग्स भी 'लव' को नहीं जानता।" यह कहकर वह हँस दिया। फिर बोला, "लव' नाच, गाने और साज़ों की आवाज़ में पलता है।"

नज़मा बात बदलकर बोली, "क्या आजकल गवर्नरजनरल वारेनहेस्टिंग्स कलकत्ते में नहीं हैं?"

"नो मिस मेरी ! उन्हें रुपया चाहिये। वह आज-कल बनारस के राजा चेतसिंह से रुपया वसूल करने गये हैं।"

नज़मा नाचघर से अपनी कोठी पर आई और वहाँ से पुरानी हवेली पर। मोहम्मदरज़ाखाँ किसी आदमी से बातें कर रहा था। कोई नया आदमी था, जिसे नज़मा ने पहिले कभी नहीं देखा था। कुछ विचित्र सा आदमी था।

जब वह आदमी चला गया तो नज़मा ने मोहम्मदरज़ाखाँ को बतलाया, "सुना है हेस्टिंग्स ने बनारस के राजा चेतसिंह पर हमला किया है। वह महाराजा चेतसिंह का रुपया लूटने बनारस गया है।"

"हेस्टिंग्स बहुत ज़बरदस्त लुटेरा है नज़मा ! इसने बंगाल, बिहार, उड़ीसा और अवध के नवाबों और राजाओं को कुचल कर रख दिया है। बनारस का राजा चेतसिंह बेचारा क्या चीज़ है ? यह आदमी जो अभी-अभी मेरे पास बैठा था, बनारस से ही भागकर आया है। इसने बतलाया कि हेस्टिंग्स ने बनारस और रामनगर के क़िलों पर कब्ज़ा कर लिया और राजा चेतसिंह अपनी पत्नी के साथ राजस्थान की ओर भाग गया।

रामपुर के क़िले से हेस्टिंग्स के हाथ बहुत बड़ा ख़ज़ाना लगा होगा। महाराजा चेतसिंह के पास बहुत बड़ा ख़ज़ाना था। बहुत शरीफ़ आदमी था। एक बार पटना में मेरी उनसे मुलाक़ात हुई थी।"

नज़मा बोली, "वारेनहेस्टिंग्स ने हिन्दुस्तान की सब दौलत यहाँ से लूटकर लेजाने का इरादा किया हुआ है। इसके इरादे बहुत नापाक हैं।"

मोहम्मदरज़ाखाँ ने कहा, "यह तो सियासत है नज़मा! इसमें गुड्डी के चढ़ने और कटने में देर नहीं लगती। अभी हिन्दुस्तान के दक्खन में नाना फड़नवीस और हैदरअली ज़िन्दा हैं। ख़ुदा साथ दे और हिन्दुस्तान के राजे और नवाब अक्ल से काम लें तो किसी भी वक्त अंग्रेजों का तख्ता पलट सकता है।"

उस दिन रात्रि में बहुत देर तक नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ इस विषय पर बातें करते रहे।

आठ

वारेनहेस्टिंग्स ने महाराजा नन्दकुमार को फाँसी के तख्ते पर लटकवाकर भारतीय राजाओं और नवाबों को ही आतंकित नहीं किया वरन् कौंसिल के मेम्बरों को भी नाकारा कर दिया। उसकी निरंकुशता के बाँध टूट गये और वह एक शिकारी की तरह मैदान में आगया। भारत को उसने शिकार खेलने का मैदान बना लिया। वह जानवरों का नहीं, इन्सानों का शिकार खेलता था और बड़े गर्व के साथ कहता था, "मेरा निशाना कभी खाली नहीं जा सकता। एक बार शिकार मेरी नज़र पर चढ़ जाये-बस।"

हेस्टिंग्स ने शिकार खेलने के लिये जगह-जगह मचान बनाये और उनपर कुशल शिकारियों को बिठा दिया। ये शिकारी कलक्टर और न्यायाधीश थे, जो जाल बिछाकर उन हिन्दुस्तानियों को फँसाते थे जिनसे उन्हें दौलत प्राप्त हो सके। इनके पास शिकारी कुत्ते और बाज़, दोनों थे, जिनसे ज़मीन पर चलने वाले जानवरों और आकाश में उड़ने वाले पक्षियों का शिकार किया जाता था।

इन शिकारियों को हिन्दुस्तान के जिस कोने से दौलत की बू आती थी, उधर को ही दौड़ा दिया जाता था। अब इनके शिकार का क्षेत्र राजे, नवाब और ताल्लुक़ेदारों से आगे बढ़कर

साधारण ज़मीदारों तक हो गया था । अंग्रेज़ अफ़सर शिकार मारते थे और उनकी अदालतें उन्हें जायज़ क़रार देती थीं। इन्हें जब किसी हिन्दुस्तानी को हलाल करना होता था तो ये किसी अंग्रेज़ जज से पहिले क़लमा पढ़वाते थे और फिर निर्भीक होकर उसकी गर्दन पर छुरी फेर देते थे। प्रजातंत्र के हामी अंग्रेज़ प्रजातंत्र का खून नहीं करते थे।

महाराजा चेतसिंह के ख़ज़ाने को लूटने पर जब हेस्टिंग्स को उतने धन की प्राप्ति न हुई जितनी उसे आशा थी तो उसने अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ाई। उसकी दृष्टि अवध की बेग़मों पर पड़ी, जिनका संरक्षण-भार नवाब शुजाउद्दौला अपनी मृत्यु के समय अंग्रेजों पर छोड़ गया था।

वारेनहेस्टिंग्स को मालूम था कि उनके पास अथाह दौलत है परन्तु क्यों कि उनका संरक्षण-भार उनके अपने सिर पर था इस लिये उनसे धन लूटने के लिये उन्हें किसी बहाने की आवश्यकता थी।

वारेनहेस्टिंग्स ने अवध के नवाब आसफ़उद्दौला के पास अपना दूत भेजकर उसे सूचित किया कि वह बनारस से लखनऊ आरहा है और उसे रुपये की सख्त आवश्यकता है। इस लिये नवाब साहब उसके लिये पचास लाख रुपये का प्रबन्ध करके रखें।

नवाब आसफ़उद्दौला को यह समाचार मिला तो उसके पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गई क्यों कि उसकी अपनी आर्थिक दशा उन दिनों बहुत ख़राब चल रही थी। नवाब शुजाउद्दौला ने करोड़ों रुपया अंग्रेज़ों को देकर और शेष बेग़मों के पास भेजकर अपनी मृत्यु से पूर्व ही सरकारी ख़ज़ाने को ख़ाली कर दिया था। ऐसी स्थिति में वह अंग्रेज़ी सेना का ख़र्च भी किस तरह चला रहा था, यह वही जानता था।

आसफ़उद्दौला डरा कि कहीं वारेनहेस्टिंग्स लखनऊ में न आधमके और उसे अपमान सहन करना पड़े। इस भय से वह स्वयँ आगे बढ़कर चुनार पहुँचा और वहाँ के क़िले में उसने वारेनहेस्टिंग्स से प्रार्थना की, "गवर्नरजनरल साहब! मेरे पास तो इस वक्त आपको देने के लिये एक कौड़ी भी नहीं है। खज़ाने की हालत आप से छिपी नहीं है। भाई साहब अपने मरने से पहिले ही खज़ाना खाली कर गये थे।"

"वह सब हम जानता है नवाबसाहब! उसका तुम फ़िक्र मत करो। हम तुमको ऐसी तरकीब बतलायेगा जिससे हमारा भी काम हो जायेगा और तुम्हें भी अपना काम चलाने के लिये दौलत हाथ आयेगी।"

नवाब आसफ़उद्दौला वारेनहेस्टिंग्स की इस तरकीब को सुनने के लिये लालायित हो उठा। डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। इससे सुन्दर बात और क्या हो सकती थी कि जिससे वारेनहेस्टिंग्स को भी रुपया मिल जाता और उसे भी, परन्तु उसकी यह समझ में न आया कि ऐसी तरकीब हो क्या सकती थी। उसने कहा, "इससे बढ़िया बात और क्या हो सकती है कि जिससे आपका भी काम हो जाये और मुझे भी कुछ मदद मिल जाये। आप उस नायाब तरकीब को बतलाइये। मैं आपके हर तरह से साथ हूँ।"

वारेनहेस्टिंग्स बोला, "रुपये की हमें भी सख्त ज़रूरत है और तुम्हारे पास भी रुपया नहीं है। हम दोनों को रुपये की ज़रूरत है। इस लिये हम दोनों को रुपया हासिल करने की कोशिश करनी चाहिये।"

"इस काम में मेरे क़ाबिल जो खिदमत होगी मैं उसे सरंज़ाम देने में पीछे नहीं रहूँगा। आप हुक्म कीजिये मुझे क्या करना

होगा ?" ग्रासफ़उद्दौला बोला ।

वारेनहेस्टिंग्स बोला, "नवाब शुजाउद्दौला ने तुम्हारे साथ सख्त नाइन्साफ़ी से काम लिया । उसने सरकारी ख़ज़ाने का सब रुपया ग्रपनी बेग़म के पास फ़ैज़ाबाद के महल में भेज दिया । वह रुपया तुम्हारे पास होता तो तुम्हारे कितना काम ग्राता ?

तुम हमारी मदद से वह रुपया शुजाउद्दौला की बेग़म से वसूल कर सकते हो ग्रौर हमारी ज़रूरत का रुपया हमें देकर बाक़ी ग्रपने पास रख लेना ।"

वारेनहेस्टिंग्स की बात सुनकर ग्रासफ़उद्दौला के पैर लड़खड़ाये ग्रौर सिर चकरा गया । उसकी गर्दन शर्म से झुक गई । उसने ग्रपने मन से कहा, 'या ख़ुदा ! यह क्या कहा इस पाजी ने ?' उसे स्वप्न में भी ध्यान नहीं था कि वारेनहेस्टिंग्स उससे उसकी माँ ग्रौर भाभी को लूटने के लिये कहेगा ।

ग्रासफ़उद्दौला को इस शशोपंज में पड़ा देखकर हेस्टिंग्स गरज कर बोला, "नवाब साहब ! ग्रगर ग्रापने इस वक्त ग्राना-कानी की तो मेरी ज़ुरूरत का रुपया ग्रापको देना होगा ग्रौर यह भी समझलो कि यह रुपया बेग़मों के पास छोड़ा नहीं जायेगा क्यों कि यह सरकारी ख़ज़ाने का रुपया है, बेग़मों का ज़ाती रुपया नहीं है ।"

ग्रासफ़उद्दौला काँप उठा । वह घबराकर बोला, "हुक्म कीजिये मुझे क्या करना होगा ?"

"कुछ नहीं, तुम्हें बेग़मों पर सिर्फ़ यह इलजाम लगाना होगा कि बेग़में बनारस के महाराजा चेतसिंह के साथ साज़िश कर रही थीं ।"

"लेकिन गवर्नर साहब ! बेग़मों का तो महाराजा चेतसिंह से कोई ताल्लुक़ ही नहीं था ।"

"इससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है। साज़िश साबित करना हमारे बैरिस्टर जोन्सटन का काम है और उसे सच मानने का काम हमारे जज इम्पे का है। हमारी अदालत में बेग़मों की बात कौन सुनेगा ? हमने तुम्हें जो बोला, तुम्हें वह करना है।"

आसफ़उद्दौला को लाचारी में हेस्टिंग्स की साज़िश का शिकार बनना पड़ा। उसके अन्दर हेस्टिंग्स का मुक़ाबिला करने की शक्ति नहीं थी। उसे न चाहते हुए भी बेग़मों पर चेतसिंह के साथ साज़िश करने का दोषारोपण करना पड़ा।

हेस्टिंग्स का चेहरा खिल उठा। शिकार उसके हाथों में आ-गया। उसका निशाना सही बैठा। अब शिकार को जिबह करने के लिये क़लमा पढ़ने की आवश्यकता थी। इसके लिये उसने कलकत्ते से चीफ़ जस्टिस इम्पे को बुलाया और उसकी अदालत में मुक़दमा पेश किया गया।

चीफ़ जस्टिस इम्पे को क़लमा पढ़ने में अधिक समय नहीं लगा। झूठे गवाहों की शहादतों पर इम्पे ने बेग़मों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध साज़िश में शामिल होने की दोषी स्वीकार कर लिया। इम्पे अपना फ़ैसला देकर कलकत्ता चला गया और वारेनहेस्टिंग्स की सेना ने फ़ैज़ाबाद जाकर बेग़मों के महलों का घेरा डाल दिया।

अंग्रेज़-कमाण्डर ने बेग़मों से कहा, "अदालत के फ़ैसले के मुताबिक तुम सबको क़ैद किया जाता है। तुम सब इस वक्त हमारी क़ैद में हो। तुम अपने सब ज़ेवरात और ख़ज़ाना हमारे हवाले कर दो।"

बेग़मों ने अपने ज़ेवर देने से इन्कार किया तो सैनिकों ने उनके पास खाना और पानी तक पहुँचना बन्द कर दिया। तीन

चार दिन तक बेग़में भूख से तड़पती रहीं ।

बेग़मों के अलावा उनके दास-दासियों को भी सैनिकों ने विविध प्रकार की यातनायें देनी आरम्भ करदीं । उन्हें मारा पीटा गया और मजबूर किया गया कि वे महल के उन स्थानों की उन्हें सूचना दें जहाँ ख़ज़ाना दबा हुआ था ।

जब दास-दासियों के रोने-चीख़ने की आवाजें बेग़मों के कानों में पड़ीं तो उनके दिल दहल उठे । उन्होंने अपने मन में कहा, 'या ख़ुदा ! तुमने हमें किन ज़ालिमों के हवाले कर दिया ।'

बेग़मों से जब अपने दास-दासियों पर ज़ुल्म होता न देखा गया तो उन्होंने अपने ज़ेवरात सैनिकों के हवाले कर दिये ।

अवध की बेग़मों की लूट से वारेनहेस्टिंग्स को करोड़ों की दौलत हाथ लगी । इस लूट की दौलत में से हेस्टिंग्स ने आसफ़-उद्दौला को एक कौड़ी नहीं दी । हेस्टिंग्स बोला, "नवाब साहब इस वक्त हमें रुपये की बहुत सख्त जुरूरत है । तुम अपना काम अपनी रियासत से चलाओ ।"

आसफ़उद्दौला मन मार कर रह गया । गुनाह बेलज्जत हो गया । एक कौड़ी हाथ नहीं लगी और बेग़में लुट गईं । लाभ केवल यही हुआ कि उसकी उस समय जान बच गई ।

इस बार वारेनहेस्टिंग्स एक अजीब शान के साथ कलकत्ते में दाख़िल हुआ । इतनी शान से वह पहिले कभी कलकत्ते मेंनहीं आया था । सोने-चाँदी के ज़ेवरों के छकड़े-के-छकड़े उसके साथ थे । वह करोड़ों की सम्पत्ति लूटकर अपने साथ लाया था ।

मिस्टर स्तीफ़ेन को वारेनहेस्टिंग्स के आने का समाचार पहिले ही मिल चुका था । उसे पता चल चुका था कि इस बार वह किस शान से आरहा है । इस लिये उसने पहिले से ही उसके स्वागत में शानदार डांस का आयोजन कर लिया था ।

स्तीफ़ेन ने हेस्टिंग्स के आते ही उससे भेंट करके कहा, "सर ! मुबारिक हो आपको आपकी यह शानदार कामयाबी ।"

"हलो स्तीफ़ेन ! इस बार सचमुच हमने बहुत शानदार शिकार मारे हैं । इतने शानदार शिकार पहिले कभी हमारे हाथ नहीं लगे । हम कम्पनी के लिये बेशुमार दौलत लाये हैं ।"

"तब तो हम लोगों को भी खूब इनाम मिलेगा सर ! हमने इस खुशी में एक डांस का प्रोग्राम रखा है ।"

"मिस मेरी कहाँ है ? क्या वह नहीं आई तुम्हारे साथ ?"

मिस्टर स्तीफ़ेन को हेस्टिंग्स का यह प्रश्न अच्छा नहीं लगा क्योंकि इधर इतने दिन नज़मा के सम्पर्क में रहने से उसे कुछ ऐसा लगने लगा था जैसे वह उसे प्रेम करने लगा है । इस लिये अब जब कोई अन्य व्यक्ति उसके प्रति उसे आकर्षित दिखाई देता था तो उसके मन में कुछ बेचैनी सी होने लगती थी । परन्तु हेस्टिंग्स के सामने उसने अपनी यह परेशानी व्यक्त न करके कहा, "मिस मेरी आपको बहुत याद करती हैं । उनकी बदौलत तो आजकल मेरा नाचघर चल ही रहा है । कमाल की आर्टिस्ट है । बड़ी मशहूरी हासिल की है मिस मेरी ने ।

आप हमार नया नाजघर देखेंगे तो आपकी तबियत खुश हो जायेगी । यह सब भी उन्हीं की बदौलत है ।"

"क्या कोई नया हॉल बनवाया है तुमने स्तीफ़ेन ?"

"यस सर ! ब्राण्ड न्यू ! उसी का तो उद्‌घाटन करना है आपको । आपके लौटने की इन्तज़ार में मैंने एक महीने से उसमें काम शुरू नहीं किया ।"

"वेरी गुड ! हम जुरूर आयेंगे और तुम्हारे आर्टिस्टों को इनाम देंगे ।"

"और मुझे सर !"

"तुमको भी।"

स्तीफ़ेन हेस्टिंग्स की कोठी से लौटा तो देखा नज़मा उसकी प्रतीक्षा में नाचघर के द्वार पर खड़ी थी।

नज़मा को देखकर स्तीफ़ेन की तबियत हरी होगई। उसकी गति कुछ तीव्र होगई और वे सब बातें उसके दिल से उभर कर होठों पर आगईं जो हेस्टिंग्स ने उससे कही थीं।

"मिस मेरी! तुम बहुत लकी (भाग्यशालिनी) हो।"

"वह कैसे?"

"गवर्नरजनरल ने तुम्हें याद किया।"

"क्या आगये वह?"

"यस!"

"कब?"

"आज ही तो मिस मेरी! मैं इस वक्त उन्हीं के पास से आ-रहा हूँ। उन्होंने हमारे नये नाचघर का उद्घाटन करना मंजूर कर लिया है। वह हमारे आर्टिस्टों को इनामात तकसीम करेंगे। वह मुझे भी इनाम देंगे।" स्तीफ़ेन एक साँस में सब-कुछ कह गया।

"तुम्हें किस बात का इनाम?"

"इस बात का मिस मेरी! कि मैं तुम जैसे लाजवाब आर्टिस्ट को स्टेज पर लाया। मैं तुम्हें स्टेज पर न लाता तो तुम्हें कौन जानता। तुम्हें इतनी शोहरत कैसे मिलती? गवर्नर जनरल हेस्टिंग्स तुम्हें क्यों याद करता?"

"सुना है गवर्नर जनरल इस बार बहुत दौलत लेकर आये हैं?"

"बेशुमार।"

"यह दौलत उनके हाथ कहाँ से आई मिस्टर स्तीफ़ेन?"

"बड़ी दौलत है इस देश में मिस मेरी ! यहाँ के राजे, नवाब और बेग़में करोड़ों रुपया दबाये बैठे हैं। सुना है कोई राजा था बनारस का। हमारे ख़िलाफ़ उसने बग़ावत की थी और अवध की बेग़मों ने उसका साथ दिया था। गवर्नरजनरल ने दोनों को मिट्टी में मिला दिया और उनकी सब दौलत अपने कब्ज़े में करली। हमारा गवर्नर जनरल बहुत बहादुर है। उसका नाम सुनकर यहाँ के राजे और नवाब काँपते हैं।"

इस सूचना को प्राप्त कर नज़मा अन्दर-ही-अन्दर तिलमिला उठी। अपने चेहरे पर उसने कोई भाव नहीं आने दिया परन्तु दिल बुझ गया। वह झूठी हँसी हँसकर बोली, "तब तो आप-को भी इस खुशी में एक शानदार पार्टी देनी चाहिये।"

"क्यों नहीं, हम शानदार पार्टी देंगे। गवर्नर जनरल साहब ने उसमें आना क़ुबूल कर लिया है।"

"कब होगी यह दावत।"

"कल मिस मेरी ! कल ही हमारे नये नाचघर का ओपिनिंग होगा और कल ही यह दावत होगी।"

"वेरी गुड।" नज़मा ने ऊपर के मन से कहा परन्तु उसके दिल में जलन बनी रही।

नज़मा के मस्तिष्क में प्राचीन स्मृतियाँ सजग हो उठीं। उसे अपने जीवन का वह समय याद आया जब मीरजाफ़र बंगाल का नवाब बना और उसने महाराजा नन्दकुमार को अपना दीवान बना लिया। उस समय मोहम्मदरज़ाखाँ कुछ दिन के लिये नाराज़ होकर मीरक़ासिम से जा मिला था। तब मीर क़ासिम ने उसे नवाब शुजाउद्दौला के पास अपना एक पत्र लेकर लखनऊ भेजा था।

लखनऊ की वह यात्रा मोहम्मदरज़ाखाँ ने नज़मा के साथ

की थी। उस समय नज़मा की अवध की बेग़मों से भेंट हुई थी। नवाब शुजाउद्दौला की अम्मीजान ने नज़मा को अंक में भरकर कहा था, "कितना ख़ूबसूरत फूल है। इतना ख़ूबसूरत फूल मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहिली बार देखा है।"

नज़मा चुपचाप अपने कमरे में बैठी हुई अवध की बेग़मों पर पड़ी इस बलायेनागहानी के विषय में सोचती रही। उसे ध्यान ही नहीं रहा की उसे स्टेज पर जाना है।

नाच का समय हो गया और नज़मा स्टेज पर न पहुँची तो स्तीफ़ेन दौड़ा हुआ उसके कमरे पर आया। उसने बाहर से ही कहा, "मिस मेरी ! क्या आप अभी तय्यार नहीं हैं ?"

स्तीफ़ेन की आवाज़ सुनकर नज़मा का स्वप्न टूटा। वह हड़बड़ा कर बोली, "अभी आती हूँ। ज़रा ठहरिये।"

मिस्टर स्तीफ़ेन प्रतीक्षा में बाहर खड़ा रहा। कुछ देर में नज़मा बाहर आई और हँसकर बोली, "मिस्टर स्तीफ़ेन ! आपने आज इतनी ज़बरदस्त ख़ुशख़बरी दी कि मैं यह भूल ही गई कि मुझे स्टेज पर जाना है। मैं गवर्नर जनरल साहब को दी जाने वाली पार्टी के ही बारे में सोचती रही। मैं सोच रही थी कि कैसे इस जशन को शानदार बनाया जाये।"

"आप को यही करना है मिस मेरी ! यह फंकशन (जशन) शानदार होना चाहिये। नाचघर का काम तो चलता ही रहेगा। आप एक डांस देकर छुट्टी करें।"

"मैं भी यही सोचती हूँ, क्यों कि यह काम अहम है। गवर्नर साहब जब इतनी दौलत लेकर आये हैं तो हमारे नाचघर के लिये भी रुपया दे सकते हैं।"

"हाँ हाँ, वह खुश होजायें तो क्या नहीं कर सकते ? आप उन्हें ख़ुश कर सकती हैं मिस मेरी। उन्होंने हमारे

आर्टिस्टों को और हमें इनाम देने का तो वायदा किया ही है।"

नज़मा स्टेज पर गई, एक डांस दिया और बाहर आगई। उसका मन उस समय किसी चीज़ में नहीं लग रहा था। वह अवध की बेग़मों पर पड़ी मुसीबत का हाल मोम्मदरज़ाखाँ को सुनाने के लिये उतावली हो रही थी।

स्तीफ़ेन समझ रहा था कि नज़मा वारेनहेस्टिंग्स को दी-जाने वाली दावत और जशन के विषय में इतनी गम्भीरता से सोच रही थी। वह नाचघर के गेट तक मिस मेरी को छोड़ने आया।

नाचघर से नज़मा अपनी कोठी पर लौटी और वहाँ से वस्त्र बदल कर अपनी हवेली पर पहुँची। उसने देखा मोहम्मद-रज़ाखाँ किसी अपरिचित व्यक्ति से बातें कर रहा था। वह नज़मा को आते देखकर खड़ा होगया और उसके निकट जाकर पूछा, "तुम इतनी जल्द कैसे लौट आईं बेग़म ?"

नज़मा कुछ नहीं बोली। उसका चेहरा उतरा हुआ था और आँखें डबडबाई हुई थीं। वह विचित्र दृष्टि से मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर देख रही थी ।

"क्या माजरा है बेग़म ? तुम्हारी यह क्या हालत है ? क्या कोई ख़ास बात है ? तुम परेशान क्यों हो ?"

"बहुत ख़ास ! वारेनहेस्टिंग्स ने अवध की बेग़मों को भी नहीं बख्शा। सुना है इस डाकू ने उनकी सब दौलत लूट कर उन्हें कंगाल कर दिया। यह शिकारी कुत्ता किसी को बख्शने वाला नहीं है।"

"मैं सब-कुछ सुन चुका हूँ बेग़म ! यह शख्श, जो मेरे पास बैठा था, इसे पहिचाना नहीं तुमने। यह वही तो दरवान है बड़ी

बेग़म साहिबा का, जो एक हफ्ते तक लखनऊ में हमारी ख़िदमत में रहा था।"

नज़मा ने चिक से झाँक कर देखा तो उसे पहिचानने में कठिनाई न हुई कि वह इस्माइल था।

नज़मा ने इस्माइल को अन्दर बुला कर पूछा, "इस्माइल ! क्या इस पाजी ने बेग़म साहिबा की सब दौलत लूट ली ?"

"बेगम ! उनके शरीर पर जो क़ीमती कपड़े थे वे भी अंग्रेज़ों ने उतरवा लिये। छल्ला-छल्ला ज़ेवर उनसे छीन लिया। तहख़ानों की सब दौलत खोदकर निकाल ली और मुलाज़िमों पर वह ज़ुल्म किया कि बयान नहीं किया जा सकता।" यह कहकर उसने अपने बदन पर आई चोटें दिखाईं, जिनके घाव अभी पूरी तरह भरे नहीं थे और पट्टियाँ बँधी हुई थीं।

नज़मा इस्माइल की चोटों को देखकर हैरत में रह गई। उसने दर्द भरे स्वर में पूछा, "क्या नवाब आसफ़उद्दौला साहब वहाँ मौजूद नहीं थे ? क्या उन्होंने कोई बचाव नहीं किया ?"

"थे क्यों नहीं बेग़म ! सुना है वह अंग्रेज़ों से मिल गये थे और हेस्टिंग्स साहब ने उनसे वायदा किया था कि वह लूट का आधा रुपया उन्हें देंगे।"

यह सुनकर नज़मा चकित रह गई। उसकी समझ में कुछ न आया। उसकी आँखें डबडबा आईं।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने पूछा, "तो फिर आधा रुपया हेस्टिंग्स ने दिया उन्हें ? उन्हें इस लूट का कुछ माल मिला ?"

"एक कौड़ी नहीं।" इस्माइल मुँह बनाकर बोला, "नवाब का गुनाह बेलज्जत रहा। बेग़मों की बेइज्जती भी कराई और हाथ भी कुछ नहीं लगा।"

नज़मा की आँखों से आँसू बरस पड़े। उसकी यह दशा

देखकर इस्माइल भी रोपड़ा और रोता हुआ ही बोला, "बेग़म! उस जुल्म को देखकर मुझे लगा कि ख़ुदा पाक नाम की कोई चीज़ कहीं नहीं है। हिन्दुओं को हम बुरा समझते थे। कहते थे कि बड़े ज़ालिम हैं। बात-ही-बात में इन्सान का ख़ून कर देते हैं। औरतों की वे भी इज्ज़त करते हैं। राजपूतों के तो कहने ही क्या हैं? वे तो औरत की इज्ज़त बचाने के लिये अपनी जान की भी परवाह नहीं करते। लेकिन यह अंग्रेज़-क़ौम ऐसी बेहया देखी कि जिसने औरतों को भी नहीं बख्शा? इन्सान नहीं, जानवर हैं ये लोग।"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने पुकारा, "बद्री पंडित!"

"जी आया।"

"बद्री पंडित! इन्हें अपने साथ लेजाकर इनके खाने और आराम करने का इन्तज़ाम करो।" फिर इस्माइल की ओर को रुख करके कहा, "इस्माइल! खाना खाकर आराम करो, तुम बहुत थके हुए मालूम देते हो।"

"वाक़ई बहुत थका हुआ हूँ नवाब साहब! सारा बदन चूर-चूर हो रहा है। कमबख्तों ने सब हड्डी-पसलियाँ तोड़ डालीं।"

बद्री पंडित इस्माइल को अपने साथ ले गया।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने नज़मा को सहारा देकर पलंग पर बिठाया और उसका सिर तकिये पर रख दिया। उसने कहा, "बेग़म! जी चाहता है इस हेस्टिंग्स के बच्चे का ख़ून कर दूँ।"

यह सुनकर नज़मा हड़बड़ा कर उठ बैठी। उसका बदन काँप रहा था। उसने थरथराती सी आवाज़ में कहा, "फिर कभी ऐसे अलफ़ाज़ जुबान पर न लाना। अपनी नज़मा की क़सम खाकर कहो कि तुम कभी ऐसी बात सोचोगे भी नहीं। एक हेस्टिंग्स को मारने से अंग्रेज़ों के राज का ख़ात्मा नहीं हो सकता।

क्लाइव गया, हेस्टिंग्स आया। यह चला जायेगा तो कोई दूसरा इससे भी ज़ालिम शिकारी आजायेगा।"

नज़मा की परेशानी ने मोहम्मदरज़ाखाँ को व्याकुल कर दिया। वह कुछ भयभीत सा हो उठा। उसने नज़मा को सँभाल कर कहा, "मुझे अचानक ही गुस्सा आगया था बेग़म! बात तुम्हारी ही सच है। आइन्दा कभी तुम मेरी ज़ुबान से ये अलफ़ाज न सुनोगी।"

नज़मा कुछ देर तक आँखें बन्द किये चुपचाप लेटी रही। उसके दिल को मोहम्मदरज़ा के इन शब्दों से कुछ राहत मिली। उसने आँखें खोलकर मोहम्मदरज़ा की ओर देखा तो उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं।

नज़मा ने फिर आँखें बन्द करके धीरे से कहा, "बड़ा खौफ़-नाक ज़माना आगया है। मकान की दीवारों के भी कान होते हैं। मुँह से आइन्दा कभी ऐसी बात न निकालना। आप नहीं जानते, आपके कितने दुश्मन हैं। अंग्रेज़ों की खुफ़िया पुलिस के लोग बहुत ख़तरनाक हैं।"

"नहीं नज़मा, कभी नहीं। अब तुम कभी नहीं सुनोगी।"

नज़मा ने मोहम्मदरज़ाखाँ का हाथ अपने हाथ में लेकर अपने माथे पर रख लिया। उसका दिल अभी तक बड़ी तेज़ी से धड़क रहा था। वह मोहम्मदरज़ाखाँ के शब्द सुनकर घबरा उठी थी।

"घबराओ नहीं नज़मा! मैं अब इस ज़िन्दगी में कभी कोई काम तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं करूँगा।"

नज़मा ने आँखें बन्द कर लीं।

नौ

नाना फड़नवीस को उनके गुप्तचर ने आकर सूचना दी, "गुप्त संधि सम्पन्न होगई।"

"क्या निश्चय हुआ ?"

अंग्रेज़ राघोबा को पाँच लाख रुपये देंगे। उसके बदले में राघोबा अंग्रेज़ों को साल्टी और बसई दे देगा। अंग्रेज़ी सेना राघोबा को पेशवा बनने में सहायता देगी।"

"हूँ ! तो राघोबा पेशवा बनेगा।" नाना फड़नवीस ने बुड़-बुड़ाकर कहा। "अच्छा, तुम जाओ। हमें सूचना दो कि मॉस्टिन इस समय कहाँ है। वह पूना में कब तक ठहरेगा ?"

"जो आज्ञा" कहकर गुप्तचर चला गया।

पूना के वायुमण्डल में राघोबा और मॉस्टिन की गुप्त बातों की चर्चा कानाफूसियों में व्याप्त थी।

मराठा-सरदारों के कानों में भी इसकी भनक पड़ चुकी थी परन्तु किसी को यह ज्ञात न हो सका था कि वास्तव में बात क्या है और मॉस्टिन राघोबा से बार-बार क्यों भेंट करता है।

नाना फड़नवीस अपने महल से निकलकर सीधे राजमहल में पहुँचे। माधोराव पेशवा पलंग पर बैठे थे। उनके कानों में भी राघोबा और मॉस्टिन की गुप्त मंत्रणा की भनक पड़ चुकी थी

परन्तु वह मंत्रणा क्या थी इस रहस्य का उन्हें भी कुछ ज्ञान नहीं था।

नाना फड़नवीस के आने का समाचार प्राप्त कर माधोराव ने उन्हें सादर अन्दर लाने की आज्ञा दी।

माधोराव पेशवा बोले, "नाना साहब ! हमें विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि चचा राघोबा अंग्रेज़ों से कोई गुप्त संधि करना चाहते हैं।"

"वह संधि सम्पन्न हो चुकी पेशवा !"

"क्या सन्धि सम्पन्न हो चुकी ?"

"जी हाँ, मुझे अभी-अभी सूचना मिली है कि अंग्रेजों के दूत मॉस्टिन के साथ राघोबा ने पाँच लाख रुपये के बदले में साष्टी और वसई उन्हें देने का वचन दिया है। मॉस्टिन को कम्पनी के डाइरेक्टरों ने भारत इसी काम के लिये भेजा है।"

यह समाचार प्राप्त कर माधोराव पेशवा के नेत्र अंगारों के समान जलगे लगे। उन्होंने उसी समय आज्ञा की "राघोबा को इसी ससय बन्दी बनाया जाये।"

माधोराव की आज्ञा होते ही राघोबा को बन्दी बना लिया गया।

मॉस्टिन को राघोबा के बन्दी होने का समाचार मिला तो वह रातोंरात पूना से बम्बई भाग गया।

मॉस्टिन को अपने ध्येय में पूर्ण सफलता नहीं मिली, परन्तु फिर भी बम्बई-कौंसिल के मेम्बरों ने उसके कार्य की इस लिये सराहना की कि वह राघोबा को अपने पक्ष में कर सका। राघोबा उनके हाथों में एक ऐसा मोहरा आगया जिसे लेकर वे मराठा-राज्य में अपने षडयंत्रों का कुचक्र रच सकेंगें।

राघोबा ने बन्दीगृह से बाहर आने के लिये उस समय माधो-

राव पेशवा से क्षमा-याचना करली और वचन दिया कि भविष्य में वह फिर कभी इस प्रकार का कुचक्र नहीं रचेगा, परन्तु वह बराबर मॉस्टिन से गुप्त मत्रणा करता रहा।

कुछ दिन पश्चात नाना फड़नवीस को किसी कार्यवश पूना से पुरन्धर जाना पड़ा। उनकी अनुपस्थिति में राघोबा ने मॉस्टिन से मिलकर माधोराव पेशवा को समाप्त करने का षडयंत्र रचा और रात्रि में महल के एक नौकर को घूस देकर कुछ हत्यारों को अन्दर घुसा दिया।

इस दुर्घटना में माधोराव पेशवा बुरी तरह घायल हुए और अन्त में उनकी मृत्यु होगई, परन्तु राघोबा को अपने लक्ष्य में सफलता न मिल सकी।

नाना फड़नवीस के कहने पर माधोराव ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने भाई नारायणराव को पेशवा घोषित कर दिया, क्यों कि उनकी अपनी कोई सन्तान नहीं थी।

राघोबा यह हत्या कराकर भी पेशवा न बन सका। नाना फड़नवीस ने उसके कुचक्र को सफल न होने दिया।

नारायणराव के पेशवा बनने का समाचार जब बम्बई कौंसिल के मेम्बरों को मिला तो वहाँ मातम छागया। वे इस षडयंत्र से जो आशा लिये बैठे थे वह फलीभूत न होसकी।

इस हत्या का रहस्य न खुल सका, परन्तु नाना फड़नवीस और मराठा-सरदारों को यह विश्वास था कि इसके पीछे राघोबा का ही हाथ था। इस लिये सब लोग उससे और सतर्क होगये।

नाना फड़नवीस ने नारायणराव पेशवा की सुरक्षा का पूरा-पूरा प्रबन्ध कर दिया। उनके महल पर हर समय सैनिक पहरा रहने लगा।

राघोबा को जब माधोराव की मृत्यु के पश्चात भी पेशवा-

पद प्राप्त न होसका तो वह क्रोध से आग हो उठा। उसने मॉस्टिन से कहा, "एक हत्या और।"

"यही होगा।" मॉस्टिन बोला।

राघोबा अपना कुचक्र रचता रहा। उसने घूस देकर नारायणराव के महल की एक नौकरानी को अपने हाथों में लेलिया और उसी के ज़रिये एक दिन रात्रि में अपने कुछ आदमी महल में घुसा दिये।

इन हत्यारों ने नारायणराव पेशवा की हत्या कर दी, परन्तु हत्यारे सब पकड़ लिये गये।

नारायणराव की हत्या होते ही राघोबा ने तुरन्त अपने आपको पेशवा घोषित कर दिया और गद्दी सँभाल ली।

नाना फड़नवीस तथा अन्य मराठा-सरदार इस नाटक को चुपचाप एक ओर बैठकर देखते रहे।

मॉस्टिन ने नारायणराव की हत्या का समाचार बम्बई भेजा तो वहाँ इसकी प्रसन्नता में एक शानदार दावत का आयोजन किया गया।

मॉस्टिन ने राघोबा से तुरन्त निज़ाम पर आक्रमण करने को कहा और राघोबा मॉस्टिन की बातों में आकर हैदराबाद की ओर चल दिया।

राघोबा के पूना से जाते ही नाना फड़नवीस ने नारायणराव पेशवा की मृत्यु के पश्चात पैदा हुए उसके पुत्र को पेशवा घोषित कर दिया। नाना फड़नवीस की इस घोषणा का पूना की जनता और मराठा-सरदारों ने स्वागत किया। राघोबा के हाथ कष्ट और अपमान के अतिरिक्त और कुछ न लगा।

अंग्रेज़ राघोबा को पेशवा बनाना चाहते थे। उन्होंने राघोबा को सूरत बुलाकर उससे संधि की, जिसमें राघोबा ने अंग्रेजों

के नाम साष्टि, बसई और सूरत प्रान्त का एक भाग लिख दिया। इसके बदले में अंग्रेज़ों ने उसे पेशवा बनाकर पूना की गद्दी पर बिठाने का वचन ही नहीं दिया वरन् कर्नल कीटिंग को सेना लेकर राघोबा के साथ भेज दिया।

पेशवा के प्रधान मंत्री सखाराम बापू को जब यह सूचना मिली कि राघोबा अंग्रेज़ी सेना के साथ पूना पर आक्रमण करने आरहा है तो उन्होंने हरिपन्तफड़के को उसके विरुद्ध भेजा, जिसने आरस नामक स्थान पर अंग्रेज़ों की सेना को तहस-नहस कर दिया।

इस पराजय का समाचार वारेनहेस्टिंग्स को मिला तो उसने तुरन्त अपने दूत कर्नल अपटन को पूना भेजा। कर्नल अपटन ने प्रधान मंत्री सखाराम बापू से भेंट करके कहा, "अंग्रेज़-सरकार आप से अपने सम्बन्ध मित्रतापूर्ण रखना चाहती है। राघोबा से बम्बई-कौंसिल ने जो संधि की है वह नाज़ायज़ है, क्योंकि वह गवर्नरजनरल की आज्ञा के बिना की गई है। अंग्रेज़-सरकार भविष्य में राघोबा की कोई मदद नहीं करेगी।"

एक ओर तो हेस्टिंग्स ने मंत्री सखाराम को यह पत्र लिखा और दूसरी ओर राघोबा को भी एक पत्र लिखा, जिसमें उसके साथ सद्भावना व्यक्त की गई। हेस्टिंग्स की इस चाल को पहिचान कर मंत्री सखाराम कर्नल अपटन से बोले, "तुम्हारे गवर्नरजनरल साहब सूरत की संधि और राघोबा की मदद को तो नाजायज़ कहते हैं लेकिन उन्होंने साष्टी और बसई के कब्ज़े को नाजायज़ नहीं कहा। जब तक वह साष्टी और बसई हमें नहीं लौटाते हैं तब तक इस पत्र का कोई अर्थ नहीं है।"

"उनका मतलब यही है मंत्री महोदय !"

"संधि में मतलब से काम नहीं चलता है मिस्टर अपटन ! उनसे साफ़-साफ़ लिखाकर मँगाओ कि वह साष्टि और बसई हमें लौटाने को उद्यत हैं।"

कर्नल अपटन ने वारेनहेस्टिंग्ज़ को पत्र लिखा, "मंत्री सखाराम साष्टि और बसई को खाली किये बिना संधि करने को तय्यार नहीं हैं।"

हेस्टिंग्स ने यह समाचार पाकर कर्नल अपटन को पूना में ही बनाये रखा और अपनी सैनिक तय्यारी आरम्भ करदी। इसी बीच उसने निज़ाम हैदराबाद और हैदरअली से भी पत्र-व्यवहार किया।

नाना फड़नवीस को इस साँठ-गाँठ का पता चला तो उन्होंने कर्नल अपटन से पुरन्धर की संधि करली, जिसमें अंग्रेज़ों ने राघोबा की मदद न करने का वचन दिया और बसई का क़िला लौटाने का वायदा किया। पूना-सरकार ने मित्रता बनाने के लिये साष्टी का टापू और कुछ जागीर अंग्रेजों को दी और उनका एक वकील पूना में रखने की स्वीकृति देदी।

संधि पर दोनों ओर से हस्ताक्षर होगये परन्तु कम्पनी ने इस संधि की शर्तों का पालन न किया। न तो वे राघोबा को मदद करने से बाज़ आये और न ही बसई का टापू पूना सरकार के हवाले किया।

इसी बीच गुजरात के महाराजा दमनजी गायकवाड़ का देहान्त होगया और उनके चार बेटे सयाजी, गोविन्दराव, मानिकजी और फ़तहसिंह गद्दी के लिये झगड़ने लगे। अंग्रेज़ों ने मौक़ा देखकर मॉस्टिन को वहाँ भेजा, जिसने अपनी चालों का वहाँ वह जाल फैलाया कि फ़तहसिंह गायकवाड़ उनमें फँस गया। अंग्रेज़ों की सहायता से उसने बड़ौदा की गद्दी हासिल

की और कई लाख रुपया सालाना की आय का इलाक़ा अंग्रेज़ों को दे दिया इस संधि से पूर्व गायकवाड़ राजकुल पेशवा को अपना अधिराज मानता था। संधि के बाद वह मराठा-मण्डल से प्रथक हो गया।

अंग्रेज़ मराठा-शक्ति को खण्ड-खण्ड करने की घात में थे। हेस्टिंग्स भोंसले, सिंधिया और होलकर से भी प्रथक-प्रथक बातें करके उन्हें एक दूसरे के विरुद्ध भड़का रहा था। कम्पनी के डाइरेक्ट्रों ने बम्बई और मद्रास-कौंसिल को लिखा, 'जिन इलाक़ों पर कम्पनी का अधिकार होचुका है उन्हें छोड़ना मूर्खता है। जंग की तय्यारी करो और वक्त आने पर हेस्टिंग्स की पूरी-पूरी मदद करो। कम्पनी के सब अफ़सरों को हिदायत करदो कि वे राघोबा की मदद करें।'

पुरन्धर की संधि केवल काग़ज़ का टुकड़ा बनकर रहगई। उस संधि की एक शर्त के अनुसार मॉस्टिन कम्पनी के वकील के रूप में पूना आगया। मॉस्टिन ने पूना आते ही अपना फूट का विषैला डंक इधर-उधर चलाना आरम्भ कर दिया। उसने पेशवा के एक मंत्री मोरोबा को अपनी ओर फोड़ लिया। उससे कहा, "नाना साहब! सखाराम बापू को हटाकर खुद प्रधान-मंत्री बनना चाहता है और तुम्हें मन्त्रि-मण्डल से निकाल देना चाहता है। तुम्हें मंत्री सखाराम को इस रहस्य से सूचित करना चाहिये।"

मोरोबा कान का कच्चा आदमी था और प्रधान मंत्री सखाराम बापू उसका बहुत विश्वास करता था। एक दिन बातों-बातों में उसने यह बात सखाराम बापू से कही तो वह चौकन्ना होगया और उस दिन से वह नाना फड़नवीस से कुछ खिचा-खिचा रहने लगा।

नाना फड़नवीस ने इस रहस्य को जानकर राजकाज से उदासीनता ग्रहण करली और वह पूना से पुरन्धर चले गये। इस तरह नाना फड़नवीस का स्थान मोरोबा को मिल गया।

एक दिन मॉस्टिन ने मोरोबा को अपने यहाँ बुलाया और उसे कुछ तोफ़े भेंट स्वरूप दिये।

बातें करते-करते वह अपने मतलब पर आगया। वह बोला, "मुझे पूना में तुमसे क़ाबिल आदमी दूसरा कोई नज़र नहीं आता। मुख्यमंत्री सखाराम भी तुम जैसे क़ाबिल नहीं हैं। पेशवा को चाहिये कि वह तुम्हें मुख्यमंत्री बनायें।"

मोरोबा ने कोई उत्तर न दिया। अपनी योग्यता की प्रशंसा सुनकर उसे गर्व अवश्य हुआ।

"अगर राघोबा पेशवा बन जाये तो मैं तुम्हें उसका मुख्य-मंत्री बनवा सकता हूँ। वह तुम्हारी बहुत इज्ज़त करता है।

मोरोबा कुछ सोचकर बोला, "अधिकारी तो वही है पेशवा बनने का। आखिर वह चचा है माधोराव का। नाना साहब के कुचक्र के कारण ही वह पेशवा न बन सका।"

"ही इज (वही है) और वह बन भी सकता है। अगर तुम उसकी मदद करो तो यह काम मुश्किल नहीं है।"

"वह कैसे ?"

"तुम हमारी बम्बई कौंसिल को पत्र लिखो कि अंग्रेज-सेना तुरन्त राघोबा को लेकर पूना की गद्दी पर बिठाने के लिये आजाये। पत्र में लिखो कि तुम उसकी यहाँ पूरी-पूरी मदद करोगे।"

मुख्यमंत्री बनने के लालच में मोरोबा ने तुरन्त बम्बई-कौंसिल को पत्र लिख दिया और पत्र के प्राप्त होते ही बम्बई कौंसिल ने पूना पर आक्रमण की तय्यारी करदी। वारेन-

हेस्टिंग्स के पास भी तुरन्त सूचना भेजदी गई। हेस्टिंग्स ने बंगाल की सेना को तुरन्त बम्बई पहुँचने की आज्ञा दी।

नाना फड़नवीस पुरन्धर अवश्य चले गये थे परन्तु मोरोबा और मॉस्टिन की गतिविधियों पर वह पूरी तरह नज़र रखे हुए थे। उनके गुप्तचर उन्हें दिन-दिन का सब समाचार देते रहते थे।

मोरोबा का विश्वासपात्र दूत, जो बम्बई-कौंसिल के पास उसका पत्र लेकर गया, नाना फड़नवीस का अपना आदमी था। वह पूना से चलकर पहिले पुरन्धर पहुँचा और नाना साहब को जाकर उसने मोरोबा का पत्र दिया। नाना साहब ने वह पत्र अपने पास रख लिया और उसी तरह का दूसरा पत्र लिखकर दूत को बम्बई लेजाने के लिये देदिया।

नाना फड़नवीस उस पत्र को लेकर तुरन्त पूना आये और उन्होंने मराठा सरदारों की एक सभा बुलाकर उसके सामने वह पत्र रख दिया। उस पत्र को सुनकर मराठा-सरदार क्रोध से आग होउठे और नाना साहब से कहा कि वह उस पत्र पर तुरन्त कार्यवाही करें।

नाना साहब ने मराठा सरदारों के आग्रह पर मुख्यमंत्री-पद सँभाला और मोरोबा को बन्दी बनाकर अहमदाबाद के क़िले में भेज दिया। सखाराम बापू ने स्वयँ मुख्यमंत्री-पद त्याग दिया क्यों कि वह बहुत वृद्ध होगये थे। उन्हें मोरोबा के इस द्रोह-कार्य पर बहुत दुःख हुआ।

सन् १७७८ में कर्नल लेसली बंगाल की सेना को लेकर रवाना हुआ परन्तु मार्ग में उसकी मृत्यु होगई और कर्नल गॉडार्ड सेनापति बन गया। पूना जाने के लिये इस सेना को भोंसले, होलकर और सिंधिया के राज्यों में से गुज़रना था, जो

मराठा-मण्डल के सदस्य थे। हेस्टिंग्स ने इन्हें धोखा देने के लिये पत्र लिखे, 'यह सेना पश्चिमी तट पर फ्रांसीसियों के सम्भावित आक्रमण से अपने इलाक़े की रक्षा के लिये भेजी जारही है। यह किसी भारतीय राजा या नवाब से युद्ध नहीं करेगी। आप लोग इससे सशंकित न हों और इसे अपने राज्यों से गुज़र जाने दें।'

बरार के राजा मूदाजी को हेस्टिंग्स ने एक और भाँसा दिया। उससे कहा कि उसे सतारा की ख़ाली गद्दी पर अंग्रेज़-फौज की सहायता से अधिकार करलेना चाहिये क्यों कि वह शिवाजी का वंशज है और उसका सतारा की गद्दी पर अधिकार है। यह मराठा-मण्डल में फूट डालने की एक ज़बरदस्त चाल थी, परन्तु मूदाजी ने इसे स्वीकार न किया।

इस तरह हेस्टिंग्स ने सिंधिया, भोंसले और होलकर तीनों को धोखा देकर अपनी सेना पूना की दिशा में बढ़ा दी। हेस्टिंग्स ने यही धोखा नाना फड़नवीस को भी देना चाहा, परन्तु वह धोखे में न आये और युद्ध की तय्यारी करनी आरम्भ करदी।

बम्बई-कौंसिल द्वारा राघोबा और कर्नल इजर्टन को सेना के साथ पूना भेजने का समाचार नाना फड़नवीस को मिल चुका था। उस समय सिंधिया और होलकर मराठा-सरदार पूना में थे नाना साहब ने उन दोनों को अपना सेनापति नियुक्त करके कहा, "मराठा सरदारो! जननी जन्म-भूमि की तुम्हें रक्षा करनी है। जाओ अंग्रेज़-सेना का विध्वंस करो।"

मॉस्टिन मराठों की इस सुदृढ़ स्थिति के विषय में जरनल इजर्टन को सूचना देने के लिये पूना से रवाना हुआ परन्तु मार्ग में अचानक मॉस्टिन की मृत्यु होगई और वह इजर्टन को मराठों की स्थिति का ज्ञान न करा सका।

सिंधिया और होलकर ने बड़ी चतुराई से युद्ध किया। वे धीरे-धीरे पीछे हटते गये और अंग्रेज़-सेना को तालेगाँव तक ले आये, जो पूना से केवल अठारह मील पर था। वहाँ आकर अंग्रेज़ सेना ने देखा कि मराठों की एक विशाल सेना ने उन्हें तीन ओर से घेर लिया। अंग्रेज़-सेना भयभीत होकर पीछे हटी परन्तु मराठों ने उन्हें पीछे नहीं हटने दिया। मराठा-सेना ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया और बुरी तरह पराजित किया। उनका गोला बारूद और हथियार सब छीन लिये।

अंग्रेज़ों ने पराजित होकर संधि की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना पर संधि हुई जिसमें राघोबा और दो अंग्रेज़ अफ़सरों को मराठों के हवाले किया गया। नाना फड़नवीस ने उन्हें सिंधिया को सौंप दिया।

वारेनहेस्टिंग्स को बम्बई-कौंसिल की सेना के पराजित होने और मराठों से संधि करने का समाचार मिला तो वह क्रोध और अपमान से तिलमिला उठा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया। वह कुर्सी पर बैठा न रह सका और परेशानी में कमरे के अन्दर घूमने लगा।

आज वारेनहेस्टिंग्स की सालगिरह का दिन था। मिस्टर स्तीफ़ेन ने उसके सम्मान में विशेष आयोजन किया था। जब हेस्टिंग्स वहाँ जाने की तय्यारी कर रहा था तभी उसे बम्बई कौंसिल का यह पत्र मिला।

मिस्टर स्तीफ़ेन और नज़मा वारेनहेस्टिंग्स को आयोजन में भाग लेने के लिये लेने आये तो हेस्टिंग्स ने उन्हें बाहर इन्तज़ार करने की आज्ञा दी।

स्तीफ़ेन ने कार्यालय में जाकर हेस्टिंग्स के स्टेनो से पूछा, "क्या बात है मिस्टरक्लिक ? गवर्नर जनरल साहब किस परेशानी

में हैं आज ?"

स्टेनों ने धीरे से बतलाया, "बहुत बड़ी परेशानी में हैं। हमारी बम्बई-रेज़ीडेंसी की फ़ौज को मराठों ने भक्क कर दिया। हमारा सब-कुछ ख़त्म कर दिया।"

"भक्क कर दिया ! यानी ख़त्म कर दिया ! यानी करनल इजर्टन मारा गया ! यानी हम हार गये। हमारे सब अफ़सर मारे गये।"

"सब ख़त्म होगया।"

नज़मा ने यह समाचार बड़े ध्यान से सुना। उसका दिल अन्दर से गुदगुदा उठा। इतने दिन पश्चात यह एक समाचार उसके कानों में ऐसा पड़ा था जिससे उसे आत्मिक शांति प्राप्त हुई, परन्तु उसने अपना चेहरा ऐसा बना लिया, मानो उसके किसी आत्मीय जन की मृत्यु होगई। उसने फुसफुसाकर कहा, "ग्रेट कैलेमिटी (भयंकर आपत्ति) ओह ! गॉड (परमात्मा) यह क्या हुआ ? हमारा सब भक्क होगया।"

"रियली इट इज़ (वास्तव में)।" क्लिक ने भर्राई आवाज़ में कहा।

वारेनहेस्टिंग्स के कार्यालय में गम्भीर मौन था। एक शब्द भी किसी की ज़ुबान पर नहीं था। सब अंग्रेज-अफ़सर चिंतित दिखाई देरहे थे। उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। कुछ कमरे की छत पर देख रहे थे, कुछ माथे पर हाथ रखे बैठे थे, कुछ परेशान नज़र आरहे थे और कुछ क्षण-क्षण में मुद्रा बदल रहे थे। उन सब की दशा ख़राब थी।

यह देखकर नज़मा अपने दिल में हँसी। उसने इसी कार्यालय के लोगों को उस दिन भी देखा था जब वारेनहेस्टिंग्स चेतसिंह और अवध की बेगमों को लूटकर आया था। उससे पूर्व

उसने इस कार्यालय को उस दिन भी देखा था जब महाराजा नन्दकुमार को फाँसी दी गई थी और उससे भी पूर्व उसे वह दिन भी नहीं भूला था जब मोहम्मदरज़ाखाँ, शिताबराय और जसारत खाँ पर ग़बन का मुक़दमा चलाया जारहा था। उन दिनों कितनी चहल-पहल थी और कैसा प्रसन्नता का वातावरण था। आज लग रहा था जैसे उन सब के परिवारों का एक भी सदस्य जीवित नहीं बचा था। नज़मा ने उन सब अंग्रेज़ों के चेहरों को बड़े ध्यान से देखा और मन-ही-मन प्रसन्नता का अनुभव किया।

उसी समय अर्दली ने मिस्टर क्लिक से आकर कहा, "आपको साहब बुला रहे हैं।"

क्लिक तुरन्त अन्दर गया।

हेस्टिंग्स ने उसे कर्नल गॉडार्ड के नाम पत्र लिखाया, "बराबर आगे बढ़ते जाओ। बम्बई-रेज़ीडेन्सी ने जो सुलह की है उसकी ज़रा भी परवाह न करो। पूना पर हमला करो।"

पत्र लिखाकर वारेनहेस्टिंग्स ने मिस्टर क्लिक से कहा, "अर्जेन्ट (आवश्यक), फ़ौरन दूत रवाना करो। इसी वक्त।"

"यस सर! एटवन्स (एकदम)।" क्लिक के मुख से निकला और वह तुरन्त अपने कार्यालय में चला गया।

इस कार्य से निवृत्त होकर हेस्टिंग्स को मिस्टर स्तीफ़ेन और मिस मेरी का ध्यान आया। उसनें उन्हें अन्दर बुलाकर कहा, "सारी मिस मेरी! आपको इन्तज़ार करना पड़ा।"

"नो मेन्शन सर! (कहने की आवश्यकता नहीं)! कोई देर नहीं हुई सर! अभी काफ़ी समय है। हम लोग बहुत पहिले यहाँ आगये थे।"

नृत्य का आयोजन समाप्त होने पर उस दिन जब नज़मा नाच-घर से लौटी तो उसके क़दम बड़े चाव से उठ रहे थे। उसने

कोठी पर जाकर अपनी यूरोपियन ड्रेस एक ओर उतारकर फेंकी और चूड़ीदार पायजामा पहिना, उसपर सिल्क का कुर्ता और फिर ऊपर बुर्का डाला। बद्री पंडित को बुलाकर कहा, "पंडित! मैं जारही हूँ। कोई आये तो कहना सैर को गई हैं।"

"जाइये बेग़म साहिबा!" बद्री पंडित ने कहा। कोठी पर बद्री पंडित ही रहता था। हवेली का कार्य-भार इस्माइल ने सँभाल लिया था।

नज़मा ने हवेली में प्रवेश किया तो देखा मोहम्मदरज़ाखाँ किसी अजनबी से बातें कर रहे थे। बड़ी घुल मिल कर बातें हो रही थीं। कभी वे दोनों मुस्कराते थे और कभी हँस देते थे। दोनों के चेहरे प्रसन्न नज़र आरहे थे।

नज़मा कमरे के अन्दर गई। अन्दर जाकर उसने ताली बजाई। मोहम्मदरज़ाखाँ समझ गया नज़मा कोई नया समाचार लेकर आई है और उस समाचार को वह उसे सुनाने के लिये बेचैन है। इसी लिये तुरन्त अन्दर बुला रही है।

मोहम्मदरजाखाँ ने मुस्कराते हुए कमरे में प्रवेश किया।

"तुम मुस्करा क्यों रहे हो?" नज़मा ने पूछा।

"तुम्हें मुस्कराती देखकर।"

नज़मा हँस पड़ी। उसके कुन्द-कली जैसे दाँत चमक उठे। मोहम्मदरज़ाखाँ के दिल में प्यार भरी बिजली सी कोंध गई।

नज़मा बोली, "एक ख़ुशख़बरी दूँ।"

"मराठों ने बम्बई-रेज़ीडेन्सी की अंग्रेज़-फ़ौज का सफ़ाया कर दिया। उसका सब गोला-बारूद छीन लिया गया। उनके अफ़सरों को क़ैद कर लिया।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"यह आदमी, जिससे मैं बातें कर रहा था, नाना फड़नवीस

का दूत है। नाना साहब के कलकत्ते में कई दूत हैं जो यहाँ का रत्ती-रत्ती समाचार नाना साहब के पास भेजते हैं। अंग्रेज़ों का कोई राज़ नाना साहब से छिपा नहीं है।"

नज़मा को मोहम्मदरज़ाखाँ से यह समाचार प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। उसने कहा, "तभी तो वह इन दग़ाबाज़ों को शिकस्त देसके। इन्हें हराने के लिये ऐसे ही क़ाबिल आदमी की ज़ुरूरत है।"

"नाना फड़नवीस बड़ा अक्लमन्द सियासतदाँ है। वह इन अंग्रेज़ों की चालों को ख़ूब समझता है। वह जानता है कि इन्हें कब पुचकारना और कब धर दबोचना चाहिये। उसका कहना है, 'अंग्रेज़ों के खिलाफ़ हिन्दुस्तान के राजाओं और नवाबों को एक होकर जंग करना चाहिये। आपसी झगड़ों को इस वक्त भुला देना चाहिये।'

"बहुत नेक ख़याल है। हिन्दुस्तान की बेहतरी इसी में है कि सब लोग मिलकर एक होजागें।"

अंग्रेज़ भी कम चालाक नहीं हैं बेग़म! ये लोग हमें एक नहीं होने देते। ये हम लोगों में फूट डालकर हमें आपस में लड़ा देते हैं।"

"क्या मराठों में भी इन लोगों ने फूट डालने की कोशिश की है?"

"कोशिश ही नहीं की बेग़म! इन्हें कामयाबी भी मिली है। इन लोगों ने गायकवाड़ को मराठों से अलग कर दिया। आज कल ये सिंधिया पर अपना जाल फैला रहे हैं। उसकी क़ैद में राघोबा और अंग्रेज़ अफ़सर हैं, जिन्हें ये छुड़ाना चाहते हैं।"

मोहम्मदरज़ाखाँ फिर उस व्यक्ति के पास चला गया, जिससे वह बातें कर रहा था। उसे उससे कुछ आवश्यक बातें करनी थीं।

दस

मराठा मण्डल के पाँच सदस्यों में से गायकवाड़ अलग हो चुका था। उसने मॉस्टिन के जाल में फँसकर पेशवा से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था। बरार के शासक भोंसले ने हेस्टिंग्स के कहनेपर सतारा पर अधिकार करना स्वीकार नहीं किया था परन्तु तटस्थता अवश्य ग्रहण करली थी। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध पेशवा के साथ मिलकर शस्त्र नहीं उठाये। केवल होलकर और सिंधिया पेशवा के साथ थे।

राघोबा और अंग्रेज़ अफ़सर सिंधिया की क़ैद में थे, जिन्हें अंग्रेज छुड़ाना चाहते थे। हेस्टिंग्स ने अब अपना जाल सिंधिया पर फैलाया। वह चाहता था कि किसी तरह सिंधिया का पेशवा से सम्बन्ध विच्छेद हो जाये।

सिंधिया पेशवा का सबसे विश्वस्त और योग्य सेनापति था। युद्ध में उसी ने अंग्रेज़ों को पराजित किया था। वारेनहेस्टिंग्स ने सिंधिया के पास अपना दूत भेजा।

हेस्टिंग्स के दूत ने सिंधिया से मिलकर कहा, "गवर्नर जनरल साहब आपकी वीरता और पराक्रम से वहुत प्रभावित हुए। उन्होंने करनल गॉडार्ड को पत्र लिखा है कि वह आपसे मित्रता रखे। गवर्नर जनरल आपसे बहुत खुश हैं। वह चाहते हैं कि

महाराष्ट्र में आप जैसे पराक्रमी वीर को ही सब से बड़ा राजा माना जाना चाहिये। गवर्नर जनरल आपको नये क़िस्म के हथियार देना चाहते हैं। उन हथियारों से आप महाराष्ट्र में अपना दबदबा क़ायम कर सकते हैं। सिर्फ़ महाराष्ट्र में ही नहीं आप सारे हिन्दुस्तान के राजाओं को अपने वश में कर सकते हैं।

गवर्नर जनरल साहब शाहआलम और अवध के नवाब से बहुत नाखुश हैं। उनके खिलाफ़ वह आपको अंग्रेज़ी फ़ौज की भी मदद दे सकते हैं।"

हेस्टिंग्स के दूत ने सिंधिया के सामने ऐसा नक्शा खींचा कि मानो वह उसे सारे हिन्दुस्तान का साम्राज्य सौंपने को उद्यत था।

सिंधिया ने यह नहीं सोचा कि उसके किस गुण पर मुग्ध होकर हेस्टिंग्स उस पर यह कृपा कर रहा था और उससे इतना प्रसन्न क्यों था। वह हेस्टिंग्स के अभिप्राय को न समझ कर उसके जाल में फँस गया और अंग्रेज़ों से गुप्त संधि कर बैठा।

इस संधि के अनुसार उसे राघोबा और अंग्रेज अफ़सरों को मुक्त करना था। अंग्रेज़ों ने मात्र इसी लिये वह संधि की थी।

सिंधिया सोच रहा था कि कब उसके पास नये क़िस्म के हथियार आयें और कब वह सारे हिन्दुस्तान का सबसे शक्तिशाली राजा बने।

करनल गॉडार्ड सूरत में डेरा डाले पड़ा था। वह पूना पर आक्रमण करने की घात में था। तालेगाँव की संधि के अनुसार उसे तुरन्त बंगाल वापिस लौट जाना चाहिये था, परन्तु उसने उस संधि की कोई परवाह नहीं की और बराबर पूना पर

आक्रमण करने की घात लगाता रहा।

नाना फड़नवीस को गॉडार्ड की नीयत के स्पष्ट प्रमाण मिल चुके थे। वह बराबर उनके पास सुलह के पत्र भेज रहा था।

नाना साहब ने झुँझला कर उसे पत्र लिखा, "तुम लोग संधि की बातें करते हो और युद्ध की तय्यारी में लगे रहते हो। अब जबतक तुम पहिली संधि की शर्तों को पूरी नहीं करोगे तब तक किसी दूसरी संधि की बातें करनी बेकार हैं।"

करनल गॉडार्ड पर नाना फड़नवीस का कोई प्रभाव न हुआ। उसके पास हेस्टिंग्ज का पत्र, पूना पर आक्रमण करने के लिये, आचुका था। वह नाना फड़नवीस के पास पत्र केवल उन्हें धोखे में रखने के लिये लिख रहा था परन्तु नाना फड़नवीस भी उसकी चालों से बेख़बर नहीं थे। वह उसकी गतिविधियों पर निगाह रखे हुए थे।

करनल गॉडार्ड ने पेशवा राज्य में इधर-उधर लूट करनी आरम्भ करदी और उसके सेनिकों ने कुछ गाँवों और क़स्बों को लूट लिया।

नाना फड़नवीस ने क्रुद्ध होकर सिंधिया को एक सेना लेकर गॉडार्ड को पेशवा राज्य से बाहर निकालने के लिये भेजा और भोंसले को एक दूसरी सेना के साथ बंगाल पर आक्रमण करने के लिये भेज दिया।

नाना फड़नवीस को सिंधिया और भोंसले की संधियों का ज्ञान नहीं था। उन्हें पता नहीं था कि वह अपने जिन सेनापतियों पर विश्वास कर रहे थे, वे दोनों अंग्रेजों के हाथों में खेल रहे थे।

मूदाजी भोंसले नाना फड़नवीस से भी डरता था, इस लिये बंगाल पर आक्रमण करने के लिये मना नहीं कर सकता था, परन्तु आक्रमण करके अंग्रेजों से शत्रुता करने का उसका

विचार नहीं था। इस लिये उसने वारेनहेस्टिंग्स को पत्र लिखा, "मैं नाना फड़नवीस और मराठा-सरदारों को प्रसन्न रखने के लिये अपनी सेना को लेकर बंगाल की दिशा में आरहा हूँ परन्तु मेरा आप पर आक्रमण करने का कोई विचार नहीं है। आप मेरा अभिप्राय ग़लत न समझें। मैं इतनी मन्द गति से आगे बढ़ूँगा कि वहाँ तक पहुँचने से पूर्व वर्षा आरम्भ होजायेगी और मैं वहीं से वापस लौट आऊँगा।"

सिंधिया भी अपनी सेना को लेकर नाना फड़नवीस को दिखाने के लिये गुजरात पहुँचा परन्तु गॉडार्ड पर उसने आक्रमण नहीं किया। गॉडार्ड बराबर अपनी लूट-मार करता रहा।

नाना फड़नवीस की समझ में न आया कि वह सिंधिया जिसने तालेगाँव पर अंग्रेज़-सेना का विध्वंस किया था, वह अब इस तरह गॉडार्ड पर आक्रमण करने से क्यों कतरा रहा है? उन्हें सिंधिया के आचरण पर शंका होने लगी।

नाना साहब अपने महल में चिंतित बैठे इस समस्या पर विचार कर रहे थे। उसी समय उन्हें द्वारपाल ने सूचना दी कि उनका बंगाल का दूत आया है।

नाना साहब ने उसे अन्दर बुलवाया।

दूत बोला, "नाना साहब! आपके सेनापति आपके साथ विश्वासघात कर रहे हैं।"

"कौन?"

"सिंधिया और भोंसले दोनों।"

नाना फड़नवीस का सिर चकरा गया। उन्हें सम्पूर्ण स्थिति को समझने में एक क्षण का भी विलम्ब न हुआ।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"भोंसले ने वारेनहेस्टिंग्स के पास पत्र लिखा है। यह कह

कर उसने भोंसले का पत्र नाना साहब के सामने रख दिया।

पत्र को देखकर नाना साहब आश्चर्यचकित रह गये। यह नज़मा ने अवसर देखकर क्लिक की दराज़ से निकाल लिया था और फिर मोहम्मदरज़ाखाँ के द्वारा नाना फड़नवीस के दूत को दे दिया था।

दूत बोला, "सिंधिया का कोई लिखित प्रमाण नहीं है परन्तु जो सूचना मैं दे रहा हूँ वह असत्य नहीं हो सकती। सिंधिया नें अंग्रेजों से गुप्त संधि करके उन अफ़सरों और राघोवा को मुक्त कर दिया है।"

"मुक्त कर दिया है! यह वह हमारी आज्ञाके बिना कैसे कर सकता है?"

"मेरी सूचना भी ग़लत नहीं है।"

नाना फड़नवीस ने उसी समय अपने एक दूत को इस रहस्य का पता लगाने के लिये भेजा। उसने नाना साहब को तीसरे दिन आकर बतलाया कि बंगाल के दूत का समाचार सत्य है। राघोबा और अंग्रेज-अफ़सरों को मुक्त कर दिया गया है।

यह समाचार प्राप्त कर नाना फड़नवीस के तन-बदन में ज्वाला प्रज्वलित हो उठी। वह समझ गये कि गॉडार्ड पूना पर आक्रमण करने को तय्यारी कर रहा है। सिंधिया और भोंसले के विश्वासघात से वह तिलमिला उठे। उन्होंने इस राजनीतिक स्थिति का सामना करने के लिये निज़ाम हैदराबाद, अरकाट के नवाब मोहम्मदअली, हैदरअली और दक्षिण भारत के अन्य राजाओं तथा नवाबों को पत्र लिखे, जिनमें उन्हें संगठित होकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध मोर्चा लगाने के लिये कहा गया था।

नाना साहब के इस प्रयास स्वरूप निज़ाम हैदराबाद, हैदर-

अली और नाना साहब के बीच एक संधि पर हस्ताक्षर हुए, जिसमें यह निश्चय हुआ कि वे अपने निकटस्थ स्थानों से अँग्रेज़ों को खदेड़ कर बाहर करदें।

सिंधिया से अंग्रेज़ों का काम निकल चुका था। उनका अभिप्राय राघोवा और अंग्रेज़-अफ़सरों को मुक्त कराना था। गॉडार्ड को जैसे ही यह समाचार मिला कि सिंधिया ने राघोवा और अंग्रेज़ अफ़सरों को मुक्त कर दिया, वैसे ही उसने एक दिन धोखे से रात्रि के समय सिंधिया की सेना पर आक्रमण कर दिया क्यों कि उसका गुजरात में बना रहना वह सहन नहीं कर सकता था।

सिंधिया पर यह आक्रमण अचानक हुआ था। अंग्रेज़ उस पर आक्रमण कर देंगे, यह बात वह सोच भी नहीं सकता था। युद्ध में उसे भारी क्षति हुई और उसकी प्रतिष्ठा को भयंकर आघात पहुँचा। उसे मैदान छोड़कर भाग जाना पड़ा और मराठा सरदारों के सामने वह मुँह दिखाने योग्य न रहा। उसने अपने साथियों में अपना विश्वास खोदिया।

करनल गॉडार्ड ने सिंधिया को गुजरात से भगा कर अपना रुख पूना की दिशा में किया। वह कल्याण, बसई और कोंकण-प्रदेश के कई स्थानों को रौंदता हुआ आगे बढ़ा।

नाना फड़नवीस के गुप्तचर उन्हें क्षण-क्षण की सूचना दे रहे थे। परशुराम और हरिपन्त फड़के को सिंधिया की सेना के विध्वंस का समाचार मिला तो वे दोनों नाना फड़नवीस के पास आकर बोले, "नाना साहब! यह क्या हुआ?"

"क्या हुआ?"

"गॉडार्ड ने सिंधिया की सेना का विध्वंस कर दिया।"

"विश्वासघाती देशद्रोही की यही सज़ा है।"

"विश्वासघाती !"

"देशद्रोही ! सिंधिया ! यह आपने क्या कहा नानासाहब ?"

"विश्वासघात न करता तो उसकी यह दुर्दशा न होती। अभी अंग्रेज़ उसकी और भी बुरी गत बनायेंगे। उसने अंग्रेज़ों से गुप्त संधि करके राघोबा और अंग्रेज़-अफ़सरों को मुक्त कर दिया। अंग्रेज़ों ने अपना मतलब निकाल कर उसे धर दबाया। वह मुझे धोखा देने के लिये वहाँ पड़ा हुआ था और सोच रहा था कि अंग्रेज़ उस पर हमला नहीं करेंगे। वह अंग्रेज़ों की नसों को नहीं पहिचानता। इस मक्कार क़ौम को समझना आसान नहीं है।"

नाना साहब की बात सुनकर परशुराम और हरिपन्त फड़के के आश्चर्य का पारावार न रहा।

नाना साहब गम्भीर वाणी में बोले, "मराठा वीरो ! गॉडार्ड पूना पर आक्रमण करना चाहता है। उसने पूना की ओर अपना रुख कर लिया है। इस समय मराठों के सम्मान लिये भयंकर संकट पैदा हो गया है। इस सम्मान की रक्षा करना तुम्हारा काम है। तुम दोनों दो दिशाओं से जाकर गॉडार्ड को घेर लो और इस बार अंग्रेज़ों को वह सबक़ सिखाओ कि ये भविष्य में कभी पूना की ओर दृष्टि न कर सकें।"

"यही होगा नाना साहब !" फड़के ने कहा।

"इस बार एक भी अंग्रेज़ को मैदान से बचकर न भागने दिया जाये।" परशुराम बोला।

गॉडार्ड समझ रहा था कि जिस तरह उसने धोखे से सिंधिया को हरा दिया उसी तरह वह पूना पर आक्रमण कर देगा क्यों कि नाना साहब के पास वह निरन्तर संधि-पत्र भेजता रहा था। उसे विश्वास था कि नाना फड़नवीस संधि के

जाल में फँसकर युद्ध की तय्यारी नहीं करेंगे।

गाडार्ड ने एक ओर तो अपना संधि-प्रस्ताव लेकर नाना साहब के पास एक दूत भेजा और दूसरी ओर अपनी सेना को बहुत शीघ्र पूना पहुँचने का आदेश दिया।

हरिपन्त फड़के और परशुराम पूना की ओर से आगे बढ़े और होलकर गॉडार्ड का पीछे से पीछा कर रहा था। पूना के निकट आकर गॉडार्ड की हरिपन्त फड़के और परशुराम की सेना से मुठभेड़ हुई। घमासान युद्ध आरम्भ होगया।

अंग्रेज़ी तोपख़ाना बुरी तरह गोले बरसा रहा था। उसके सामने हरिपन्त फड़के और परशुराम की सेना आगे न बढ़ सकी।

इसी बीच होलकर ने गॉडार्ड को पीछे से धर दबाया। गॉडार्ड की सेना चक्की के दो पाटों में पिसने लगी। कुछ ही घण्टों में गॉडार्ड को दिखाई देने लगा कि भयंकर विनाश उसके सामने मुँह बाये खड़ा है। उसके पास अब भाग निकलने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं था, परन्तु वहाँ से भाग निकलना भी सरल कार्य नहीं था।

हरिपन्त फड़के ने अवसर देखकर बाँई ओर और परशुराम ने दाँई ओर से गॉडार्ड की सेना पर धावा बोल दिया।

गॉडार्ड ने देखा मराठा-सेना बादलों की तरह उसकी सेना के ऊपर चढ़ीं चली आरही थी। उसे देखकर उसके होश उड़ गये। वह अपनी सेना की चिन्ता त्यागकर अपने कुछ अंगरक्षकों के साथ मैदान से भाग निकला।

अंग्रेज़ों का पूरा तोपख़ाना मराठा वीरों के हाथों में आगया और उनके सब अफ़सरों को बन्दी बना लिया गया।

अंग्रेज़ों की यह हार तालेगाँव की हार से भी ज़बरदस्त

थी क्योंकि इसमें उनकी जो जान-माल की हानि हुई वह तालेगाँव की लड़ाई से कहीं अधिक थी। इस युद्ध में कई हज़ार अंग्रेज़ सैनिक खेत रहे।

हैदरअली ने नाना फड़नवीस के साथ जो संधि की थी उसके अनुसार उसकी दृष्टि सर्वप्रथम करनाटक पर गई। हैदरअली ने अपनी सेना को कई भागों में करके करनाटक के क़िले को घेर लिया। करनाटक की प्रजा ने हैदरअली की सेना का स्वागत किया। करनल कॉस्बी और मोहम्मदअली की सेनाओं ने हैदरअली की सेना का मुक़ाबिला किया परन्तु हैदरअली ने उन्हें बुरी तरह पराजित कर दिया। करनाटक के सब क़िले और महमूद बन्दरगाह पर हैदरअली ने अधिकार कर लिया। महमूद बन्दरगाह से हैदरअली को करोड़ों रुपये की सम्पत्ति हाथ लगी।

अंग्रेजों के करनाटक में पराजित होने पर मद्रास-रेज़ीडेंसी के लिये ख़तरा पैदा होगया। इस ख़तरे का सामना करने के लिये जनरल मनरो और करनल बेली के आधीन दो सेनायें मद्रास और गुण्टूर से रवाना हुईं। इनके अतिरिक्त भी तीन अन्य सेनायें संगठित की गईं।

हैदरअली ने अंग्रेजों की ये गतिविधियाँ देखकर उन्हें अधिक आगे बढ़ने का अवसर न दिया। उसने तुरन्त अपने पुत्र टीपू को बुलाकर आज्ञा दी, "बेटे टीपू! फ़ौरन फ़ौज लेकर करनल बेली की फ़ौज पर हमला बोल दो। वह गुण्टूर से आगे बढ़ रहा है।"

"जो हुक्म!" कहकर टीपू उसी समय गुण्टूर की दिशा में बढ़ गया और आनन-फ़ानन में उसने करनल बेली को धर दबाया।

जरनल मनरो को टीपू के मैदान में उतरने का समाचार मिला तो उसने अपनी सेना का एक दस्ता करनल बेली की सहायता के लिये भेज दिया और वह स्वयँ भी सतर्क होकर आगे बढ़ने लगा।

हैदरअली को मनरो द्वारा भेजे गये दस्ते का समाचार मिला तो वह स्वयँ सेना लेकर टीपू की सहायता के लिये जा पहुँचा।

युद्ध में अंग्रेज़ों की करारी हार हुई। उनका तोपखाना टीपू ने छीन लिया और गोला-बारूद को आग लगा दी। इस युद्ध में हज़ारों अंग्रेज सैनिक काम आये। तथा करनल बेली और बहुत से अंग्रेज़ अफ़सरों को हैदरअली ने बन्दी बना लिया।

करनल बेली को पराजित कर हैदरअली ने अपना रुख जनरल मनरो की ओर किया, जो उस समय गंजी में डेरा डाले पड़ा था। हैदरअली ने टीपू से कहा, "तुम आगे बढ़कर पहिले मनरो पर हमला करो, मैं पीछे से आता हूँ।"

टीपू अपने पिता की आज्ञा पाते ही गंजी की दिशा में बढ़ गया।

जनरल मनरो को करनल बेली की पराजय का समाचार मिला तो उसका साहस जाता रहा और जब उसने टीपू को अपनी ओर बढ़ने की ख़बर मिली तो उसने हड़बड़ा कर अपना तोपख़ाना एक तालाब में फिकवा दिया, जिससे टीपू उसे छीनकर उससे उनका ही विध्वंस न कर डाले और स्वयं मद्रास की ओर भाग गया।

हैदरअली ने गंजी पर अधिकार कर अरकाट का घेरा डाला और तीन महीने के घेरे के पश्चात उस पर अधिकार कर लिया। इस युद्ध में हैदरअली का दामाद सय्यद हाफ़िजअलीख़ाँ मारा

गया परन्तु अंग्रेजों की भयंकर हानि हुई।

हैदरअली ने अरकाट पर अधिकार करके वहाँ की जनता को नहीं लूटा और न ही उसके किसी सैनिक ने किसी नागरिक को परेशान किया। सेनिक अनुशासन की दृष्टि से हैदरअली की सेना उस समय अपना विशिष्ट स्थान रखती थी। उसके राज्य में कोई अफ़सर घूस नहीं ले सकता था और हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार होता था। हैदरअली ने अरकाट के सब मुलाज़िमों को उनके स्थानों पर बहाल कर दिया और वहाँ के क़िले का जो भाग टूट गया था उसकी मरम्मत का काम आरम्भ करा दिया।

हैदरअली के सेनापति मीरमुइउद्दीन और पुत्र टीपू ने एक महीने में चितोर, चंद्रगिरी, महीमण्डलगढ़, कैलाशगढ़ और सातगढ़ इत्यादि किले जीत लिये। आम्बूरगढ़ के अंग्रेज़ क़िलेदार ने टीपू के सामने हथियार नहीं डाले तो टीपू ने क़िले का घेरा डाल दिया और पंद्रह दिन के अन्दर किले पर अधिकार कर लिया।

ये समाचार जब कलकत्ता पहुँचे तो वहाँ के अंग्रेज-परिवारों में भय व्याप्त होगया। बहुत से अंग्रेज़ों ने अपने बीवी बच्चों को इंग्लैंड भेजने का निश्चय कर लिया और जहाज भर भरकर वे इंग्लैंड के लिये रवाना होने लगे।

उस दिन संध्या को जब नजमा नाचघर में गई तो उसने देखा दर्शकों की संख्या वहुत कम थी और जो आये भी थे उनके चेहरे भी उदास थे। उनके चेहरों का रंग उड़ा हुआ था।

नज़मा ने देखा मिस्टर स्तीफ़ेन का चेहरा भी पीला पड़ गया था। उसकी दशा कुछ विचित्र सी थी।

नज़मा ने पूछा, "मिस्टर स्तीफ़ेन ! क्या कोई ख़ास ख़बर

मिली है ?"

"बहुत ख़ास मिस मेरी ! बहुत ख़ास ।"

नज़मा ने मिस्टर स्तीफ़ेन जैसा ही आश्चर्यपूर्ण चेहरा बनाकर पूछा, "क्या बात है मिस्टर स्तीफ़ेन ? दक्षिण की कोई ख़बर है क्या ।"

"सब खतम होगया ?"

"क्या ख़तम होगया ? क्या तुम्हारे नाचघर का लाइसेन्स ज़प्त हो गया । लाइसेन्स-आफ़ीसर को तो तुमने रिश्वत देदी थी । बड़ा बदमाश आदमी है । रुपया लेकर भी काम नहीं करता ।"

"नो मिस मेरी ! नो ! लाइसेन्स-आफ़ीसर हमारा ग़ुलाम है । हम पैसा नाक पर मारकर काम कराना जानता है ।"

"फिर क्या खतम होगया ?

"हमारा करनल, हमारा जनरल, हमारा पल्टन, हमारा फ़ौज, हमारा तोपख़ाना , हमारा गोला-बारूद, हमारा किला, हमारा सब-कुछ खतम हो गया । हमारा गॉडार्ड, बेली, मनरो सब हार गया । मराठा और हैदरअली ने बम्बई और मद्रास-रेजी-डेन्सी को खतम कर दिया मालूम देता है । अब हमारा हिन्दुस्तान में कुछ नहीं रहा ।

"क्या ! " आश्चर्य में पड़कर नज़मा ने पूछा, "हमारे सब करनल मराठों और हैदरअली ने मार डाले । हमारा तोपख़ाना छीन लिया ?"

"सब मिस मेरी, सब ! अरकाट, आम्बूरगढ़ और बहुत से किले हमसे छीन लिये । हमारा वहाँ अब कुछ नहीं रहा । हमारा सब-कुछ लूट लिया । मराठा बड़ा ज़ालिम निकला ।"

तब तो आपके कारोबार को भी धक्का लगेगा । ऐसी हालत

में यहाँ नाच देखने कौन आयेगा ?"

"ज़ुरूर लगेगा मिस मेरी ! देख नहीं रही हो, हमारा हॉल खाली पड़ा है। ऐसे वक्त में तफ़री किसे अच्छी लगती है।"

"तो क्या तुम यह नाचघर बन्द कर दोगे ?"

"नो नो, बन्द हम कैसे कर सकते हैं। नाचघर बन्द कर देंगे तो खायेंगे क्या ?"

"जब देखने वाले ही नहीं आयेंगे तो तुम डांस दिखाओगे किसे ?"

यह सुनकर मिस्टर स्तीफ़ेन परेशानी में पड़ गया। वह बोला, "तुम ठीक कहती हो मिस मेरी ! जब देखने वाले नहीं आयेंगे तो हम डांस किसे दिखायेंगे ? ऐसी हालत में हमें क्या करना चाहिये मिस मेरी ?"

नज़मा कुछ सोचकर बोली, "एक सुझाव देती हूँ तुम्हें मिस्टर स्तीफ़ेन !"

"बोलो बोलो मिस मेरी ! हम तुम्हारी बात मानेंगे। तुम हमारे फ़ायदे की बात कहती हो।"

"मैं आज सवेरे गवर्नर जनरल से मुलाकात करने गई थी।"

"वारेनहेस्टिंग्स से ?"

"हाँ, तुम्हारे वारेनहेस्टिंग्स से। वह सर आयरकूट को एक बहुत बड़ी फ़ौज लेकर मद्रास भेज रहे हैं। ऐसे गड़बड़ के दिनों में यहाँ नाचघर तो चलेगा नहीं। कुछ दिन बाद तुम्हें आर्टिस्टों को तनख़ायें देनी भी मुश्किल हो जायेंगी। तुम गवर्नर-जरनल साहब से कहो कि वह तुम्हारी डांसिग पार्टी को फ़ौज की तफ़री के लिये सर आयरकूट के साथ मद्रास भेजदें।"

मिस्टर स्तीफ़ेन कुछ सोचकर बोला, "इस काम में पैसा तो मिलेगा मिस मेरी, लेकिन ख़तरा भी है जान का।"

"नानसेंस !" नज़मा मुँह बनाकर बोली। "अंग्रेज़ होकर क्या बुजदिलों जैसी बातें करते हो ? हमारा डांस देखकर हमारे सिपाही जी खोल कर लड़ेंगे। हैदरअली और मराठों के दाँत खट्टे कर देंगे। हमारे आरटिस्ट उनमें जोश भरेंगे।"

मिस्टर स्तीफ़ेन को अंग्रेज़ क़ौम का जोश आगया। वह बोला, "बट (लेकिन)।"

"ह्वाट बट (क्या लेकिन) ?"

"मिस मेरी···हम तुम्हारे बिना वहाँ कैसे जा सकते हैं। हम तो यह काम सिर्फ़ तुम्हारे लिये कर रहे हैं। हमारा यह नाचघर सिर्फ़ तुम्हारे लिये है मिस मेरी !"

नज़मा मुस्कराकर बोली, "मेरे लिये ! वह कैसे ? जब मेरी तुम से मुलाकात हुई थी, तुम तो उस वक्त भी पहले से अपना नाचघर चला रहे थे।"

"यस, बट (हाँ लेकिन)।"

"हाँ लेकिन क्या ? तुम्हें अपने फौजियों की हिम्मत बढ़ाने के लिए जाना चाहिये।" और फिर मुस्कराकर कहा, "आइ विल एकोम्पनी यू (मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगीं)।"

"रीयली सो (वास्तव में)।"

नज़मा मुस्कराती रही।

नाचघर के कार्यक्रम के पश्चात् नज़मा को विदा करते हुए मिस्टर स्तीफ़ेन ने कहा, "मिस मेरी ! आपका सुझाव मुझे बहुत पसंद आया। सर आयरकूट के साथ जाने से हमें काफ़ी रुपया मिलेगा और लूट का माल भी हमारे हाथ लग सकता है। एक बार हम लोग मुर्शिदाबाद गये थे, तो काफ़ी रुपया हाथ लगा।"

नज़मा अपनी हवेली पर चली गई और मिस्टर स्तीफ़ेन वारेनहेस्टिंग्स से मिलने चला गया।

नज़मा हवेली पर पहुँची तो उसने देखा मोहम्मदरज़ाखाँ कुछ लोगों से बातें कर रहा था। नज़मा को आते देखकर वह उठकर नज़मा के पास आकर बोला, "नज़मा ! ख़ुदापाक ने हिन्दुस्तानियों की दुआयें कुबूल करलीं। आज तुम्हें वह खुशख़बरी दे रहा हूँ, जिसे सुनकर तुम खुशी से उछल पड़ोगी।"

"आपका क़यास ठीक निकला। मराठों और हैदरअली ने आपस में मेल करके अंग्रेज़ों की बुरी गत बना दी है। अंग्रेज़ो को शिकस्त पर शिकस्त खानी पड़ी हैं।"

"इसका मतलब है तुम्हें इत्तला मिल चुकी है। नज़मा ! मज़ा आगया आज इन ख़बरों को पाकर, जो मुझे अभी-अभी मिली हैं। नाना फड़नवीस को मूदाजी भोंसले ने धोखा दे दिया वरना इस वक्त तक बंगाल का भी तख्ता पलट गया होता।"

"बिलकुल पलट गया होता बेग़म।"

"नाना फड़नवीस को मूदाजी और सिंधिया ने धोखा न दिया होता तो मूदाजी भोंसले की सेना ने इस वक्त तक कलकत्ते पर कब्ज़ा कर लिया होता और यहाँ के भूखे बंगाली अंग्रेज़ों को चबाजाते।

तुम्हें पता नहीं है बेग़म ! बंगाल में अन्दर-ही-अन्दर आग सुलग रही है। अंग्रेज़ों ने बंगाल के भूख से तड़फते हुए लोगों के पेट पर लात मारी है।" कहते-कहते मोहम्मदरज़ाखाँ को जोश आगया।

मोहम्मदरज़ाखाँ कुछ ठहर कर बोला, "बेग़म ! अब तो जी चाहता है कि कलकत्ता छोड़कर पूना या श्रीरंगपट्टन चलाजाये। अंग्रेज़ों के हाथों हिन्दुस्तानियों को मरते तो इन आँखों से बहुत देखा है। एक बार हिन्दुस्तानियों के हाथों से इनका सफ़ाया

होते भी देखलूँ ।"

नज़मा मुस्करा कर बोली, "तो चलो, सैर कर आयें ददखन को। वारेनहेस्टिंग्ज़ सर आयरकूट को मद्रास भेज रहा है। मैंने मिस्टर स्तीफ़ेन को सलाह दी है कि वह अपनी डांसिंग-पार्टी को लेकर आयरकूट के साथ मद्रास जायें। इस वक्त कलकत्ते में इतनी घबराहट फैल गई है कि उसके नाचघर के टप्प होने का अन्देशा है। आज मुश्किल से हॉल में दस आदमी होंगे।"

नज़मा की यह बात सुनकर मोहम्मदरज़ाखाँ कुछ सोचकर बोला, "यह तो बहुत अच्छा रहेगा नज़मा! तुम अंग्रेजों के कैम्प में रहोगी तो हमें वहाँ की ख़बरें मिलती रहेंगी।"

"यही सोचकर तो मैंने मिस्टर स्तीफ़ेन को यह सलाह दी है। वह समझ रहा है कि मैं उसके इश्क में मुबतला होकर उसके साथ चलने को राज़ी होगई हूँ।" यह कहकर नज़मा ख़ूब हँसी।

मोहम्मदरज़ाखाँ मुस्कराकर बोला, "समझना ग़लत भी तो नहीं है उसका नज़मा!"

"वह कैसे?" नज़मा ने आश्चर्य से पूछा।

"हमदर्दी और मोहब्बत में बहुत थोड़ा सा फ़र्क़ होता है। उस फ़र्क़ को पहिचानना आसान काम नहीं है। मोहब्बत का अन्धा इन्सान उसे नहीं पहिचान सकता। बरसात के अन्धे को जैसे सब कुछ हरा-हरा ही नज़र आता है उसी तरह इश्क के अन्धे को भी हमदर्दी मोहब्बत दिखाई देती है।

हमदर्दी तुमने कम नहीं दिखाई है मिस्टर स्तीफ़ेन के साथ। बिला एक पैसा लिये तुम उसके नाचघर में डांस करती हो। नवाब मोहम्मदरज़ाखाँ की बेग़म से तुमने उसे एक लाख रुपया

दिलाकर उसके नाचघर की बिल्डिग तय्यार कराई और अब जब वह फ़ौज के साथ अपनी डांसिग पार्टी लेकर जारहा है तो उसका दिल रखने के लिये तुम उसके साथ जाने को तय्यार हो।

इस सब को वह मोहब्बत न समझे तो क्या समझे ?

नज़मा कुछ शरमाकर बोली, "वह गधा है ।"

"मोहब्बत इन्सान को गधा तो बना ही देती है बेग़म !" कह कर मोहम्मदरज़ाखाँ हँस पड़ा। फिर बोला, "कुछ जरूरी बातें कर रहा था इन लोगों से ।"

"जाइये, ज़रूरी बातें ख़त्म कर लीजिये। फिर हम लोगों को भी कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।"

मोहम्मदरज़ाखाँ फिर उन लोगों के पास चला गया जिनसे वह बातें कर रहा था। उनमें एक मराठा था। वह बोला, "बरसात आरम्भ होगई और मूदाजी की सेना अभी तक नहीं आई ।"

मोहम्मदरज़ाखाँ बोला, "मैं बतलाचुका हूँ तुम्हें, वह आयेगी भी नहीं। मूदाजी ने साफ़-साफ़ लिखा है कि वह सिर्फ़ नाना साहब को दिखाने के लिये फ़ौज लेकर बंगाल की ज़ानिब चला है। क्या तुमने अभी तक नाना साहब को इस बात की इत्तला नहीं की।"

"यह सूचना मैंने उसी दिन भेज दी थी जिस दिन आपसे प्राप्त हुई थी। फिर भी मैं सोच रहा था कि शायद मूदाजी में सद्बुद्धि जाग उठे और देश-प्रेम हिलोरें मारने लगे, परन्तु देख रहा हूँ कि विश्वासघात ने राष्ट्रीयता का गला दबोच कर मूदाजी की नसों में बहने वाले रक्त को पानी बना दिया है।"

"इसी ग़द्दारी ने ही तो हिन्दुस्तान को तबाह करके रख दिया। इसी ग़द्दारी का शिकार होकर मैंने हज़ार गुनाह किये

ग्रौर नतीजे में ज़िल्लत उठानी पड़ी। जब मुझे अंग्रेज़ों ने क़ैद किया और फाँसी के तख्ते पर लटकने की नौबत आगई तब पता चला कि ग़द्दारी करने का क्या लुत्फ़ है ?" दर्द भरे स्वर में मोहम्मदरज़ाखाँ बोला।

"यही हाल तो हमारे माधोजी सिंधिया का हुआ सिंधिया पर नाना साहब को बड़ा विश्वास था। इसी लिये राघोबा और अंग्रेज़ अफ़सरों को उनके नियंत्रण में छोड़ दिया था। सिंधिया को हेस्टिंग्स ने अपने जाल में फँसा कर उन्हें छुड़वा लिया और फिर बाद में करनल गॉडार्ड ने धोखे से उस पर हमला कर दिया। मूदाजी और सिंधिया ने यह विश्वास-घात करके मराठा-मण्डल का ही नहीं सारे भारत के सम्मान को ठेस पहुँचाई है और शत्रु स्थिति सुदृढ़ की है।"

"मूदाजी और सिंधिया की हालत वही होगी जो बंगाल के नवाबों की हुई। ये अंग्रेज़ किसी के दोस्त नहीं हैं। इन्हें दोस्त समझना सख्त नादानी है, यह मैं अच्छी तरह देख चुका हूँ। ये लोग दुरंगी चाल चलते हैं। इनकी बात का जिसने भी विश्वास किया मैंने उसी को तबाह होते देखा है। तुम देखना, सिंधिया और मूदाजी को भी ये लोग बख्शने वाले नहीं हैं। नाना साहब की नज़रों में इन्हें गिराकर पहिले इन्हें उनसे अलग किया और अब इन्हें ऐसा धक्का देंगे कि कोई सहारा न मिलेगा इन्हें।"

मराठा दूत बोला, "इसके आसार तो नज़र आरहे हैं नवाब साहब ! अंग्रेजों ने निज़ाम हैदराबाद को भी फोड़ लिया है। पहिले वह नाना साहब और हैदरअली को वचन दे चुका है कि अपने आस-पास के इलाकों से अंग्रेज़ों को खदेड़ेगा, लेकिन देख रहे हैं कि वह चुपचाप बैठा है। मराठों और हैदरअली

का तमाशा देख रहा है। यह भी सुनने में आया है कि निज़ाम ने अंग्रेजों के साथ कोई गुप्त संधि करली है, जिसमें अंग्रेजों ने गुण्टूर का इलाक़ा जो पहिले निज़ाम से लेकर उन्होंने करनाटक के नवाब मोहम्मदअली को देदिया था, अब फिर निज़ाम को देदिया है।"

मोहम्मदरज़ाखाँ बोला, "निज़ाम-ख़ान्दान के लिये यह ग़द्दारी करना कोई नई बात नहीं है। निज़ामउलमुलक ने ग़द्दारी से ही यह सल्तनत क़ायम की थी, क़ूवते बाज़ू से हासिल नहीं की। हैदरअली ने जो सल्तनत क़ायम की है वह क़ूवते बाज़ू से की है। निज़ाम चालबाज़ है। निज़ाम-सल्तनत की बुनियादों में चालबाज़ी और मक्कारी भरी हुई है। वह निज़ामउलमुलक ही तो था जो ईरान से नादिशाह को हिन्दुस्तान में ख़ून की नदियाँ बहाने के लिये बुलाकर लाया था। निज़ामुल-मुल्क ने ही कभी मराठों और दिल्ली सलतन्त के बीच सुलह नहीं होने दी। निज़ामउलमुल्क ही वह पहिला सूबेदार था जिसने मुग़ल-सल्तनत की बरबादी की नींव डाली और हिन्दुस्तान की एकता को ख़तरे में डाला। निज़ामउलमुल्क ने हिन्दुस्तान के दीगर सूबेदारों के सामने वह मिसाल पेश की जिससे शै पाकर सब सूबेदारों ने अपनी-अपनी जुदा सल्तनते क़ायम करलीं उसी का नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तान की बन्द मुट्ठी खुल गई और यहाँ की दौलत को लूटने से लिये अंग्रेज़, फ्रांसीसी और डच लुटेरे हिन्दुस्तान में आघुसे।"

हैदरअली का दूत एक लम्बा साँस खींचकर बोला, "आप सच फ़रमाते हैं नवाब साहब! ख़ुदा करे नाना साहब और हमारे सुलतान की दोस्ती बरक़रार रहे। इस वक्त हिन्दुस्तान के बाशिन्दों की नज़रे इन्हीं दो ताक़तों की ओर उठी हुई हैं।

सुलतान ने अंग्रेज़ों को दक्खन से खदेड़ कर बाहर निकालने का बीड़ा उठाया हुआ है।"

"खुदा हाफ़िज़।"

"परवर दिगार को मंज़ूर हुआ तो यह दोस्ती हिन्दुस्तान को इन ज़ालिमों के चंगुल से छुड़ाने में ज़ुरूर कामयाब होगी और मुझे यकीन है कि यह दोस्ती बरक़रार रहेगी, क्योंकि ये दोनों ही इन्सान क़ाबिल, सियासतदाँ, बहादुर और दूरंदेश हैं।" मोहम्मदरज़ाखाँ ने कहा।

मोहम्मदरज़ाखाँ उन्हें विदा करके नज़मा के पास आया तो उसने देखा नज़मा पलंग पर लेटी गुनगुना रही थी। वह आज इतनी प्रसन्न थी कि मानो उसे हिन्दुस्तान की सल्तनत मिलगई थी। उसे इतनी प्रसन्न मोहम्मदरज़ाखाँ ने पहिले कभी नहीं देखा था।

"आज बहुत ख़ुश नज़र आ रही हो बेग़म!"

"किस लिये खुश हूँ?" नज़मा ने पूछा।

"आज तुम्हें अपनी मुँहमाँगी मुराद मिली है, इस लिये। मैं भी आज बहुत ख़ुश हूँ बेग़म! इससे बड़ी ख़ुशख़बरी मेरे लिये कोई दूसरी नहीं हो सकती। मुझे अब दौलत की तमन्ना नहीं रही। नवाबी का ख्वाब भी मैं अब नहीं देखता। अब तो बस यही तमन्ना है कि जिन कुत्तों की मैंने दोस्त समझ कर ख़िदमत की और जिन्होंने दुश्मन बनकर मुझे ज़लील किया, उनकी बरबादी को मैं अपनी इन आँखों से देखलूँ।"

"सर आयरकूट यहाँ से मद्रास जायेगा। स्तीफ़ेन को हेस्टिंग्स ज़रूर इजाज़त देदेगा।"

"हैदरअली भी इस वक्त मद्रास के नीचे के बन्दरगाहों और क़िलो को फ़तह करने पर जुटा हुआ है। उसके बेटे टीपू

ने तरकाटपल्ली के क़िले पर कब्ज़ा कर लिया है।"

"तो आप हैदरअली से जाकर मुलाक़ात करेंगे ?" नज़मा ने पूछा।

"ख़याल तो यही है। मैंने अपने वतन के साथ ग़द्दारी करके जो एक बार अपना मुँह काला किया है, सोचता हूँ ख़ुदा के पास जाने से पहिले उस कालिख को धो डालूँ।

बेग़म! मैं अल्लाहताला के दरबार में सुर्ख़रूह होकर जाना चाहता हूँ। यह मौक़ा मुझे वहीं जाकर नसीब हो सकता है।"

नज़मा ने मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखा। नज़मा को मोहम्मदरजाखाँ इतना सुन्दर पहिले कभी नहीं लगा था जितना आज लग रहा था। वह एक टक उसकी ओर को देख रही थी।

"तुम इस तरह क्या देख रही हो बेग़म ?"

"मैं देख रही हूँ कि आप कितने ख़ूबसूरत हैं।"

"क्या मैं पहिले कभी तुम्हें इतना ख़ूबसूरत नहीं लगा बेग़म ?"

"ख़ूबसूरती भी कई क़िस्म की होती है नवाबसाहब !"

"किस-किस क़िस्म की ?" मोहम्मदरज़ाखाँ ने मुस्कराकर पूछा।

"एक ख़ूबसूरती वह होती है जो दिल में समा जाती है और किसी को अपना बना लेती है, एक ख़ूबसूरती वह होती है जिसे ख़ूबसूरत कहकर उसकी तारीफ़ करते हैं और एक ख़ूबसूरती वह होती है जिसे देखकर उसे पूजने को जी चाहता है।"

"आज तुमने कौनसी ख़ूबसूरती देखी मेरे चेहरे पर नज़मा ?"

"बताने से ख़ूबसूरती ख़राब हो जाती है।" नज़मा ने

मुस्कराकर कहा।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने नज़मा के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, "आज तुम भी बहुत ख़ूबसूरत लग रही हो नज़मा!"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ ने परस्पर विचारविमर्श किया। दोनों ने यह निर्णय किया कि नज़मा स्तीफ़ेन के साथ मद्रास जायेगी और मोहम्मदरज़ाखाँ सुलतान हैदरअली के दूत के साथ श्रीरंगपट्टन।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने बद्रीपंडित और इस्माइल को बुलाकर कहा, "हम लोग अपने किसी निजी काम से एक लम्बे सफ़र पर जारहे हैं। मुमकिन है हमें लौटने में कई साल लग जायें। तुम लोग हमारे मकानों की हिफ़ाजत रखना। आपस में प्यार-मोहब्बत से रहना। तुम्हारे ख़र्च के लिये हम तुम्हें रुपया दे जायेंगे।"

"कई साल के लिये आप कहाँ जायेंगे मालिक?"

"हम लोग बहुत दूर जारहें हैं। कुछ तिजारत का काम है। बहुत लम्बा सफ़र है। हमारे बारे में कोई पूछे, तो कहना, मुर्शिदाबाद जाने के लिये कहकर गये हैं।"

रात्रि में हैदरअली का दूत मौमिन मोहम्मदरज़ाखाँ से मिलने के लिये आया।

"तुम आगये मौमिन?"

"जी, मैंने सब इन्तज़ाम मुकम्मल कर लिया है"

"ठीक है। हम लोग कल सुबह रवाना होंगे।"

"मैं ठीक वक्त पर यहाँ से आपको लेलूँगा।"

यात्रा का समय निश्चित करके मौमिन लौट गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल मौमिन आया तो मोहम्मदरज़ाखाँ

उसे तय्यार मिला। नज़मा उनके साथ हुगली के पुल तक गई।

"खुदा हाफ़िज़", विदा होते समय नज़मा ने कहा।

"खुदा हाफ़िज़ बेग़म!" कहकर मोहम्मदरज़ाखाँ आगे बढ़ गया।

मौमिन श्रीरंगपट्टन जाने वाले मार्ग से परिचित था। यह उसकी ग्यारहवीं यात्रा थी कलकत्ते की। मार्ग में उसके अपने ठहरने के निश्चित स्थान थे। मोहम्मदरज़ाखाँ को मौमिन ने रास्ते में कोई तकलीफ़ नहीं होने दी।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने अपने जीवन में इतनी लम्बी यात्रा पहिले कभी नहीं की थी। शुरू शुरू में तो उसे काफ़ी परेशानी हुई, परन्तु धीरे-धीरे वह अभ्यस्त होता गया। पहिले कुछ दिन उसे जो परेशानी मालूम देती थी उसमें उसे बाद में आनन्द आने लगा।

महीनों की यात्रा के पश्चात् जिस दिन ये लोग श्रीरंगपट्टन पहुँचे तो देखा सुलतान की फ़ौज कूच की तय्यारी कर रही थी। सेना राज-पथ पर प्रस्थान के लिये तय्यार खड़ी थी।

मौमिन ने मोहम्मदरज़ाखाँ को अपने मकान पर लेजाकर ठहराया। उसके आराम का सब इन्तज़ाम मुकम्मल करके वह बोला, "मैं अब इज़ाजत चाहूँगा। सुलतान कूच करने वाले हैं। इससे पेश्तर कि वह कूच करें, मैं उन्हें सर आयरकूट की इत्तला देदेना चाहता हूँ।"

"इस बात की सुलतान को फ़ौरन इत्तला दो मौमिन! यह निहायत ज़ुरूरी है।"

मौमिन के आने की सूचना पाकर सुलतान ने उसे तुरन्त उपस्थित होने की आज्ञा दी। मौमिन सुलतान के दरबार में

में हाज़िर हुआ।

"कैसे हालात हैं कलकत्ते के मौमिन ?"

"अंग्रेज़ों के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही हैं हुज़ूर ! उनके होशोहवास गुम हैं। बहुत से अंग्रेज़ तो डर के मारे विलायत भाग गये। जिस दिन करनल बेली और जनरल मनरो की शिकस्त की ख़बर कलकत्ते पहुँची, उस दिन अंग्रेज़ों की शक्लें देखने के क़ाबिल थीं। उनके चेहरों से घबराहट और नाउम्मीदी टपक रही थी।"

"हेस्टिंग्स अब अपने किसी नये जनरल को मद्रास नहीं भेज रहा ?"

"जिस दिन हम लोगों ने कलकत्ता छोड़ा था ठीक उसी दिन सर आयरकूट ने मद्रास के लिये कूच किया था। इस बार वह बहुत ज़बरदस्त तोपख़ाना लेकर आया है। उसका इरादा आपकी ताक़त को तहस-नहस कर देने का है।"

"हम लोग कौन ? क्या तुम्हारे साथ कोई और आदमी श्रीरंगपट्टन आया है ?"

"जी हाँ, मेरे साथ एक कलकत्ते के नवाब साहब तशरीफ़ लाये हैं। वह आपसे मुलाक़ात करना चाहते हैं। इज़ाज़त हो तो बुला लाऊँ।"

"कौन नवाब साहब ? अच्छा जाओ, बुलाकर लाओ।"

मौमिन मोहम्मदरज़ाख़ाँ को बुलाकर ले आया। उसने सुलतान को बाअदब सलाम करके कहा, "मेरा नाम मोहम्मद-रज़ाख़ाँ है।"

"क्या वही मोहम्मदरज़ाख़ाँ, जिसने क्लाइव की साज़िश में शामिल होकर नवाब नजमुद्दौला को ज़हर दिलवाया था ?"

"जी वही मोहम्मदरज़ाख़ाँ, जिसने न सिर्फ़ नवाब नजमु-

द्दौला को ज़हर दिलवाया बल्कि नवाब मीरजाफ़र और मीरक़ासिम के साथ ग़द्दारी की, महाराजा नन्दकुमार की मुख़ालिफ़त की, अंग्रेज़ों को अपना दोस्त समझा और बंगाल के ताल्लुक़ेदारों को लुटाया। यह वही मोहम्मदरज़ाख़ाँ है जिसने अपने देश के साथ दुश्मनी की थी।"

हैदरअली ने बड़े ग़ौर से मोहम्मदरज़ाख़ाँ की ओर देखकर पूछा, "तुम यहाँ किस मक़सद से आये हो?"

"यहाँ आने का मक़सद बयान करने से पेश्तर मैं सुलतान को अपने बारे में कुछ और भी बतला देना मुनासिब समझता हूँ। मैंने अभी-अभी जो कुछ अपनी तारीफ़ में बयान किया वह सब तवारीख़ के पन्नों पर दर्ज हो चुका है। इस लिये इन वाक़यात से आप बख़ूबी वाकिफ़ हैं। लेकिन मैंने इसके अलावा भी कुछ और किया है जो शायद तवारीख़ के पन्नों पर कभी दर्ज न हो सके।"

"मैं उन्हें भी सुनना चाहूँगा।"

"इन्सान कमज़ोरियों का पुतला है। ख़ुदग़र्ज़ी इन्सान की सबसे बड़ी कमज़ोरी होती है। यह कमज़ोरी इन्सान की अक्ल पर पर्दा डाल देती है, उसे अंधा बना देती है। लेकिन एक वक्त इन्सान की ज़िन्दगी में ऐसा भी आता है जब वह पर्दाफ़ाश होजाता है। यह वक्त तब आता है जब उसे टक्कर लगती है और असलियत उसके सामने आती है। उस वक्त उसकी आँखें खुलती हैं। उस वक्त वह अपना रास्ता बदलने की कोशिश करता है। उसे दोस्ती और दुश्मनी का पता चलता है।

ज़िन्दगी के तवारीख़ी वाक़यात बदले नहीं जासकते। जो हो चुका उस पर अफ़सोस करने की भी मेरी कभी आदत नहीं रही। हाँ, मैंने जिन्दगी को अपनी ज़ुरूर बदला और अपने वतन के साथ जो गद्दारियाँ की थीं उनकी फ़हरिस्त में कुछ नेक

काम भी जोड़ने की कोशिश की है। मेरे उन कामों की क्या अह-मियत है इसका अन्दाज आप मुझसे जियादा सही लगा सकते हैं। वह सब कुछ मौमिन आपको बतला सकेगा।

आपने मेरा यहाँ आने का मक़सद पूछा। अब मैं मक़सद बयान करता हूँ।"

हैदरअली बड़े ध्यान से मोहम्मदरज़ाख़ाँ की बातें सुन रहा था।

"मेरी इन आँखों ने अंग्रेज़ों के ज़ुल्म की इन्तहा देखी है। मैंने भूख से तड़पते और दम तोड़ते हुए हिन्दुस्तानियों की छाती पर इनकी ऐश, नाच-गाने और शराब उड़ती देखी है। मैंने इनके दग़ा-फ़रेब और लूट के शिकार बनते हुए नवाब, ताल्लु-केदार और राजाओं की असहाय हालत देखी है। मैंने इन्हें हिन्दुस्तानी औरतों की आबरू से खेलते और असहाय बच्चों के ख़ून में हाथ रँगते देखा है। इस क़हत के दौरान मैंने बंगाल के बाशिन्दों पर अंग्रेज़ों के जो ज़ुल्म देखे, उन्हें यह ज़ुबान बयान नहीं कर सकती। मैंने अपने शहरों को उजड़ते, गाँवों को लुटते, इलाक़े-के-इलाक़े ख़ाली होते, लाशों-पर-लाश पटते और दिन दहाड़े डकैतियाँ होती देखी हैं। ज़ुल्म की इन्तहा देखी है इन आँखों ने। मैं आपके पास सिर्फ़ इस लिये आया हूँ कि एक बार अपनी इन आँखों से इनकी पामाली भी देख सकूँ। यह मेरी दिली तमन्ना है और इसी मक़सद को लेकर मैं और मेरी बेग़म यहाँ आये हैं।"

"तुम और तुम्हारी बेग़म!"

"जी मेरी बेग़म।"

"क्या वह भी तुम्हारे साथ हैं?"

"जी नहीं, वह सर आयरकूट के साथ हैं।"

"आयरकूट के साथ ! क्या मतलब ?" हैदरअली ने आश्चर्य-चकित होकर मोहमम्दरज़ाखाँ की ओर देखा। उसकी समझ में न आया कि वह कह क्या रहा है।

"सर आयरकूट की फ़ौज के साथ एक डांसिग (नाचने वाली) पार्टी आई है। यह राज़ की बात आपको बतला रहा हूँ। वायदा कीजिये कि ताज़िन्दगी यह बात आपसे बाहर नहीं जायेगी। यह राज़ मेरी और बेग़म की ज़िन्दगी और मौत से ताल्लुक रखता है।"

"वायदा करता हूँ नवाब !"

"बेग़म को अंग्रेज़ लोग मिस मेरी के नाम से पुकारते हैं। जब वह यूरोपियन लिबास में होती हैं तो आदमी यह तमीज़ नहीं कर सकता कि वह कोई हिन्दुस्तानी औरत हैं। उनकी शक्ल, सूरत, लिबास और बोलचाल अंग्रेज़ों जैसा देखकर आम अंग्रेज़ नहीं वारेनहेस्टिंग्स भी धोखा खागया। वह उन्हें अंग्रेज समझकर प्यार भरी नज़र से देखता है और बड़ी इज्ज़त देता है।

इसी तुफ़ैल में हेस्टिंग्स के दफ्तर के सब अफ़सर उनकी बड़ी इज्ज़त करते हैं और लिहाज़ भी करते हैं। वह जिस पर भी एक नज़र डाल देती है, वही उनका ग़ुलाम होजाता है। पिछले सालों में वह हेस्टिंग्स के दफ्तर के सब राज़ मुझे लाकर देती रही हैं और मेरे पास से आपके और नाना फड़नवीस के खुफ़िया दूत वे राज़ आपके और उनके पास तक पहुँचाते रहे हैं।

यह काम हम तीन साल से कर रहे हैं। हम लोग इस काम को किसी ज़ाती ग़र्ज या फ़ायदे को मद्दे नज़र रखकर नहीं कर रहे हैं। हमारा मक़सद सिर्फ़ यही रहा है कि हम अपने वतन की कुछ ख़िदमत कर सकें। हम जानते हैं कि हमारे ये काम तवारीख के पन्नों पर कभी दर्ज नहीं किये जायेंगे। इसकी हमें अब

ख्वाहिश भी नहीं है।"

"नवाब साहब ! मैं मुआफ़ी चाहता हूँ आपसे।"

"किस चीज़ की मुआफ़ी ?"

"मैंने आपको ग़लत समझा। मोहम्मदरज़ाखाँ नाम के इन्सान की जो तस्वीर मेरे दिमाग़ में थी, वही थी जिसमें वह हिन्दुस्तान के साथ ग़द्दारी कर रहा था और नवाब नजमुद्दौला को ज़हर का प्याला पिला रहा था। मेरे दिमाग़ में मोहम्मदरज़ाखाँ वही था जो हिन्दुस्तान की दौलत अंग्रेज़ों की जेबों में भर रहा था। मोहम्मदरज़ाखाँ की दूसरी तस्वीर जो आपने पेश की, वह तवारीख़ के पन्नों पर न सही, हमारे दूतों की डायरियों के हर पन्ने पर बनी हुई है। यह तस्वीर तवारीख़ी तस्वीर से बिलकुल जुदा है। वह क़ौमी ग़द्दार की तस्वीर थी और यह वतनपरस्त की तस्वीर है। उस तस्वीर का चेहरा काला था और इस तस्वीर का चेहरा उजला है। यह चेहरा अँधेरे को उजाला बख्शने वाला है। इसकी रोशनी में हमने पिछले तीन सालों में जिधर-जिधर भी क़दम बढ़ाया है, हमारा क़दम सही पड़ा है।"

"जैसा मैंने पहिले अर्ज किया, मेरी ज़िन्दगी के कुछ तवारीख़ी वाक़यात हैं, जो मेरी ग़द्दारी की सनदें हैं, उनसे सब लोग वाकिफ़ हैं, क्योंकि वे शाया हो चुके हैं और उनका इनाम भी मुझे अपने उस वक्त के अंग्रेज़ दोस्तों से मिल चुका है।"

"आपका शायद सबसे बड़ा दोस्त लार्ड क्लाइव रहा है। अपनी दोस्ती के तुफ़ैल में आपने उससे क्या-क्या इनामात हासिल किये ?"

"आपने ठीक फ़रमाया। लार्ड क्लाइव मेरा जिगरी दोस्त रहा है। मैं उसे ऐसा ही समझता रहा। वारेनहेस्टिंग्स मेरा दोस्त नहीं रहा, इस पर मेहरबानियाँ की हैं मैंने। यह एक मामूली

क्लर्क की हैसियत से मुर्शिदाबाद आया था। एक जोंस्टन नाम का बैरिस्टर था मुर्शिदाबाद में उसके पास यह चालीस रुपये माहवार का मुलाज़िम था। उस वक्त अपनी हर ज़ुरूरत के लिये यह मेरे पास आया करता था। जोंस्टन से उन दिनों मेरी काफ़ी दोस्ती थी। उसे मैंने लाखों रुपया बनवाया था।

जब हेस्टिंग्स गवर्नर बना तो इसने मुझपर ग़बन का मुक़दमा चलाया और केस वैसा ही संगीन बनाकर खड़ा कर दिया जैसे केस में महाराजा नन्दकुमार को फाँसी दीगई। मैंने इस कुत्ते को पाला और यह मुझी पर ग़ुर्राकर आया। सिर्फ़ ग़ुर्राया ही नहीं, इसने मुझे काटने और चीर फाड़कर डाल देने की कोशिश की। लेकिन बेग़म ने इसके उस नापाक इरादे को नाकाम कर दिया। इसी लिये आपकी ख़िदमत में आज हाज़िर हो सका।"

"क्या नवाब साहब! आपने वाक़ई ग़बन किया था?"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ को हँसी आगई। वह बोला, "ग़बन तो किया ही था। ग़बन न करता तो मुक़दमा कैसे क़ायम होता। लेकिन वह रक़म मेरी जेब से जाचुकी थी।"

"वह रक़म किसके पास गई?"

"हमारे यार लार्ड क्लाइव के पास। आपको मालूम ही होगा हमारे बंगाल की शतरंज पर नवाबी मोहरों की कैसी अदला-बदली रही। उसी अदला बदली में क्लाइव ने मुझे भी नवाब बनने की शै देडाली। मेरे दिमाग़ में भी नवाबी की बू समा गई और ऐसा नशा सवार हुआ कि आँखें बन्द होगईं।

बेग़म ने मुझे बार-बार उस ख़तरे से आगाह किया लेकिन नवाबी सनक कुछ ऐसी दिमाग़ में बस गई कि मैंने बेग़म के कहने की भी कोई परवाह नहीं की और बहुत सी बातें इनसे

भी छिपाता रहा। नवाब नज़मुद्दौला वाले हादिसे की मैंने इन्हें हवा तक न लगने दी और जो रक़में मैं क्लाइव को देता रहा, उनका भी इन्हें कुछ पता न चलने दिया। ख़ज़ाने का मुझे क्लाइव ने सोलहों आने मालिक बना दिया था। वह मुझसे जितनी रक़म माँगता था मैं उसे दे देता था। इस तरह की रक़में सब मिलकर क़रीब ढाई करोड़ की बन गईं।

क्लाइव के इङ्गलैंड चले जाने पर मैंने एक दिन मालख़ाने में जाकर देखा तो न वहाँ वह रजिस्टर था जिसमें वे रक़में दर्ज की जाती थीं और न ही क्लाइव के हाथ की रसीदें थीं। मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गई।

जब बेग़म से मैंने यह सब बतलाया तो वह बोलीं, "जिसे आप अपना सबसे बड़ा दोस्त समझते थे वही आपका सबसे बड़ा दुश्मन साबित हुआ। उसी ने आपके गले में फाँसी का फन्दा डलवाने का इन्तज़ाम कर दिया।'

'वह कैसे ?' मैंने पूछा।

'जो रुपया आपने लार्डक्लाइव को दिया है, वह सब आपका ग़बन शुमार किया जायेगा। आपके पास उसकी कोई रसीद नहीं है।'

बेग़म की इस संजीदा बात को सुनकर मैं काँप उठा। हेस्टिंग्स के गवर्नर बनने तक हमने किसी तरह एक करोड़ रुपये का हिसाब बराबर किया लेकिन फिर भी डेढ़ करोड़ रुपया हमारे नाम पर रह गया।

बेग़म की बात सच निकली। जिसे हमने अपना दोस्त समझा वही हमारा सबसे बड़ा दुश्मन साबित हुआ।"

"लार्ड क्लाइव आपका गला फँसाकर इङ्गलेंड भाग गया। अंग्रेज़ को दोस्त समझकर आपने ज़बरदस्त ग़लती की। ये

लोग किसी के दोस्त नहीं हैं।"

"यही बात हमारी बेग़म ने हमसे कही थी। इस बात की असलियत मैंने तब समझी जब फाँसी का फंदा मेरे गले में आ-गया। उस वक्त से इस क़ौम के लिये मेरे दिल में बेइन्तिहा नफ़रत पैदा हो गई। मैंने मुर्शिदाबाद में कितने ही अंग्रेज़ों के चावलों के गोदाम क़हत के सताये हुए लोगों से लुटवा दिये और कुछ में आग लगवा दी। कलकत्ता-कौंसिल के मेम्बर स्पेंसर को मैंने चावल ख़रीद कर मुनाफ़ा कमाने की सलाह दी। उसने पचास लाख रुपये का चावल ख़रीदकर गोदाम में भर दिया। मैने वह गोदाम भी भूख से तड़पते हुए लोगों के हवाले कर दिया। इस हादिसे को स्पेंसर सहन न कर सका। सुनते ही वह अपने ईसा मसीह के पास चला गया।"

"क्या मर गया ?"

"बिलकुल मर गया। ख़ुदा पाक की क़सम ! उस नापाक और बेइख़लाक़ आदमी के मर जाने की मुझे अज़हद खुशी हुई। यह ख़ुशी हासिल करने के कुछ ही दिन बाद मैं गिरिफ्तार कर लिया गया और जेल में जो-जो मुसीबतें उठाईं। उन्हें बयान नहीं कर सकता।

बेग़म नाचने गाने में बहुत माहिर थीं। उन्होंने इस बीच में अंग्रेज़ी डांस भी सीख लिया था और फ़र्राटे की अंग्रेज़ी बोलने लगी थीं। उन्होंने एक नाचघर के मालिक मिस्टर स्तीफ़ेन से मुलाक़ात करके उसके नाचघर में डांस किया तो इनकी कलकत्ते में बड़ी शौहरत हो गई। इसी स्तीफ़ेन के ज़रिये इन्होंने हेस्टिंग्स से मुलाक़ात की और उसे दो लाख रुपया रिश्वत का देकर मेरी जान बचाई।"

हैदरअली ने मोहम्मदरज़ाखाँ की कौली भर कर

कहा, "नवाब साहब ! आपने और आपकी बेगम ने क़ौम की जो ख़िदमत की, वह चाहे तवारीख़ के पन्ने में दर्ज न हो लेकिन उसे नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। मैं उसकी तहेदिल से क़द्र करता हूँ।"

"हम लोगों ने महाराजा नन्दकुमार को बचाने की भी हरचन्द कोशिश की और हर बात की उन्हें वक्त से पेश्तर इत्तला दी, लेकिन वह उसका फ़ायदा न उठा सके। शायद उन्हें यह यकीन नहीं था कि अंग्रेज़ उनके साथ इस क़दर ज़लालत पर उतर आयेंगे।"

हैदरअली की सेना का बिगुल बज चुका था और नगाड़े पर चोट पड़नी आरम्भ होगई थी। यह सूचना थी उन सैनिकों के लिये जो अभी तक अपनी पंक्तियों में आकर खड़े नहीं हुए थे। सेना के प्रस्थान का समय होचुका था।

"नवाब साहब ! इतना लम्बा सफ़र तै करके आप थक गये होंगे। आप आराम करें। मुझे मद्रास से नीचे के अंग्रेज़ी बन्दरगाह और क़िलों पर कब्ज़ा करना है। आपका फ़रज़न्द टीपू आगे गया हुआ है। वह मेरी इन्तज़ार में होगा। मैंने सोचा है कि पहिले किनारे के बन्दरगाहों और क़िलों पर कब्ज़ा करके तब मद्रास पर हमला करूँ, जिससे अंग्रेज़ों के भागने के सब रास्ते बन्द होजायें।"

"यह बात आपने बहुत दानिशमन्दी की सोची। लेकिन मैं श्रीरंगपट्टन में आराम करने के लिये तो इतना लम्बा सफ़र तै करके नहीं आया हूँ। मुझे आराम ही करना होता तो कलकत्ते में काफ़ी जगह थी आराम करने के लिये।"

"फिर किस इरादे से आये हैं आप ?"

"मैं आपके साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर दुश्मन का सिर

चीरने के लिये आया हूँ। हम लोगों को सर आयरकूट की सरगर्मियों की ख़बरें बेग़म से मिलती रहेंगी। सर आयरकूट हेस्टिंग्स का दाँया हाथ है। अगर आपने इसे शिकस्त देकर भगा दिया या ख़त्म कर दिया तो हेस्टिंग्स का हौसला पस्त हो जायेगा और बहुत मुमकिन है कि वह दक्खन में अपनी सल्तनत क़ायम करने का इरादा छोड़ दे।"

"तो चलिये, तय्यारी कीजिये चलने की। फ़ौज का बिगुल बज चुका है।"

"चलिये, मैं तय्यार खड़ा हूँ। मुझे तय्यारी ही क्या करनी है? मेरे लिये हथियार मँगवाइये।"

मोहम्मदरज़ाखाँ हथियारों से लैस होकर सुलतान हैदरअली के साथ आगे बढ़ गया।

हैदरअली की सेना पथरीले रास्तों से गुज़रती हुई समुद्र के किनारे-किनारे आगे बढ़ी…। उसे जहाँ कहीं अंग्रेज़ों की नावें दिखाई दीं, उन्हें लूटा और नावों को छीन कर अपने बेड़े में मिला लिया।

"सुलतान! अंग्रेज़ों पर फ़तह हासिल करने के लिये जहाज़ी बेड़ों को मज़बूत बनाना बहुत ज़रूरी है। इनकी जहाज़ी ताक़त को अगर आप तोड़ पाये तो ज़मीन पर इन्हें शिकस्त देना कोई मुश्किल काम नहीं रहेगा। इससे इनके बाहरी मदद के रास्ते बन्द होजायेंगे।"

"मैंने यही सोचा है नवाब साहब! इधर हमने अपना जहाज़ी बेड़ा काफ़ी मज़बूत कर लिया है। हमारा जहाज़ी बेड़ा काफ़ी मज़बूत है। हमारे सब जहाज़ों पर तोपें लगी हुई हैं। हमारे जहाज़रानी के सिपहसालार अलीरज़ाखाँ ने देखते-ही-देखते काफ़ी तरक्क़ी की है। मैं उनसे आपकी मुलाक़ात

कराऊँगा ।

सर आयरकूट समझता है कि वह बहुत बड़ा तोपख़ाना लेकर आया है और मैसूर राज को ख़त्म कर देगा । उसे मालूम नहीं है कि हमारे पास इस वक्त बाईस हज़ार से ऊपर तोपें हैं और छै लाख से ऊपर बन्दूकें । भाले और तलवारों की तो कोई शुमार ही नहीं है । हमारे पास सात सौ हाथी, छै हज़ार ऊँट और ग्यारह हज़ार घोड़े हैं । करनल बेली और जनरल मनरो समझते थे कि वे दो ओर से श्रीरंगपट्टन को घेर लेंगे । टीपू ने उन्हें वह करारी मार दी कि ज़िन्दगी भर नहीं भूलेंगे ।"

हैदरअली की सेना आगे बढ़ती गई उसने कई अंग्रेज़ी क़िलों पर अधिकार करलिया । और कई समुद्री किनारे की बस्तियों को अधिकार में ले लिया ।

सेना कुछ आगे और बढ़ी तो मोहम्मदरज़ाख़ाँ की दृष्टि एक वृक्ष पर गई, जिसके तने की छाल खुरची हुई थी । वह बोला, "सुलतान ! फ़ौज को रुकने का हुक्म दीजिये ।"

"क्यों, क्या कोई खास बात है ?"

मोहम्मदरज़ा खाँ उस वृक्ष के पास गया । उसने देखा वृक्ष की खुरची हुई छाल पर आगे न बढ़ने का संकेत था । उसने कहा, "रास्ते में सर आयरकूट अपना ज़बरदस्त तोपख़ाना लिये बैठा है । आप अपना रास्ता बदल दें ।"

"आयरकूट से ही दो-दो हाथ क्यों न हो जायें नवाब साहब ! ज़रा देखें तो उसमें कितना दम-ख़म है ।"

"नहीं सुलतान ! बेग़म की बात न मानना, ज़बरदस्त ग़लती होगी । हम आयरकूट पर अचानक कल रात में हमला करेंगे । पहिले हम ऊपर से रास्ता काटकर उस बन्दरगाह को फ़तह कर लेते हैं, जिसे फ़तह करने के लिये हम चल रहे हैं ।"

सुलतान हैदरअली ने मोहम्मदरज़ा ख़ाँ की सलाह मानकर कहा, "ऐसे मौक़े पर आपके यहाँ आने को मैं खुदाई मदद कहूँगा। मालूम होता है अल्लाह ताला इस पाक ज़मीन से अंग्रेज़ों के नापाक क़दमों को उखाड़ कर फिकवाना चाहते हैं।"

हैदरअली की सेना सर आयरकूट की सेना की छावनी से बचकर ऊपर से आगे बढ़ गई और उसने समुद्र-तट के क़िले पर अधिकार कर लिया। सर आयरकूट रास्ते में पड़ाव डाले पड़ा सोचता रहा कि हैदरअली की सेना आती होगी।

दुर्ग पर अधिकार करने के पश्चात दूसरे दिन मोहम्मद-रज़ा खाँ ने सुलतान से कहा, "सुलतान! हमें आयरकूट की फ़ौज पर हमला ठीक उस वक्त करना है जिस वक्त सूरज छिपना चाहता हो और रात के अंधेरे की चादर ज़मीन को ढक ले। उस वक्त सर आयरकूट शराब में डूबा हुआ होगा और उसकी फ़ौज नाच रंग में फ़ँसी होगी। अगर आयरकूट का तोपख़ाना अपने हाथ आगया तो अपने तोपख़ाने की मार को सँभालना फिर इनके लिये मुमकिन न रहेगा।

बेग़म मुजरे का इन्तज़ाम ठीक तोपख़ाने के बीच में करायेंगी, जिससे तोपख़ाने के सिपाही नाच-रंग में फँसे रहें।"

हैदरअली ने अपने सिपहसालार को तुरन्त सैनिक-तय्यारी की आज्ञा दे दी।

बारह

आयरकूट ने कलकत्ते से मद्रास के लिये कूच किया तो वारेनहेस्टिंग्स ने उसे पंद्रह लाख रुपया देकर कहा, "यह रक़म ख़र्च करने के लिये नहीं दी जा रही है।"

"मैं जानता हूँ सर! यह वक्तज़ुरूरत के लिये है। रास्ते में बहुत से राजे और नवाब मिलेंगे, जिनसे हम फ़ौज का ख़र्च वसूल करके आगे बढ़ेंगे।"

"मेरा मतलब यही है।"

"मैं समझ गया सर!"

आयरकूट ने जहाँ पहिला पड़ाव डाला है, नज़मा ने उसे वहीं अपनी ओर प्रभावित कर लिया।

स्तीफ़ेन आयरकूट का यह आकर्षण देखकर बोला, "सर! हमारे आर्टिस्ट का आप डाँस देखिये, अपने सिपाहियों को खुश कीजिये, लव की बीमारी फैलाने की कोशिश मत कीजिये।"

"तुम ठीक कहता है मिस्टर स्तीफ़ेन!" आयरकूट बोला और फिर नज़मा की ओर मुँह करके पूछा, "तुम्हारी क्या राय है मिस मेरी?"

"मिस्टर स्तीफ़ेन ठीक कहते हैं। हम आप लोगों को खुश करने के लिये आये हैं, जिससे आप दुश्मन को शिकस्त दे सकें।

आप लोग लव के चक्कर में पड़ गये तो सब काम ख़राब हो जायेगा।"

"लेकिन ख़ूबसूरती की तारीफ़ तो करनी ही होती है मिस मेरी! इन्सान ब्यूटी के सामने अन्धा नहीं बन सकता। ब्यूटी इन्सान को रोशनी देती है।"

"आप ठीक कहते हैं सर!" नज़मा ने मुस्कानपूर्ण चेहरे से आयरकूट की ओर देखकर कहा। "ब्यूटी की तारीफ़ आप कर सकते हैं।"

"नो सर! लड़ाई का मैदान ब्यूटी की तारीफ़ करने की जगह नहीं है। हम लोग सिर्फ़ आपको ख़ुश करने के लिये आये हैं। आप डांस देखिये, ख़ुश रहिये और दुश्मन को तहस-नहस कीजिये।"

"ग़लत! तुम हमको खुश करने के लिये नहीं, रुपया कमाने के लिये आये हो मिस्टर स्तीफ़ेन! रुपया मैं तुम्हें दूँगा। रुपया तुम्हें ख़ूब मिलेगा। जब कोई राजा या नवाब हमारे चंगुल में फँस जायेगा तो हम तुमको ख़ूब रुपया दिलायेंगे।"

"हम सिर्फ़ रुपया कमाने के लिये नहीं आये हैं सर! पैसा तो कलकत्ते में हमारे नाचघर में भी ख़ूब बरसता है।"

"फिर किस लिये आये हो तुम?"

"आपकी ख़िदमत करने के लिये। ऐसे जवानों को ख़ुश करने के लिये जो अंग्रेज़-क़ौम के लिये जंग करने जारहे हैं।"

"ओ! पेट्रिआॅट (देशभक्त)। वेरी गुड़। हम तुमको प्यार करते हैं। क्यों मिस मेरी?" नज़मा की ओर देखकर आयरकूट मुस्कराया।

मिस्टर स्तीफ़ेन को आयरकूट का यह मुस्कराना अच्छा नहीं लगा। उसे लगा जैसे उसने आयरकूट के साथ आकर

भयंकर भूल की।

मिस्टर स्तीफ़ेन को मिस मेरी का वारेनहेस्टिंग्स के साथ मिलना-जुलना उतना बुरा नहीं लगता था क्यों कि वह वृद्ध था और उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं परन्तु सरआयरकूट जवान था और खूबसूरत भी। उसे भय हुआ कि कहीं वह उसके आर्टिस्ट को न ले उड़े। लार्ड क्लाइव ने उसके कई आर्टिस्टों को उड़ाकर उसके कारोबार को हानि पहुँचाई थी। इस बात का ध्यान आते ही वह कुछ भयभीत सा हो उठा। वह बोला, "सर ! आफ़ीसर को आर्टिस्ट की ओर देखकर मुस्कराना नहीं चाहिये। इससे आर्टिस्ट के दिल में बेचैनी पैदा होती है।" उसने मिस मेरी कीओर देखकर पूछा, "मैंने ठीक कहा मिस मेरी !"

"नो सर ! मेरे दिल में किसी के मुस्कराने से कोई बैचैनी पैदा नहीं होती। मैं सिर्फ़ मज़ा लेती हूँ। यह तफ़री की बात है मिस्टर स्तीफ़ेन ! तुम्हें इसकी फ़िक्र नहीं करनी चाहिये।"

मिस मेरी का यह आश्वासनपूर्ण उत्तर सुनकर मिस्टर स्तीफ़ेन थोड़ा आश्वस्थ होकर बोला, "राइट सर ! आप मुस्करा सकते हैं, लेकिन धीरे-धीरे, जिससे हमारे आर्टिस्ट के नाज़ुक दिल पर उसका असर न हो।"

सर आयरकूट रास्ते में पड़ने वाले छोटे-मोटे ताल्लुकेदारों को लूटता-खसोटता और इधर-उधर के गाँवों तथा क़स्बों में डकैती डालता हुआ आगे बढ़ता गया। जहाँ से भी रुपया उसके हाथ लगा, उसने लूटा।

एक ओर हेस्टिंग्स ने सर आयरकूट को इतनी बड़ी सेना लेकर रवाना किया और दूसरी ओर मूदाजी भोंसले के माध्यम से मराठों के साथ संधि की बात चलाई, परन्तु मूदाजी नाना फड़नवीस के साथ विश्वासघात कर चुका था। उसका

उनके सामने जाकर संधि का प्रस्ताव रखने का मुँह नहीं था। यह बात आगे न बढ़ सकी।

हेस्टिंग्स की दृष्टि फिर सिंधिया पर गई परन्तु उसके साथ अंग्रेज़ इस बीच में विश्वासघात कर चुके थे और उन्होंने गुप्त संधि की शर्तों का पालन नहीं किया था। अंग्रेज़ों ने गोहद-नरेश को सैनिक सहायता देकर ग्वालियर पर आक्रमण करा दिया था और ग्वालियर का क़िला सिंधिया से छीन कर उसे दे दिया था। इसके अतिरिक्त कर्नल कारनक ने हेस्टिंग्स की आज्ञा से सिंधिया के राज्य को लूटा था और राजपूताने के राजाओं को सिंधिया के विरुद्ध भड़काया था। सिंधिया का सौभाग्य ही रहा कि किसी राजपूत राजा ने सिंधिया से छेड़खानी नहीं की। हेस्टिंग्स का सिंधिया को नष्ट करने का दौर तब समाप्त हुआ जब उसे हैदरअली और नाना फड़नवीस की संधि का पता चला और वे एक नई आफ़त में फँस गये।

जब हेस्टिंग्स को अन्य कोई मार्ग दिखाई न दिया तो उस ने सिंधिया से एक नई संधि की और उसके द्वारा नाना फड़नवीस से संधि की बात चलवाई।

अंग्रेजों की मद्रास-कौंसिल ने भी नाना साहब से संधि की प्रार्थना की क्यों कि वहाँ हैदरअली उनके दुर्ग-पर-दुर्ग छीनता जारहा था और उसने इनके कई तिजारती बन्दरगाहों को लूट लिया था। उस पत्र में कौंसिल के मैम्बरों ने ईसामसीह, इङ्गलेंड के बादशाह, अंग्रेज़-क़ौम और ईस्टइंडिया कम्पनी की क़समें खाई थीं कि वे भविष्य में कभी विश्वासघात नहीं करेंगे और संधि की शर्तों का पालन करेंगे।

माधोजी सिंधिया यह संधि का प्रस्ताव लेकर नाना फड़नवीस के पास आये तो नाना साहब बोले, "सिंधिया! गॉडार्ड

से पिटकर, ग्वालियर का दुर्ग छिनवाकर और कर्नल कारनक से अपने राज्य को लुटवाकर भी तुम्हें अंग्रेज़ों की संधि का प्रस्ताव लाते लज़्जा का अनुभव नहीं होरहा ? क्या तुम मुझे भी अपनी ही तरह विश्वासघाती समझते हो ? तुम्हें मैं अपना दाँया बाज़ू समझता था। तुमने विश्वासघात करके मराठा-मण्डल का वह हाथ काट डाला।"

सिंधिया की गर्दन लज्जा से झुक गई। वह चुपचाप वहाँ से उठकर चला गया। संधि की बात आगे चलाने का उसमें साहस न हुआ। वह जानता था कि नाना फड़नवीस अंग्रेज़ों की बातों में आने वाले नहीं हैं।

नाना फड़नवीस ने अंग्रेजों के संधि-प्रस्ताव पर कोई विचार नहीं किया। वह हैदरअली की गतिविधियों को देख रहे थे और उन्हें विश्वास था कि हैदरअली अंग्रेज़ों को दक्षिण भारत से निकाल कर बाहर कर देगा। नाना फड़नवीस मराठा-मण्डल की शक्ति का उपयोग उत्तर-भारत में करना चाहते थे। उन्होंने दिल्ली में अपने प्रतिनिधि पुरुषोत्तम महादेव हिंगने को एक पत्र में लिखा, "हमें समाचार मिला हैं कि अंग्रेज़ बादशाह को फोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। बादशाह को समझाओ कि ये लोग बहुत चालाक और बेईमान हैं। इनके कारनामे उनसे छिपे नहीं हैं। सिराजुद्दौला, मीरजाफर, मीरक़ासिम, शुजाउद्दौला, नन्दकुमार, चेतसिंह और अवध की बेग़मों के साथ इन्होंने जो कुछ किया वह इनके चरित्र को स्पष्ट करने के लिये काफ़ी है। ये लोग पहिले लालच देकर किसी राजे या नवाब से संधि करते हैं और फिर उसे बन्दी बनाकर उसके राज्य को हड़प लेते हैं। बादशाह को धोखे में फँसकर इनसे कोई संधि नहीं करनी चाहिये। हम दक्षिण के राजे और नवाब आपस में मिल गये हैं।

हमने अंग्रेज़ों को यहाँ से खदेड़ने का निश्चय कर लिया है। वह भी उत्तर-भारत के राजे और नवाबों को संगठित करके अंग्रेज़ों से युद्ध छेड़ें। अवसर आने पर हम लोग उनकी सहायता करेंगे।'

आयरकूट मद्रास पहुँचा तो करनाटक के नवाब मोहम्मद-अली को आशा बँधी कि आयरकूट हैदरअली से करनाटक को जीतकर उसे दिला देगा। वह उसके सामने गिड़गिड़ा कर बोला, "सर! हैदरअली ने करनाटक पर बहुत ज़ुल्म किया है। उसने अंग्रेज़ों की सब कोठियाँ लूट लीं और हमें भी बहुत नुक़सान पहुँचाया।"

"तुम्हारे हरम का क्या बना मोहम्मदअली? तुम अपनी बेग़मों को वहाँ से बचाकर लाये या उन्हें हैदरअली के हवाले कर दिया?"

"सब ख़त्म हो गया सर! हमें वहाँ से भागते वक्त हरम तक जाने का मौक़ा ही नहीं मिला। इस बार हमने अपने हरम में एक-से-एक ख़ूबसूरत हसीना लाकर रखी थी। वे सब वहीं रह गईं।"

आयरकूट मोहम्मदअली की रोनी सूरत देखकर हँसा। फिर बोला, "तुम फ़िक्र मत करो! नवाब हम तुम्हारी रियासत तुम्हें दिलायेंगे। इस काम के लिये तुम्हें रुपया ख़र्च करना होगा। तुम्हारे पास जो कुछ रुपया है वह हमें देदो। हम हैदरअली पर हमला करने के लिये तोपख़ाना और गोला-बारूद का इन्तज़ाम कर रहे हैं। हम उस पर हमला करके तुम्हारी रियासत तुम्हें दिला देंगे।"

आयरकूट की यह बात सुनकर मोहम्मदअली के होश उड़-गये। उसका दम ख़ुश्क होगया। उसकी रियासत हैदरअली

ने छीन ली और रुपया आयरकूट माँग रहा था। वह आयरकूट को नाराज भी नहीं कर सकता था क्यों कि वह उनके चंगुल में फँसा हुआ था। लाचार होकर उसे सात लाख रुपया आयरकूट के हवाले करना पड़ा।

सर आयरकूट ने तीन महीने मद्रास में रह कर हैदरअली पर आक्रमण करने की तय्यारी की। इस बीच में वहाँ खूब रास-रंग रहा। स्तीफ़ेन को आयरकूट ने मोहम्मदअली से काफ़ी रुपया दिलाया।

स्तीफ़ेन आयरकूट से बहुत खुश था। वह नज़मा की बुद्धिमत्ता का क़ायल होगया। जब वह शराब पीकर नज़मा से बातें करता था तो उसके दिल कि कली खिल जाती थी। वह कृतज्ञता में भरकर कहता था, "मिस मेरी ! तुमने हमें बरबाद होने से बचा लिया। अगर मैं डांसिग पार्टी को लेकर यहाँ न आता तो मेरी वहाँ बुरी हालत होजाती।"

"बहुत बुरी मिस्टर स्तीफ़ेन ! तुम्हारा नाचघर तो टप्प हो ही गया था, तुम्हारे आर्टिस्ट भी छुट्टी कर गये होते ; तुम्हें एक पैसे की भी आमदनी न होती।"

"तुम ठीक कहती हो मिस मेरी ! हमको आयरकूट ने नवाब से काफ़ी रुपया दिलाया है। जब आयरकूट हिन्दुस्तानी नवाबों और राजाओं पर हमला करेगा तो उनसे भी हमें बहुत रुपया दिलायेगा। हम यहाँ से मालामाल होकर कलकत्ता लोटेंगे।"

"इसमें क्या शक है ?" नज़मा ने कहा। "तुम जानते हो मिस्टर स्तीफ़ेन ! यह रुपया आयरकूट ने मेरे कहने से तुम्हें दिलाया है।"

"मैं जानता हूँ मिस मेरी ! आयरकूट तुमको बहुत पसन्द करता है। लेकिन यह खतरे की बात है। आर्टिस्ट को किसी

फ़ौजी से लव नहीं करना चाहिये।"

नज़मा आयरकूट के निकटतम सम्पर्क में आगई थी। जब नज़मा उसकी मेज़ पर बैठकर उसके गिलास में शराब डालती थी और गिलास को उठाकर उसके होठों से लगाती थी तो आयरकूट मद्रास से विलायत पहुँच जाता था और अपने सब राज़ नज़मा पर खोल देता था।

"मिस मेरी! अब हमने अपना सब काम कम्पलीट (पूरा) कर लिया है। हम हैदरअली को उसकी बदमाशी का मज़ा चखायेंगे। हम मैसूर को मिट्टी में मिला देंगे।"

"ज़रूर मिलाना चाहिये सर! हैदरअली ने हमारा बहुत करनल-जनरल मार डाला। उसने हमारी फ़ौज का सफ़ाया करके रख दिया। वह हमारी बहुत सी तोपें और गोला-बारूद छीन कर लेगया।"

"हम हैदरअली का दिमाग़ ठीक करेगा। कल हमारी फ़ौज यहाँ से कूच करेगी। हमें मालूम हुआ है कि वह अब मद्रास के बहुत नज़दीक आगया है।"

"कल! और हम लोग? क्या हमें आप यहीं छोड़ जायेंगे?"

"तुम हमारे साथ चलेगा मिस मेरी! हम तुम्हें अपने साथ ले चलेगा। हमारे पास बहुत बड़ा तोपख़ाना है। डरने की कोई बात नहीं है।"

"क्या मिस्टर स्तीफ़ेन को भी साथ ले चलेंगे?"

"स्तीफ़ेन तोप की आवाज़ सुनकर बेहोश हो जायेगा। तब उसे कौन सँभालेगा? हम दुश्मन से लड़ेगा या उसे सँभालेंगे?"

"सर! उसे मैं सँभाल लूँगी। आप उसे ज़ुरूर ले चलें।"

"आल राइट, ले चलो। मज़ेदार आदमी है। देखने में कार्टून मालूम देता है। उसकी गंजी खोपड़ी हमको बहुत ख़ूब-

सूरत लगती है।"

दूसरे दिन सर आयरकूट ने मद्रास से कूच किया। हैदरअली मद्रास से नीचे एक अंग्रेज़ी बन्दरगाह पर छापा मारने के लिये आरहा था। आयरकूट ने बन्दरगाह से दस मील उत्तर की दिशा में, जिधर से हैदरअली आने वाला था, अपना पड़ाव डाला। वह हैदरअली की घात में बैठ गया।

आयरकूट को वहाँ पड़ाव डाले चौबीस घण्टे हो गये परन्तु हैदरअली की फ़ौज न आई। संध्या को जब सरआयरकूट का भोजन का समय हुआ तो नज़मा ने उसके पास जाकर पूछा, "सर! हैदरअली नहीं आया?"

आयरकूट हँसकर बोला, "उसे हमारे आने का पता चल गया होगा। हमारे सामने हैदरअली नहीं आसकता। हमें खुद श्रीरंगापट्टन जाकर उसका सफ़ाया करना होगा। उसकी हमारे सामने आने की हिम्मत नहीं है।"

"यही करना होगा सर! लेकिन हमने सुना है कि वह बहुत चालाक आदमी है। उसके पास भी बहुत बड़ी फ़ौज है।"

"हम उसको कुचलकर रख देगा। हमारा तोपख़ाना उसके क़िले को बिस्मार कर देगा।"

"ज़ुरूर कर देगा सर! आपके पास इतना बड़ा तोपख़ाना और इतनी बड़ी फ़ौज है। इसके सामने वह क्या खाकर आयेगा?"

नज़मा ने गिलास में शराब उड़ेल कर आयरकूट को दी। आयरकूट शराब पीता-पीता मदहोश होकर बोला, "हैदरअली हमसे डर कर भाग गया मिस मेरी···हा···हा भाग गया।"

"ज़ुरूर भाग गया सर! ज़ुरूर भाग गया होगा। वह आपके सामने नहीं आसकता।"

इधर ये बातें चल रही थीं और उधर सेना के बीच मिस्टर

स्तीफ़ेन की मण्डली का डांस होरहा था। सैनिक तफ़री ले रहे थे। अँधेरा चारों ओर फैल गया था। सूर्य डूब चुका था और रात्रि का अंधकार बढ़ता जारहा था।

नज़मा बोली, "सर चलिये मिस्टर स्तीफ़ेन की पार्टी का डांस देख आयें। बड़ा मज़ा आरहा है।"

आयरकूट उठकर खड़ा होगया। वह नज़मा की बात को नहीं टाल सकता था। जंगल की ठण्डी हवा आयरकूट के माथे से आकर टकराई तो नशा खिल गया। उसके पैर लड़खड़ाने लगे।

ये लोग अभी दो-चार क़दम ही आगे बढ़े थे कि इनकी सेना में भगदड़ मच इई।

"क्या हुआ मिस मेरी! हमारा सिपाही लोग भाग क्यों रहा है? कोइ ख़तरा मालूम देता है।"

दोनों खड़े होगये।

आयरकूट का नशा कुछ ढीला पड़ा। उसके कानों में बन्दूकों की आवाज़े आने लगीं। वह कुछ भर्राई सी आवाज़ में बोला, "हैदरअली!"

"हैदरअली सर! उसे तोप से उड़वा दीजिये। उसे पकड़ कर तोप के मुँह से बँधवा दीजिये सर!"

सर आयरकूट ने सीटी बजाई।

दो सारजेण्ट उनके सामने आकर उपस्थित हुए।

"तोपों में पलीते लगा दो।"

"सर! दुश्मन हमारी फ़ौज के अन्दर घुस आया है। तोपें कहाँ दाग़ी जायें?"

आयरकूट कुछ सोचकर बोला, "बेयोनेट।"

"यस सर!"

घमासान युद्ध आरम्भ होगया। हैदरअली की सेना ने अंग्रेज़ी फ़ौज में घुसकर भयंकर मार-काट आरम्भ करदी। अंग्रेज़ी फ़ौज इस अचानक आक्रमण के लिये तय्यारी नहीं थी। उसके जनरल समझ बैठे थे कि हैदरअली उनसे डर कर भाग गया।

मोहम्मदरज़ाखाँ एक सैनिक टुकड़ी को लेकर तोपख़ाने पर लपका और टीपू ने आयरकूट को अपना निशाना बनाया। जब आयरकूट ने देखा कि शत्रु पर विजय प्राप्त करना सम्भव नहीं रहा तो वह अपने घोड़े की ओर बढ़ा और कुछ सैनिकों को साथ लेकर मैदान से भाग निकला।

स्तीफ़ेन के होश गुम थे। वह इधर-उधर खोजता हुआ किसी तरह नज़मा के पास आगया और घबराहट में बोला, "मिस मेरी! हमारा आयरकूट क्या कर रहा है? उसका तोपख़ाना कहाँ गया? वह हैदरअली की फ़ौज को भून क्यों नहीं डालता?"

"आयरकूट भाग गया मिस्टर स्तीफ़ेन और! तोपख़ाने पर दुश्मन ने क़ब्ज़ा कर लिया।"

"यह तो बहुत बुरी बात है मिस मेरी!"

"आओ हम लोग उस पेड़ के पीछे छिप जायें।"

"चलो मिस मेरी! किसी तरह अपनी जान बचाओ।"

नज़मा और स्तीफ़ेन एक पेड़ की आड़ में छिपकर बैठ गये।

मारकाट बहुत अधिक देर नहीं चली। आयरकूट के मैदान छोड़ देने पर अंग्रेज़ी फ़ौज का साहस समाप्त होगया। युद्ध में काफ़ी अंग्रेज़-सैनिक और अफ़सर मारे गये और हज़ारों की संख्या में बन्दी बना लिये गये। मोहम्मदरज़ाखाँ ने आयरकूट के तोपख़ाने पर अधिकार कर लिया।

हैदरअली के सैनिक अंग्रेज़ी-फ़ौज के सैनिकों को बन्दी बनाने के लिये इधर-उधर खोजते हुए उस पेड़ के पास जा पहुँचे जिसके पीछे नज़मा और मिस्टर स्तीफ़ेन छिपे हुए थे।

"तुम लोग कौन हो ?"

"हम लोग आयरकूट के सिपाही नहीं हैं।" स्तीफ़ेन गिड़-गिड़ाकर बोला।

"फिर कौन हो तुम ? इधर आओ। हम तुम्हें सुलतान हैदरअली के सामने पेश करेंगे।"

हैदरअली का नाम सुनकर स्तीफ़ेन के होश उड़ गये !

नज़मा बोली, "मिस्टर स्तीफ़ेन ! घबराते क्यों हो ? चलो चलते हैं हैदरअली के पास। हम लोग आर्टिस्ट हैं। सुलतान को भी हम अपना आर्ट दिखायेंगे। सुलतान हमें इनाम देगा।"

"इनाम ?"

"और क्या ? हम हैदरअली से लड़ने नहीं आये।"

हैदरअली के सैनिक दोनों की बातें सुनकर मुस्कराते हुए बोले, "आगे-आगे चलो।"

स्तीफ़ेन और नज़मा सैनिकों के साथ चल दिये।

स्तीफ़ेन भयभीत अवश्य था परन्तु नज़मा के साथ रहने से उसका दिल मज़बूत था। वह रास्ते में बोला, "मिस मेरी ! हमारा आयरकूट जिस काम को नहीं कर सका, उसे तुम कर सकती हो।"

"मैं क्या कर सकती हूँ मिस्टर स्तीफ़ेन ?"

"तुम हैदरअली को अपने फंदे में फंसा सकती हो। तुमने क्लाइव को फँसाया, हेस्टिंग्स को फँसाया, आयरकूट को फँसाया और क्लिक को फँसाया।

"हाँ-हाँ और आपको फँसाया। अब मुझे हैदरअली को

फँसाना होगा। मैं कोशिश करूँगी। लेकिन अगर हैदरअली ने इंगिलश ब्यूटी (अंग्रेजी सौंदर्य) को पसंद नहीं किया तब ?"

"नो नो, मिस मेरी ! ब्यूटी इज़ ब्यूटी। उसका असर ज़ुरूर होगा। तभी तो हमारी जान बचेगी। वरना वह हमें मार डालेगा। हमने सुना है हैदरअली अंग्रेजों का पक्का दुश्मन है।" यह कहते हुए स्तीफ़ेन को थरथरी आगई।

"मैं कोशिश करूँगी कि मेरी ब्यूटी आपकी जान बचा सके मिस्टर स्तीफ़ेन !"

"डू ट्राई (कोशिश करना) मिस मेरी ! हैदरअली ने हमें मार डाला तो हमारा नाचघर बन्द हो जायेगा और हमारे आर्टिस्ट लावारिस हो जायेंगे। मिस मेरी डू ट्राई।"

"तुम लोग क्या गिटपिट-गिटपिट करते चल रहे हो ?" एक सैनिक ने उन्हें डाँट बतलाई।

"कुछ नहीं सर ! हम लोग सुलतान की तारीफ़ कर रहे हैं।" स्तीफ़ेन बोला। वह कुछ टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोल लेता था।

सैनिक ने उसे डाँटकर कहा, "चुपचाप चलो।"

स्तीफ़ेन फिर एक शब्द नहीं बोला और चुपचाप आगे बढ़ने लगा।

नज़मा मन में मुस्करा रही थी। स्तीफ़ेन की दशा देखकर उसे हँसी आरही थी। बड़ी कठिनाई से उसने अपनी हँसी रोक कर उसकी ओर देखा और धीरे से कहा, "चुपचाप चले चलो। वहाँ जाकर मैं सब देख लूँगी।"

तेरह

कलकत्ते से विदा होने के पश्चात् नज़मा की मोहम्मदरज़ाखाँ से चार महीने पश्चात तरकाटपल्ली के क़िले में भेंट हुई, जहाँ हैदरअली ने आयरकूट की सेना का विध्वंस करने के बाद अपनी छावनी डाली थी।

नज़मा ने हैदरअली को बतलाया, "आयरकूट के पास अभी इतनी ही फ़ौज और इससे भी बड़ा तोपख़ाना बाक़ी है। वह मद्रास पहुँचकर फ़ौरन ही दूसरे हमले की तय्यारी करेगा। आपका इस क़िले में छावनी डालना ठीक नहीं है। आयरकूट किसी भी वक्त हमला कर सकता है।"

हैदरअली नज़मा के संकेत को समझ गया। उसने तुरन्त अपनी सेना को क़िले से बाहर मोर्चा लगाने की आज्ञा दी।

"एक और राज़ की बात बतलाती हूँ आपको। कलकत्ते से हेस्टिंग्स ने एक और फ़ौज रवाना की है। अगर आप उसे रास्ते में घेरलें तो आयरकूट को बहुत बड़ी नाउम्मीदी का सामना करना होगा। इससे उसकी हिम्मत परस्त हो जायेगी।"

"तुम्हारी इस ख़बर के लिये हम तुम्हारे शुक्रगुज़ार हैं। हम इस फ़ौज को मद्रास पहुँचने से पहिले ही ख़तम करने का इन्तज़ाम करते हैं।" यह कहकर उन्होंने टीपू को बुलाया और

उसे उस रास्ते पर मोर्चा लगाने का हुक्म दिया जिस पर बंगाल से नई सेना आने वाली थी। टीपू तुरन्त अपनी सेना लेकर उस ओर बढ़ गया।

सुल्तान हैदरअली ने मोहम्मदरज़ाखाँ की प्रशंसा करते हुए कहा, "नवाब साहब ! आपने इस वक्त हम लोगों की जो मदद की है उसके लिये हम आपके शुक्रगुज़ार हैं और ख़ास तौर पर बेग़म नज़मा के।"

"आपको शुक्रगुज़ार होने की ज़ुरूरत नहीं है सुलतान ! हम लोग यहाँ अपने वतन की ख़िदमत करने के लिये आये हैं और आख़ीरी साँस तक हम अपनी क़ौम की ख़िदमत करेंगे। यहाँ आकर नवाब साहब के दिल को जो राहत मिली है, उसे हम लोग बयान नहीं कर सकते।

काफ़ी दिन पहिले की बात है जब हेस्टिंग्स ने बनारस के महाराजा चेतसिंह और अवध की बेग़मों का ख़ज़ाना लूटा था तो वह ख़बर पाकर मेरा दिल बेचैन हो उठा था। उस वक्त नवाब साहब ने मुझे तसल्ली देते हुए कहा था, "बेग़म ! यह तो सियासत है। इसमें गुड्डी के चढ़ने और कटने में देर नहीं लगती। अभी हिन्दुस्तान के दक्खन में नाना फड़नवीस और हैदरअली ज़िन्दा हैं। ख़ुदा साथ दे और हिन्दुस्तान के राजे और नवाब अक्ल से काम लें तो किसी भी वक्त अंग्रेज़ों का तख्ता पलट सकता है।'

उस दिन रात को एक लहमे के लिये भी नवाब साहब को नींद नहीं आई थी और मैं भी नहीं सो सकी थी। हम लोग हिन्दुस्तान की क़िस्मत के बारे में सोचते रहे कि क्या कभी हिन्दुस्तान के बाशिन्दों की क़िस्मत का सितारा चमकेगा ?"

नज़मा की बात सुनकर हैदरअली गद-गद होकर बोले,

"बेग़म ! नवाब साहब की ख्वाहिश ज़रूर पूरी होगी। अंग्रेज़ों का तख़्ता पलटेगा और ज़रूर पलटेगा। हमने और नाना साहब ने यह मुआयदा कर लिया है कि जब तक हम इन्हें दक्खन से उखाड़कर नहीं फेंक देगें तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।"

मोहम्मदरज़ाखाँ बोला, "सुलतान ! क्या निज़ाम हैदराबाद को किसी तरह राहेरास्त पर नहीं लाया जा सकता ?"

"हम लोगों ने कम कोशिश नहीं की है नवाब साहब ! निज़ाम ने हम लोगों के साथ सुलहनामे पर दस्तख़त भी किये हैं लेकिन वह अभी देख रहा है कि ऊँट किस करवट बैठता है। वक्त आने पर वह ख़ुद-ब-ख़ुद हमसे आकर मिलेगा।"

"मिलना तो इस वक्त का है सुलतान ! उस वक्त मिलने की क्या क़ीमत होगी ? निज़ाम को इस वक्त आपके साथ मिलकर अपने इर्द-गिर्द की अंग्रेज़-बस्तियों पर छापे मारने चाहियें और इन्हें हिन्दुस्तान से बाहर खदेड़ने में आपका साथ देना चाहिये।"

"मुआयदा तो यही हुआ था बेग़म ! लेकिन लगता है शायद हेस्टिंग्स ने उसके सामने टुकड़ा डाल दिया है। इस वक्त हम लोगों के पास निज़ाम की ओर देखने का वक्त नहीं है। हम लोग पहिले अपनी मज़बूती करलें, फिर निज़ाम की अक्ल दुरुस्त की जायेगी।" यह कहकर उन्हें कुछ ध्यान आया। वह मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर देखकर बोले, "भाई नवाब साहब ! आपने कल आयरकूट के तोपख़ाने पर कब्जा ख़ूब किया।"

"मेरी नज़र ही उसके तोपख़ाने पर थी। मैंने हमला बोलते ही सबसे पहिले तोपख़ाने का घेरा डाला क्यों कि मुझे मालूम था कि ये लोग मौक़ा पाकर तोपखाने में आग लगा देंगे।"

"आपका ख़याल ठीक था नवाब साहब ! जनरल मनरो के तोपख़ाने पर कब्ज़ा करने की हमने बहुत कोशिश की लेकिन

कामयाबी न मिल सकी। वह तोपख़ाना हाथ ग्राजाता तो हमारा तोपख़ाना काफ़ी मज़बूत हो जाता। उसमें क़रीब तीन सौ तोपें थीं।"

"हम लोगों को हमला करते वक्त इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि जंग का सामान हमारे किस तरह हाथ लगता है। इनकी तोपें काफ़ी लम्बी मार करने वाली हैं। इधर जो इन लोगों ने नई तोपें मँगाई हैं, वे बड़ी भारी ग्रौर ख़तरनाक मार करती हैं। सर ग्रायरकूट के तोपख़ाने में इसी तरह की तोपें हैं।"

नज़मा कुछ सोचकर बोली, "ग्रायरकूट के पास ग्रभी ऐसी पाँच सौ तोपें ग्रौर हैं। बंगाल से जो फ़ौज ग्रारही है उसके पास ऐसी तीन सौ ऐसी तोपें हैं। ये ग्राठ सौ तोपें ग्रगर हमारे हाथ ग्राजायें तो हमारा तोपख़ाना बहुत मज़बूत हो जायेगा।"

"कोशिश तो यही की जायेगी कि ग्रायरकूट को ग्रपना पूरा तोपख़ाना हमारे हवाले करना पड़े। हम इस काम को पूरा करने में कोई कोशिश उठा नहीं रखेंगे।"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ बोला, "एक बात समझ में ग्राई सुलतान!"

"क्या ?"

सुलतान ग्रौर नज़मा ने ध्यान से रज़ाख़ाँ की ग्रोर देखा।

"ग्राप इस क़िले में कुछ सिपाहियों को छोड़कर यहाँ से पीछे हट जाइये ग्रौर मैं दो दस्ते फ़ौज लेकर ऊपर से मद्रास की जानिब बढ़ता हूँ। जब ग्रायरकूट मद्रास से रवाना होगा तो मैं उसका पीछा करूँगा। ग्रौर उस वक्त तक उस पर हमला नहीं करूँगा जब तक वह इस क़िले पर तोपें दाग़नी शुरू नहीं कर देगा। उसके तोपें दाग़ना शुरू करते ही मैं पीछे से उस पर टूट पड़ूँगा। जब तक वह ग्रपना रुख़ मेरी जानिब करेगा तब

तक आप उसे धर दबाना।"

"राय तो आपकी बहुत माक़ूल है नवाब साहब।"

नज़मा मुस्कराकर बोली, "इससे भी माक़ूल एक बात और बतलाती हूँ सुलतान!"

"वह क्या?" हैदरअली ने बड़े ध्यान से नज़मा की ओर देखा।

"मैं मिस्टर स्तीफ़ेन और उसकी पार्टी को लेकर यहाँ से रवाना होती हूँ। आप किसी ऐसे संतरी को दरवाज़े पर तायनात करदें जो मुझसे रुपया लेकर हमें क़िले से बाहर निकाल दे। स्तीफ़ेन यह समझे कि मैंने रिश्वत देकर उस संतरी को फोड़ लिया है और उसने हमें चुपचाप क़िले से बाहर निकाल दिया है।

मैं यहाँ से मद्रास जाकर आयरकूट से मिलूँगी और उसे ख़बर दूँगी कि टीपू उसकी बंगाल से आने वाली फ़ौज पर हमला करने के लिये रवाना हो चुका है।"

"इसका क्या नतीजा होगा?"

"बात साफ़ है, आयरकूट इस क़िले का ख़याल छोड़कर टीपू की ओर लपकेगा। वह समझेगा कि वह टीपू पर पीछे से हमला करेगा, लेकिन आप इससे पेश्तर ही आगे बढ़कर उस पर हमला कर देना और नवाब साहब उसे पीछे से घेर लेंगे। इस तरह उसका तोपख़ाना बिला इस्तेमाल किये हुए ही आपके कब्ज़े में आजायेगा।"

नज़मा की बात सुनकर सुलतान हैदरअली आश्चर्य चकित रह गये। उन्हें ख़याल भी नहीं था कि कोई औरत मोर्चेबन्दी पर इतनी अहम राय क़ायम कर सकती है। वह बोले, "बेगम! मैं तुम्हारी राय का क़ायल हो गया। हम लोग इसी वक्त कूच

की तय्यारी करते हैं। तुम फ़ौरन मद्रास जाकर आयरकूट से मिलो। इस तरह हम लोग टीपू की भी मदद कर सकेंगे।"

चारों ओर अँधेरा छा गया था। क़िले में कहीं-कहीं मशालों का प्रकाश था।

नज़मा ने मोहम्मदरज़ाख़ाँ से कहा, "ख़ुदा हाफ़िज नवाब साहब ! खादिमा को इजाज़त दीजिये और दुआ कीजिये की मैं आयरकूट को गुमराह करने में कामयाब हो सकूँ।"

"बेग़म तुम अपने हर काम में कामयाब होगी। मैंने जब तुम्हारे कामों की तफ़सील सुलतान के सामने पेश की तो सुलतान हैरत में रह गये।"

"कल जंग में आपने बहुत दानिशमन्दी से काम लिया। आपने आयरकूट की तोपें छीनकर सुलतान के तोपख़ाने को बहुत मज़बूत बना दिया। अगर आयरकूट की बाक़ी तोपें भी आपके हाथ आगईं तो सुलतान के तोपख़ाने का मुक़ाबिला करना अंग्रेज़ों के लिये आसान नहीं रहेगा।

अब इजाज़त दीजिये। स्तीफ़ेन परेशान होगा। वह सोच रहा होगा कि मालूम नहीं मैं किस मुसीबत में फँस गई हूँ।"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ मुस्कराकर बोले, "वह सोच रहा होगा कि शायद तुम पर कोई बड़ा भारी जुल्म तो नहीं हो रहा है।"

नज़मा हँसकर बोली, "एक दिन तो स्तीफ़ेन और आयरकूट की मुझे लेकर काफ़ी खटपट होगई थी। यह बोला, 'देखिये सर आयरकूट ! आप हमारे आर्टिस्ट का डांस देख सकते हैं, उसे लव नहीं कर सकते।"

"लव करने का हक़ तो वह सिर्फ़ अपना ही समझता है।"

"इस बेचारे की बदक़िस्मती यही रही है कि इसे कभी किसी औरत ने प्यार नहीं किया। जिससे भी इसने प्यार करने

की कोशिश की वही इसे ठगकर चली गई। बेचारा बड़ा ही बद-नसीब है।"

मोहम्मदरज़ाखाँ मुस्कराकर बोला, "उनसे तो तुम ही बेहतर रहीं बेग़म। तुमने कम-से-कम इसका रुपया तो ऐंठने की क़ोशिश नहीं की।"

मोहम्मदरज़ाखाँ से विदा होकर नज़मा एक संतरी के साथ उस ख़ेमे में पहुँची जहाँ स्तीफ़ेन अपने आर्टिस्टों के साथ क़ैद था।

नज़मा को देखकर स्तीफ़ेन की जान-में-जान आई। वह बोला, "तुम कहाँ थीं मिस मेरी ?"

नज़मा ने होटों पर अँगुली रख कर उसे चुप रहने का संकेत करके कहा, "मैं सुलतान को धोखा देकर आई हूँ।" संतरी की ओर इशारा करके बोली, "यह बेचारा बहुत अच्छा आदमी है। यह हमें क़िले से बाहर निकाल देगा। मैंने इसे पाँच हज़ार रुपया देने का वायदा किया है।"

स्तीफ़ेन तुरन्त अन्य नर्तकियों के साथ भागने के लिये उद्यत हो गया। संतरी उन्हें क़िले की दीवार के नीचे-नीचे द्वार तक लेगया। द्वारपाल ने द्वार खोल दिये और ये सब फाटक से बाहर हो गये।

इन सबके बाहर निकलने पर संतरी ने कहा, "मेरा इनाम।"

नज़मा ने उसे रुपया देकर कहा, "हम आपके अहसानमन्द हैं। आपने हमारी जान बचादी। कभी मौक़ा मिला तो हम आप-को और इनाम देंगे।"

संतरी क़िले के अन्दर चला गया। स्तीफ़ेन और अन्य कला-कारों को विश्वास हो गया कि नज़मा ने संतरी को घूस देकर उनकी जान बचा ली।

स्तीफ़ेन बोला, "मिस मेरी ! तुमने हम सब की जान बचा-ली, नहीं तो सुलतान हमें मार डालता।"

"इसमें क्या शक है? हैदरग्रली ग्रंग्रेज़ों का जानी दुश्मन है। तुमने देखा नहीं कल उसने हमारी फ़ौज के कितने ग्रंग्रेज ग्रफ़सर ग्रौर सिपाही मार डाले? ग्रगर हम लोग इस वक्त न भाग निकलते तो कल सुबह हमें ख़त्म कर दिया जाता। ये लोग हमें फाँसी पर लटका देते।"

स्तीफ़ेन ग्रौर ग्रन्य नर्तकियों ने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से नज़मा की ग्रोर देखा ग्रौर सब उससे लिपट गये। स्तीफ़ेन बोला, "मिस मेरी ! तुमने हमारी जान बचा ली। हम तुम्हारे बहुत-बहुत ग्रहसानमन्द हैं।"

"ग्रहसानमन्द होने की ज़ुरूरत नहीं है मिस्टर स्तीफ़ेन ! यह तो मेरा फ़र्ज़ था।"

नज़मा स्तीफ़ेन ग्रौर ग्रन्य नर्तकियों के साथ जब मद्रास पहुँची तो ग्रायरकूट हैदरग्रली पर दूसरा हमला करने की तय्यारी कर रहा था। नज़मा को ग्राते देखकर ग्रायरकूट के क़दम ग्राप-से-ग्राप नजमा की ग्रोर बढ़ गये। वह बोला, "तुम ग्रागईं मिस मेरी ! हमको तुम्हारी बहुत फ़िक्र थी। हम तुम को हैदरग्रली के पंजे से छुड़ाने के लिये हमला करने की तय्यारी कर रहे थे।"

"सर ! बड़ी मुश्किल से जान बची है ! मिस मेरी ने सुलतान को ऐसा चकमा दिया कि वह भी क्या याद रखेगा। उसके संतरी को घूस देकर यह हम लोगों को साफ़ बचा लाईं। ग्रगर यह हमें न बचातीं तो सुलतान के सिपाही हमें मार डालते।" स्तीफ़ेन बोला।

"मार डालते ! तो क्या उन्होंने हमारे सब सिपाहियों को

मार डाला ?"

"एटवंस सर ! तोप के मुँह पर रखकर उड़ा दिया।" स्तीफ़ेन ने कहा, "सब मार डाले। एक भी नहीं बचा।"

"वैरी बैड। हम लोग जंग के सिपाही को नहीं मारते। हिन्दुस्तान के नवाब हमारा लड़ाई का क़ानून नहीं जानते।"

"यस सर ! ये जाहिल लोग वार का कानून क्या जानें ?"

"ग्राप इस वक्त कहाँ हमला करने वाले हैं सर ?" नज़मा ने पूछा।

"हम तरकाटपल्ली के क़िले पर हमला बोल रहे हैं। हैदरग्रली ने वहीं ग्रपनी छावनी डाली है।"

" नो सर ! ग्रापकी कोई फ़ौज बंगाल में ग्रारही है।"

"येस ! उसकी क्या बात है ? तुमने कुछ सुना ?"

"सर ! टीपू ने उस पर हमला बोल दिया है। कहीं ऐसा न हो कि वह मद्रास तक भी न ग्राने पाये। ग्राप फ़ौरन उसकी हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम करें।"

"वैरी गुड न्यूज (बहुत ग्रच्छी ख़बर है)। हम तरकाट-पल्ली पर हमला न करके ग्रारनी की ग्रोर रवाना होगा। हम टीपू को ग्रपनी दोनों फ़ौजों के बीच में पीस डालेंगे।"

"यस सर ! ग्रापको यही करना चाहिये। हमको टीपू ने बहुत तकलीफ़ दी है। मैं ग्रपनी ग्राँखों से उसे ग्रापके क़दमों पर गिड़गिड़ाते हुए देखना चाहती हूँ।"

"तुम चलोगी हमारे साथ ?"

"ज़ुरूर चलूँगी सर ! मैं उससे बदला लेना चाहती हूँ।"

सर ग्रायरकूट ने ग्रारनी की दिशा में प्रस्थान किया। जब वह ग्रारनी से पाँच मील रह गया तो उसने वहीं छावनी डाल दी।

संध्या-समय आयरकूट अपने डेरे के सामने घूम रहा था। नज़मा उसके पास थी।

"हमारी फ़ौज को अब तक यहाँ आजाना चाहिये था।"

"सर ! कहीं ऐसा न हो कि टीपू ने आगे बढ़कर उसे घेर लिया हो।"

"तब तो हमारा यहाँ ठहरना ठीक नहीं है।"

"हमें मार्च करना चाहिये सर !"

आयरकूट ने तुरन्त अपने ख़ेमे उखड़वाकर सेना को आगे बढ़ने की आज्ञा दी। सेना ने आगे बढ़ना आरम्भ कर दिया।

चन्द्रमा आकाश में निकल आया था। चाँदनी रात में मार्ग स्पष्ट दिखाइ दे रहा था। पथरीले रास्ते पर फ़ौज आगे बढ़ रही थी।

तोपों की गड़गड़ाहट सुनाई दी।

"टीपू आगया।" आयरकूट ने घबराकर कहा।

नज़मा ने देखा आयरकूट के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उसने चकित दृष्टि से नज़मा की ओर देखा।

"सर ! मालूम देता है टीपू ने हमारी बंगाल से आने वाली फ़ौज पर हमला बोल दिया।"

तोप के गोलों का और भी भीषण नाद हुआ।

आयरकूट ने अपनी सेना को तीव्र गति से आगे बढ़ने की आज्ञा दी। सैनिकों ने अपनी चाल तेज़ कर दी। घुड़सवार आगे बढ़ गये।

रात्रि का अंधकार समाप्त हुआ चाहता था। आकाश अरुणिमा हो उठा था। लगता था धरती का आँचल रक्त में डूब गया।

नज़मा और अधिक गोलों की गड़गड़ाहट सुनकर बोली,

"जंग छिड़ गया मालूम देता है सर ! हमें और तेज़ी से बढ़ना चाहिये।"

"मालूम तो यही देता है।" आयरकूट बोला।

"तोपें गरज रही हैं।" नज़मा ने कहा।

"हमारे तोपख़ाने में तीन सौ तोपें हैं। इधर हमारे पास पाँच सौ तोपें हैं। हमारी आठ सौ तोपें उनको भून कर रख देंगी।"

"ज़रूर रख देंगी सर ! हम एक भी हिन्दुस्तानी को जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

उसी समय आयरकूट की सेना पर हैदरअली ने भयंकर आक्रमण किया और मोहम्मरज़ाखाँ ने पीछे से धर दबाया। देखते-ही-देखते मोहम्मदरज़ाखाँ ने आयरकूट के तोपख़ाने पर कब्ज़ा कर लिया।

युद्ध में भयंकर मार-काट आरम्भ हो गई। लगभग सात घण्टे की मार-काट के पश्चात अंग्रेज़ों के हौसले पस्त हो गये। आयर-क्रूट ने अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु हैदरअली की मार के सामने उनका ठहरना असम्भव हो गया। अंग्रेज़ी फ़ौज मैदान छोड़कर भाग निकली।

जब आयरक्रूट ने देखा कि अब जंग करना कठिन है तो उसने भी मैदान छोड़ दिया। उसके भागते ही रही-सही अंग्रेज़ी फ़ौज भी भाग खड़ी हुई और मैदान हैदरअली के हाथ आगया।

युद्ध में विजय तो हैदरअली ने प्राप्त करली परन्तु हालत उसकी ठीक नहीं थी। वह बहुत तेज़ ज्वर में ही आज लड़ाई के मैदान में आये थे।

मोहम्मदरज़ाखाँ उनके पास पहुँचा तो उनकी हालत देख-कर वह चकित रह गया। उनके नेत्र लाल वर्ण के हो रहे थे।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने अपने कंधे का सहारा देकर उन्हें घोड़े से उतारा और बड़ी सावधानी से खेमे तक लेगया।

"आप का बदन जल रहा है। बहुत तेज़ बुखार है।"

"हाँ नवाब साहब ! सिर्फ़ बुखार ही नहीं दर्द भी बहुत सख्त है। लग रहा है जैसे बदन फट रहा है। बड़ी अजीब सी हालत हो गई है। खेमे से सब लोगों को बाहर कर दीजिये। मुझे आपसे कुछ ज़ुरूरी बातें करनी हैं।"

सब लोग खेमे से बाहर चले गये।

"नवाब साहब ! मेरी तबीयत अज़हद ख़राब है। मुझे लग रहा है कि मैं बचूँगा नहीं।"

"यह आप क्या कहने लगे सुलतान ?"

"ख़ामोशी से सुनो, जो मैं कह रहाँ हूँ। ख़ुदापाक ने शायद तुम्हें इसी नेक काम के लिये यहाँ भेजा है। मैं टीपू को तुम्हारी हिफ़ाज़त में छोड़ रहा हूँ। टीपू बहादुर ज़ुरूर है, लेकिन नातजुर-बेकार है।"

मोहम्मदरज़ाखाँ की आँखों में आँसू आगये।

"यह क्या करते हो नवाब साहब ? जंग के मैदान में आँसू गिराना गुनाह है। आप टीपू की मदद के लिये फ़ौरन कूच करें। ऐसा न हो कि आयरकूट आरनी की तरफ़ अपना रुख़ करले।"

उसी समय नज़मा भी वहाँ आगई थी। वह सुलतान की हालत देखकर आश्चर्यचकित रह गई। "यह क्या हुआ ?" उसकी ज़ुबान से निकला।

मोहम्मदरज़ाखाँ की दृष्टि नज़मा पर गई तो वह बोला, "तुम आगईं बेग़म ! तुम बहुत अच्छे वक्त पर आईं। सुलतान की तबीयत ठीक नहीं है। आप सुलतान की खिदमत में रहना। मैं

टीपू की हिफ़ाज़त के लिये जारहा हूँ।"

मोहम्मदरज़ाखाँ ने उसी समय सेना के साथ आरनी की दिशा में प्रस्थान किया।

नज़मा ने सैनिक अफ़सरों से मिलकर हैदरअली को तुरन्त अरकाट लेजाने की व्यवस्था की। वहाँ पहुँचे तो देखा सुलतान के मुख्यमंत्री पंडित कृष्णराव भी वहाँ आये हुए थे। उन्होंने यह समाचार पाते ही राजवैद्य को बुलवाया और चिकित्सा का प्रबन्ध किया।

"अब कैसी तबीयत है आपकी ?" नज़मा ने पूछा।

"कमर में बहुत सख्त दर्द है बेग़म ! प्राण निकले जा-रहे हैं।"

राजवैद्य ने ज्वर दूर करने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु ज्वर न उतरा। दो दिन तक चिकित्सा चलती रही लेकिन आराम न हुआ। तक़लीफ़ बढ़ती ही गई। दूसरे दिन रात्रि में वह बेहोश हो गये। प्रातः काल आकर नाड़ी एकदम मन्दी पड़ गई और देखते-ही-देखते उनका साँस रुक गया।

पंडित कृष्णराव ने नज़मा से कहा, "जब तक फ़तहअली टीपू मैदानेजंग से न लौटें, तब तक सुलतान के गुजरने की ख़बर महल से बाहर नहीं जानी चाहिये। इसका दुश्मन और हमारी फ़ौज पर बुरा असर होगा।"

"आपका ख़याल ठीक है। महल की सब आमदरफ्त बन्द करा दीजिये। किसी को कानोंकान भी इसकी ख़बर न हो।"

"यह मैं कर चुका हूँ।" मुख्य मंत्री ने कहा

दूसरे दिन फ़तहअली टीपू नवाब मोहम्मदरज़ाखाँ के साथ अरकाट से लौटे और महल में पहुँचे तो देखा वहाँ गम्भीर मौन था।

मुख्य मंत्री कृष्णराव ने कहा, "शहज़ादे ! हिन्दुस्तान की क़िस्मत बदल गई। हिन्दुस्तान की जिस फूटी हुई क़िस्मत को सुलतान ने अपनी सारी ज़िन्दगी लगाकर सँवारने की कोशिश की थी उसे क़ुदरत के एक ही झटके में चकनाचूर कर दिया। हिन्दुस्तान का भाग्य-नक्षत्र अस्त होगया।"

मोहम्मदरज़ाखाँ इस दृश्य को देखकर प्रस्तर-मूर्ति के समान खड़े रह गये। वह अधिक देर तक खड़े भी न रह सके, माथे पर हाथ रख कर ज़मीन पर बैठ गये।

नज़मा की आँखों से आँसू बह चले। वह बोली, "लगता है हम हिन्दुस्तानियों के दिन अभी बदले नहीं हैं। ख़ुदा पाक को हमारी बेहतरी मंज़ूर नहीं है।"

टीपू ने कमरे की छत की ओर देखकर कहा, "क़ुदरत को यही मंज़ूर था।"

सुलतान हैदरअली का शव अरकाट से श्रीरंगपट्टन लाया गया और विशेष समारोह के साथ उसे लालबाग़ में दफ़नाया गया।

चौदह

हैदरअली की मृत्यु का समाचार नाना फड़नवीस के पास पहुँचा तो उनके दिल पर भीषण आघात हुआ। वह चुपचाप मसनद पर बैठ गये। उनका सिर चकरा गया। उन्हें लगा, जैसे बना-बनाया खेल बिगड़ गया। उनका स्वप्न भंग हो गया। उन्होंने अपने मन में कहा, 'अभी प्रायश्चित करना शेष है। भारत के दुर्दिनों का अन्त नहीं हुआ है।'

नाना साहब की आँखों के सामने भारत की दुर्दशा का चित्र उपस्थित होगया। मराठा-मण्डल छिन्न-भिन्न हो चुका था। गायकवाड़, सिंधिया, भोंसले विश्वासघाती सिद्ध हो चुके थे। निज़ाम हैदराबाद ने अंग्रेजों से संधि करके उनकी सेना को अपने यहाँ रख लिया था। राजस्थान का कोई राजा अंग्रेज़ों के विरुद्ध सिर उठाने को उद्यत नहीं था। शाहआलम नाममात्र का शहंशाह रह गया था। अवध के नवाबों में अंग्रेज़ों के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति नहीं रह गई थी। बंगाल, बिहार और उड़ीसा अंग्रेज़ों के हाथों में जा ही चुके थे। ऐसी स्थिति में यदि टीपू ने अंग्रेज़ों से संधि करली तो पेशवा मुसीबत में फँस जायेगा। मराठों में केवल होलकर उनके साथ है। पेशवा और होलकर मिलकर अंग्रेज़ों से युद्ध में विजय प्राप्त नहीं कर सकते थे।

नाना फड़नवीस को रात भर नींद नहीं आई। वह सोचते रहे कि वर्तमान परिस्थिति में उन्हें क्या करना चाहिये। अनुभवहीन टीपू पर विश्वास करके वह अंग्रेज़ों से शत्रुता नहीं बनाये रख सकते। उन्हें विश्वास नहीं था कि टीपू हैदरअली के अधूरे काम को पूरा करने में समर्थ होगा।

अंग्रेज़ नाना फड़नवीस से संधि करना चाहते थे। वे कई बार उनके पास संधि-प्रस्ताव भेज चुके थे। वर्तमान स्थिति में पेशवा-राज्य को संकट से बचाने के लिये नाना फड़नवीस ने अंग्रेज़ों से सन्धि करना ही उचित समझा।

नाना फड़नवीस ने सालबाई के स्थान पर अंग्रेज़ों से सन्धि कर ली। सिंधिया को ग्वालियर लौटा दिया गया और पेशवा-राज्य के जो इलाके अंग्रेज़ों ने दबा लिये थे वे उन्हें मिल गये। मराठों के विचार से संधि सम्मानपूर्ण थी। राघोबा को पेंशन दे दी गई।

इस संधि का समाचार श्रीरंगापट्टन पहुँचा तो टीपू सुलतान तिलमिला उठा। उसकी आँखों के डोरे लाल हो गये। वह बोला, "कृष्णरावजी! मुझे नाना फड़नवीस से यह उम्मीद नहीं थी। नाना फड़नवीस ने अंग्रेज़ों से सुलह करके वालिद साहब से किये गये अपने मुआयदे को तोड़ दिया।"

कृष्णरावजी दर्द भरे स्वर में बोले, "नाना साहब ने हमारे साथ विश्वासघात किया है। हमें उनसे स्वप्न में भी यह आशा नही थी। हम उन्हें एक सच्चा देशभक्त ही नहीं, अनुभवी राजनीतिज्ञ भी समझते थे। यह संधि करके उन्होंने अपने संकुचित दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

यह संधि उन्होंने सुलतान की मृत्यु के कारण की है। शायद उन्होंने समझ लिया है कि अब मैसूर-राज्य अंग्रेज़ों के सामने

घुटने टेक देगा।"

घुटने टेक देगा ! सुलतान हैदरअली का लड़का टीपू सुलतान इन कुत्तों के सामने घुटने टेक देगा ! टीपू अपने वालिद के अधूरे काम को पूरा करेगा। वह इस काम को पूरा करने के लिये अपनी जान की बाज़ी लगा देगा।"

"क्यों नहीं सुलतान ?" मोहम्मदरज़ाखाँ बोला। "वह अंग्रेज़ों को मद्रास से ही नहीं दक्खन से खदेड़ कर दम लेगा। तब नाना साहब को महसूस करना होगा कि उन्होंने उसे ग़लत समझा और उन्हें अपना मुआयदा तोड़ने पर पशेमान होना होगा।"

"ज़ुरूर पशेमान होना होगा।" सरदार बोले।

टीपू सुलतान की सेना तय्यार खड़ी थी। टीपू घोड़े की पीठ पर सवार हुआ और सेना ने कूच कर दिया।

टीपू सुलतान ने मद्रास से नीचे के समुद्री किनारे पर जितने भी अंग्रेज़ों के क़िले थे उनपर धावे बोलने आरम्भ कर दिये और उनमें से कई पर अधिकार कर लिया। टीपू सुलतान ने अंग्रेज़ों की मंडियों को लूटना, जहाज़ों को तहस-नहस करना आरम्भ किया तो अंग्रेज़ थर्रा उठे। उनकी दक्षिण-भारत की तिजारत नष्ट हो गई। उन्हें समुद्री किनारों पर आना मुश्किल नज़र आने लगा। टीपू की इस मार से परेशान होकर अंग्रेज़ों ने उसके पास संधि-प्रस्ताव भेजा।

टीपू ने सोचा, यह अच्छा अवसर है जब अंग्रेज़ स्वयँ संधि का प्रस्ताव भेज रहे हैं। इस समय संधि सम्मानपूर्ण होगी। टीपू युद्ध करता-करता स्वयं भी काफ़ी परेशान हो चुका था और नाना फड़नवीस की संधि ने उसे थोड़ा सशंकित कर दिया था। उसने सोचा संधि करलेना उचित होगा और मंगलौर नामक स्थान

पर उसने अंग्रेज़ों से संधि कर ली।

इस संधि के अनुसार टीपू सुलतान ने अंग्रेज़ों का जीता हुआ इलाक़ा उन्हें लौटा दिया। संधि यह अंग्रेज़ों ने दबकर की थी परन्तु संधि से लाभ अंग्रेज़ों को ही अधिक पहुँचा। टीपू सुलतान को केवल यही लाभ हुआ कि अंग्रेज़ों ने उसे मैसूर-राज्य का सुलतान मान लिया। अंग्रेज़ों ने यह भी वचन दिया कि वे भविष्य में टीपू सुलतान से कोई झगड़ा नहीं करेंगे।

संध्या की अरुणिम लालिमा रात्रि के अंधकार में विलीन हो चुकी थी। महल में कंदीलों का प्रकाश जगमगा उठा था। महल के द्वार पर मशालें जल उठी थीं। कमरे में कंदीलों का प्रकाश खिल उठा था।

मोहम्मदरज़ाखाँ किसी चिंता में निमग्न कमरे में घूम रहा था। वह अभी-अभी टीपू सुलतान के दरबार से लौटा था।

नज़मा ने उसके पास आकर पूछा, "क्या सुलतान ने सुलह-नामे पर दस्तख़त कर दिये ?"

"कर दिये बेग़म !"

"क्या तै पाया ?"

"सुलतान ने अंग्रेज़ों का जीता हुआ इलाक़ा उन्हें लौटा दिया और उन्होंने सुलतान को मैसूर का सुलतान क़ुबूल कर लिया।"

"यह तो कुछ भी नहीं हुआ।"

"क्यों ?"

"सुलतान तो यह मैसूर के थे ही। अंग्रेज़ों को फ़ायदा ज़ुरूर पहुँचा कि उन्हें बिला जंग किये ही उनका इलाक़ा वापस मिल गया। जिस इलाक़े को हासिल करने के लिये सुलतान ने इतनी जद्दोजहद की थी वह अंग्रेज़ों ने चालाकी से सुलह करके हासिल कर लिया। इस सुलह से सुलतान को क्या मिला ?"

नज़मा की बात सुनकर मोहम्मदरज़ाखाँ ने निराश दृष्टि से नज़मा की ओर देखा।

"आज़माई हुई क़ौम को फिर से आजमाना ज़बरदस्त खता है। आपने अंग्रेज़ों का यकीन कैसे कर लिया, यह बात मेरी समझ में नहीं आई। आपने ज़बरदस्त ग़लती की।"

"मैं इस सल्तनत का नवाब नहीं हूँ बेग़म! एक हमदर्द ही तो हूँ मैं। मैंने रियासत के काम में दख़ल देना मुनासिब नहीं समझा। अगर सुलतान मेरी बात न मानते तो मन मैला हो जाता?"

"क्या इसके मायने मैं यह समझूँ कि आपने इस अहदनामे पर अपनी राय का इज़हार नहीं किया।"

"क़तन नहीं बेग़म!"

नज़मा का चेहरा खिल उठा। उसने मधुर दृष्टि से मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर देखकर कहा, "आप यहाँ जो कुछ देखने के लिये आये थे वह आपने देख लिया। आपकी तमन्ना पूरी हो गई।"

"वाक़ई मेरी तमन्ना पूरी हो गई बेग़म! मैं जो कुछ देखना चाहता था वह मैंने अपनी आँखों से देख लिया।"

"तो चलिये अब अपने वतन को चलें। बद्री पंडित और इस्माइल सोच रहे होंगे कि हम लोग कितने लापरवाह हैं जो अपने घर की हमें चिंता ही नहीं रही।

हमारे यहाँ रहने का अब कोई मक़सद भी नहीं रहा। सुलतान अंग्रेज़ों से सुलह करके चैन से रहें। हिन्दुस्तान को तो अब ग़ुलाम होना ही है।"

नज़मा की यह बात सुनकर मोहम्मदरज़ाखाँ ऐसे चौंक उठा जैसे उसे किसी बिच्छू ने डंक मार दिया हो। उसका चेहरा पीला

पड़ गया और सिर चकराने लगा। वह खड़ा न रह सका। उसने निराश दृष्टि से नज़मा की ओर देखकर कहा, 'बेगम ! तुमने यह क्या कह दिया ?"

नज़मा छत की ओर देखती हुई बोली,"क्या अब भी आपको इसमें कोई शक है ? जिन दो बड़ी ताक़तों पर नज़र रखकर आपने इस ओर क़दम बढ़ाये थे, उन दोनों ने अंग्रेज़ों से सुलह करली। अब जानते हैं नतीजा क्या होगा ?"

"क्या होगा बेगम ?"

"अंग्रेज़ इन दोनों को आपस में लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करलेंगे। इन सुलहनामों पर दस्तखत करके इन दोनों ने ही निहायत बेवक़ूफ़ी का सुबूत पेश किया है। मैंने जो कुछ कहा, वह बेबुनियाद नहीं है। मराठों और सुलतान हैदरअली की मार खाते-खाते अंग्रेज़ों की कमर टूटना ही चाहती थी कि क़ुदरत ने उसे बचाकर हिन्दुस्तानियों की कमर तोड़ दी। सुलतान की मौत हिन्दुस्तान की सियासत की मौत है। नाना फड़नवीस जैसे सियासतदाँ तंगख़याली के चंगुल में फँस गये और टीपू सुलतान ने इस सुलहनामे पर दस्तख़त करके अंग्रेज़ों को साँस लेने और इनके खिलाफ़ साज़िश करने का मौक़ा दे दिया।"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ ने संधि पर इस दृष्टि से विचार नहीं किया था जो दृष्टिकोण नज़मा ने प्रस्तुत किया। उसने अब गम्भीरतापूर्वक विचार किया तो उसे यह संधि सुलतान की भयंकर भूल प्रतीत हुई।

नज़मा बोली, "जिन सुलतान हैदरअली और टीपू के हाथों अंग्रेज़ों की इतनी लुटाई और पिटाई हुई है क्या उन्हें वे कभी अपना दोस्त समझ सकते हैं ? जो अंग्रेज आप जैसे आदमी पर,

जिसने अंग्रेज़ों को तहेदिल से अपना दोस्त समझा और दोस्ती निभाई, ग़बन का मुकदमा चला सकते थे और फाँसी के तख्ते पर लटकाने को आमाद हो सकते थे, वे ज़रा होश आने पर क्या टीपू सुलतान को बख्श देंगे ?''

''हर्गिज़ नहीं बख्श सकते नज़मा ! एक से लाख तक नहीं बख्श सकते । तुमने यह बात बहुत दानिशमन्दी की कही ।''

जब मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा की बातें चल रही थीं, तभी टीपू सुलतान वहाँ आगये । वह अक्सर इनके यहाँ आया करते थे और नज़मा से बैठकर काफ़ी देर तक बातें किया करते थे ।

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ ने उन्हें बड़े अदब के साथ मसनद पर बिठाया । उनके एक ओर नज़मा तथा दूसरी ओर मोहम्मदरज़ाखाँ बैठ गये ।

सुलतान बोले, ''चचीजान ! आपने सुना, हमने अंग्रेजों से सुलह करली ।''

''आपके चचाजान ने मुझे अभी-अभी बतलाया ।''

''हमने सोचा, बाइज्ज़त सुलह होरही है । नाना साहब उनसे पहिले ही सुलह कर चुके हैं और निज़ाम हैदराबाद ने तो अपने यहाँ उनका रेज़ीडेण्ट भी रख लिया है । ऐसी हालत में हमने सोचा कि यह दुश्मनी बनाये रखना ठीक नहीं है । मराठे और निज़ाम हमारी दुश्मनी का फ़ायदा उठा सकते हैं ।''

नज़मा टीपू सुलतान की बात सुनकर मुस्करादी ।

टीपू सुलतान ने नज़मा के चेहरे पर बड़े ध्यान से देखा । फिर पूछा, ''आपका क्या ख़याल है हमारी इस सुलह के बारे में चचीजान ?''

'अब राय ज़ाहिर करने से कोई फ़ायदा तो होगा नहीं

सुलतान ! वैसे मेरी राय इसके बारे में बहुत मुस्तकिल है ।"

"वह क्या ?"

"मैं अंग्रेज़ों को मक्कार, दग़ाबाज़, ख़ुदगर्ज़, बेईमान, लालची, बेहया, बेशर्म, लुटेरा, तोताचश्म और दोस्ती के नाक़ाबिल समझती हूँ । इसके अलावा मैं और कुछ कहना बेसूद समझती हूँ । मेरी इस नाक़िस राय की तराज़ू पर आप अपने सुलहनामे को तौल कर देखलें और अपनी राय क़ायम करलें ।"

"क्या आपका मतलब है कि हमने अंग्रेज़ों का दोस्ती का हाथ पकड़कर ग़लती की ?"

"मेरी नाक़िस राय यही है । अंग्रेज़ों की हिन्दुस्तानी तवारीख़ का हर पन्ना मेरी बात की सचाई की शहादत पेश करता है । दोस्त यह उनके न हुए जिन्होंने इनकी ख़ातिर अपने माथे पर अपने वतन की ग़द्दारी की कालिख पोत कर अपने नाम ग़द्दारों की फ़हरिस्त में दर्ज करा लिये । हमारे नवाब साहब इसकी ज़िन्दा मिसाल आपके सामने बैठे हैं । जब अंग्रेज़ इनके दोस्त न हुए तो ये उस टीपू सुलतान के दोस्त कैसे हो सकेंगे जिसने उनके उरूज पर चढ़ते हुए आफ़ताब को ज़मीन पर गिरा दिया और उनकी लहराती हुई हुकूमत की बेल को कुचल कर रख दिया ?"

टीपू सुलतान नज़मा की बात का कुछ देर तक कोई जवाब न दे सके । वह चुपचाप वहाँ से उठकर चले गये ।

इस संधि के पश्चात् लगभग एक वर्ष मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा श्रीरंगापट्टन में रहे । टीपू सुलतान के आग्रह को वे टाल न सके । इस बीच उन्होंने कलकत्ता आने-जानेवालों के द्वारा इस्माइल और बद्री पंडित से अपना सम्पर्क बनाया और बीच में

एक बार इस्माइल ने श्रीरंगापट्टन आकर इनसे मुलाक़ात भी की।

जब मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा ने श्रीरंगापट्टम से प्रस्थान किया तो टीपू सुलतान ने अपनी चचीजान को पाँच लाख रुपया भेंट स्वरूप प्रदान करते हुए कहा, "चचीजान! अपने इस भतीजे को कलकत्ता जाकर भुला न दीजियेगा।"

नज़मा की आँखों में आँसू आगये। उसने आगे बढ़कर टीपू सुलतान को अपनी छाती से लगाकर कहा, "टीपू! क्या अपने कलेजे के टुकड़े को भी कोई औरत भुला सकती है? आपका इशारा पाते ही हम दोनों आपकी ख़िदमत में हाज़िर पायेंगे।"

नज़मा ने सुलतान की बेगम और अम्मीजान से भी भेंट की। अम्मीजान ने नज़मा के सिर पर दुलार का हाथ रख कर कहा, "तुम्हारा सुहाग बना रहे नज़मा! तुमने इतने दिन हमारे बीच में रहकर हमारी ख़ुशी और ग़म को अपनी ख़ुशी और ग़म माना है। नवाब साहब के हम पर अहसानात हैं।"

"हमारा कोई अहसान नहीं है अम्मीजान! आपका जो प्यार इस बीच में हमें मिला है, वह बेशक़ीमती है और आपकी जो याद हम अपने दिलों में लेकर जारहे हैं वह ताज़िन्दगी क़ायम रहेगी।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ श्रीरंगापट्टन से पहिले मद्रास गये। उन्होंने सोचा, कलकत्ता जाने से पूर्व मद्रास की भी सैर करते चलें। नज़मा बोली, "फिर यहाँ आने का कब और किस-लिये मौक़ा मिलेगा? चलिये देखते चलें मद्रास का भी रंग-ढंग। सुना है मद्रास में भी कलकत्ते की तरह काफ़ी अंग्रेज़ आकर बस गये हैं।"

मोहम्मदरज़ाखाँ बोला, "तब तो यहाँ भी कुछ नाचघर ज़ुरूर

खुल गये होंगे। चलो देखलें मद्रास की भी रौनक़।"

नज़मा मुस्कराकर बोली, "खुल तो सकते हैं।"

मद्रास में ये लोग दो महीने ठहरे। एक दिन घूमते-घूमते समुद्र-तट पर काफ़ी दूर जा निकले।

नज़मा के कानों में वायलन का स्वर पड़ा तो वह बोली, "कोई वायलन बजा रहा है नवाब साहब! बहुत ख़ूब बजा रहा है। वड़ी प्यारी धुन छेड़ी हुई है।"

"सुन तो मैं भी रहा हूँ बेग़म! बड़ा ही पुरदर्द नग़मा है।"

"बजानेवाले के दिल में दर्द भरा है। लगता है कोई ज़िन्दगी में सताया हुग्रा है।"

"लगता तो यही है।"

"चलिये, ज़रा देखें तो सही, इस बियाबान जंगल को किसने ग्रपने इस पुरदर्द नग़मे से भर दिया है।"

नज़मा ग्रौर मोहम्मदरज़ाखाँ ग्रागे बढ़ गये। उन्होंने देखा कोई लगभग तीस पैंतीस वर्ष का ग्रादमी समुद्र के किनारे चट्टान पर बैठा वायलन बजा रहा था। वह मस्त था ग्रपनी धुन में। उसे कुछ पता नहीं था कि वह कहाँ था। वह ग्रपने नग़मे में खोगया था।

नज़मा ग्रौर मोहम्मदरज़ाखाँ चुपचाप उसके पास जाकर खड़े होगये ग्रौर उसका वायलन सुनने लगे। उस ग्रादमी का ध्यान इनकी ग्रोर तब गया जब उसने वायलन बजाना बन्द कर दिया।

ग्रादमी का रंग गोरा था ग्रौर बाल सुनहले। ग्राँखें नीले रंग की थीं। नज़मा ने समझा कोई ग्रंग्रेज़ है। इस लिये वह ग्रंग्रेज़ी में बोली, "वायलन ख़ूब बजाते हो।"

"बजा लेता हूँ, कुछ गा भी लेता हूँ, मन बहला लेता हूँ,

बस ।" उसने लापरवाही से कहा ।

नज़मा को उसका यह उत्तर जाने क्यों बड़ा आकर्षक लगा । वह बोली, "आर्टिस्ट मालूम देते हो । क्या यहाँ किसी नाचघर में काम करते हो ?"

वह नज़मा की बात सुनकर हँस दिया । फिर बोला, "यस-यस, आर्टिस्ट ।"

"मेरी बात पर तुम हँसे क्यों ?"

वह आदमी नज़मा की बात का कोई उत्तर न देकर नज़मा की ओर बड़े ध्यान से देखता रहा ।

"इतने ग़ौर से तुम क्या देख रहे हो ?"

"आर्ट ।" उस आदमी ने कहा । "आर्ट दो क़िस्म का होता है । एक वह जो नेचर (कुदरत) से मिलता है और दूसरा वह जो प्रेक्टिस (रियाज़) से हासिल किया जाता है । मेरा आर्ट दूसरे क़िस्म का है । इसकी क़द्र करनेवाले बहुत कम लोग हैं । आर्ट की खुशबू दौलत की बदबू के नीचे दब गई है । मौजूदा ज़माने में कौन पूछता है इसे ? यह दौलत का ज़माना है । हर इन्सान दौलत का भूखा है । मैंने भी इसके लिये सारी दुनियाँ का चक्कर लगा डाला, लेकिन हासिल न कर सका ।" किसी धुन में वह कहता गया ।

नज़मा उस आदमी को कुछ समझ न सकी । उसने पूछा, "तुम दौलत हासिल क्यों नहीं कर सके ?"

वह फिर हँस दिया । कुछ देर बाद बोला, "दौलत हासिल करने के लिये इन्सान को झूठ बोलना चाहिये, दग़ाबाज़ी करनी चाहिये, लूटना-खसोटना आना चाहिये, धोखेबाज़ी में माहिर होना चाहिये, यह सब मुझे नहीं आता । जो आर्ट मुझे आता है उसे कोई नहीं पूछता, पूछता है तो सिर्फ़ उतने पैसे देता है जिनसे

गुजारा भी बड़ी मुश्किल से होता है।"

नजमा ने सोचा यह अंग्रेज़ होकर कैसी बात करता है। कहता है यह सब इसे नहीं आता। आख़िर अपनी क़ौम के गुणों से यह अनभिज्ञ कैसे रह गया। उसने सीधा प्रश्न किया, "क्या तुम अंग्रेज़ नहीं हो ?"

"नो।"

"फ्रेंच हो।"

"नो।"

"डच हो ?"

"नो।"

"तब कौन हो तुम ?"

"रूसी।"

"रूसी क्या !'"

"मैं रूस देश का रहने वाला हूँ। मेरा देश रूस है।"

"क्या तुम लोगों ने भी हिन्दुस्तान में अपनी कोई कोठीं क़ायम की है ? क्या तुम्हारा भी यहाँ सल्तनत क़ायम करने का इरादा है ?"

"जी नहीं। मैंने आपको बतलाया, मैं आर्टिस्ट हूँ। मैं कोई तिजारत करने नहीं आया हूँ। वैसे तिजारत भी करते हैं हमारे यहाँ के लोग।"

"हूँ, तो तुम रूस के रहने वाले हो। रूस एक देश है। वह देश कहाँ है ?"

"हमारा देश है तो यूरोप में ही लेकिन वह एशिया के देशों से मिला हुआ है। यह हिन्दुस्तान के उत्तर और चीन के पश्चिम में है। बहुत बड़ा देश है। हमारे देश के लोग हिन्दुस्तान में बहुत कम आये हैं, लेकिन आये अवश्य हैं। हिन्दुस्तान के लोग

भी हमारे देश में जाते रहे हैं। हिन्दुस्तान का माल हमारे देश में जाता है और वहाँ का माल यहाँ आता है। हम लोगों का यहाँ कोई सल्तनत क़ायम करने का इरादा नहीं है।"

यह जानकारी नज़मा को नहीं मालूम थी। उसने मोहम्मद-रज़ाख़ाँ से पूछा, "क्या कोई देश है ऐसा ? आपने सुना है ?"

"सुना है बेग़म ! सुलतान हैदरअली और टीपू सुलतान जो फ़र की टोपियाँ लगाते थे, वह फ़र रूस से ही आती है।"

"आपने ठीक फ़रमाया। फ़र हमारे यहाँ बहुत होता है। वह विदेशों को भेजा जाता है। आपके यहाँ से रेशमी कपड़ा, गरम मसाले और बहुत सी चीज़े हमारे देश को जाती हैं।"

नज़मा इस जानकारी से बहुत ख़ुश हुई। वह बोली, "आपने हमें एक नई दुनियाँ की जानकारी कराई। हम समझते थे कि यूरोप में डच, फ्रेंच और अंग्रेज़ ही बसते हैं।

क्या आप रोज़ यहाँ आते हैं ?"

"जी नहीं। मैं यहाँ सिर्फ़ संडे (रविवार) को आता हूँ। मेरी छुट्टी केवल सप्ताह में एक दिन की होती है।"

"तो तुम यहाँ किसी जगह नौकरी करते हो। क्या नाचघर है कोई, जिसमें तुम काम करते हो ?"

"जी नहीं ! मैं कैप्टन सिडेनहेम का निजी गायक हूँ।"

उस दिन इससे अधिक बातें नहीं हुई। उस व्यक्ति ने अपना नाम लिबिदेव बतलाया और आगामी रविवार को वहीं मिलने का वचन दिया। नज़मा ने अपना कोई परिचय नही दिया। परिचय की बात मुस्कराकर टालदी।

पन्द्रह

नज़मा ने मद्रास-रेज़ीडेन्सी से स्तीफ़ेन इत्यादि के विषय में सूचना प्राप्त की। उसे पता चला कि वे कलकत्ता लौट गये।

दूसरे रविवार को नज़मा और मोहम्मदरज़ाख़ाँ जब उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ उनकी लिबिदेव से भेंट हुई थी, तो उन्होंने देखा वह उनकी प्रतीक्षा में था। आज वह वायलन नहीं बजा रहा था, परन्तु वायलन लाया अवश्य था अपने साथ।

नज़मा और मोहम्मदरज़ाख़ाँ वहाँ पहुँचे तो लिबिदेव ने उनसे भेंट करके कहा, "मैं आप लोगों की ही प्रतीक्षा में था।"

नज़मा मुस्कुराई। फिर बोली, "हम लोगों को आने में कुछ देर हो गई। हमारा एक कलकत्ते का आदमी मिल गया था रास्ते में, उसी से बातें करने में कुछ वक्त ख़राब होगया।"

"साथी से मिलने में समय ख़राब क्यों हुआ? यह तो उपयोग हुआ समय का।"

"आपको परेशानी हुई, इस लिये मैंने ख़राब होना कहा। वैसे सचमुच उससे मिलकर हमें बहुत खुशी हुई। काफ़ी दिन बाद उससे मुलाकात हुई थी।"

"तो आप लोग कलकत्ते के रहने वाले हैं। सुना है कलकत्ता मद्रास से भी बड़ा और ख़ूबसूरत शहर है।"

"इसमें कोई शक नहीं। कलकत्ता मद्रास से बड़ा है और हमें तो ख़ूबसूरत भी बहुत लगता है क्यों कि हम लोग वहाँ के रहने वाले हैं। वहाँ की हर चीज़ हमें अच्छी लगती है।"

लिबिदेव हँसकर बोला, "यह बात आपने ठीक कही। अपने नगर में वहाँ के रहनेवालों के लिये कुछ विशेष आकर्षण होता है। मुझे भी जब अपने जन्मस्थान जैरोसलाव्ल की याद आ-जाती है तो मन करता है वहाँ उड़कर पहुँच जाऊँ। बहुत छोटा सा शहर है, लेकिन ख़ूबसूरत है।"

नज़मा, लिबिदेव और मोहम्मदरज़ाखाँ, तीनों उस चट्टान पर जाकर बैठ गये जिसपर बैठा लिबिदेव गत रविवार को वाय-लन बजा रहा था।

"मैंने आपको अपना नाम बतलाया, लेकिन आपने अपना नाम मुझे नहीं बतलाया। बिला नाम जाने बातें करने में कठि-नाई होती है।"

"इन्हें आप बेग़म कहकर पुकार सकते हैं और मुझे लोग रज़ाखाँ कहते हैं। बड़ा बदनाम नाम है। इस नाम को बंगाल में कोई इज्ज़त से नहीं लेता।"

मोहम्मदरज़ाखाँ की बात सुनकर लिबिदेव ने उसकी ओर बड़े ध्यान से देखा। नज़मा मुस्करादी।

"क्यों? ऐसी क्या ख़राबी है इस नाम में?"

"यह एक लम्बी कहानी है लिबिदेव! कभी मौक़ा मिला तो आपको फ़ुर्सत में बैठकर सुनायेंगे। वैसे मुश्किल ही है यह मौक़ा मिलना।"

"क्यों?"

"क्यों कि हम लोग यहाँ कुछ ही दिनों के मेहमान हैं। ख़याल तो पहिले श्रीरंगापट्टन से सीधे निकलजाने का था लेकिन

बेग़म ने कहा चलिये मद्रास की भी सैर करते चलें। जिन्दगी में फिर कभी मौक़ा मिले, न मिले।"

"श्रीरंगापट्टन कैसा शहर है?" लिबिदेव ने पूछा।

"मैसूर की राजधानी है। बड़ा ख़ूबसूरत शहर है।"

"टीपू!......कहकर लिबिदेव ने विशेष दृष्टि से मोहम्मद-रज़ाखाँ की ओर देखा।

"क्यों, क्या टीपू सुलतान का नाम आपने नहीं सुना? वह हैदरअली के साहबज़ादे हैं, मैसूर के सुलतान।"

लिबिदेव फिर भी आश्चर्यपूर्ण चेहरे से उनकी ओर देखता रहा। उसके मस्तिष्क में कोई बात घूम रही थी।

नज़मा बोली, "आप इस तरह क्यों देख रहे हैं?"

"मैं सोच रहा हूँ कि सिडेनहेम ने अपने कुत्ते का नाम टीपू क्यों रखा? वह उसे टीपू कहकर पुकारता है।"

यह सुनकर मोहम्मदरज़ाखाँ के बदन में आग लग गई। उसके चेहरे का रंग बदल गया।

नज़मा ने इस परिवर्तन को बड़े ध्यान से देखा। वह बोली, "यह अपनी-अपनी तहज़ीब की बात है। हम लोग भी अपने कुत्ते को क्लाइव या हेस्टिंग्स कहकर पुकार सकते हैं लेकिन हम यह नहीं करते।"

लिबिदेव ने इस बात को आगे न बढ़ाकर पूछा, "कलकत्ते में शायद नाचघर काफ़ी हैं। क्या हिन्दुस्तानी लोग भी उन नाचघरों में जाते हैं?"

"वहाँ कई नाचघर हैं। ये नाचघर अंग्रेज़ों के ही हैं। कभी-कभी उनमें नाटक भी खेले जाते हैं।"

"बेग़म! आप अंग्रेज़ी काफ़ी अच्छी बोल लेती हैं।"

"नवाब साहब का अंग्रेज़ों में काफ़ी उठना-बैठना रहा है।

इसी लिये मुझे भी उनके साथ मिलने-जुलने का मौक़ा मिला। सोहबत का असर तो हो ही जाता है।"

"क्यों नही? सोहबत से ही तो इन्सान सब कुछ सीखता हैं। मेरा मतलब यह था कि अगर मैं कलकत्ता आऊँ तो क्या मुझे वहाँ कोई संस्कृत सिखा सकता है?"

"संस्कृत! अरे बाप-रे-बाप! यह आपने क्या कह दिया? आप संस्कृत सीखना चाहते हैं?"

"यहाँ मैंने काफ़ी प्रयत्न किया कि कोई मुझे अंग्रेज़ी के माध्यम से संस्कृत सिखादे, लेकिन मुझे कोई आदमी नहीं मिला। क्या कलकत्ते में ऐसे आदमी हैं?"

नज़मा बोली, "हैं तो ज़ुरूर, लेकिन वे लोग अपनी भाषा किसी को सिखाते नहीं। विलियम जोन्स का नाम तो आपने सुना होगा, वह अपने आपको संस्कृत का आलिम समझता है। वह रिवालवर और सैनिक दस्ता लेकर पंडितों के पास संस्कृत सीखने जाता है।"

"रिवालवर और सैनिक-दस्ता लेकर! इन से संस्कृत कैसे पढ़ी जाती है?"

"संस्कृत पढ़ी जाये या न पढ़ी जाये, लेकिन उसका मतलब हल हो जाता है।"

"वह कैसे?"

"कैसे क्या? वह रिवालवर दिखाकर पंडितों की किताबें उठा लाता है और उन्हें इङ्गलेंड भेज देता है। वहाँ वे म्यूज़ियम में रखदी जाती हैं और उनपर लिख दिया जाता है 'विलियम-जोन्स की नई खोज।' किताबों के साथ वह मुंशी से कुछ लिखा कर भेज देता है। सुनते हैं यूरोप में उसके इस काम के लिये उसकी बड़ी शोहरत है।"

लिबिदेव ने नज़मा की यह बात बड़े आश्चर्य के साथ सुनी। वह बोला, "तब तो पंडित लोग उसे कुछ सिखाते क्या होंगे उलटा ग़लत-सलत बतला देते होंगे।"

नज़मा को हँसी आगई लिबिदेव की इस सरल सी बात पर। वह बोली, "ग़लत नहीं बिलकुल ग़लत। विलियमजोन्स समझता है कि उसने उन्हें रिवालवर दिखाकर अपने रौब में ले लिया और वे इसे मूर्ख समझते हैं। विलियम जोन्स ने हिन्दुस्तान के अदब के बारे में जो कुछ लिखा है, वह सब ग़लत है। उसे ख़ाक नहीं आता-जाता और समझता वह यह है कि संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, बँगला, हिन्दी, तमिल, तेलगू, मलियालम, गुजराती, मराठी, अवधी, उड़िया सब का फ़ाज़िल हो गया।" यह कह कर नज़मा फिर ख़ूब हँसी, ख़ूब हँसी।

"क्या आप भी ऐसे ही फ़ाज़िल बनना चाहते हैं?

अच्छा आप यह बतलाइये कि आप संस्कृत क्यों सीखना चाहते हैं?"

लिबिदेव नज़मा की बातों में आनन्द लेरहा था। वह जब से भारत आया था, उसने इतनी खुलकर किसी से बातें नहीं की थीं। करनल सिडेनहेम का वह निजी गायक था परन्तु वायलन सुनने के अतिरिक्त वह उससे कभी बातें नहीं करता था। सच बात यह थी कि सिडेनहेम को अपने प्रपंचों से ही अवकाश नहीं मिलता था। लिबिदेव को उसने संगीत-प्रेम के लिये नहीं, बड़े लोगों में शान दिखलाने के लिये रख लिया था।

सिडेनहेम के पास आने-जाने वालों से भी लिबिदेव का कोई सम्पर्क नहीं होता था, क्यों कि मामूली-से-मामूली अंग्रेज़ भी हिन्दुस्तान में अपने आप को गवर्नर जनरल से कम नहीं समझते थे। जहाँ किसी नवाब को पहुँचने में घंटों लगते थे वहाँ एक

साधारण अंग्रेज गेटकीपर को एक ओर धकेल कर सीधा घुसता चला जाता था।

मद्रास में लिबिदेव ने यही वातावरण देखा। इसमें उसकी आत्मा कुछ कुंठित सी हो उठी थी। वह मद्रास से बाहर जाना चाहता था, परन्तु उसने सिडेनहेम से दो वर्ष का कंटेक्ट किया हुआ था। उसे पूरा किये बिना वह मद्रास को नहीं छोड़ सकता था।

नज़मा का प्रश्न सुनकर लिबिदेव बोला, "मैं सोचता हूँ कि जब तक मैं यहाँ की भाषा नहीं सीखूँगा तब तक मैं यहाँ के बारे में कुछ नहीं जान सकता। यहाँ की भाषा सीखे बिना मैं यहाँ के रहने वालों की सभ्यता और संस्कृति को कैसे समझ सकता हूँ? अगर मैं और आप इस समय अंग्रेज़ी में बातें न करके बँगला में बातें करते तो क्या हम लोग एक दूसरे के अधिक निकट न होते?"

नज़मा लिबिदेव की बात सुनकर दंग रह गई। उसने बड़ ध्यान से उसकी ओर देखा और देखती ही रही कुछ देर।

"आप इस तरह क्या देख रही हैं?"

"मैंने आपके मुँह से वह बात सुनी जो आज तक किसी अंग्रेज़ के मुँह से नहीं सुनी। आप हमारी भाषा इस लिये सीखना चाहते हैं कि आप हमारे नज़दीक आसकें। अंग्रेज़ हमारी भाषा हमारे राज़ जानने के लिये सीखना चाहते हैं। इसी लिये वे पिस्तौल और सिपाहियों का डर दिखाकर भी, आज तक ख़ाक नहीं सीख सके। ख़ुदा पाक ने चाहा तो आपकी यह तमन्ना कलकत्ता आकर ज़ुरूर पूरी होगी। तुम्हारा कब तक कलकत्ता आने का ख़याल है?"

"मेरा सिडेनहेम से दो वर्ष का कंटेक्ट है। उसे पूरा करने के

बाद ही मैं मद्रास छोड़ सकता हूँ।"

"क्या तुमने उससे कुछ रुपया लिया हुआ है?"

"ऐसी भी कुछ बात है। मैं जब इङ्गलेंड से चला था तो मेरे पास रुपया बहुत कम था। फिर भी जहाज़ का कैप्टेन मुझे अपने साथ ले आया। उसका किराया मैंने सिडेनहेम से पेशगी लेकर चुका दिया था।"

"तुम चाहो तो सिडेनहेम का रुपया लौटा सकते हो।"

"जी नहीं! मैंने उसका काफ़ी रुपया लौटा दिया है। एक वर्ष में मेरे पास अपना भी कुछ रुपया हो जायेगा। मैं तभी कलकत्ता आऊँगा।"

"हम लोगों को भी अभी कलकत्ता पहुँचने में समय लगेगा। हमारा ख़याल है कि हम यहाँ से पूना, ग्वालियर होकर दिल्ली जायेंगे। दिल्ली हमने कभी नहीं देखी है। कुछ दिन वहाँ ठहरेंगे। उसके बाद लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस होकर मुर्शिदाबाद होते हुए कलकत्ता पहुँचेंगे। इस सफ़र में एक साल लग जाना मामूली बात है।"

बातों-बातों में काफ़ी समय निकल गया था। नज़मा को लिबिदेव की जिस चीज़ ने अपनी ओर आकर्षित किया था, वह उसका वायलन था। उसी ने लिबिदेव से उनकी भेंट कराई थी और उसी के स्वर में बँधी हुई नज़मा उसके निकट पहुँची थी।

"अब ये बातें बन्द करके आप वायलन बजाइये।"

लिबिदेव ने वायलन निकाला, उसकी ट्यून ठीक की और बजाना आरम्भ किया।

समय बड़ा सुहावना था। आकाश मेघों से आच्छादित था। नन्ही-नन्ही फुहारें कभी-कभी झरने लगती थीं। सुहावनी हवा बह रही थी। समुद्र की लहरें बलखाती हुई दूर तक चली

जाती थीं। कुछ मल्लाह डोंगियाँ खेते हुए मल्हार गा रहे थे।

लिबिदेव के वायलन का स्वर वायुमण्डल में आच्छादित हो गया। एक धुन समाप्त करके लिबिदेव बोला, "मालूम देता है बेग़म! आपको भी संगीत का शौक है।"

"शौक होना और बात है और किसी चीज़ का माहिर होना दूसरी बात। आप माहिर हैं वायलन के। वायलन बजाने वाले मैंने बहुत देखे हैं, लेकिन ऐसा वायलन मैं पहिली बार ही सुन रही हूँ।

हमारे देश के कुछ साजों से इससे भी सुरीले स्वर निकलते हैं।"

लिबिदेव ने पूछा, "क्या आप मुझे उन साजों के नाम बता सकती हैं?"

"हाँ हाँ, क्यों नहीं। सितार और सारंगी ऐसे ही साज हैं। वीणा का स्वर भी बहुत मीठा होता है।"

लिबिदेव ने इन साजों के नाम अपनी डायरी में लिख लिये। क्या आप इन में से कोई साज मुझे दिला सकती हैं?"

"क्यों नहीं।" नज़मा बोली।

जिस दिन नज़मा ने लिबिदेव से तीसरी बार भेंट की तो उसने उसे एक सितार दिया।

"क्या आप इसे बजाना भी जानती हैं?"

नज़मा ने मुस्कराकर मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर देखा।

"अपने रूसी दोस्त को सितार बजाकर सुनाओ बेग़म! हो सकता है इन्होंने कोई हिन्दुस्तानी साज न सुना हो।" फिर लिबिदेव की ओर देखकर कहा, "हमारे रूसी दोस्त! बेग़म लाजवाब सितार बजाती हैं। जिस तरह आप वायलन बजाने में माहिर हैं वैसे ही बेग़म भी सितार बजाने में अपना सानी

नहीं रखतीं।"

नज़मा ने सितार के तारों को ठीक से कसकर उन पर मिज़राब फेरा। सितार का स्वर हवा की लहरों पर थिरका और उसने वहाँ से वायुमण्डल पर जादू का असर किया।

लिबिदेव सितार की स्वर-लहरियों में बह गया। वह बहता हुआ कहाँ पहुँच गया, कुछ पता नहीं। वह आँखें बन्द करके झूम रहा था।

नज़मा ने सितार बजाना बन्द किया तो उसकी स्वप्न-निद्रा टूटी। उसने नज़मा की ओर देखकर कहा, "बेग़म! आप मुझे स्वर्ग में लेगईं। आपका साज सचमुच मेरे वायलन से कहीं अधिक मधुर है।"

"यह सितार मैं आपके लिये लाई हूँ।"

"इसका मुझे क्या मूल्य देना होगा?"

बस यही कि आप हमें भुलायें नहीं। यदि आपकी हमसे फिर कभी भेंट न हो, तो जब आप अपने देश लौटें और वहाँ जाकर इस साज को बजायें तो याद करलें कि हमें कहीं दो आदमी मिले थे, जिन्हें संगीत से प्रेम था।"

नज़मा की बात सुनकर लिबिदेव तुरन्त कोई उत्तर न दे सका। नज़मा के उपहार को ग्रहण न करना भी उसके लिये सम्भव न रहा। कुछ परिचय ही इस प्रकार से हुआ कि धन-दौलत या रुपया-पैसा बीच में न आया। इस मिलन को संगीत ने सम्पन्न किया था। इसमें सरलता थी, छल-छिद्र नहीं था। किसी मतलब को लेकर ये आपस में नहीं मिले थे।

"तो क्या कलकत्ते में आपसे मेरी भेंट नहीं होगी?"

"हमारा घर है वहाँ। हमें पहुँचना है वहाँ। हमारा इरादा भी वहाँ पहुँचने का है। लेकिन क्या कहा जा सकता है

फिर भी ?"

"क्यों ?"

"बड़े नाज़ुक हालात चल रहे हैं इस वक्त। कुछ कह नहीं सकते कि कब क्या हो जाये। यह भी मुमकिन है कि हम लोग वहाँ पहुँच ही न सकें।"

"ऐसा क्यों मुमकिन हो सकता है ?"

"इस लिये कि आपकी तरह डच, फ्रेंच और अंग्रेज़ यहाँ सिर्फ़ गाने-बजाने या सैर करने के लिये नहीं आये हैं। इनका यहाँ आने का मक़सद सिर्फ़ तिजारत भी नहीं है।"

"फिर क्या है ?"

"इनका मक़सद हिन्दुस्तान में अपनी सल्तनत क़ायम करना है। डच और फ्रांसीसियों के सल्तनत क़ायम करने के ख्वाब तो अंग्रेज़ों ने ख़त्म कर दिये। अब अंग्रेज़ हिन्दुस्तानी राजाओं और नवाबों के साथ लड़ रहे हैं। बड़ा ख़तरनाक इरादा है इन लोगों का। ये लोग हिन्दुस्तानी राजाओं और नवाबों के बीच फूट का बीज बोकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। ऐसी हालत में जंग का हर वक्त ख़तरा बना रहता है।"

लिबिदेव ने नज़मा की बात पर कोई टिप्पणी नहीं की। वह बोला, "फिर भी मुमकिन तो यही है कि आपसे मेरी कलकत्ते में भेंट होगी। मेरी संस्कृत पढ़ने की इच्छा है। मैं हिन्दुस्तान की सभ्यता से परिचय प्राप्त करना चाहता हूँ। मेरी इसी दौलत को हासिल करने की इच्छा है।"

"यह दौलत हिन्दुस्तान हमेशा से दुनियाँ को देता रहा है। हमारे यहाँ के आलिम तंगदिल नहीं हैं। आप देखेंगे कि उन्हें इस दौलत का ज़रा भी लोभ नहीं है। हमारे यहाँ तालीम बेची नहीं जाती है। हम इसे ख़ैरात की चीज़ समझते हैं, लेकिन

यह उसी को दी जाती है जिसे इसके क़ाबिल समझा जाता है। विलियम जोन्स सिर पटक कर मर जाये और रिवालवर या पिस्तौल तो क्या तोप से हमारे विद्वानों को उड़वादे, फिर भी वह कुछ हासिल नहीं कर सकता।

तालीम नरमी से हासिल की जाती है, किसी का सिर चीर कर नहीं। यूरोप के लोग, हमने सुना है, इन्हें तहज़ीबयाफ्ता समझते हैं, लेकिन हमने इनमें तहज़ीब की कोई बात नहीं देखी।"

लिबिदेव ने फिर भी इस बात पर कोई टिप्पणी नहीं की। वह बोला, "हम जिस चीज़ के नज़दीक पहुँचना चाहते हैं, हमें उससे प्रेम होना चाहिये। बिला प्रेम के उस चीज़ के पास जाना टकराव पैदा करेगा।"

नज़मा मुस्कराई। फिर मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर देखकर बोली, "सुना आपने ? कितनी साफ़ बात कहदी आपके रूसी दोस्त ने।"

"मैं समझा नहीं बेग़म !"

"यह कह रहे हैं कि किसी आदमी के नज़दीक पहुँचने के दो मक़सद होते हैं।"

"वे क्या ?"

"बतलाती हूँ।" नज़मा मुस्कुराई। "या तो मुहब्बत, यानी हमदर्दी से आगे बढ़ते हैं या दुश्मनी से। मुहब्बत उन दोनों को एक कर देती है और वे आपस में एक दूसरे के मददगार बन जाते हैं और दुश्मनी से आपस में टकराव पैदा होता है।"फिर लिबिदेव की ओर देखकर पूछा, "मैं समझती हूँ आपका मतलब यही है।"

लिबिदेव ने मुस्कराकर पूछा, "आप लोगों का अब मद्रास में

कितने दिन ठहरने का विचार है ?"

"हमारा इरादा तो आज से काफ़ी दिन पहिले यहाँ से चले जाने का था लेकिन कुछ काम ऐसा निकल आया कि हम लोग अभी जा नहीं सके। शायद अगले हफ़्ते में हम लोग मद्रास छोड़ देंगे।"

"तब तो अभी एक बार आपसे मिलने का मौक़ा मुझे और मिलेगा।"

"ज़ुरूर ! हम लोग अगले हफ़्ते यहाँ आयेंगे।" मोहम्मद-रज़ाखाँ ने कहा।

रात्रि का अंधकार बढ़ने लगा था। तीनों वहाँ से उठकर चल दिये और लगभग एक मील आगे बढ़कर उनके मार्ग प्रथक-प्रथक होगये।

सोलह

मोहम्मदरज़ाखाँ को मद्रास में वारेनहेस्टिंग्स के इङ्गलेण्ड लौटने का पता चल चुका था। मैक्फ़रसन के गवर्नर बनने का समाचार मिला। मद्रास में मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा लगभग दो महीने ठहरे। इसी बीच उन्हें मैक्फ़रसन के स्थान पर कॉर्नवालिस के आने का समाचार मिल गया।

मोहम्मदरज़ाखाँ को मद्रास में ही टीपू सुलतान, मराठा और निज़ाम हैदराबाद की आपसी छेड़-छाड़ का पता चला। वह नज़मा से बोला, "बेग़म ! सुलतान ज़बरदस्त ग़लती कर रहा है।"

नज़मा दर्द भरे स्वर में बोली, "ग़लती तो जो होनी थी वह बहुत पहिले हो चुकी। अंग्रेज़ों के साथ सुलतान ने उस वक्त सुलह करके भंयकर भूल की। जब दुश्मन परेशानी में हो, उस वक्त उसे सँभलने का मौक़ा देना, सबसे बड़ी ग़लती है।"

"सुलतान ने मराठों और निज़ाम से छेड़खानी करके उन्हें अपना दुश्मन बना लिया। अगर ये लोग अंग्रेज़ों से मिल गये तो सुलतान आफ़त में फँस जायेगा।"

"यह तो होगा ही। सुलतान को नाना फड़नवीस से सुलह रखनी चाहिये । अगर सुलतान अंग्रेज़ों से वह सुलह न

करता और बराबर अंग्रेज़ों की तिजारत को बरबाद करता रहता तो नाना फड़नवीस को अंग्रेज़ों से की गई अपनी सुलह के लिये शरमिन्दा होना पड़ता। सुलतान की उस सुलह ने नाना फड़नवीस के शक को अमली जामा पहिना दिया। मौजूदा हालात में नाना फड़नवीस की सियासत को ग़लत नहीं कहा जा सकता।" नज़मा ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"क्या हम लोगों को श्रीरंगपट्टन होकर पूना की ओर बढ़ना चाहिये ?"

"किस लिये ?"

"सुलतान को इस ख़तरे से आगाह करने के लिये।"

"बेसूद है। सुलतान नातजुरबेकार है। वह दूरंदेशी से किसी चीज़ की गहराई में जाने की कोशिश नही करता। सिर्फ़ बहादुरी ही सुलतान के लिये काफ़ी नहीं है। हिन्दुस्तान की मौजूदा ताक़तों में सिर्फ़ मराठा ही एक ऐसी ताक़त है जिसपर भरोसा और यक़ीन किया जा सकता है। उसके साथ छेड़ख़ानी करके सुलतान ने ज़बरदस्त ग़लती की है। मुझे उम्मीद नहीं कि वह अपनी इस ग़लती को सुधारने की कोशिश करेगा।"

"क्या तुम्हारे कहने का भी उस पर कोई असर न होगा ?"

"मुझे उम्मीद नहीं है। वह बहुत ज़िद्दी क़िस्म का आदमी है और अपनी अक्ल के सामने किसी दूसरे की राय की क़ीमत नहीं समझता। मुझे मालूम है पंडित कृष्णराव उस सुलह के ख़िलाफ़ राय रखते थे और फिर भी वह सुलहनामा लिखा गया। इसी लिये पंडित कृष्णराव ने अपने पद से स्तीफ़ा दे दिया है।"

"यह तुमसे किसने कहा ?"

"ख़ुद पंडित कृष्णराव ने ?"

"उनसे तुम्हारी कब मुलाक़ात हुई ?"

"कल ।"

"क्या वह मद्रास में हैं ?"

"जी, अभी आते ही होंगे। वह आपसे मुलाक़ात करने के बहुत इच्छुक हैं। उन्हें यकीन है कि सुलतान आपका कहना मान सकते हैं, लेकिन मेरी राय इसके ख़िलाफ़ है।"

जब ये बातें चल ही रही थीं तभी पंडित कृष्णराव वहाँ आ-गये। मोहम्मदरज़ाखाँ ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और आदरपूर्वक अन्दर लिवालाये।

"हम लोग आपके ही आने की इन्तज़ार कर रहे थे।"

पंडित कृष्णराव के चेहरे पर चिन्ता का भाव था।

"आप आज कुछ फ़िक्रमन्द नज़र आरहे हैं।"

"बात ही कुछ ऐसी है बेग़म! मैं अभी-अभी रेज़ीडेंसी से आरहा हूँ। वहाँ जो चर्चा मुझे सुनने को मिली, उससे सुलतान का भविष्य अंधकारपूर्ण दिखाई देरहा है।"

"वह क्या ?" आश्चर्यकित होकर मोहम्मदरज़ाखाँ ने पूछा।

"कॉर्नवालिस ने निज़ाम से सुलतान के विरुद्ध एक गुप्त सन्धि की है। इस संधि के अनुसार सुलतान पर हमला करते समय निज़ाम अंग्रेज़ों की मदद करेगा।"

"यह कोई ख़ास बात नहीं है। निज़ाम तो पहिले से ही अंग्रेज़ों का ग़ुलाम है। उसके यहाँ अंग्रेज़ी फ़ौज रहती ही है। निज़ाम सुलहनामे पर दस्तख़त न करता तो क्या वह फ़ौज अंग्रेज़ों का साथ न देती ?"

"तब ख़ास बात क्या है बेग़म ?" पंडित कृष्णराव ने पूछा।

"ख़ास बात है मराठों से संधि होना । निज़ाम यकीन के क़ाबिल कभी नहीं रहा। मराठों पर यकीन किया जा सकता है। उनकी बात की कोई क़ीमत है। उन्होंने कितनी ही बार अंग्रेज़ों को शकिस्त दी है।"

"मराठों से सुलह की बातें चल रही हैं।"

"साथ-साथ आपकी सुलह की बातों को रद्द करके एक और भी ख़तरनाक खेल खेला जारहा है। हमने सुना है अंग्रेज़ों का सुलतान के राज में एक ज़बरदस्त डकैती डालने का इरादा है।"

नज़मा की बात सुनकर कृष्णराव भयभीत हो उठे। उन्होंने पूछा, "यह आपसे किसने कहा बेग़म ?"

"मैं उस आदमी का नाम नहीं बता सकती, लेकिन ख़बर ग़लत नहीं है। मद्रास के रेज़ीडेण्ट का ऐसा कोई इरादा नहीं है, लेकिन सुनने में आया है कि कम्पनी के डाइरेक्टरों ने कार्न-वालिस को यह डकैती डालने के लिये लिखा है। हम लोग इसी इत्तला को हासिल करने के लिये यहाँ इतने दिन पड़े रहे, वरना कभी के चल दिये होते।" नज़मा ने कहा।

"ऐसी हालत में हमें क्या करना चाहिये बेग़म ?"

नज़मा बोली, "सुलतान को अपनी ताक़त पर ज़ुरूरत से ज़ियादा ज़ोम है। सियासत में यह ज़ोम नुक़सानदे साबित होता है।

उन्हें फ़ौरन नाना फड़नवीस के पास जाकर संधि करनी चाहिये और वायदा करना चाहिये कि वह अपने वालिद के काम को पूरा करेंगे। एक बात और।" कहकर नज़मा चुप होगई।

"वह क्या ?" पंडित कृष्णराव ने पूछा।

"सुनना ही चाहते हैं तो सुनिये। सुलतान और पेशवा को मिल

फ़ौरन निज़ाम पर हमला कर देना चाहिये और उसकी रियासत आपस में आधी-आधी तकसीम कर लेनी चाहिये। अगर सुलतान नाना फड़नवीस के सामने यह तजबीज़ पेश करेंगे तो वह फ़ौरन राज़ी हो जायेंगे। निज़ाम-राज के मिटते ही हिन्दुस्तान से ग़द्दारी का ख़ात्मा हो जायेगा।"

नज़मा की बात सुनकर मोहम्मदरज़ाख़ाँ और पंडित कृष्णराव आश्चर्यचकित रह गये।

पंडित कृष्णराव ने नज़मा की बात पर गम्भीरतापूर्वक सोचा तो उन्हें लगा जैसे नज़मा की बात बहुत महत्वपूर्ण थी। वह बोले, "बात तो आपकी ठीक है बेग़म! लेकिन क्या इसे डकैती नहीं कहा जायेगा?"

"डाकू को लूटना कोई डकैती नही है। फिर दूसरा लुटेरा जो सुलतान के सिर पर मँडरा रहा है, उसके दिल में दहशत पैदा करने के लिये इससे बढ़िया और कोई तरकीब नहीं है। इससे दक्खन में तीन ताक़तें न रहकर दो ताक़तें रह जायेंगी और अंग्रेज़ों का पैर टिकाने का सहारा ख़त्म हो जायेगा।"

"इसके लिये सुलतान की नाना फड़नवीस से भेंट होना बहुत आवश्यक है। मुझे संदेह है कि सुलतान इसके लिये उद्यत न होंगे। जब से नाना साहब ने अंग्रेज़ों से सालबाई की संधि की है तब से नाना साहब के प्रति उनके मन में वह आदर की भावना नहीं रही, जो पहिले थी।"

"यह भावना का सवाल नहीं है पंडित कृष्णराव! यह सियासत की बात है। भावना को बालायेताक़ रखकर मौजूदा मुसीबत को टालने की तदबीर सोचिये। इस वक्त सुलतान मुझे ख़तरे की मीनार पर खड़े दिखाई दे रहे हैं। अगर इसकी फ़ौरी तदबीर न सोची गई तो जो काम मैं निज़ाम के साथ करने को

कह रही हूँ वही काम अंग्रेज़ सुलतान के साथ करेंगे। मैं क्लाइव और वारेनहेस्टिंग्स के काफ़ी नज़दीक रह चुकी हूँ। इन लोगों की ख़सलतों का कोई राज़ ऐसा नहीं है जिससे मैं वाकिफ़ न हूँ। कॉर्नवालिस भी उसी थैली का चटटा-बट्टा है। इस थैली से जो पत्थर निकलेगा वह उसी तरह हिन्दुस्तान की खोपड़ी पर टकरायेगा।

हम लोग इस वक्त पूना जाने का इरादा कर रहे हैं। नाना साहब से हम लोग मिलेंगे। इस बीच में आप सुलतान को पूना लेआयें। हम इन्तज़ार करेंगे।"

पंडित कृष्णराव ने उसी दिन श्रीरंगापट्टन के लिये प्रस्थान किया और चलते समय कहा, "मैं सुलतान को पूना लाने का भरसक प्रयत्न करूँगा बेग़म ! परमात्मा ने चाहा तो मुझे इस काम में सफलता अवश्य मिलेगी। मुझे विश्वास है कि जब सुलतान को आपके पूना पहुँचने का समाचार मिलेगा तो वह वहाँ आने के लिये उद्यत होजायेंगे।"

"हो तो जाना चाहिये।" नज़मा के मुख से निकला। "अगर ख़ुदा पाक को मंज़ूर हुआ तो हमारा यह तीर ख़ाली नहीं जायेगा। हमारा यह तीर अंग्रेज़ों के नापाक इरादों पर बिजली की तरह टूटकर पड़ेगा। अंग्रेज़ अपने आपको बहुत चालाक समझते हैं। इन्हें समझने का मौक़ा मिलेगा कि हिन्दुस्तानी भी अपनी हिफ़ाज़त की अक़्ल रखते हैं।"

पंडित कृष्णराव को विदा करके मोहम्मदरज़ाखाँ बोले, "बेग़म ! अब हमें भी तय्यारी करनी चाहिये।"

"तय्यारी क्या करनी है ? आपके रूसी दोस्त से विदा लेनी है बस। उससे कल मुलाक़ात होगी।"

"आदमी भला है बेचारा ! न किसी के लेन में न देन में।

मस्त आदमी है।"

"हुनर अच्छा पाया है उसने। वायलन ख़ूब बजाता है। कलकत्ते में यह अच्छे पैसे कमा सकता है। मद्रास में इस हुनर के आदमी के लिये तरक्क़ी करने का कोई मौक़ा नहीं है।

हमारा स्तीफ़ेन इसे ख़ासा रुपया देसकता है। वह आदमी अच्छे आर्टिस्ट पर जान देता है। अच्छा आर्टिस्ट उसे एक बार दिखाई देजाये, फिर वह उसे छोड़नेवाला नहीं है।"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ का ध्यान उस समय पूना पर केन्द्रित था। वह नाना फड़नवीस और टीपू सलतान की संधि के विषय में सोच रहा था। वह बोला, "बेग़म! तुमने तरकीब लाजवाब बतलाई।"

"क्या?"

"निज़ाम पर हमला करने की।"

नज़मा हँसकर बोली, "आप अभी तक उसी के बारे में सोच रहे हैं।"

"हाँ बेग़म! मैं सोच रहा हूँ कि अगर ख़ुदा पाक हमें इस काम में कामयाबी बख्शदे तो हिन्दुस्तान की शतरंज पर मोहरों की चाल बदल जाये। फिर मुझे उम्मीद है कि हम शाहआलम को भी अपने साथ मिलाने में कामयाब हो जायेंगे। यह सब होने के बाद आसफ़उद्दौला भी शायद पर फड़फड़ाये और अंग्रेज़-रेज़ीडेन्सी के चंगुल से आज़ाद होजाये। फिर बंगाल का मुहासिरा बाक़ी रह जायेगा।"

"आप क़ुलाबे-पर-क़ुलाबे भिड़ाने लगते हैं। पहिले इस एक मुहासिरे पर तो कामियाब हूजिये। मुझे तो इसमें भी शक लगता है।"

"क्यों बेग़म?"

"इस लिये कि सुलतान नातजुरबेकार है और मराठों में फूट है। सिंधिया और भोंसले अंग्रेज़ों के हाथों में खेल रहे हैं। उनके

साथ काफ़ी मराठा सरदार हैं। नाना फ़ड़नवीस की इस वक्त क्या हालत है इस बात का पता वहीं जाकर चलेगा। तभी आगे की बातें सोची जासकती हैं।"

दूसरे दिन संध्या-समय नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ जब उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ उन्हें लिबिदेव से भेंट करनी थी, तो उन्होंने देखा लिबिदेव वहाँ अकेला चट्टान पर बैठा था।

"आप लोग आगये ? मैं सोच रहा था कहीं आप यहाँ से चले न गये हों।"

लिबिदेव की बात सुनकर नज़मा मुस्कराकर बोली, "चले तो हम लोगों को कल ही जाना चाहिये था लेकिन तुमसे मिले बिना कैसे चले जाते ? तुम सोचते कि हिन्दुस्तानी लोगों में मुहब्बत नहीं होती।"

"क्या वास्तव में आप लोग केवल मुझसे मिलने के लिये ही रुके हैं आज ?"

"इसमें कोई शक नहीं है दोस्त ! कल अचानक ही एक बहुत ज़ुरूरी काम सामने आगया। लेकिन तुमसे मिलना भी एक ज़ुरूरी काम था। कल हम लोग यहाँ से चले जायेंगे।"

लिबिदेव नज़मा की ओर देखकर बोला, "बेग़म ! मेरी बात का ध्यान रखियेगा। होसकता है आप इसे एक साधारण बात समझें, परन्तु मैं इसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण काममान चुका हूँ। इस देश में रहकर अगर मैंने यहाँ की भाषा का ज्ञान प्राप्त न किया तो बतलाइये फिर मैंने क्या किया ?"

"मुझे आपके काम का पूरा-पूरा ध्यान है। आप यकीन रखें कि जब आप कलकत्ता आयेंगे तो आपको सब इन्तज़ाम मुकम्मल मिलेगा। शर्त यही है बस कि मैं वहाँ सहीसलामत पहुँच जाऊँ। इतने लम्बे रास्ते के ख़तरों से आप वाकिफ़ नहीं हैं।

हालात अच्छे नहीं हैं।"

"वह सब मैं समझ चुका हूँ, फिर भी बहुत कम समझ पाया हूँ। आपको भी मैं इतना ही समझा हूँ कि आप कलाकार हैं और एक कलाकार के प्रति आप सहानुभूति रखती हैं। इससे अधिक समझने की मुझे आवश्यकता भी नहीं है। मेरे लिये इतना ही काफ़ी है। मैं राजनीति का आदमी नहीं हूँ। मुझे उसकी कोई विशेष जानकारी भी नहीं है। उसमें मैं फँसना भी नहीं चाहता।"

"आप विदेशी हैं, इस लिये आप उससे अलग रह सकते हैं, लेकिन हम लोगों को बड़ा फूँक-फूँक कर क़दम रखना पड़ता है। हमारी ज़रा सी ग़लती हमें तबाह कर सकती है।

मालूम देता है आपके देश से इङ्गलेण्ड के सम्बन्ध अच्छे हैं। इस लिये आपको यहाँ कोई ख़तरा नहीं है। सम्बन्ध अच्छे न होते तो यह सिडेन हेम क्या आपके साथ इतना अच्छा बरताव करता ?"

"अच्छा व्यवहार ! आवश्यकता मनुष्य से बहुत कुछ करा लेती है बेग़म ! फिर भी कुछ अनुभव होरहा है यहाँ। जिस वक्त मैं आया था तो सचमुच यही विचार लेकर आया था कि यहाँ मुझे बिला परिश्रम के काफ़ी धन मिल जायेगा। यह विचार मेरा इस लिये बन गया था कि मैंने यहाँ से इङ्गलेण्ड लौटने वाले जिस अंग्रेज़ को भी देखा, उसे मालामाल पाया था। लेकिन यहाँ आकर जब मैंने उनके मालामाल होने के तरीक़े देखे तो मुझे वे अच्छे नहीं लगे। मैंने देखा कि जो 'स्काज़िनिये आव इन्दियवोगेतोय' में हिन्दुस्तान को दौलत का ख़ज़ाना कहा गया है, वह सच नहीं है। यहाँ भी हमारे देश के जैसे ग़रीब और मज़लूम लोग बसते हैं।" लिबिदेव बोला।

"हम लोग आपके इन ख़यालातों की क़द्र करते हैं। काश इन अंग्रेज़ों में भी इतनी इन्सानियत होती तो हमारे दिलों में इनके लिये नफ़रत की जगह प्यार होता। लेकिन इन लोगों ने हमारे घर में आकर जो ज़लालतें की हैं और जो तबाही का आलम वरपा किया है उसने इन्हें हमारा दोस्त न बनाकर दुश्मन बना दिया है। हमारे बादशाहों ने इन्हें क्या-क्या तिजारती सहूलियतें दीं और उनका इन लोगों ने कितना ग़लत इस्तेमाल किया, आप इसकी कहानी सुनें तो आपके रोंगटे खड़े होजायें।

कलकत्ता आप आ ही रहे हैं। ख़ुदा-न-ख़ास्ता हम लोग भी अगर सहीसलामती से वहाँ पहुँच गये तो मैं आपको वह सब सुनाऊँगी। इस वक्त हमें यहाँ से फ़ौरन चला जाना है। हो सकता है हम लोग आज रात में ही यहाँ से निकल जायें।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ उस दिन वहाँ अधिक देर नहीं ठहरे। लिबिदेव ने देखा, उनका मन कुछ उचाट सा था। वे कुछ परेशान से नज़र आरहे थे। इस लिये उसने अन्य कोई बात न की। विदा होते समय केवल इतना ही कहा, "आपकी यात्रा की सफलता की मैं तहेदिल से कामना करता हूँ।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ उसी दिन रात्रि में मद्रास से चल पड़े। पूना की यात्रा काफ़ी लम्बी थी। यात्रा पानी के रास्ते से की।

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ एक महीना पूना में रहे परन्तु उन्हें श्रीरंगपट्टन से कोई समाचार न मिला।

नज़मा बोली, "मेरा क़यास ठीक निकला। सुलतान ने हमारे सुझाव की अहमियत को नहीं समझा। इसी लिये मैंने श्रीरंगपट्टन जाने के लिये इङ्कार कर दिया था।"

"तुम्हारा ख़याल ठीक निकला बेग़म ! अब हम सोचते हैं कि हमारा यहाँ ठहरना भी बेसूद है। तुम कहो तो एक बार नाना साहब से मुलाक़ात करके देखलें। मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त वाली बात है, फिर भी जब यहाँ आये ही हैं तो मिलने में भी कोई नुक़सान नहीं है।"

"मिल लीजिये, लेकिन मिलने से फ़ायदा कुछ नहीं है।"

"तुम भी चलो बेग़म !"

नज़मा हँसकर बोली, "चलिये, मैं भी चली चलती हूँ। बड़ा नाम सुना है नाना साहब का। मुलाक़ात ही करती चलूँ। फिर यहाँ कब-कब आना होगा ? शायद ज़िन्दगी में फिर मौक़ा ही न मिले।"

मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा ने उस दिन संध्या को नाना फड़नवीस के उस दूत का पता लगाया जो उनके पास कलकत्ते आया करता था। उसे साथ लेकर नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ दूसरे दिन नाना फड़नवीस से भेंट करने गये। नाना साहब ने उन्हें आदरपूर्वक अन्दर बुलाया और परिचय प्राप्त किया।

नाना फड़नवीस ने मोहम्मदरज़ाखाँ की ओर बड़े ध्यान से देख कर कहा,"आपने हमारे दूतों को जो समाचार दिये, उनके लिये हम आपके कृतज्ञ हैं।"

आपके दूतों को जो ख़बरें मिलीं उन्हें हासिल करनेवाली हमारी बेग़म हैं, मैं नहीं।"

नाना फड़नवीस ने नज़मा की ओर और भी ध्यान से देखा और फिर मोहम्मदरज़ाखाँ से बोले, "नवाब साहब ! क्या आपके कलकत्ते के जीवन से पहिला भी आपका कोई परिचय है ?"

मोहम्मदरज़ाखाँ हँसकर बोला, "नाना साहब ! तवारीख़ी वाक़यात तो दरअसल वे ही हैं। आपके दूत ने जो इत्तला दी,

उसका तवारीख़ से कोई वास्ता नहीं है। यह तो उस वक्त की कारगुज़ारी है जब तवारीख़ी मोहम्मदरज़ाख़ाँ फाँसी के तख्ते पर खड़ा हो चुका था। बेग़म ने अपनी होशियारी से हमारे गले का फंदा किसी तरह निकलवा दिया और मैं आप लोगों की कुछ ख़िदमत करने के लिये बच गया।

मालूम नहीं कैसे आपके और सुलतान हैदरअली के दूतों ने मेरा पता-ठिकाना खोज निकाला और मुझसे जो ख़िदमत बन सकी, मैंने करदी।"

"क्या सुलतान हैदरअली को भी आप ही समाचार देते रहे हैं ? इसी लिये शायद उन्हें अपने कामों में इतनी कामयाबी हासिल हुई।"

"कामयाबी तो उन्होंने अपने क़ूवतेबाज़ू से हासिल की। ख़ादिम की ख़बरों से भी हो सकता है उन्हें कुछ इमदाद मिली हो।"

"अच्छा एक बात बतलाइये नवाब साहब ! आप तो लार्ड क्लाइव के ख़ास दोस्तों में से थे। फिर आप अंग्रेज़ों के इस क़दर दुश्मन कैसे होगये ?"

नज़मा मुस्करा कर बोली, "गुस्ताखी मुआफ़ फ़रमाई जाये नाना साहब ! आपके इस सवाल का जवाब मैं देती हूँ।"

"अवश्य बेग़म ! आपमें और इनमें फ़र्क़ ही क्या है ?" नाना साहब ने नज़मा से कहा।

"आप जैसे सियासतदाँ के मुँह से इतना हलका सवाल सुनकर उसका जवाब देते इस नाक़िस औरत को कुछ शर्म सी आती है, लेकिन जब सवाल सामने है तो जवाब पेश करती हूँ। नवाब साहब की बदौलत अंग्रेज़-क़ौम को कुछ समझने का मुझे भी मौक़ा मिला और मैंने अपनी एक राय क़ायम की।"

"आपने क्या राय क़ायम की ?" नाना साहब ने पूछा।

"मैंने यह राय क़ायम की कि यह क़ौम निहायत बेमरव्वत, धोखेबाज़, चालाक और इन्सानियत से गिरी हुई है। इसके क़ौल-फ़ेल का ऐतबार करना बेवक़ूफ़ी है। जिसे यह दोस्त कहती है, उसी का गला साफ़ करती है। इसका दुश्मन ज़िन्दा रह सकता है, दोस्त नहीं।

मैंने अपनी इस नाक़िस राय का इज़हार उसी दिन कर दिया था जिस दिन लार्ड क्लाइव ने अपना दोस्ती का ज़हरीला हाथ इनकी ओर बढ़ाया था। मैंने उसी दिन उस दोस्ती के हाथ को फाँसी का फंदा समझ लिया था और उसके ख़तरे से इन्हें आगाह कर दिया था, लेकिन इन्होंने उस वक्त ख़ादिमा को भी अपने ऐतबार के क़ाबिल न समझा।

इनके ऊपर उस वक्त बंगाल की नवाबी का भूत सवार था, जिसका इनसे मेरे रूबरू लार्ड क्लाइव ने वायदा किया था। क्लाइव का वह वायदा कभी पूरा नहीं हुआ और उसके लालच में यह आँखें बन्द करके सरकारी ख़ज़ाने का रुपया उसकी ज़ाती जेब में भरते रहे।

एक दिन वह करोड़ों रुपया लेकर विलायत चला गया और इनपर ग़बन का मुक़दमा चलाया गया। यह मुख़तसिर सा क़िस्सा है। इसे मैंने इस लिये पेश नहीं किया है कि मैं इनकी तवारीख़ आपके सामने पेश करना चाहती हूँ। वह तो जो होना था सो होचुका। इन्हें टक्कर लगी और इनका दिमाग़ सही रास्ते पर आगया। उसके बाद यह कुछ थोड़ी-बहुत आपकी और सुलतान की ख़िदमत करसके या यूँ कहिये कि मादरे हिन्द की ख़िदमत कर सके, क्यों कि यह समझते हैं कि मादरे हिन्द की डूबती हुई कश्ती को मौजूदा तूफ़ान से बाहर निकालने वाली

इस वक्त हिन्दुस्तान में सिर्फ़ दो ही ताक़तें हैं, एक आप और दूसरे सुलतान"। इतना कहकर नज़मा चुप होगई।

नाना फड़नवीस बड़े ध्यान से नज़मा की ओर देख रहे थे। वह काफ़ी देर तक चुपचाप बैठे उसी तरह देखते रहे। फिर बोले, "इस वक्त आप लोग कहाँ से आरहे हैं?"

"मद्रास से।"

"आप लोगों को बंगाल छोड़े कितना समय होगया?"

"कई साल होगये।"

"इतने दिन कहाँ रहे?"

"श्रीरंगपट्टन में।"

"सुलतान के मरने से हमें ज़बरदस्त धक्का लगा।"

"बिला शक।"

नाना साहब फिर चुप होगये। वह काफ़ी देर तक कुछ नहीं बोले। "अब तो टीपू सुलतान की भी अंग्रेज़ों के साथ संधि हो गई है।"

"उससे पेश्तर आप सुलह कर चुके थे।"

"टीपू को हैदरअली के मरने के बाद हमारी और हैदरअली की संधि को क़ायम रखने का आश्वासन देना चाहिये था।"

"फ़रमाना बजा है आपका, लेकिन सुलहनामे की कोई शर्त तो उन्होंने नहीं तोड़ी। वह बराबर अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे करते रहे।"

"यह बात मैं स्वीकार करता हूँ परन्तु उस जंग को मैं इकतरफ़ा कार्यवाही मानता हूँ। उसके ऊपर मैं अपनी नीति की बुनियादें कैसे क़ायम कर सकता था? मेरे सामने अपनी भी समस्यायें थीं।"

"इसे सुलतान की ग़लती ही अगर मान लिया जाये, तब भी

तो सुलतान हैदरअली के मरने के बाद यह ज़िम्मेदारी आप पर आयद होती थी कि आप टीपू सुलतान की सरपस्ती करते। टीपू सुलतान आपके दोस्त का नातजुरबेकार लड़का है। क्या उसे सही रास्ता बतलाना आपका फ़र्ज़ नहीं था ?"

"क्या बातें करती हो बेग़म ! ये घर-गृहस्थी की बातें नहीं हैं, राजनीति की बातें हैं। इनमें इस तरह की भावुकता से काम नहीं चलता है।"

नज़मा ने अपने मन में अपनी बात को बुद्धि की तराज़ू पर तोलकर देखा तो वास्तव में वह उसे हलकी प्रतीत हुई। परन्तु फिर ज़रा उभर कर बोली, "ग़ैर के सामने अपने को तरजीह देना क्या सियासत की ग़लती शुमार की जायेगी नाना साहब ? आख़िर यही तो वह बुनियाद थी जिसे आपने सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ मराठा सरदारों के विश्वासघात करने पर भरा था और अंग्रेज़ों को दक्खन से निकालकर बाहर करने का अहद किया था। वह अहद कहाँ गया ? क्या सुलतान हैदरअली की लाश के साथ आपका वह अहद भी उनकी कब्र में दफ़ना दिया गया ?"

नाना फड़नवीस नजमा की बात का उत्तर न देसके। उन्हें लज्जित होना पड़ा।

नज़मा फिर बोली, "नाना साहब ! हम लोग तो उस लुटे-पिटे इलाक़े के बाशिन्दे हैं जो एक तरह से अंग्रेज़ों का होचुका। हम लोगों की नजरों ने अंग्रेज़ों के वे-वे जुल्म देखे हैं जिनका आप अभी क़यास भी नहीं कर सकते। लेकिन जो हालत मैं देख रही हूँ उसमें पामाली से वचना आप लोगों का भी मुश्किल ही नज़र आता है।

निज़ाम हैदराबाद को मैं मुर्दा समझती हूँ। वह एक तरह

से अंग्रेज़ों की ग़ुलामी क़ुबूल करचुका। मराठा-मण्डल में अभी कुछ स्वाभिमान शेष है। समय रहते यदि आप और सुलतान आपस में मिलकर इस ख़तरे का सामना करें तो मुमकिन है ख़तरा टल जाये।"

"क्या टीपू सुलतान का यह फ़र्ज़ नहीं है कि वह हमसे आकर मिले?" नाना फड़नवीस ने कहा।

"इस वक्त फ़र्ज़ की बात नहीं है। आप जैसे सियासतदाँ को मेरा समझाना कोई मायने नहीं रखता। आख़ीर में मैं अपनी वही बात फिर दोहराती हूँ कि अंग्रेज़-क़ौम निहायत मतलब-परस्त, धोखेबाज़ और इन्सानियत से गिरी हुई है। इसके क़ौल-फ़ेल पर ऐतबार करना दानिशमन्दी नहीं। इसकी दोस्ती दुश्मनी से ज़ियादा ख़तरनाक है। आगे आप जानें। हम लोग तो उस लुटे-पिटे इलाक़े के रहने वाले हैं जो इन ज़ालिमों के चंगुल में फँस चुका है। आप लोगों पर कुछ उम्मीद रखकर हम लोगों ने इधर आने की जुरत की है और जो ख़िदमत बन पड़ी है, वह कर रहे हैं।"

"तो क्या अब आप लोग यहाँ से कलकत्ता जायेंगे?"

"हमारा ख़याल यहाँ से दिल्ली जाने का है। वहाँ शाहआलम से मुलाक़ात करके हम लखनऊ जायेंगे। लखनऊ की बेग़मों को जब से लूटा गया है तब से हम लोग उनसे मुलाक़ात नहीं करसके हैं। इन्सानियत के नाते हमदर्दी का इज़हार करना हमारा फ़र्ज़ होजाता है।

वहाँ से इलाहबाद, बनारस, मुर्शिदाबाद होकर कलकत्ता लौटजायेंगे।"

नाना फड़नवीस के कहने पर नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ पूना में लगभग एक मास और ठहरे परन्तु पंडित कृष्णराव या

टीपू सुलतान का उन्हें कोई संदेश तबतक भी न मिला। आख़िर निराश होकर उन्होंने दिल्ली के लिये प्रस्थान किया।

नाना फड़नवीस ने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि टीपू सुलतान की ओर से उनके पास कोई संधि-प्रस्ताव आयेगा तो वह उस पर विचार करेंगे।

सतरह

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ पूना से विदा होने लगे तो नाना फड़नवीस ने उन्हें एक लाख रुपया भेंट स्वरूप देकर कहा, "बेग़म ! तुमने हमें जो सूचानायें दीं, वे बहुत महत्वपूर्ण थीं। विशेष रूप से तुमने सिंधिया और भोंसले के विषय में हमें जो सूचना दी थी, उनका मूल्य हम नहीं देसकते। अगर वह सूचना हमें न मिलती तो हम धोखे में रहते और गॉडार्ड को पूना पर आक्रमण करने का अवसर मिल जाता। हम तुम्हारे आभारी हैं।"

नज़मा बोली, "नाना साहब की यह भेंट हमें स्वीकार है लेकिन अगर यह हमारी ख़िदमत का मेहनताना है तो हमें लेने से इन्कार है, क्यों कि वह काम हमने अपने वतन की आबरू बचाने के लिये किया था, दौलत हासिल करने की नीयत से नहीं।"

"नहीं बेग़म ! मैं पहिले कह चुका कि उसका मूल्य हम नहीं देसकते। यह तो पेशवा की ओर से पुरस्कार है। इसे स्वीकार करने में तुम्हें संकोच नहीं होना चाहिये।"

नज़मा ने आगे बढ़कर भेंट स्वीकार की और उसी दिन पूना से चल दिये।

पूना से वे बम्बई गये। वहाँ दस दिन ठहरे। वहाँ का रंग-ढंग देखा। बम्बई से नासिक, खण्डवा, इन्दौर, रायगढ़ होकर ग्वालियर पहुँचे। ग्वालियर में उन्होंने महारानी अहिल्याबाई से भेंट की।

ग्वालियर से आगरा आये। आगरे में लगभग एक सप्ताह ठहरे। वहाँ का क़िला और ताजबीवी का रोज़ा देखा, फ़तहपुर सीकरी की सैर की। फ़तहपुर सीकरी में जब वे बुलन्द दरवाज़े को देखने के लिये चढ़े और वहाँ के मौलवी ने उस दरवाज़े की बुलन्दी का बयान किया तो नज़मा की आँखों में आँसू आगये।

"क्या बात है बेग़म ?" मोहम्मदरज़ाखाँ ने पूछा।

नज़मा आँखें पोंछ कर बोली, "सब बुलन्दी ख़ाक में मिल गई नवाब साहब! सब कुछ बेकार होगया। मुग़लिया सल्तनत की शान, वह शान जिसे बादशाह अकबर ने क़ायम किया था, मिट्टी में मिलगई।"

"बेग़म! टीपू ने इस वक्त ज़बरदस्त नातजुरबेकारी का सुबूत दिया। काश वह पूना आजाता तो मराठा और सुल्तान का सुलहनामा लिखा जाता। सुलतान के न आने से मेरा ख़याली पुलाव कच्चा रह गया। सब मज़ा ख़राब होगया। अब शाहआलम से भी बातें करने में मज़ा नहीं आयेगा।" मोहम्मदरज़ाखाँ के मस्तिष्क में वे ही बातें चक्कर लगा रही थीं।

नज़मा दर्द भरे स्वर में बोली, "क्या-क्या उम्मीदें लेकर हम कलकत्ते से चले थे, क्या सोच रहे थे और किस नाउम्मीदी के साथ वापस लौट रहे हैं। फिर भी मुलाक़ात तो करेंगे ही शहंशाह से। हम लोग भी ज़रा देखे तो सही वह कुतुब-मीनार

की बुर्जी से फिसलकर अब किस सीढ़ी पर खड़े हैं।"

मोहम्मदरज़ाखाँ बोले, "बात तो तुम्हारी सच है बेग़म! शहंशाह शाहआलम अपने साथ सारे हिन्दुस्तान को लेडूबा। औरंगजेब ने शहंशाह अकबर के सब किये-धरे पर पानी फेर दिया और फिर उसके बाद जो सिलसिला ख़राब हुआ तो बराबर बिगड़ता ही गया।

शाहआलम बहादुरशाह ने एक समझदारी का काम किया कि जज़िया ख़त्म करके जोधपुर नरेश अजीतसिंह राठौर को गुजरात का सूबेदार बना दिया।

बहादुरशाह के बाद जहाँदारशाह ने गद्दी सँभाली। वह निहायत निकम्मा, बदइख़लाक और बदचलन निकला। उसे एक साल बाद ही उसके भतीजे फ़र्रुख़सियर ने मार कर गद्दी हथियाली।

फर्रुख़सियर जहाँदारशाह से भी ऐशपसंद, बदचलन, निकम्मा और क़ातिल क़िस्म का बादशाह था। उसने दरबार के ख़ैरख़ाह ज़ुलफ़िक़ारखाँ जैसे सरदारों और दरबारियों को कत्ल करा दिया?"

"कत्ल करा दिया!"

"हाँ बेग़म! उसने एक और निकम्मा काम यह किया कि सिक्खों के सरदार बन्दा बैरागी को उसके एक हज़ार साथियों के साथ क़त्ल कराकर सिक्खों को हमेशा के लिये अपना दुश्मन बना लिया। उसने हिन्दुस्तान के साथ एक और ज़बरदस्त ग़द्दारी की।"

"वह क्या?" नज़मा बड़े ध्यान से सुन रही थी। दोनों बुलन्द दरवाज़े के अन्दर जाकर चौक में संगमरमर की चौकी पर बैठ गये। उनके पास लगे फव्वारे की छींटें कभी-

कभी हवा में उड़कर उनके ऊपर तक छितरा जाती थीं।

"बेग़म ! उस बेवक़ूफ़ ने अंग्रेज़ों से चार-पाँच लाख रुपया लेकर सरहदी महसूल मुआफ़ कर दिया। यह सब काम उसने अब्दुल्ला और हुसैनअली (सैयद भाइयों) के मशवरे से किया और उन्होंने ही मौक़ा पाकर उसे गद्दी से उतार दिया।"

"और खुद गद्दी हथियाली ?" नज़मा ने पूछा।

"नहीं बेग़म ! उन्होंने नेकुसियर, रफ़ीउद्दौलत और रफ़ीउद्दरजात तीन शहज़ादों को गद्दी पर बिठाया और कुछ-कुछ दिन बाद तीनों को ख़त्म करा दिया। उनके बाद सैयद भाइयों ने फ़र्रुखसियर के चचेरे भाई मुहम्मदशाह को गद्दी पर बिठाया। उसने तख्त पर बैठते ही हुसैनअली को क़त्ल करवा दिया और अब्दुल्ला को क़ैद में डलवा दिया।"

"इसका मतलब है मुहम्मदशाह ने बादशाह बनाने वाले सैयद भाइयों का ही खात्मा कर दिया।"

"हाँ बेग़म ! मुहम्मदशाह ने सैयद भाइयों को तो दबा दिया लेकिन वह मुग़ल-सल्तनत को क़ायम न रख सका। सूबेदार उस पर हावी होगये। निज़ामुलमुल्क हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाकर अलग होगया, सआदतखाँ ने अवध पर कब्ज़ा कर लिया। बंगाल अलीवर्दीखाँ के हाथों में चला गया और रुहेलों ने अपना अलग राज क़ायम कर लिया। सूरजमल जाट ने भरतपुर और उसके आस-पास के इलाक़े को दबा लिया। उसी समय बुन्देलखण्ड में छत्रसाल, गुजरात और मालवा में राजपूतों और पूरब में उड़ीसा से लेकर चम्बल और गुजरात तक मराठों की ताक़त बढ़ गई। मुग़लिया सल्तनत बालू के महल की तरह ढहकर ज़मीन से मिलगई। उसी वक्त फ़ारस के बादशाह नादिरशाह दुर्रानी ने मुग़ल सल्तनत की

टूटती हुई कमर पर लात मार दी। वह ग़ज़नी, क़ाबुल और लाहौर होकर सीधा दिल्ली के क़रीब तक आपहुँचा। मुग़ल-सेना को उसने दो घण्टे में हराकर क़रीब बीस हज़ार सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। फिर दिल्ली में उसने जैसा कत्ले-आम कराया वैसा शायद ही कभी कहीं दुनियाँ के किसी तख्ते पर हुआ हो। नादिरशाह के सिपाही नौ घण्टे तक दिल्ली के निहत्थे बाशिन्दों को कत्ल करते और लूटते रहे।

नादिरशाह अट्ठावन दिन दिल्ली में ठहरा और वापस लौटते वक्त ऊँटों, खच्चरों और गधों पर शाही ख़ज़ाने को लदवाकर लेगया। कोहेनूर हीरा और तख्तेताऊस को भी वह उठाकर लेगया। मुग़ल सल्तनत तो पहिले ही टुकड़े-टुकड़े होचुकी थी। इस हमले से उसका ख़ज़ाना भी उसके हाथों से छिन गया।"

"इसका मतलब यह हुआ कि मुहम्मदशाह के ज़माने में मुग़लिया सल्तनत का आफ़ताब ग़रूब होगया।"

"बिलकुल बेग़म! और होता भी कैसे नहीं? मुहम्मदशाह को लोग रँगीला कहा करते थे। वह ज़नाने कपड़े पहिन कर दिल्ली के बाज़ारों में घूमा करता था। ऐसा बादशाह नादिरशाह के हमले को क्या रोक सकता था?"

"औरतों के कपड़े पहिन कर घूमा करता था! उसे शर्म नहीं आती थी यह हरकत करते हुए।" नज़मा ने पूछा।

"शर्म आती तो यह काम वह करता ही क्यों? जितनी दौलत उसके पास थी अगर उसे वह अपनी फ़ौजी ताक़त पर सर्फ़ करता और बादशाह बनकर राज करता तो क्या नादिरशाह कभी दिल्ली तक आने की ज़ुरत करता? ऐसे मौक़े पर उसे राजपूतों और मराठों की मदद लेनी चाहिये थी। लेकिन वह

तो अपने रंगीलेपन में मस्त था। सल्तनत की हिफ़ाज़त का ख़याल ही कहाँ था उसे ? वह तो अय्याशी में सराबोर था। उसे होश कहाँ था किसी चीज़ का ? उसे होश होता तो यह बरबादी ही क्यों होती ?"

"इसका मतलब यह हुआ कि मुग़ल बादशाहों ने ख़ुद अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारकर अपनी बरबादी की। ऐशपसंदी और अय्याशी में फँसकर सल्तनत कैसे चलाई जासकती थी ?"

"हर्गिज़ नहीं चलाई जासकती थी बेग़म ! इसीलिये तो वह चल नहीं सकी। मुहम्मदशाह के बाद उसका लड़का अहमदशाह गद्दी पर बैठा। उसके ज़माने में नादिरशाह के अफ़ग़ानिस्तान के सूबेदार ने, जो नादिरशाह के मरने पर वहाँ का बादशाह बन बैठा था, हमला किया और पंजाब पर कब्ज़ा कर लिया। जब मुहम्मदशाह इस मुसीबत में मुबतला था तभी उसे गद्दी से बरतरफ़ करके उसकी जगह जहाँदरशाह के लड़के आलमगीर को बादशाह बना दिया गया। आलमगीर के ज़माने में अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली पर हमला किया। उसने अपने आक़ा की ही तरह दिल्ली-मथुरा को लूटा और उनपर कब्ज़ा कर लिया। उसने आलमगीर को मरवाकर शाहआलम को गद्दी पर बिठाया।

उस वक्त हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी ताक़त पेशवा की थी। अब्दाली ने शाहआलम को साथ लेकर एक ख़तरनाक खेल खेला बेग़म !"

"वह क्या ?"

"उसने मुसलमानों पर मज़हब का फाँसा फेंककर उन्हें अपने फन्दे में कस लिया और ये बेवक़ूफ़ उस ग़ैर मुल्क वाले दुश्मन के जाल में फँस गये। पानीपत के मैदान में मराठों के

साथ जग हुआ, जिसने मराठों की कमर तोड़दी। यही वह वक्त था जब महारजा नन्दकुमार मराठों, अवध के नवाब और बंगाल के नवाब का मेल कराकर बंगाल से अंग्रेज़ों को नेस्तोनाबूद करने का ख्वाब देख रहे थे। मुग़ल-बादशाह की उस बेवक़ूफ़ी ने महाराजा नन्दकुमार का बनाबनाया खेल ख़राब कर दिया।

पेशवा की इस हार के बाद सिंधिया, होलकर, भोंसले और गायकवाड़ अपने जुदा-जुदा राज बनाकर बैठ गये और मराठा-ताक़त भी टुकड़े-टुकड़े होगई।"

"इसी का फ़ायदा उठाकर अंग्रेज़ों ने बंगाल में अपनी ताक़त बढ़ाली। तब क्या अहमदशाह अब्दाली दिल्ली का बादशाह बन गया ?"

"नहीं बेग़म ! उसके सिपाहियों ने उसके साथ बग़ावत कर दी और उसे वापस लौटना पड़ा। उसके बाद शाहआलम ने किस तरह लार्ड क्लाइव को छब्बीस लाख रुपया सालाना पर बंगाल और बिहार की दीवानी सौंपी वह सब क़िस्सा तुम्हें मालूम ही है। वह सब तो तुम्हारी आँखों के सामने से गुज़रा है। वारेनहेस्टिंग्स ने गवर्नर जनरल बनते ही वह छब्बीस लाख रुपया देना बन्द कर दिया। अब शाहआलम सिर्फ़ नाम का शहंशाह रहगया है। न उसके पास कोई फ़ौजी ताक़त है और न सल्तनत। शाही ख़ज़ाना दुर्रानी और अब्दाली लेगये। इस ख़स्ता हालत में किस तरह दिन गुज़ार रहे होंगे यह तुम दिल्ली चलकर देख लेना।"

मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा फ़तहपुर सीकरी से आगरा आये और दूसरे दिन दिल्ली के लिये चल दिये।

दिल्ली को देखने की नज़मा की बड़ी इच्छा थी। उसने दिल्ली का बड़ा नाम सुना था। लेकिन जब दिल्ली को आकर

देखा तो उसकी आँखों में आँसू आगये। दिल्ली की रौनक़ उस वक्त कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, श्रीरंगपट्टन, पूना और यहाँ तक कि ग्वालियर से भी बदतर थी। शहर की बुलन्दी के खण्डहर अवश्य थे, लेकिन वर्तमान दशा कुछ नहीं थी। न बाज़ारों में रौनक़ थी और न दिल्ली के वाशिन्दों के चेहरों पर ताज़गी। जिधर भी नज़र घूम जाती थी, सब उजड़ा-उजड़ा नज़र आता था। शहर की चारदीवारी तक जगह-जगह से टूटी हुई थी। जो गिर गया था, वह गिरा पड़ा था। उसे कोई सँवारने वाला नहीं था।

नज़मा बोली, "नवाब साहब! यह सब क्या है? क्या यही मुग़लों की राजधानी है?"

"बेग़म! मैंने तुम्हें फ़तहपुर सीकरी में जो कुछ बतलाया था क्या यह उसीकी तस्वीर नहीं है? क्या मेरे बयान करने में तुम्हें कहीं कोई ग़लती दिखलाई दी?"

"क़तन नहीं नवाब साहब! हू-ब-हू वही इस वक्त मेरी आँखों के सामने मौजूद है जो आपने बयान किया था।

यहाँ का सब कुछ उजड़ चुका है। पुरानी आलीशान दिल्ली का खण्डहर सा दिखाई देरही है यह दिल्ली।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ ने दिल्ली-दरवाज़े से प्रवेश किया। एक लम्बा-चौड़ा मैदान उनके सामने था। दाँये हाथ पर कुछ मकानात नज़र आरहे थे। "बस्ती बाँई ओर मालूम देती है।"

"यही लगता है बेग़म! दाँये हाथ पर शहर की चारदीवारी है।"

मैदान में कुछ दूर और आगे बढ़े तो उनकी दृष्टि बाँई ओर एक आलीशान मस्जिद और दाँई ओर लाल क़िले पर

गई। नज़मा बोली, "मालूम देता है यही वह जामामस्जिद है जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था और इसके सामने यह लाल क़िला है।"

"तुम्हारा अन्दाज़ ठीक मालूम देता है बेग़म ! उसके सामने आदमीयों की भीड़-भाड़ दिखाई देती है।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। जब वे लाल क़िले के फाटक के सामने पहुँचे तो उन्होंने देखा कि बाँये हाथ पर एक नहर थी, जो दूर तक लम्बी चली गई थी। वे दोनों उस नहर के किनारे-किनारे हो लिये। कुछ दूर आगे बढ़कर नज़मा ने देखा, नहर के दोनों किनारों पर एक बाज़ार था रोनक कोई विशेष नहीं थी उसमें, परन्तु उसे देखकर यह लगता था कि वह बाज़ार कभी शानदार रहा होगा।

"शायद यही दिल्ली का चाँदनीचौक बाज़ार है बेग़म ! यह उजड़ा हुआ है इस वक्त लेकिन फिर भी ख़ूबसूरत है।"

कुछ दूर आगे बढ़े तो मोहम्मदरज़ाखाँ की दृष्टि एक आदमी पर गई। उसे देखकर वह वहीं रुक गया।

"आप रुक क्यों गये ?"

"उस नौजवान को देख रही हो बेग़म !"

"देख तो रही हूँ, लेकिन ग़लती न हो जाये इस लिये चुप रही। उसने भी एक बार हमारी ओर को बड़े ध्यान से देखा था, लेकिन फिर गर्दन फेर ली। चेहरा तो पहिचाना सा लगता है।"

"क्या यह महाराजा नन्दकुमार का छोटा भाई आनन्द-कुमार नहीं है ?"

"आपने ठीक पहिचाना। मैंने भी यही समझा था। चलिये, हम लोग उसके नज़दीक चलते हैं।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ आगे बढ़कर उस व्यक्ति के निकट पहुँच गये। वह नहर के किनारे लगे एक छायादार वृक्ष के नीचे दूसरी ओर मुँह किये खड़ा था। मोहम्मदरजाखाँ ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, "आनन्दकुमार !"

उस युवक ने गर्दन घुमाई और पहिचानने में एक क्षण का भी विलम्ब न करके बोला, "भाई मोहम्मदरज़ाखाँ साहब ! आप यहाँ कहाँ ?" फिर नज़मा की ओर देखकर बोला, "भाभीजान ! चलिये घर चलिये। बिलकुल नज़दीक ही है अपना घर।" युवक का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।

मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा, बिला एक शब्द कहे, आनन्दकुमार के साथ हो लिये।

"कहाँ से आना होरहा है ?" आनन्दकुमाद ने प्रश्न किया।

"बहुत दूर से आरहा हूँ आनन्दकुमार तुम ! यहाँ कब से हो ?"

"एक अर्सा होगया अब तो। भैय्या को जिस दिन अंग्रेज़ों ने फाँसी पर लटकाया था, उसी दिन मुर्शिदाबाद में हमारे घर को आग लगवादी गई थी और हमारी सब सम्पत्ति ज़प्त कर ली थी। परमात्मा की कृपा यही रही हम सब उस दिन कलकत्ते में थे, वरना हममें से एक भी ज़िंदा न बचता।"

"मकान को आग लगवादी और जायदाद ज़प्त करली ! ग़ज़ब कर दिया ज़ालिमों ने।" नज़मा के मुख से निकला। "उफ़ ! और तुमने इत्तला तक नहीं दी हमें।"

"इत्तला देने का समय ही कहाँ था भाभीजान ! हमने यदि उसी दिन कलकत्ता न छोड़ दिया होता तो शायद वहाँ से आना ही सम्भव न रहता।"

"क्यों ?"

"पुलिस हमारा पीछा कर रही थी। हमारे मुर्शिदाबाद के द्वारपाल ने हमें सूचित कर दिया था कि वहाँ मेरी खोज में एक अंग्रेज़ अफ़सर कई दिन से चक्कर लगा रहा है। मुझे वह सूचना न मिलती तो शायद मैं उनके हाथ आजाता।"

"तो तुम कलकत्ते से सीधे दिल्ली चले आये ?"

"और क्या करता ? वहाँ ठहरते तो हमें भी फाँसी पर लटका दिया जाता। मैंने भाभी को साथ लेकर उसी दिन रात्रि में कलकत्ता छोड़ दिया।"

"यह तुमने निहायत दानिशमन्दी का काम किया आनन्द-कुमार ! मैंने महाराजा नन्दकुमार को भी यही सलाह दी थी। अफ़सोस, उन्होंने मेरी बात पर ग़ौर नही किया।"

"मुझे सब कुछ मालूम है भाईजान ! भाई साहब अगर आपकी बात मानकर यहाँ चले आते तो हम लोग अपना सब रुपया-पैसा साथ लेआते। वह तो यह गनीमत समझिये की भाभी आभूषण कलकत्ता लेआई थीं क्यों कि भैय्या के मुक़दमे की पैरवी में रुपये की ज़ुरूरत थी। उन्हीं के सहारे हम यहाँ तक चले आये। वे न होते तो यहाँ आना भी कठिन हो जाता।

यहाँ आने के बाद जब मैंने अपनी स्थिति शहंशाह के सामने रखी तो उन्होंने मेरी बहुत सहायता की।"

"शहंशाह शाहआलम ने !" नज़मा के मुख से निकला।

"जी हाँ। उन्ही की बदौलत यहाँ हमने अपना खोया हुआ सब-कुछ पालिया। हम तो लगभग खाली हाथ ही आये थे यहाँ।"

नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ ने एक दूसरे की ओर आश्चर्य से देखा।

आनन्दकुमार मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा को साथ लेकर

घर पहुँचा तो महाराजा नन्दकुमार की पत्नी को उन्हें पहिचानने में एक क्षरण का भी विलम्ब न हुआ। उन्होंने आगे बढ़कर नज़मा को अपनी बाहुओं में भरकर कहा, "अरी नज़मा! तू यहाँ कहाँ?"

नज़मा बोली, "चली आई आपके दर्शन करने के लिये। आप तो हम लोगों को छोड़कर चली ही आईं, लेकिन हम आपको छोड़ने वाले नहीं हैं। देखिये खोज ही लिया हमने।"

"तुम आ कहाँ से रहे हो इस वक्त?" महारानी जी ने पूछा।

"बहुत दूर से आरहे हैं महारानी जी! जब कलकत्ते से मन ऊबा तो हमने सोचा चलो सैर कर आयें और जब सैर पर निकले तो कोई शहर बाक़ी नहीं छोड़ा हिन्दुस्तान का।"

"बड़ी ज़िन्दा दिल औरत है तू नज़मा! कौन-कौन से शहर देखे? कहाँ-कहाँ की सैर की? हिन्दुस्तान में तो अनगिनत शहर हैं। क्या सभी शहरों का चक्कर लगा आई?"

नज़मा हँसकर बोली, "यह न पूछिये महारानी जी कि कौन-कौन से शहर देखे! देखने के क़ाबिल सभी शहर देख लिये। मद्रास, बम्बई, अरकाट, श्रीरंगपट्टन, पूना, ग्वालियर, आगरा और अब दिल्ली में मौजूद हूँ आपके सामने। सैर करली न सारे हिन्दुस्तान की?"

"तूने तो सचमुच कमाल कर दिया नज़मा! क्या टीपू सुलतान और नाना फड़नवीस से भेंट करने गई थी दक्षिण-भारत में?"

"सिर्फ़ टीपू सुलतान से ही नहीं महारानी जी! सुलतान हैदरअली के भी दर्शन किये। पूना में नाना फड़नवीस और ग्वालियर में महारानी अहिल्याबाई के दर्शन किये। श्रीरंगपट्टन

में पंडित कृष्णराव से भेंट करके बहुत ख़ुशी हासिल हुई।"

"तू सब कुछ कर सकती है नज़मा! मैं तेरी योग्यता को तभी मान गई थी जब तूने नवाब साहब को फाँसी के तख्ते से उतार कर नीचे खड़ा कर दिया था।

तूने मेरा सुहाग बचाने का भी भरसक प्रयत्न किया था परन्तु महाराजा साहब जब स्वयँ ही आग में कूद पड़े तो कोई क्या कर सकता था ?"

वातावरण थोड़ा गम्भीर होगया।

नज़मा ने आनन्दकुमार के घर में इधर-उधर दृष्टि घुमाई तो समझने में विलम्ब न हुआ कि उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी। यह देखकर उसे बहुत ख़ुशी हुई। नज़मा बोली, "महारानी जी! महाराजा साहब अपने वतन की शान पर शहीद हुए हैं। उन्होंने अंग्रेज़ों की ज़लालत का पर्दा फ़ाश किया है। हिन्दुस्तान की तवारीख़ का वह पन्ना, जिसे महाराजा साहब ने अपने ख़ून की बूँदों से लिखा है, हमेशा-हमेशा के लिये अंग्रेजों की ज़लालत और हिन्दुस्तानियों की दिलेरी का सुबूत बना रहेगा।"

महारानी जी ने नज़मा के चेहरे पर शान्त दृष्टि से देखा। उन्होंने देखा नज़मा के शब्द-शब्द से उनके पति के प्रति अपार श्रद्धा और आदर की भावना टपक रही थी।

मोहम्मदरज़ाखाँ और आनन्दकुमार बाहर बैठक में बैठे थे। एक समय था जब आनन्दकुमार और मोहम्मदरज़ाखाँ मुर्शिदाबाद में रहते थे और लगभग नित्य ही उनकी परस्पर भेंट होती थी। जब तक मोहम्मदरज़ाखाँ के सिर पर नवाबी का भूत सवार नहीं हुआ था तब तक उसके महाराजा नन्दकुमार से बहुत अच्छे सम्बन्ध रहे।

आनन्दकुमार अक्सर मोहम्मदरज़ाखाँ के यहाँ आया करता

था और नज़मा से घण्टों बैठकर बातें किया करता था। नज़मा को उसकी भोली बातें बहुत अच्छी लगती थीं। वह कहा करती थी, 'आनन्द ! तू इतना बड़ा होगया और तेरा बचपना अभी तक नहीं छूटा।'

आनन्दकुमार कहता था, 'भाभीजान ! क्या मैं बच्चा नहीं हूँ आपकी नज़रों में ?'

नज़मा हँस देती थी और आनन्द को दुलार कर कहती थी, "मेरी नज़रों में तो तू उस वक्त भी बच्चा ही रहेगा जब तेरे बाल पक जायेंगे और दाँत गिरने लगेंगे। लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि तेरे अन्दर बुर्दबारी आये ही नहीं ?'

'भाभीजान ! जब तक बुर्दबार लोग सिर पर बैठे हैं तब तक मैं बुर्दबारी से अपना रिश्ता क्यों जोड़ूँ ? आपकी बुर्दबारी आपको बनी रहे। मुझे तो मेरा बचपना ही अच्छा लगता है।'

इसपर नज़मा हँसकर एक हलकी सी प्यार की चपत उसके गाल पर लगाकर कहती थी, 'बड़ी बातें बनानी जान गया है आनन्द ?'

जब आनन्दकुमार के विषय में ये सब बातें नज़मा के मन में चक्कर लगा रही थीं तभी आनन्दकुमार अन्दर आकर महारानी जी से बोला, "भाभी ! भाभीजान को देखा आपने। पूरे दस वर्ष बाद इन्हें देख रहा हूँ। ज़रा भी तो फ़र्क नहीं हुआ।"

नज़मा मुस्कुराकर बोली, "आनन्द ! तू अभी बच्चा-का-बच्चा ही रहा।" फिर महारानी जी की ओर मुँह करके पूछा, "महारानी जी ! आनन्द को कुछ अक्ल भी आई ?"

"अक्ल तो आही जाती है नज़मा ! जब किसी का सहारा खो जाता है तो उसे अक्ल से काम करना ही पड़ता है। मैं जब आनन्द को लेकर यहाँ आई थी तो सोच रही थी कि यह कुछ कर भी

पायेगा या नहीं। परन्तु नज़मा ! यहाँ आकर इसने जो अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाया उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रहगई।"

"क्या किया आनन्द ने ?"

"यह शहन्शाह शाहआलम से मिला और अपनी स्थिति उनके सामने रखी। रुपये-पैसे की तो बेचारे वह स्वयँ भी कठिनाई में थे क्यों कि शाही ख़ज़ाना तो दुर्रानी और अब्दाली लूटकर लेगये थे और जो अंग्रेज़ों का विश्वास करके बंगाल की दीवानी के अधिकार उन्हें देदिये थे, उसका रुपया हेस्टिंग्स ने भेजना बन्द कर दिया ?"

"फिर क्या मदद की शहन्शाह ने ?"

"उनके पास कुछ जवाहिरात थे, जो किसी तरह उस लूट से बच गये थे। वे सब उठाकर उन्होंने आनन्दकुमार को दे-दिये और कहा, 'मेरे पास बेटा ! इनके अलावा और कुछ नहीं है। इन्हें बेचकर तुम अपना काम चलाओ और मुझे भी अगर कुछ रुपया देसको तो देदेना।'

आनन्दकुमार उन्हें लेकर घर आया। यह बोला, 'भाभी ! मुझे शहन्शाह ने ये कुछ पत्थर दिये हैं। देखता हूँ मैं इनका क्या उपयोग कर सकता हूँ।'

मैंने उन्हें देखकर कहा, 'आनन्द ! ये तो बड़े मूल्यवान जवा-हिरात हैं। तुम इन्हें लेकर रजवाड़ों में चले जाओ। वहाँ इनका अच्छा मूल्य मिल सकता है।'

आनन्द राजस्थान जाने को उद्यत होगया। उस समय हम दो ही प्राणी थे। मैंने सोचा, मैं ही यहाँ अकेली रहकर क्या करूँगी। मैं भी इसके साथ चलदी।"

"कहाँ-कहाँ गई आप ? निज़ाम के पास चली जातीं तो सब

जवाहिरात वहीं बिक जाते। उसे जवाहिरात ख़रीदने का बड़ा शौक़ है।"

महारानी जी मुस्कराकर बोलीं, "हम पहिले राजस्थान गये परन्तु वहाँ कोई विशेष सफलता नहीं मिली। तब हम हैदराबाद गये। वहाँ आनन्द ने प्रशंसनीय कार्य किया। इसने निज़ाम से भेंट करके जब उसे यह बतालाया कि जवाहिरात शाहआलम के हैं तो उसने बड़ी शान से कहा, 'तुम सब लेआओ बेटा! हम सब ख़रीद लेंगे।'

निज़ाम ने इसे गौरवपूर्ण बात समझा कि वह शहंशाह के जवाहिरात ख़रीद रहा था। आनन्द ने उससे कहा, 'निज़ाम साहब! इन्हें केवल आप ही ख़रीद सकता। इसी लिये मैं सब रजवाड़ों को छोड़कर सीधा दिल्ली से यहाँ आया हूँ। शहन्शाह के जवाहिरात और कोई नहीं ख़रीद सकता।' आनन्द की यह बात सुनकर वह फूलकर कुप्पा होगया।

नज़मा हँसकर बोली, "गधा कहीं का। मुझे इस क़ौम के ग़द्दार से सख़्त नफ़रत है महारानी जी! इसी लिये मैंने इससे मुलाक़ात नहीं की। लेकिन दौलत बहुत है उसके पास। कितना रुपया लिया आनन्द ने?"

महारानी जी बोलीं, "जो माँगा सो देदिया उसने। हमने उस वक़्त पच्चीस लाख को ही बड़ी चीज़ समझा। हम पच्चीस लाख रुपया लेकर दिल्ली लौटे और उसमें से बीस लाख रुपया शहन्शाह को दिया। शहन्शाह की प्रसन्नता का पारावार न रहा। उन्होंने उसमें से दो लाख रुपये अपने आनन्द को और दिये। उस दिन से आनन्द को शाहआलम बड़ा प्यार करता है। इस तरह हमें सात लाख रुपये मिल गये। हमारी हालत सुधर गई नज़मा! हमने यह मकान ख़रीदा और आनन्द की शादी की।"

"लो, यह बात तो मैं पूछना ही भूल गई थी। बहू कहाँ है आनन्द की ?"

"यहीं पास में ही उसका मैका है। अभी भेजती हूँ आनन्द को, उसे लिवालाने के लिये। एक लड़का भी देदिया है परमात्मा ने। बड़े प्रसिद्ध जौहरी हैं दिल्ली के। बेचारे बड़े भले आदमी हैं। यह मकान उन्हींने दिलवाया था। उनका हमें बड़ा सहारा है नज़मा ! बहू भी ऐसी है कि लाखों में एक। तुम्हारी तरह गाना-बजाना भी वह ख़ूब जानती है। नाचती भी बहुत अच्छा है।" यह कह कर महारानी जी मुस्कराईं।

वह दिन बड़ा हँसी-ख़ुशी का गुज़रा। नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ को लगा मानो वे इतने दिन पश्चात् अपने ही परिवार में आगये।

अठारह

आनन्दकुमार के परिवार में मोहम्मदरज़ाखाँ और नजमा कुछ ऐसे घुल-मिल गये कि उन्हें कलकत्ता जाना याद ही न रहा। दस-पंद्रह दिन तो दिल्ली की सैर में ही निकल गये। कभी हुमायूँ के मक़बरे पर जारहे हैं तो कभी अब्दुर्रहीम खानखाना के मक़बरे पर। एक दिन निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह देखने गये तो दूसरा दिन जामा मस्जिद को ही देखने में निकल गया। दो-तीन दिन दिल्ली के बाज़ारों की सैर करते रहे।

आनन्दकुमार ने शाहआलम से इनके आने का ज़िक्र किया तो उन्होंने विशेष रूप से इन्हें बुलवाया। बादशाह से भेंट करने के लिये मोहम्मदरज़ाखाँ और नज़मा दोनों लालक़िले में गये। उन्होंने देखा लालक़िले की हालत भी वैसी नहीं थी जैसी शाहजहाँ या औरंगज़ेब के ज़माने में रही होगी, लेकिन फिर भी उसमें रौनक़ थी। आलिम लोगों की वहाँ महफ़िलें लगती थीं। मुशायरों का ज़ोर था। नृत्य और संगीत का भी शाहआलम को शौक़ था और एक नई चीज़ जो आनन्दकुमार ने उन्हें दिखलाई, वह था रंगमंच।

"यहाँ क्या है?" नज़मा ने पूछा।

"यहाँ कभी-कभी नाटक खेले जाते हैं।"

यह सुनकर नज़मा मुस्कराई। फिर बोली, "इसका मतलब है कि शहंशाह ने अपनी सल्तनत का दाहिरा सिर्फ़ इन्ही चीज़ों तक महदूद कर दिया है।"

"इसमें कोई संदेह नहीं है भाभीजान! अब तो हमारे शहंशाह सिर्फ़ नाम के शहंशाह रह गये हैं बेचारे। कोई सल्तनत तो रही नहीं इनके पास। जो कोई आता है, उससे दस-पाँच लाख रुपया लेकर वह जो चाहता है यह लिखकर अपनी मोहर लगाकर देदेते हैं। इसी से इनका ख़र्च चल रहा है। मुग़लिया मोहर का अब यही काग़ज़ी मूल्य रहगया है। न इनके पास कोई फ़ौज है अपनी हिफ़ाज़त करने के लिये और न कोई सिपह-सालार। सूबेदार लोग सब आज़ाद होगये। उनमें से कोई अपनी ज़िम्मेदारी महसूस नहीं करता।"

"आज़ाद भी होगये और ग़ुलाम भी। वे ख़त्म भी होते जा रहे हैं आनन्द! यह आज़ादी बिखर कर एक दिन ज़बरदस्त ग़ुलामी में बदल जायेगी। फिर कौन पुर्साहाल होगा? बंगाल, बिहार, उड़ीसा को अंग्रेज़ दबा चुके, अवध का नवाब भी एक तरह से अंग्रेज़ों का ग़ुलाम सा ही है। राजपूतों में कोई ख़ुद्दार नहीं रहा, मराठे चार-पाँच ताक़तों में बट गये, निज़ाम बे पैंदी का लोटा है, अफ़गानिस्तान हाथों से जाता ही रहा, पंजाव में सिक्ख अपनी तूती बजाने का ख्वाब देख रहे हैं। टीपू सुलतान में कुछ ख़ुद्दारी नज़र आती है सो वह अकेला चना क्या भाड़ को फोड़ सकेगा? वह भी नातजुरबेकार है। बहादुर ज़ुरूर है लेकिन सिर्फ़ बहादुरी से ही तो सब काम नहीं चल जाते हैं।"

मोहम्मदरज़ाख़ाँ और नज़मा शाहआलम के दरबार में पहुँचे तो शाहआलम ने उनसे आदर और प्रेम-भाव से भेंट की। उनका ख़याल था कि ये लोग कलकत्ता या मुर्शिदाबाद से आये हैं।

उन्होंने पूछा, "कलकत्ते का क्या हाल है मोहम्मदरज़ाखाँ साहब! आजकल आपके कैसे ताल्लुक़ात चल रहे हैं अंग्रेज़ों से?"

"मैं तो एक अर्सा हुआ सियासत को ख़ैरबाद कर चुका हुज़ूर! लार्ड क्लाइव के ज़माने तक सियासत में कुछ दख़ल रहा। उसके बाद हालात बदल गये। मैंने भी अपना रास्ता बदल लिया।"

"हाँ-हाँ मुझे सब कुछ मालूम है। लार्ड के ज़माने में तो आप की ही तूती बोलती थी बंगाल में। सब कुछ आपके ही हाथों में छोड़ा हुआ था लार्ड ने। भाई कुछ भी सही, लार्ड क्लाइव बुरा आदमी नहीं था। हमारी तो उसके ज़माने में पाई-पाई यहाँ आती रही। हेस्टिंग्स नामाक़ूल निकला। उसने लार्ड क्लाइव के मुआयदे की कोई क़द्र नहीं की। हमें अंग्रेज़ों से यह उम्मीद नहीं थी कि जिन्हें हमारे वालदैन ने और हमने इतनी रियायतें दीं, वे हमारे साथ ऐसा बरताव करेंगे।"

सब कुछ जानकर भी नजमा ने पूछा, "क्या हेस्टिंग्स ने अपने मुआयदे के मुताबिक़ आपको रुपया नहीं भेजा?"

"एक कौड़ी नहीं बेग़म! एक कौड़ी भी तो नहीं। पाँच करोड़ की रक़म उनके नाम पर खड़ी है और एक कौड़ी देने का नाम नहीं लेता। आँखें दिखलाता है बदमाश! कहता है सल्तनत ही अंग्रेज़ों की होगई। बेवक़ूफ़ कहीं का। हमारे वालदैन की सल्तनत, जिसे उन्होंने क़ूवते बाज़ू से हासिल किया था, इन बदमाशों की कैसे हो सकती है?"

"होनी तो नहीं चाहिये।"

"हो भी नहीं सकती बेग़म! हमने इस क़िस्म का कोई फ़रमान जारी नहीं किया है। यह ग़लतफ़हमी है उसके दिमाग़ की। हमारा ख़याल था कि सिर्फ़ हेस्टिंग्स ही इस ग़लतफ़हमी में मुबतला है, लेकिन हम देख रहे हैं कि कॉर्नवालिस भी वही बेव-

कूफ़ी कर रहा है। हमने बंगाल में दो अमली हुकूमत क़ायम की थी। हेस्टिंग्स ने उसे एक अमली बना लिया। आख़िर उसने ऐसा किसके हुक्म से किया? अगर हम अपने अहदनामे को मंसूख़ करदें तो उसकी यह एक अमली रखी रहजायेगी।" शाहआलम बहुत गम्भीर मुद्रा में बातें कर रहे थे।

"आप कर तो सब-कुछ सकते हैं शहंशाह! लेकिन जो कुछ आप करेंगे उसपर अमल दरामद कराने के लिये ताक़त चाहिये। वह ताक़त है आपके पास?"

"बस यही तो एक कमी है बेग़म! ताक़त होती तो क्या हेस्टिंग्स एक अमली हुकूमत क़ायम कर सकता था? एक से लाख तक नहीं कर सकता था। वह ऐसा करने की जुरत भी न करता।"

"यह कमी आपको पूरी करनी चाहिये शहंशाह!" बेग़म ने कहा। "आपको अपनी ताक़त बढ़ानी चाहिये।"

"करनी तो चाहिये बेग़म! लेकिन की कैसे जाये? यही तो मुश्किल है। शाही ख़ज़ाना ख़ाली है। इसके लिये फ़ौज की ज़ुरूरत है और फ़ौज बिला पैसे के खड़ी नहीं की जासकती।"

"आप इरादा करें तो क्या नहीं कर सकते? आपके जिस ख़ज़ाने को नादिरशाह दुर्रानी और अहमदशाह अब्दाली लूटकर लेगये उसे आप फिर भर सकते हैं। दौलत हालाँकि काफ़ी लुट चुकी है हिन्दुस्तान की, फिर भी हमारी ज़मीन को तो कोई उठाकर नहीं लेगया है। हमारी ज़मीन और दौलत उगलेगी और उस कमी को पूरी करदेगी। लेकिन अगर आप ग़ैर मुल्क वालों के हाथों में खेलते रहे और अपनों को उनसे लुटवाते और कमज़ोर कराते रहे तो एक दिन वह आयेगा जब सिर धुनकर पछताने के अलावा और कुछ बाक़ी न रहेगा।"

"तुम हमारी ग़लतियों की ओर इशारा कर रही हो बेग़म ! ग़लतियाँ हमने वाक़ई बहुत जबरदस्त की हैं। अहमदशाह अब्दाली ने हमसे ख़तरनाक खेल खेला। उसने पेशवा को हमारा ज़िन्दगी भर के लिये दुश्मन बनवा दिया। दूसरी ग़लती हमसे तब हुई जब हमने अपने बज़ीर शुजाउद्दौला को धोखा दिया और हम लार्ड क्लाइव की बातों में आगये। उस वक्त अगर हम शुजा-उद्दौला का साथ देते तो वह और मीरक़ासिम क्लाइव को शिकस्त देसकते थे। अपनी उसी ग़लती की वजह से हमें बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी हुक़ूक अंग्रेज़ों को देने पड़े। लेकिन बेग़म ! ये सब ग़लतियाँ हमसे रुपये की कमी में ही हुईं।"

"शहन्शाह ! क्या आपने कभी यह भी सोचा कि आपने रुपया हासिल करने के लिये अपने रुपया हासिल करने के ज़रियों को ही अपने हाथों से खोदिया। शहन्शाह बाबर के पास कौन सी दौलत थी, जिससे उन्होंने अपनी सल्तनत क़ायम की और शहन्शाह अकबर के पास क्या था जब वह तख़्तनशीन हुए ? वह दौलत जो आपके ख़ज़ाने से लुटी वह उनकी अपनी ही तो इकट्ठा की हुई थी।

सियासत में दोस्तियाँ बनती और बिगड़ती रहती हैं। पेशवा के वज़ीर नाना फ़ड़नवीस बहुत आलिम और समझदार आदमी हैं। आपको उनसे मदद लेनी चाहिये। आप उनसे मदद माँगेंगे तो कोई वजह नहीं है कि वह आपकी इमदाद न करें।"

"नाना फड़नवीस की क़ाबलियत के बारे में तो हमने भी बहुत-कुछ सुना है बेग़म ! लेकिन उसने तो ख़ुद अंग्रेज़ों से सुलह की हुई है। वह उनके ख़िलाफ़ हमारी क्या मदद करेगा ?"

"आप चाहें तो सब-कुछ मुमकिन होसकता है। आप टीपू सुलतान और नाना फड़नवीस का मेल कराकर निज़ाम से अपनी

दौलत छीन सकत हैं। आख़िर वह मुग़लिया सल्तनत की ही तो दौलत है, जिसे वह दबाकर बैठ गया है।"

"है तो सब हमारी ही बेग़म! लेकिन उसे हासिल करना भी तो आसान नहीं है।"

"यह क्या कहने लगे शहंशाह? क्या दुनियाँ का ऐसा कोई काम है जिसे इन्सान नहीं कर सकता? हिम्मतेमर्दां मददे ख़ुदा। इरादा कीजिये, रास्ता निकल आयेगा।"

"तुम बड़ी आलिमाना बातें करती हो बेग़म! हमपर तुम्हारी बातें जादू का सा असर कर रही हैं। हम ग़ौर करेंगे तुम्हारी बातों पर।"

उस दिन शहंशाह से इतनी ही बातें हुईं। फिर और इधर-उधर की बातें होने लगीं। अपनी दक्षिण-भारत की यात्रा का बेग़म ने उस वक्त कोई ज़िक्र नहीं किया।

आनन्दकुमार मोहम्मदरज़ाखाँ और नजमा के साथ घर लौटा तो उसने अपनी भाभी से कहा, "भाभी जी! आज तो भाभीजान ने शहंशाह से बहुत बड़ी-बड़ी बातें कीं। मैं तो समझता था कि यह गाना-बजाना ही जानती हैं। मैं तो आज इनकी बातें सुनकर आश्चर्यचकित रहगया।"

"आनन्द! नजमा को समझना बड़ा कठिन है। यह बड़ी ही समझदार और नेकदिल औरत है। राजनीति में इसका आरम्भ से ही प्रवेश रहा है। उस समय भी जब मोहम्मदरज़ा-खाँ अंग्रेज़ों का बड़ा भक्त था, यह अंग्रेज़ों को धोखेबाज़ समझती थी। इसने अंग्रेज़ों का कभी यक़ीन नहीं किया।

मुझे याद है आनन्द! जब नवाब नज़मुद्दौला को विष दिया गया था तो नजमा ने मुझसे स्मष्ट शब्दों में कहा था कि इस कार्य में मोहम्मदरज़ाखाँ का हाथ है।

"तो क्या इन्हें पहिले से मालूम नहीं था कि ऐसा षडयंत्र होने वाला है ?" आनन्दकुमार ने पूछा।

"जब ये लोग कलकत्ते से आये थे तो नज़मा के मस्तिष्क में यह बात थी और इसी लिये जब लार्ड क्लाइव मुर्शिदाबाद आया तो नज़मा ने दो दिन तक नवाब के महल की निगहबानी की परन्तु जब कोई घटना न घटी तो यह निश्चिन्त होगई। इसने समझ लिया कि जल्लादों ने नवाब को बख्श दिया। नज़मा समझने में थोड़ी भूल करगई और सबसे बड़ी भूल नवाब ने की कि वह क्लाइव के डेरे पर चला गया। उसे जशन से अपने महल को वापस लौट आना चाहिये था।"

"क्या ख़ुफ़िया बातें हो रही हैं देवर भाभी की ? देखो भाई हमारे ख़िलाफ़ कोइ साज़िश न करना महारानी जी !"

महारानी जी हँसदीं नज़मा की बात सुनकर। वह बोलीं, "नज़मा ! षडयंत्रों की दुनियाँ में रहते-रहते तुम्हारा ध्यान हर समय उन्ही में उलझा रहता है। महाराजा साहब के समय में मेरा घर भी चौबीसों घण्टे राजनीतिज्ञों का अखाड़ा बना रहता था। तुम तो जानती ही हो नज़मा ! मैं उन दिनों भी इन बातों से कितनी परेशान रहती थी।

दिल्ली आकर मैंने जो अपनी नई दुनिया बसाई है, वह इन षडयंत्रों से अलग की दुनिया है। आनन्द की बहू तुमने देखी, कितनी भोली है। बड़ी सुशील लड़की है। उसी को लेकर मैंने इस गृहस्थी का नये दृष्टिकोण से आरम्भ किया है। इस शान्त वातावरण में दो क्षण शान्ति से भगवान् का नाम लेने को मिल जाते हैं।"

नज़मा प्रसन्न होकर बोली, "सचमुच महारानी जी ! आपने इस घर का ढाँचा ही बदल दिया। यह सब देखकर मुझे

दिली खुशी हासिल हुई। बहू कहाँ है ?"

"आती ही होगी। उसकी माताजी ने बुलवा लिया था। अकेली लड़की है अपने माता-पिता की। उनका भी यही सहारा है। चलती-चलती कहगई थी कि तुम्हारे लौटते ही मैं उसे बुलवा लूँ। लगता है तुमने मेरी बहू पर कुछ जादू कर दिया है। तू सचमुच जादूगरनी है नज़मा !"

नज़मा ख़ूब हँसी, ख़ूब हँसी। फिर बोली, "महारानी जी ! बंगाल की रहनेवाली हूँ। बंगाल का जादू तो पुराने ज़माने से मशहूर है। बंगाल के रहनेवालों को इसके अलावा और आता ही क्या है ?"

सब लोगों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। तभी आनन्दकुमार की बहू भी आगई। उसके आने पर घर का वातावरण और भी स्निग्ध होउठा।

मोहम्मदरज़ाखाँ बैठक में बैठा-बैठा खिड़की से इस मधुर वार्तालाप का आनन्द लेरहा था।

दूसरे दिन प्रातःकाल सब लोग जलपान करके बैठे ही थे कि शहंशाह का क़ासिद आनन्दकुमार के मकान पर आपहुँचा। आनन्दकुमार उसे आदरपूर्वक अपनी बैठक में लिवाकर लाया। उसने कहा, 'जौहरी जी ! आपके यहाँ मोहम्मदरजाखाँ नाम के जो मेहमान कलकत्ते से तशरीफ़ लाये हैं, उन्हें और उनकी बेग़म साहिबा को बादशाह सलामत ने याद फ़रमाया है।"

"शहन्शाह से अर्ज़ कीजिये कि वे अभी कुछ देर बाद खिदमत में हाज़िर होंगे। बादशाह सलामत ने उन्हें दरबार में याद फ़रमाया है या महल में ?"

"महल में ही याद फ़रमाया है।" यह कहकर क़ासिद चला गया।

आनन्दकुमार मोहम्मदरज़ाखाँ से बोले, "भाभीजान को सूचना देदूँ। आप भी तब तक तय्यार होजायें।"

आनन्द कुमार ने अन्दर जाकर नज़मा को सूचना देते हुए कहा, "भाभीजान! भाभी जी ने कल सच ही कहा था कि आप जादूगरनी हैं।"

"वह कैसे आनन्द?"

"आपने शहंशाह पर भी जादू कर दिया।"

"क्यों, क्या क़ासिद आया है शहंशाह का?"

"वह तो लौट भी गया। अब तो आपको चलना है।"

नज़मा मुस्कराकर बोली, "शहंशाह सिर्फ़ शायर होने के ही क़ाबिल थे, तक्त पर बेकार इन्हें क़िस्मत ने लाकर पटक दिया। हुकूमत करना इनके बूते की बात नहीं है। यह ख्वाब की दुनियाँ में रहते हैं। मुगलिया सल्तनत आज ख्वाब नहीं तो और है क्या आनन्दकुमार? यह तो दीवालिये का बही खाता है, जिसमें देना-ही-देना है, लेना कुछ नहीं।"

"यह बात नहीं है भाभी! शहंशाह के पास सब कुछ है और जो नहीं है वह होसकता है। कमी इस बात की है कि इन्होंने अपने आपको ऐसे चाटुकारों के चंगुल में फँसा रखा है जो चौबीसों घण्टे इनके इर्द-गिर्द मँडराते रहते हैं।"

"सिर्फ़ यही बात नहीं है आनन्दकुमार! इनकी हिम्मत भी पस्त होचुकी है। जो आदमी इस क़दर अय्याशी और शराब का शिकार होजायेगा कि चौबीसों घण्टे उनमें मुब्तला रहे, वह हुकूमत नहीं कर सकता। फिर भी मैं इस मुर्दे में जान डालने की कोशिश करूँगी। दिल्ली आने का मेरा इस वक्त इसके अलावा दूसरा कोई मक़सद नहीं है।" नज़मा ने कहा।

महारानी जी नज़मा के ये शब्द सुनकर चकित रहगईं।

वह बोलीं, "क्या सच नज़मा ? क्या तू सचमुच दक्षिण-भारत से आरही है ? क्या तूने सचमुच टीपू सुलतान और नाना फड़-नवीस से भेंट की थी ?"

"क्या नज़मा ने कभी आपसे ज़िन्दगी में झूठ बोला है महा-रानी जी ? उस वक्त भी नहीं, जब महाराजा साहब की और नवाब साहब की जान-जान की बाज़ी लगी हुई थी।"

नज़मा की यह बात सुनकर महारानी जी की आँखों में आँसू आगये। वह बोलीं, "नज़मा ! तूने सचमुच वह कर दिखाया जो मुझसे एक दिन कहा था।"

नज़मा हँसदी। फिर बोली, "महारानी जी ! वह तो बहुत पुरानी बात होचुकी। इस बीच में तो नवाब साहब ने वे-वे काम किये हैं कि आप सुनेंगी तो हैरत होगी आपको। आप क़यास भी नहीं कर सकतीं कि नवाब साहब कभी ऐसे भी काम कर सकते हैं। यहाँ से जाने के पेश्तर मैं आपके सामने उन कारनामों को पेश करूँगी। इस वक्त ज़रा शहन्शाह से मुलाक़ात कर आऊँ। वह इन्तज़ार में होंगे।"

"अवश्य हो आओ नज़मा ! तुम्हारी राज़ की बातें मैं कभी नहीं समझ पाई। अब तो इन्हें समझने की शक्ति भी नहीं रही है मुझमें। राजासाहब की मृत्यु के पश्चात् तो कुछ ऐसी विक्षिप्त सी होगई हूँ कि मन कभी इस ओर जाता ही नहीं।"

नज़मा आनन्दकुमार की ओर देखकर बोली, "भय्या आनन्द ! नवाब साहब से कहो, तय्यार होजायें।"

"वह तो कभी के तय्यार बैठे हैं। आपकी प्रतीक्षा में हैं।"

"तो चलो।" कहकर नज़मा बाहर बैठक में आई और मोहम्मदरज़ाख़ाँ तथा आनन्दकुमार को साथ लेकर शाही महल की ओर चलदी।

ये लोग शहन्शाह के महल पर पहुँचे तो इन्हें बड़े आदर के साथ अन्दर लेजाया गया। शहन्शाह ने इन्हें मसनद पर बिठाया और आनन्दकुमार की ओर देखकर बोले, "आनन्दकुमार ! तुम वाक़ई जौहरी निकले। तुम सिर्फ़ पत्थरों के ही जौहरी नहीं हो, इन्सानी हीरे और जवाहिरातों की भी तुम्हें पहिचान है।"

नज़मा बोली, "आनन्द ने हम लोगों से आपकी जो तारीफ़ की, उससे मुग़लिया सल्तनत की शान और दरियादिली का सुबूत मिलता है।"

"इस नौजवान ने बेग़म ! हमें उस वक्त रुपया लाकर दिया जब हम सख्त मुसीबत में थे।"

नज़मा मुस्कराकर बोली, "जब तक आप अपना रुपया उन लोगों से वसूल नहीं करेंगे, जिनसे आपको लेना है, तब तक आपकी मुश्किल आसान नहीं हो सकती शहन्शाह !"

"तुम्हारी यह बात हमारी समझ में आती है। हमने रात तुम्हारी एक-एक बात पर ग़ौर किया। तुम्हारी हर बात बेश-क़ीमती है।"

"तो आप फ़ौरन अपने क़ासिद को कॉर्नवालिस के पास भेजें कि वह आपका रुपया अदा करे। इससे आपको उसकी नीयत का पता चलजायेगा ।"

"क्या तुम्हें अंग्रेज़ों की नीयत में बदी मालूम देती है बेग़म ?"

"सरासर ! मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है। बदी न होती तो वे रुपया न भेजते।"

शहन्शाह शाहआलम ने उसी समय वज़ीर माल को आदेश दिया कि वह कॉर्नवालिस के नाम परवाना जारी करे और अपना जो रुपया कम्पनी पर वाजिब है, उसे तलब करे।

वज़ीर माल ने उसी समय हिसाब देखकर परवाना जारी किया और शहन्शाह की मोहर लगाकर परवाना शहन्शाह के सामने हस्ताक्षरों के लिये पेश करदिया।

शहन्शाह ने हस्ताक्षर करके परवाना अपने दूत को दिया और तुरन्त कलकत्ता जाने की आज्ञा दी।

इस कार्य से निवृत्त होकर शहन्शाह ने पूछा, "अब हमें क्या करना चाहिये बेग़म ?"

नज़मा बोली, "अब आपको नाना फ़ड़नवीस और टीपू सुलतान के पास अपने क़ासिद भेजने चाहियें।"

"वह किस लिये ?"

"इस लिये कि अगर कार्नवालिस आपका रुपया भेजने में आनाकानी करे, जैसी कि मुझे उम्मीद है वह करेगा, तो आप इन दोनों से मदद लेकर अपना रुपया वसूल करने की तदबीर सोच सकें।"

शाहआलम कुछ सोच में पड़गये।

"क्या मेरी सलाह आपको माक़ूल नहीं मालूम दी ?"

"माक़ूल तो है लेकिन सोचता हूँ कि क्या मराठे मेरा साथ देंगे ?"

"देंगे क्यों नहीं ?"

"मैं अहमदशाह अब्दाली के चक्कर में आकर जो ग़लती कर चुका हूँ बेग़म ! उससे मेरा सिर ऊपर को नहीं उठता।

क्या उस ग़लती के बाद भी मराठे मेरा साथ देने को राजी होसकते हैं ?"

"क्यों नहीं होसकते ? अंग्रेज़ों ने मराठों को कम धोखा नहीं दिया है। सालबाई की सुलह नाना फड़नवीस को सुलतान हैदरअली के मरजाने और टीपू सुलतान की नातजुरबेकारी की

वजह से करनी पड़ी।"

नज़मा को राजनीति पर इतना स्पष्ट मत प्रकट करते देखकर शाहआलम आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने विशेष दृष्टि से उसकी ओर देखा। फिर बोले, "तुमने टीपू सुलतान को नातजुरबेकार कैसे कहा बेग़म ?"

नज़मा हँसी। फिर बोली, "टीपू सुलतान बहादुर और हिम्मतवर सुलतान है। जीदारी में उसका मुक़ाबिला करने वाला इस वक्त हिन्दुस्तान में एक भी राजा, नवाब या सुलतान नहीं है। लेकिन कमी यह है कि वह बड़ा ज़िद्दी और नातजुरबेकार है। इस नासमझी में वह अपने हमदर्दों को भी अपना दुश्मन बना सकता है। आपको चाहिये कि आप एक बार फिर हिन्दुस्तान की ताक़तों को इकट्ठा करके एक झंडे के नीचे लेआयें यह काम सिर्फ़ आप ही कर सकते हैं।"

"बातें तो तुम्हारी बड़ी प्यारी और मुफ़ीद लगती है बेग़म ! लेकिन ख़तरा यही है कि कहीं मराठे और सुलतान मेरी मदद को न आयें और अंग्रेज़ों से दुश्मनी बँध जाये।"

"बादशाह सलामत ! मैं जो कुछ कह रही हूँ उसमें सिर्फ़ आपका ही फ़ायदा नहीं है, उससे उनकी भी ताक़त मज़बूत होती है। अगर आप लोग आपस में नहीं मिलेंगे तो अंग्रेज़ आप लोगों को आपस में लड़ाकर ख़त्म कर देंगे।"

"इसमें तो कोई शक नहीं है बेग़म ! यह अंग्रेज़ क़ौम है ख़तरनाक। इन लोगों ने घूसख़ोरी का ऐसा जाल बिछाया हुआ है कि यही पता नहीं चलता, किस पर यकीन करें और किस पर यकीन न करें।"

"यह बात आपकी सच है। इसी की बदौलत तो इन लोगों ने अपनी सल्तनत क़ायम करली। बड़ी मक्कार और दग़ाबाज़

कर कहा, "अलबिदा।"

"अलविदा बेग़म ! मुस्कराओ मैं जारहा हूँ। तुम्हारा रोता हुआ चेहरा मैं अपनी पुतलियों में लेकर नहीं जाना चाहता। वह मुझे हर वक्त ग़मग़ीन रखेगा। मैं खिला हुआ गुलाब अपनी आँखों में लेकर जाना चाहता हूँ, जो मेरे दिल और दिमाग़ को हर वक्त ताज़ा रख सके।"

नज़मा मुस्करादी।

मोहम्मदरज़ाखाँ ने घोड़े को एड़ लगाते हुए महारानी जी की ओर देखकर कहा, "महारानी जी ! मैं अपने गुनाहों से नजात हासिल करने के लिये जारहा हूँ।"

महारानी जी मोहम्मदरज़ाखाँ की बात का अर्थ न लगा सकीं।

उन्नीस

नज़मा ने दूसरे दिन शहन्शाह शाहआलम से फिर भेंट की। शाहआलम बोले, "बेग़म ! आज मुशायरा है दरबार में।"

"सुना तो है बादशाह सलामत !"

"तशरीफ़ लाना मुशायरे में।"

"मेरे पास वक्त नहीं है शहन्शाह ! नवाब साहब को सुलतान के पास भेजकर मैं यहाँ कैसे ठहर सकती हूँ ?"

"क्यों ?"

"शहन्शाह बुरा न मानें तो एक बात कहूँ।"

"एक नहीं बेग़म ! तुम अपने दिल की हर बात कहो।"

"तो सुनिये शहन्शाह ! यह वक्त मुशायरे और नाच-रंग का नहीं है।"

"फिर किस चीज़ का है बेग़म ?"

"यह वक्त जंग की तैयारी करने का है। आप के पास जो भी असासा है, वह सब आप अपनी हिफ़ाज़त के लिये सर्फ़ कर दीजिये। आप अपनी फ़ौज की तय्यारी करें और कानों-कान भी किसी को यह पता न चले कि आप यह तय्यारी किस लिये कर रहे हैं।"

"लेकिन बेग़म ! यह सब रुपये के बिला कैसे होगा ? मेरे ख़ज़ाने की हालत शायद तुम्हें मालूम नहीं है। उसमें तो कुछ

भी नहीं है ।"

नज़मा को यह मालूम नहीं था कि शाहग्रालम के ख़ज़ाने में बिलकुल कुछ नहीं है। उसने निराश दृष्टि से शाहग्रालम की ग्रोर देखकर कहा, "तो कीजिये ग्राप मुशायरा। मैं कलकत्ता जारही हूँ। कुछ ज़रूरी काम है। ख़ुदा पाक ने चाहा तो बहुत जल्द लौटूँगी ।"

नज़मा दिल्ली में केवल एक दिन ग्रौर ठहरी ग्रौर फिर ग्रानन्दकुमार, उसकी पत्नी ग्रौर महारानीजी से विदा ली।

"तुमने यह नहीं बतलाया नज़मा! कि तुम लोग यहाँ ग्राये किस ग्रभिप्राय से थे। तुमने कहा था कि तुम नवाब साहब के विषय में भी कुछ ग्राश्चर्यजनक बातें बतलाग्रोगी। वह सब भो तुमने कुछ नहीं बतलाया। एक दिन ग्रौर ठहरो।"

"ग्रब तो मैंने रास्ता देख लिया है महारानोजी! दिल्ली मेरा ग्राना-जाना रहेगा ही। हम लोगों ने ग्राजकल कुछ रेशमी कपड़े की तिजारत शुरू करदी है। हम विलायत को माल भेजते हैं ग्रौर कुछ माल मँगाते भी हैं वहाँ से। मुझे कलकत्तो से मद्रास के लिये कुछ माल का लदान कराना है। जल्द न पहुँची तो काम ख़राब होने का ग्रन्देशा है। मैं बहुत जल्द वापस ग्राऊँगी ग्रौर ग्रबकी बार काफ़ी दिन दिल्ली ठहरूँगी। तब ग्रापको नवाब साहब की कुछ बड़ी लच्छेदार बातें सुनाऊँगी।"

ग्रानन्दकुमार की समझ में नज़मा की यह बात बिलकुल न ग्राई। ये लोग यहाँ लगभग पच्चीस दिन से ठहरे हुए थे। इस बीच में कभी रेशमी कपड़े की तिजारत का तनिक भी ज़िक्र नहीं ग्राया था। फिर भी उसने कोई प्रश्न करना उचित न समझ कर बात को ग्रपने मन में ही रख लिया।

नज़मा कलकत्ता पहुँची तो इस्माइल ग्रौर बद्री पंडित ख़ुशी

से नाच उठ। इस्माइल ने पूछा, "क्या नवाब साहब नहीं आये बेग़म ?"

"आये तो थे इस्माइल ! लेकिन दिल्ली से फिर वापस श्रीरंगपट्टन लौट गये।"

"क्यों ?"

"कुछ काम था उन्हें। बड़ा भारी काम कर लिया है उन्होंने। लाखों रुपया कमाया है।"

यह सुनकर बद्री पंडित और इस्माइल, दोनों बहुत प्रसन्न हुए। बद्री पंडित बोला, "कहो इस्माइल भय्या ! क्या कहा था हमने ? हमारी पोथी में साफ़ लिखा है।"

"तुम्हारी पोथी में क्या लिखा है बद्री पंडित ?"

"यही लिखा है बेग़म ! कि यात्रा में धन की प्राप्ति होगी।"

"क्यों इस्माइल ! क्या यही कहा था बद्री पंडित ने ?"

"जी, कहा तो यही था बेग़म ! यह रोज़ कहा करता था कि बेग़म और नवाब साहब बेशुम्मार दौलत लेकर लौटेंगे ? क्या वाक़ई आपको इतना मुनाफ़ा हुआ है ?"

नज़मा होठों पर अँगुली रखकर फुसफुसाई, "बेवक़ूफ़ ! धीरे से बोल। दीवारों के भी कान होते हैं। अंग्रेज़ों के कानों में यह भनक पड़गई तो तेरी बेग़म के बदन के कपड़े भी उतरवाकर ले जायेंगे।"

इस्माइल को साँप सूँघ गया। उसने अवध की बेग़मों की लुटाई का दृश्य अपनी आँखों से देखा था। वह धीरे से बोला, "वाक़ई ग़लती हुई बेग़म ! ऐसी नाज़ुक बात को तो ज़ुबान पर भी नहीं लाना चाहिये। किसी को कानोंकान भी पता नहीं चलना चाहिये कि आपके पास दौलत है। इन्हें पता चलगया तो ये लुटेरे बाज़ की तरह आप पर टूट पड़ेंगे।"

बन्दीग्रह से छूटने के पश्चात से मोहम्मदरज़ाख ाँ ने वहाँ यही प्रदर्शित किया था कि उसके पास अब फूटी कौड़ी भी नहीं रही और वह अब ग़रीबी में दिन काट रहा था।

नज़मा हवेली से अपनी कोठी पर पहुँची और उसने यूरोपियन वस्त्र धारण किये। उन्हें पहिन कर वह शीशे के सामने खड़ी हुई और मुस्करादी। उसके मन में कोई बात आई।

नज़मा की हवेली से कुछ दूरी पर एक दूसरी हवेली थी। उसमें एक उड़ीसा के नवाब साहब रहा करते थे। नज़मा और मोहम्मदरज़ाखाँ के कलकत्ता छोड़ने से पूर्व ही एक दिन अचानक वे लोग कलकत्ते से ग़ायब होगये थे। नज़मा ने लिबिदेव को अपना सही पता न बतलाकर उन्हीं नवाब साहब की हवेली का पता बतला दिया था।

इस बीच लिबिदेव कलकत्ता आया और उस हवेली पर जाकर उसने नज़मा की खोज की। वहाँ से इधर-उधर पूछने पर यही उत्तर मिला कि वहाँ एक नवाब साहब और उनकी बेग़म रहते तो अवश्य थे परन्तु वे एक अर्सा हुआ कलकत्ते से चले गये और फिर लौटकर नहीं आये।

नज़मा ने उस हवेली के निकट के दुकानदारों से इस बात की सूचना इस्माइल को भेजकर प्राप्त की। पान वाले ने इस्माइल को बतलाया कि एक आदमी वहाँ तीन-चार बार नवाब साहब की खोज में आचुका है।

नज़मा को पनवाड़ी से यह सूचना प्राप्त कर लिबिदेव के कलकत्ता आने का पता चला तो यह चिन्ता हुई कि वह है कहाँ और उसका पता-ठिकाना कैसे ज्ञात किया जाये।

संध्या-समय नज़मा स्तीफ़ेन के नाचघर पर गई। उसने देखा वहाँ दर्शकों की कोई विशेष भीड़ नहीं थी।

नज़मा सीधी कार्यालय में पहुँची तो उसने देखा स्तीफ़ेन चिन्ता में डूबा हुआ कुर्सी पर बैठा था। उसकी चाँद के बाल पहिले ही काफ़ी कम थे और इस बीच में वह बिलकुल सफ़ाचटहोगई थी।

"गुड ईवनिंग मिस्टर स्तीफ़ेन ! यह सब क्या होगया ? नाच घर का क्या कर दिया तुमने ?"

स्तीफ़ेन की दृष्टि नज़मा पर गई तो उसे विश्वास न हुआ कि वह नज़मा ही थी। उसने आँखें पटपटाकर नज़मा की ओर देखा। फिर बोला, "क्या मैं स्वर्ग में हूँ मिस मेरी ? क्या तुम मिस मेरी ही हो ? तुम हैदरअली के पंजे से छूटकर चली आईं ? उफ़ बड़े ख़तरनाक आदमी थे।"

"हैदर तो कभी का मरचुका मिस्टर स्तीफ़ेन !"

"वह मर चुका ! यह हमें मालूम है, लेकिन हमको भी मार डाला उस पाजी ने। हमारा सब आर्टिस्ट ख़त्म कर दिया। हमारा आयरकूट की बहुत बुरी हालत किया। हम बरबाद होगया मिस मेरी, बिलकुल बरबाद होगया। हम लुट गया।"

"बरबाद होगये ! लेकिन हमें तो रेज़ीडेन्सी से पता चला है कि आयरकूट ने तुम्हें नवाब मोहम्मदअली से बहुत दौलत दिलाई और सुना है कि तुम रेज़ीडेंसी के मैम्बरों से भी काफ़ी रुपया ऐंठ कर लाये हो।"

स्तीफ़ेन दाँत चबाकर बोला, "आयरकूट ने हमारा सब रुपया छीन लिया। हम बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर कलकत्ता लौटा है।"

"ओह ! तब हमें रेज़ीडेंसी से ग़लत ख़बर मिली। उन लोगों ने शायद झूठ बोला।"

"एकदम ग़लत मिस मेरी ! एकदम झूठ। मद्रास-रेज़ीडेंसी का लोग बहुत बदमाश है। उन लोगों ने हमारा सब आर्टिस्ट उड़ा

लिया ।"

"रेज़ीडेंसी के मैम्बरों ने तुम्हारे आर्टिस्ट उड़ा लिये ? तुम तो कह रहे थे कि हैदरअली ने ख़त्म कर दिये ?"

"एक ही बात है मिस मेरी ! मतलब यह कि मैं बरबाद हो गया । लेकिन अब जब तुम आगई हो तो मेरा सब कुछ लौट आया । मैं तुम्हारे लिये पागल होगया था । मेरा सिर फिर गया था मिस मेरी !"

"मिस्टर स्तीफ़ेन ठीक कह रहे हैं मिस मेरी !" पीछे से स्मिथ बोला, "आपके लिये मिस्टर स्तीफ़ेन ने अपना सब बिज़नेस चौपट कर लिया । इनकी ज़ुबान पर हर वक्त आपका ही नाम रहता था ।"

"स्मिथ ठीक कहता है मिस मेरी ! मैं बिलकुल पागल होगया था । लेकिन अब मैं बिलकुल ठीक हूँ ।"

नज़मा मुस्कुराकर बोली, "मैंने तुम्हारी तालाश में मद्रास का कोना-कोना छान मारा । वहाँ मुझे किसी ने नहीं बतलाया कि तुम कलकत्ता चले आये । वे लोग तो मुझे भी फँसाना चाहते थे, लेकिन मैं तुम्हारे बिला वहाँ कैसे रह सकती थी । मैंने उनसे साफ़ कहदिया कि मैं वहीं जाऊँगी जहाँ मेरा स्तीफ़ेन है ।"

"इसी को लव कहते हैं मिस मेरी ! नो-नो, मेरा मतलब है तुम मुझे अच्छा आदमी समझती हो । मद्रास में वे लोग सब बदमाश थे ।"

स्तीफ़ेन ने नज़मा के लौट आने का ज़ोरदार विज्ञापन किया । 'मिस मेरी फिर हमारे मंच पर ।' शहर में बडे-बड़े पोस्टर लगवाये गये । उस दिन कौतूहलवश लिब्रिदेव भी मिस मेरी का नृत्य देखने के लिये स्तीफ़ेन के नाचघर में आया । मिस मेरी का नृत्य उसे बहुत पसंद आया ।

नृत्य समाप्त होने के पश्चात लिबिदेव कार्यालय में गया। स्तीफ़ेन उस दिन बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में था। उसने स्तीफ़ेन से कहा, "मिस्टर स्तीफ़ेन! आपके नाचघर का प्रोग्राम आज बहुत सुन्दर रहा।"

"ऑफ़ कोर्स! मिस मेरी से अच्छी डांसर हिन्दुस्तान में ही नहीं, विलायत में भी नहीं मिलेगी। वण्डरफुल डांसर, वण्डरफुल।" अपनी झोंक में स्तीफ़ेन कहता गया। "मैनेजर! इन्हें बतलाओ कि हमारा हॉल एक वीक के लिये फुल है। नो सीट।"

"लेकिन एक कमी है आपके प्रोग्राम में।"

"कमी!" आश्चर्य के साथ स्तीफ़ेन ने उसकी ओर देखकर पूछा, "वह क्या?"

"जितना सुन्दर यह डांस था, उतना अच्छा आपका आरचेस्ट्रा नहीं है।"

लिबिदेव जब यह बात कह रहा था तो नज़मा भी कार्यालय में प्रवेश कर चुकी थी। नज़मा ने लिबिदेव को पहिचान लिया परन्तु लिबिदेव नज़मा को न पहिचान सका। वह आगे बढ़कर बोली, "क्या तुम कोई साज बजाना जानते हो?"

"येस।"

"क्या?"

"मैं वायलन में दिलचस्पी रखता हूँ। इसके अलावा मैं और साज भी बजाना जानता हूँ। मुझे म्यूज़िक का भी शौक है।"

स्तीफ़ेन बड़े ध्यान से नज़मा और लिबिदेव की बातें सुन रहा था। उसने पूछा, "तुम अकेले ही हो या तुम्हारे पास पूरा आरचेस्ट्रा है?"

"मेरे पास पूरे आरचेस्ट्रा का प्रबन्ध है।"

नज़मा कुछ सोचकर स्तीफ़ेन से बोली, "इनसे कहिये कि कल सुबह रिहर्सल में आयें। देखते हैं इनका आरचेस्ट्रा कैसा है। हमारा आरचेस्ट्रा वाक़ई बहुत कमज़ोर है।"

स्तीफ़ेन ने लिबिदेव को दूसरे दिन रिहर्सल पर बुलाया।

रिहर्सल में लिबिदेव ने अपनी कला का जो प्रदर्शन किया उसे देखकर स्तीफ़ेन चकित रहगया। लिबिदेव के आरचेस्ट्रा की स्तीफ़ेन के आरचेस्ट्रा से कोई तुलना नहीं थी।

नज़मा बोली, "रियली वण्डरफुल। हमें तुम्हारा आरचेस्ट्रा बहुत पसंद आया। तुमने अपने आरचेस्ट्रा में कुछ नये साज़ों का इस्तेमाल किया है।"

"ये साज आपको मेरे आरचेस्ट्रा के अलावा और किसी आरचेस्ट्रा में नहीं मिलेंगे।"

"बिला शक! हमने ऐसे साज पहिले कभी नहीं देखे।" स्तीफ़ेन बोला।

"अगर यह हमारे नाचघर में काम करना चाहें तो इन्हें रख लीजिये।" नज़मा बोली।

"आई विल, मिस मेरी! आप समझलें कि हमने इन्हें रख लिया।" उसने लिबिदेव से पूछा, "अगर हम तुम्हें अपने नाचघर में काम दें तो तुम कितना रुपया लेगा?"

"दो हज़ार रुपया महावार?"

"वेरी चीप (बहुत सस्ता है)।" नज़मा बीच में बोल उठी।

स्तीफ़ेन उसे केवल एक हज़ार देने की बात सोच रहा था परन्तु जब नज़मा ने दो हज़ार को 'वैरी चीप' कह दिया तो उसकी ज़ुबान बन्द होगई। उसने लिबिदेव को अपने नाचघर में दो हज़ार रुपया मासिक पर रख लिया।

लिबिदेव ने 'धन्यवाद' कहकर अपना नियुक्ति-पत्र लिया।

नज़मा ने उसे स्तीफ़ेन से दो हज़ार रुपये पेशगी दिला दिये।

नजमा लिबिदेव से बोली, "हमने पहिले कभी ग्रापको कलकत्ते में नहीं देखा। क्या ग्राप कलकत्ते में ग्रभी ग्राये हैं?"

"जी हाँ! मैं पहिले मद्रास में था। मैं वहाँ कैप्टेन विलियम सिडेनहेम के निजी गायक के रूप में काम करता था। मद्रास में मेरा मन नहीं लगा तो मैं कलकत्ता चला ग्राया।"

"कलकत्ता कैसा लगा ग्रापको?"

"मुझे यहाँ ग्राये सिर्फ़ दो महीने हुए हैं। ग्रभी मैं इसके बारे में ग्रपनी कोई राय क़ायम नहीं कर सका हूँ।"

"ठीक है। कलकत्ता ग्रापको ग्रच्छा लगेगा।"

लिबिदेव ने ग्रनायास ही प्रश्न किया, "क्या ग्राप कभी मद्रास गई हैं?"

प्रश्न साधारण ग्रौर ग्रनायास ही था, परन्तु नज़मा को शक हुग्रा कि कहीं लिबिदेव ने उसे पहिचान न लिया हो।

नज़मा मुस्कराकर बोली, "गई थी। मिस्टर स्तीफ़ेन भी गये थे। लेकिन हम लोग वहाँ जाकर कुछ ग्रजीब परेशानी में फँस गये। गये तो थे रुपया कमाने लेकिन वहाँ जाकर ग्रपनी गाँठ की पूँजी भो खोग्राये। मिस्टर स्तीफ़ेन को वहाँ जाकर बहुत नुक़सान उठाना पड़ा।"

"यह ठीक कहती हैं मिस्टर लिबिदेव! हमारा सब कुछ लुटगया। हमारी मिस मेरी भी हमसे खोगई थीं। हैदरग्रली का बच्चा इन्हें पकड़कर लेगया।"

"हैदरग्रली का बच्चा! यानी टीपू सुलतान?"

टीपू सुलताल का नाम सुनकर स्तीफ़ेन को पसीना ग्रागया। वह बोला, "उसका नाम मतलो हमारे सामने। उसने हमारा सब चौपट करदिया। हमारा ग्रायरकूट जीत जाता तो वह

हमको सुलतान और नवाबों से लाखों रुपया दिलाता। वह हार गया तो उसने हमें भी लूट लिया।"

"आपको भी लूट लिया! यानी आपका भी रुपया छीन लिया आयरकूट ने ?"

"येस! आयरकूट हमारा लार्ड क्लाइव से भी बदमाश निकला। उसने हमारा रुपया ही नहीं लूटा, हमारा आर्टिस्ट भी लूटा। आयरकूट बहुत बदमाश निकला।"

नज़मा बात बदलकर बोली, "आप रह कहाँ रहे हैं ?"

"एक होटल में ठहरा हुआ हूँ।"

"अब आपका काम लग गया है तो आपको होटल छोड़कर कोई मकान किराये पर लेलेना चाहिये।"

"क्या आप मेरी मदद करेंगी इस काम में ?"

"क्यों नहीं ?"

नज़मा ने दो-चार दिन में लिबिदेव के लिये एक मकान का प्रबन्ध करवा दिया।

स्तीफ़ेन के नाच-घर में फिर से रौनक़ आगई। उसका कारोबार फिर चमक उठा। उसका नाचघर फिर आकर्षण का केन्द्र बन गया।

इस बीच में मिस्टर क्लिक ने गर्वनर जनरल के कार्यालय में अपना विशिष्ठ स्थान बना लिया था। हेस्टिंग्स के समय में वह केवल उसका स्टेनो मात्र था, परन्तु कार्नवालिस उसे अपने विशेष विश्वासपात्र व्यक्ति के रूप में देखता था।

मिस्टर क्लिक को नज़मा के कलकत्ता आने का समाचार मिला तो वह स्वयँ उससे भेंट करने के लिये उसकी कोठी पर आया। अब वह साधारण स्टेनो नहीं, स्वयँ को एक बड़ा अफ़सर समझता था।

नज़मा ने क्लिक का अपनी कोठी पर विशेष सत्कार किया। उसे शराब पिलवाई और उससे मुस्कराकर बातें कीं।

"आप इतने दिन कहाँ रहीं मिस मेरी ? आपके बिला तो कलकत्ता ही सूना होगया था।"

नज़मा हँसी।

"मिस मेरी ! जब से तुमने कलकत्ता छोड़ा है, तब से मैंने कोई डांस नहीं देखा। तुम्हारा डांस देखने के बाद और किसी का डांस अच्छा ही नहीं लगता। तुम इतने दिन रही कहाँ ?"

"यह मत पूछो क्लिक ! इस बीच में मेरे दिल पर ज़बरदस्त चोट लगी है।"

"वह कैसे मिस मेरी ?"

"मुझे टीपू सुलतान ने बहुत सताया। मुझ पर उसने बहुत-बहुत ज़ुल्म किये।" यह कहकर नज़मा रूँआसी होगई।

क्लिक भावुकता में भरकर बोला, "तुम पर ज़ुल्म किया मिस मेरी ? उसे इसकी सज़ा मिलेगी। हम उसका इन्तज़ाम करेंगे।"

नज़मा ख़ुशी ज़ाहिर करके बोली, "टीपू को ! लेकिन कैसे ? उसके साथ तो हम सुलह करचुके हैं।"

"टीपू के साथ हमारी कोई सुलह नहीं है मिस मेरी ! हमारे गवर्नरजनरल ने उसे ख़त्म करने का पक्का इरादा किया हुआ है। हमारी कम्पनी के डाइरेक्ट्रों ने गवर्नरजनरल को ऐसा ही करने को लिखा है।"

"बहुत अच्छा।" नज़मा प्रसन्नता की मुद्रा बनाकर बोली।

क्लिक नज़मा पर अपनी योग्यता की छाप बिठाने के लिये गम्भीर वाणी में बोला, "मिस मेरी ! आपको मालूम नहीं है शायद, अमरीका की आज़ादी की लड़ाई ने हमारी शान को काफ़ी

कम कर दिया है। हम लोगों को हिन्दुस्तान में अपना राज क़ायम करके अपनी शान को बढ़ाना है।"

"यह तो ठीक है मिस्टर क्लिक ! लेकिन इसके लिये हम कर क्या रहे हैं ? टीपू भी कुछ कम खतरनाक नहीं है। उसके पास ज़बरदस्त तोपख़ाना और बहुत बड़ा जहाज़ी बेड़ा है।"

"हमें सब मालूम है मिस मेरी !" क्लिक उस समय नजमा को प्रभावित करने के लिये ऐसे बोल रहा था, मानो वही कॉर्न-वालिस था। "हम उसका सब इन्तज़ाम कर रहे हैं।"

"क्या इन्तज़ाम कर रहे हैं आप मिस्टर क्लिक ?" नज़मा ने क्लिक में हवा भरकर इस प्रकार बातें कीं मानो कम्पनी की नीति का संचालक उसकी दृष्टि में क्लिक ही था। "हमारे सर आयरकूट ने तो वहाँ जाकर वह बुज़्दिली दिखाई कि हमारा मज़ाक बन गया।"

"नो-नो मिस मेरी ! इस बार ऐसा होने वाला नहीं है। हमने मूदाजी को अपनी ओर फोड़ लिया है और पूना के अपने रेज़ीडेण्ट मैलेट को लिख दिया है कि अगर पेशवा हमारी मदद करेगा तो हम जंग जीतने पर टीपू का आधा राज उसे देदेंगे।"

"वेरी गुड ! इस जाल में पेशवा जुरूर फँस जायेगा।" नज़मा ने कहा, परन्तु उसके मन में कुछ बेचैनी सी पैदा होगई।

"निज़ाम ने हमारी फ़ौज अपने राज में रखली है। जब हम टीपू पर हमला करेंगे तो निज़ाम की फ़ौज भी जंग में आयेगी। हम तीनों की फ़ौजें टीपू को कुचल कर रख देंगी।"

"टीपू पर हमला करने का क्या बहाना है हमारे पास ? हमने तो उससे सुलह की हुई है।"

क्लिक खूब ज़ोर से हँसा। फिर बोला, "बहाना बनाना कौन बड़ी बात है मिस मेरी ? हम त्रिवानकुर के राजा को यह

कहकर भड़का रहे हैं कि टीपू उसपर हमला करनेवाला है और त्रिवानकुर के राजा की मदद करना हमारा फ़र्ज़ है। क्या यह कुछ कम बहाना है जंग शुरू करने का ?"

"यह तो बहुत बड़ा बहाना है। अंग्रेज़ टीपू का यह ज़ुल्म कैसे बरदाश्त कर सकते हैं ? हम लोग टीपू को मिटादेंगे। उसने हमारे बहुत से अंग्रेज़ मार डाले।"

"तुम ठीक कहती हो मिस मेरी !"

"मिस्टर क्लिक ! अब तो तुम पॉलेटिक्स में भी क़दम रखने लगे। मालूम देता है गवर्नरजनरल आपको अब बहुत मानने लगे हैं।"

क्लिक मुस्कराया। फिर एक अन्दाज़ के साथ बोला," मिस मेरी ! गवर्नरजनरल हमारी सलाह के बिना अब कोई काम नहीं करता।"

"यह बात है मिस्टर क्लिक ?

मैं तुम जैसे चतुर आदमियों को बहुत पसंद करती हूँ मिस्टर क्लिक ! तुमने कुछ रुपया भी बनाया या कोरी पॉलेटिक्स ही झाड़ रहे हो ?"

"बिला रुपये के पॉलेटिक्स नहीं चलती मिस मेरी ! हिन्दुस्तान के नवाबों के पास बड़ी दौलत है। हेस्टिंग्स के ज़माने में हमने खूब रुपया कमाया। मैं मैक्फ़रसन के एक काम से करनाटक के नवाब मोहम्मदअली से मिला और एक लाख रुपया ऐंठ कर लाया।"

"तब तो तुम्हारे पास बहुत रुपया होगा मिस्टर क्लिक ! इतने रुपये का तुम क्या करोगे ?"

क्लिक हँसकर बोला, "ऐश करेंगे मिस मेरी ! चलो तुम्हें भी सैर करा लाऊँ।"

"मेरा जाना तो इस वक्त मुश्किल है क्लिक !"

"क्यों ?"

"स्तीफ़ेन का नाचघर मेरे यहाँ न रहने से उजड़ गया था। अब किसी तरह उसे फिर से ठीक किया है।"

"ओह ! मैं समझा। उसने तुम्हें रुपया एडवांस किया होगा। उसकी तुम फ़िक्र मत करो। मैं रुपया देदेता हूँ तुम्हें। तुम उसका रुपया लौटादो। कितना रुपया दिया है उसने ?"

"दो लाख।"

"दो…लाख…बाप…रे…बाप…इतना रुपया ?"

"क्यों ? इतना तो उसने मेरे यहाँ आने पर कमा भी लिया होगा।"

तभी स्तीफ़ेन वहाँ आगया। उसे देखकर क्लिक एक क्षण न ठहरा सका। वह बोला, "आल राइट मिस मेरी ! अब मैं जाता हूँ।"

"क्यों ? ठहरो मिस्टर क्लिक ! मुझे अभी तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करनी हैं।"

"मैं जल्दी में हूँ मिस मेरी ! मुझे अपने सफ़र का इन्तज़ाम करना है।"

"तुम कहाँ जारहे हो मिस्टर क्लिक ? कुछ हमें भी तो बतला दिया करो।" स्तीफ़ेन बोला।

"कॉनफ़िडेंशियल (गुप्त) मिस्टर स्तीफ़ेन ! यह गवर्नर-जनरल के राज़ की बात है।"

"हम तो आजकल तुमको ही गवर्नरजनरल समझते हैं मिस्टर क्लिक !" फिर नज़मा की ओर मुँह करके बोला, "मिस मेरी ! इधर क्लिक ने बड़ा रुपया बना लिया है। अब तो यह लाखों में खेलता है। हम लोग तो मद्रास से लुट-पिट कर लौटे और यह

नवाब मोहम्मदअली से लाखों रुपया बना लाया।"

"मिस्टर क्लिक ने मुझे सब-कुछ बतला दिया है मिस्टर स्तीफ़ेन ! मुझे बहुत ख़ुशी हुई।"

यह सुनकर स्तीफ़ेन के कान खड़े हुए। उसने विशेष दृष्टि से क्लिक की ओर देखा। वह बोला, "क्यों मिस्टर क्लिक ! तुमने यह बात मिस मेरी को क्यों बतलाई ?"

क्लिक ज़रा सिटपिटाया।

नज़मा क्लिक का पक्ष लेकर बोली, "इसमें न बतलाने की क्या बात थी मिस्टर स्तीफ़ेन ! मिस्टर क्लिक मुझ पर पहिले से ही मेहरबान हैं।"

"आफ़ कोर्स मिस मेरी ! मैं कला का प्रेमी हूँ, यह सब लोग जानते हैं।"

"और अब तुम आर्टिस्टों के भी प्रेमी बनना चाहते हो ?" स्तीफ़ेन कुछ कुढ़कर बोला।

"यह भी कोई बुरी बात नहीं है।" नज़मा ने कहा। "ख़ूबसूरत चीज़ को प्यार करने का हर इन्सान को हक़ है।"

ये बातें मिस्टर लिबिदेव ने भी सुनीं। स्तीफ़ेन के साथ वह भी आया था, परन्तु उसने कमरे में प्रवेश नहीं किया था।

नज़मा की दृष्टि चिक से बाहर खड़े लिबिदेव पर गई तो वह पुकारकर बोली, "ओह मिस्टर लिबिदेव ! तुम भी यहाँ हो ? तुमने हमारी बातें सुनीं ?"

लिबिदेव मुस्कराता हुआ अन्दर चला आया। वह बोला, "ख़ूबसूरती ख़ुदा की नियामत है। उसपर सभी का बराबर हक़ है। लेकिन मिस्टर स्तीफ़ेन का हक़ औरों से अधिक है।"

"क्यों ?" क्लिक की ज़ुबान से अनायास ही निकल गया। उसने अपने आप को रोका। वरना वह कहना चाहता था, 'क्या

इस लिये कि स्तीफ़ेन मिस मेरी को दो लाख रुपया देसकता है ? रुपया मैं भी देसकता हूँ ।'

"इस लिये कि यह ख़ुदा की ख़ूबसूरती को चार चाँद लगाना जानते हैं। यह ख़ूबसूरती को निखार सकते हैं। मिस्टर स्तीफ़ेन हीरे में चमक पैदा करना जानते हैं।"

"तुम रीयली आर्टिस्ट हो मिस्टर लिबिदेव ! तुमने यह बात ख़ूब कही। लेकिन मिस्टर क्लिक भी कुछ तराशना जानते हैं। यह भी कुछ कम नहीं हैं इस मायने में। "लेकिन मिस मेरी ! यह संगतराश नहीं हैं।"

"फिर क्या तराश हैं हम ?"

"गर्दनतराश।" स्तीफ़ेन बोला। स्तीफ़ेन क्लिक से कुढ़ा हुआ था क्यों कि उसने स्तीफ़ेन को कॉर्नवालिस से नहीं मिलने दिया था। क्लिक अब गवर्नरजनरल से उसी की भेंट कराता था जो पहिले उसकी भेंट-पूजा करदेता था। स्तीफ़ेन जब मद्रास से लौटा तो उसकी आर्थिक दशा बहुत ख़राब थी। इस लिये वह क्लिक को रुपया न देसका था।

स्तीफ़ेन क्लिक की पहिले कई बार सहायता कर चुका था। वास्तव में क्लिक को वारेनहेस्टिंग्स के समय इस स्थान पर उसी ने रखवाया था। क्लिक पर इस नाते स्तीफ़ेन अपना अधिकार समझता था।

नज़मा को 'गर्दनतराश' शब्द पर हँसी आगई।

वह बोली, "मिस्टर स्तीफ़ेन ! यह तुमने ख़ूब कहा। क्लिक पॉलेटीशियन है। पॉलेटीशियन को 'गर्दनतराश' ही होना चाहिये" नज़मा ने क्लिक की ओर मुँह करके पूछा, "क्या मैंने ठीक नहीं कहा ?"

"बिलकुल ठीक कहा। मिस्टर स्तीफ़ेन यह सब नहीं जानते।"

यह कहकर क्लिक वहाँ से चला गया।

उसके चले जाने पर नज़मा स्तीफ़ेन से बोली, "आजकल बड़ी शान में है क्लिक।"

"बड़ा पैसा कमाया है इसने। कॉर्नवालिस पर जादू कर रखा है कम्बख्त ने। वह इसके हाथों में फँस गया है।"

"इसका पैसा तुम्हारे नाचघर में लगवादूँ।"

स्तीफ़ेन नज़मा की बात सुनकर उछल पड़ा। वह बोला, "अगर लगवादो मिस मेरी! तो इसे एक पैसा भी लौटाकर न दूँ। हरामख़ोर कहीं का। आख़िर मेरी ही बदौलत तो इसने यह रुपया कमाया है।"

"वह कैसे?"

"इसे इस जगह मैंने ही तो रखाया था।"

"तब तो तुम्हारा पूरा-पूरा हक़ है इसके रुपये पर।"

"आप ठीक कहती हैं मिस मेरी!"

नाचघर का समय होगया था। स्तीफ़ेन, लिबिदेव और नज़मा तीनों नाचघर की ओर चलदिये।

बीस

नज़मा के मस्तिष्क में क्लिक की बातें चक्कर लगा रही थीं। अंग्रेज़ों के विषय में नज़मा ने जो धारणा बना रखी थी, उसकी क्लिक ने पुष्टि करदी। उसने अपने मन में कहा, 'कितनी दग़ाबाज़ क़ौम है। सुलतान ने इस पर यकीन करके ज़बरदस्त भूल की। सुलतान इसे समझ नहीं रहा।'

उस दिन नज़मा का मन नाचघर में नहीं लगा। प्रोग्राम पूरा करके वह कार्यालय में आई तो स्तीफ़ेन बोला, "मिस मेरी! कल हम लोग गवर्नरजनरल से मिलेंगे।"

"किस लिये?"

"अपने नाचघर में उन्हें बुलाने के लिये। क्लिक को तुम्हें बोलना होगा।"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं? क्लिक से तो अभी और भी बहुत सी बातें करनी हैं। तुम कहते थे न उसके पास बहुत रुपया है।"

"बहुत मिस मेरी! मैंने उस वक्त तुम्हें नहीं बतलाया। इसे मैक्फ़रसन ने करनाटक के नवाब के पास भेजा था। यह उसके पास बहुत बड़ा व्यापारी बनकर गया और उसे धोखा देकर उसके बहुत से ज़ेवरात चुरा लाया।"

"चुरा लाया!" लिबिदेव के मुँह से निकला।

नज़मा मुस्कराई। फिर बोली, "यह कोई बुरी बात नहीं है। नवाब के पास ज़ेवर बेकार पड़े थे। क्लिक के हाथ आकर अब वे तुम्हारे कारोबार में लगेंगे स्तीफ़ेन ! क्या बुराई की क्लिक ने ?"

"तब तो कोई बुराई नहीं की। लेकिन वे मेरे कारोबार में कैसे लगेंगे ?"

नज़मा हँसकर बोली, "क्लिक लव करने लगा है मुझे। प्यार में आदमी अंधा होजाता है।"

"तुम ठीक कहती हो मिस मेरी ! लेकिन तुम···।"

"मैं !" नज़मा ख़ूब ज़ोर से हँसी। फिर बोली, "मैंने क्लिक को बोल दिया है कि स्तीफ़ेन ने हमें दो लाख रुपया एड-वांस किया है। अगर वह यह रुपया तुम्हें देदे तो मैं उसे लव कर सकती हूँ।"

यह सुनकर स्तीफ़ेन विह्वल होउठा। वह बोला, "नो-नो, मिस मेरी, नो। मुझे क्लिक का रुपया नहीं चाहिये। मै तुम्हें दो लाख में क्लिक को नहीं देसकता।"

"तब ठीक है। डील केंसिल। ऐसे मुआयदे तोड़ना हम लोगों का रोज़ का काम है। लव में मुआयदे की कोई क़ीमत नहीं। लेकिन स्तीफ़ेन ! तुम तो कहते थे कि तुम्हें रुपये की ज़ुरूरत है। मैं तो तुम्हारे ही लिये अपने आप को क्लिक के हाथों बेच रही थी।"

यह नाटक लिबिदेव की समझ में नहीं आया। वह आश्चर्य के साथ ये बातें सुन रहा था।

"वण्डरफुल मिस मेरी ! यह प्यार की आख़री मंज़िल है। मैं जानता था कि तुम मुझे प्रेम करती हो, परन्तु मेरी कभी हिम्मत नहीं हुई अपने प्रेम का इज़हार करने की। आज तुमने मेरी ज़ुबान

का ताला खोल दिया। अब मैं हज़ार ज़ुबानों से उसका इज़हार करूँगा। मैं क्लिक को धक्के देकर यहाँ से बाहर निकाल दूँगा।" स्तीफ़ेन बोला।

"नो मिस्टर स्तीफ़ेन ! तुम पॉलेटिक्स सीखो। क्लिक पॉलेटिक्स सीख गया है। इसी लिये उसने इतना रुपया बना लिया। तुम पॉलेटिक्स जानते तो तुम भी मद्रास से रुपया कमा कर लाते। अब तुम क्लिक का कमा-कमाया रुपया हासिल करने की कोशिश करो।"

"वह कैसे ?"

"मैं बतलाऊँगी।" यह कहकर नज़मा ने मधुर मुस्कान बिखेरदी।

लिबिदेव बोलता बहुत कम था, सुनता अधिक था। वह हिन्दुस्तान में आये अंग्रेज़ों के चरित्र का अध्ययन कर रहा था। वह हिन्दुस्तानियों के भी सम्पर्क में आना चाहता था, परन्तु इसमें उसे सफलता नहीं मिल रही थी।

मद्रास में उसकी नज़मा से जो बातें हुई थीं, उनसे उसे यह विश्वास होगया था कि कलकत्ते में उसे कोई ऐसा आदमी मिल जायेगा जो अंग्रेज़ी के माध्यम से उसे भारतीय भाषाओं का ज्ञान करादेगा, परन्तु कलकत्ता आकर उसका दुर्भाग्य यह रहा कि नज़मा से उसकी भेंट न होसकी।

लिबिदेव ने इस दिशा में स्वतंत्र प्रयास भी कम नहीं किये और कुछ ऐसे लोगों से भी वह मिला जो अंग्रेज़ी जानते थे परन्तु उसकी गोरी चमड़ी उसके कार्य में बाधक रही। वे लोग लिबिदेव को अंग्रेज़ समझते थे।

लिबिदेव की इस बीच विलियमजोंस से भी भेंट हुई। उसने उससे अपनी यह इच्छा प्रकट तो वह ख़ूब हँसा। फिर बोला,

"यह भाषा-विज्ञान का विषय है मिस्टर लिबिदेव ! बड़ा कठिन काम है। हिन्दुस्तानी सीखना तो और भी मुश्किल है।"

"क्यों ?" लिबिदेव ने पूछा।

"हिन्दुस्तानी सीखने के लिये रिवालवर लेकर जाना होता है।"

रिवालवर की बात सुनकर लिबिदेव को नज़मा की बात याद आई। उसने लिबिदेव को बतलाया था कि विलियमजोन्स भारतीय भाषा सीखने के लिये रिवालवर लेकर जाता है।

"रिवालवर का आप क्या करते हैं ?"

"जब हम पंडित की छाती पर अपने रिवालवर की नाल रख कर उससे अर्थ पूछते हैं तब वह अर्थ बतलाता है।"

"तब क्या बतलाता है वह ? अगर वह ग़लत बतलादे तो आप क्या करें ?"

"हम ! हम उस पंडित को हवालात में बन्द करादें। हम उसको हण्टर लगवा सकते हैं। वह हमको ग़लत अर्थ नहीं बतला सकता।"

लिबिदेव ने फिर कुछ नहीं कहा। उसे विलियमजोन्स का यह तरीक़ा पसंद नहीं आया।

लिबिदेव भारतीय भाषा का ज्ञान प्राप्त करने को व्याकुल था। वह संस्कृत और बँगला सीखना चाहता था।

नज़मा नाचघर से अपनी कोठी पर पहुँची और वहाँ से अपनी हवेली पर। इस्माइल उसकी प्रतीक्षा में था।

"क्या बात है रे इस्माइल ? आज बड़ा ख़ुश मालूम देरहा है। कोई ख़ास बात है क्या ?"

"नवाब साहब का आदमी आया है।"

"आदमी आया है ! कहाँ है वह ?"

"वह रात को आयेगा।"

"क्यों?"

"उसे कोई काम था। किसी आदमी से मिलना था।"

नज़मा ने कुछ सोचकर पूछा, "वह वही आदमी तो नहीं है जिसके साथ नवाब साहब श्रीरंगपट्टन गये थे ?"

"जी वही है।"

"समझी।" कहकर नज़मा अन्दर कमरे में चली गई। उस आदमी के आने से उसके मस्तिष्क को कुछ शान्ति मिली।

इस्माइल ने भोजन तय्यार करके नज़मा को खाना खिलाया।

नज़मा भोजन करके पलंग पर लेटगई। उसे लेटे अधिक देर नहीं हुई थी कि वह आदमी आगया। इस्माइल ने उसे दीवानख़ाने में बिठलाकर नज़मा को सूचित किया।

नज़मा दीवानख़ाने में पहुँची तो वह आदमी आदाब बजा लाया।

नज़मा ने पूछा, "सुलतान और बेग़में खुश तो हैं मौमिन ! हमारी कभी याद भी आती है उन्हें ?"

"सब लोग ख़ुश हैं बेग़म साहिबा ! आपको बहुत याद करते हैं। सुलतान तो नवाब साहब से इसी बात पर नाराज़ हैं कि वह आपको अपने साथ श्रीरंगपट्टन क्यों नहीं लेगये।"

नज़मा मुस्कुराकर बोली, "अगर मैं भी वहाँ चली जाती तो यहाँ उनकी ख़िदमत कौन करता ? मेरा यहाँ आना बहुत जुरूरी था मौमिन !"

"इसमें तो कोई शक नहीं है बेग़म ! आपने यहाँ रहकर सुलतान की जो ख़िदमत की है वह आप वहाँ रहकर नहीं कर

सकती थीं। बड़े नवाव साहब ने आपकी बदौलत कई जंगों में फ़तह हासिल की थी।"

नज़मा ने पूछा "मौमिन! मराठों से सुलतान ने सुलह की या अभी तक सरहदों पर झगड़ा ही चल रहा है?"

"सुलहनामा तो अभी कोई नहीं लिखा गया बेग़म! लेकिन बातें ज़ुरूर चलरहीं हैं। मुमकिन है सुलह होजाये।"

"इसका मतलब है सुलतान ने हमारी बात को हवा में उड़ा दिया।" नजमा कुछ व्याकुल सी होउठी।

मौमिन ने नज़मा के मुख पर आने वाले चिन्ता के भाव को भाँप कर पूछा, "क्यों, क्या कोई नई बात आपके कानों पड़ी है?"

"नई ही नहीं, बहुत ख़तरनाक भी है मौमिन!"

"वह क्या?" मौमिन ने घबराकर पूछा।

"सुलतान ग़लतफ़हमी में हैं।"

"किस बात की?"

"सुलहनामे की।"

"क्या अंग्रेज़ अपना वायदा तोड़रहे हैं?"

"बिलकुल। अंग्रेज जंग की तय्यारी कर रहे हैं।"

"जंग की तय्यारी! यह क्या कह रही हैं बेग़म! सुलतान को तो ख्वाब में भी इस बात का खयाल नहीं है। वह तो इस ओर से बिलकुल बेफ़िक्र हैं।"

"यह बात अंग्रेज़ भी जानते हैं। इससे बड़ी ख़ुशख़बरी की बात इनके लिये और क्या होसकती है?"

मौमिन परेशान होउठा।

"सुलतान नासमझी से काम कर रहे हैं। उन्हें मालूम नहीं कि अंग्रेज़ उन्हें फूटी आँखों भी देखना पसंद नहीं करते। हैदराबाद के निज़ाम ने सुलतान के ख़िलाफ़ अंग्रेज़ों की मदद करने

का वायदा कर लिया है। इस वक्त अंग्रेज़ मराठों को अपनी ओर फोड़ने के फ़िराक़ में हैं।"

मौमिन काँप उठा। उसके माथे पर स्वेद-विन्दु झलकने लगे। वह भयभीत होकर बोला, "क्या अंग्रेज़ इस क़दर धोखेबाज़ निकलेंगे ? क्या सुलहनामें की इनके नज़दीक कोई क़ीमत नहीं है ?"

"ख़ाक डालो सुलहनामे पर मौमिन ! अंग्रेज़ों के नज़दीक सुलहनामा एक रद्दी काग़ज़ के टुकड़े से अधिक कुछ नहीं है। उसकी कोई क़ीमत नहीं है। अगर सुलतान ने इस वक्त ग़फ़लत से काम लिया तो ज़बरदस्त भूल होगी।

मराठों में भी इन लोगों ने ज़बरदस्त नाचाकी पैदा करदी है। सिंधिया, गायकवाड़ और भोंसले पेशवा के असर से बाहर जाचुके हैं। ये तीनों अंग्रेज़ों के हाथों में खेल रहे हैं। सिर्फ़ नाना फड़नवीस ही एक ऐसा आदमी है जिससे कुछ उम्मीद की जा-सकती है। सुलतान को ख़ुद जाकर उनसे मिलना चाहिये और सुलह करलेनी चाहिये। सुलतान की इसी में भलाई है।"

"क्या आपके ख़याल से यह भी मुमकिन है कि नाना फड़न-वीस सुलतान के ख़िलाफ़ अंग्रेज़ों से मिल जायें ?"

"सब कुछ मुमकिन है मौमिन, सब कुछ मुमकिन है। अंग्रेज़ों के हाथों में खेलनेवाले सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ सब कुछ करासकते हैं। पेशवा पर नाना फड़नवीस का असर है, लेकिन वह ख़त्म भी होसकता है। ऐसी हालत में जानते हो क्या होगा ?"

"क्या होगा बेग़म ?"

"अंग्रेज़, निजाम और मराठे तीनों मिलकर मैसूर पर टूट पड़ेंगे और मैसूर को मिट्टी में मिलाकर रियासत को आपस में

तकसीम कर लेंगे ।"

यह सुनकर मौमिन की दशा ख़राब होगई । वह बुरी तरह घबरा गया । उसने कुछ सँभल कर पूछा, "और क्या सुना है आपने ?"

"बात सुनने की हद से आगे बढ़ चुकी है मौमिन ! तुम्हें फ़ौरन वापस जाना होगा और सुलतान को मेरा यह आख़री पैग़ाम देना होगा । उनसे कहना कि वह इस बात को अपनी चची की इल्तजा करके क़ुबूल करें कि वह इज्ज़त और बेइज़्ज़ती का ख़याल छोड़कर फ़ौरन पूना जायें और नानासाहब से सुलह करलें । कम्पनी के डाइरेक्ट्रों ने कॉर्नवालिस को हिदायत की है कि वह जिस तरह भी मुमकिन हो, मैसूर राज को नेस्तोनाबूद करदे । सुलतान से कहना कि वह अपनी फ़ौज के सब अंग्रेज़ अफ़सरों को बरख़ास्त करदें ।"

मौमिन के लिये वह रात कलकत्ते में काटनी मुश्किल हो-गई । वह रात भर सो नहीं सका और सवेरे उठकर सीधा श्री-रंगपट्टन के लिये प्रस्थान कर गया ।

नज़मा हवेली से कोठी गई तो बद्री पंडित ने बतलाया, "बेग़म ! वह जो रूसी आदमी उस दिन यहाँ आया था, कल फिर आया था।"

"कौन, लिबिदेव ?"

"जी, वही ।"

"कुछ कहता था क्या ?"

"पूछ रहा था आपको । मैंने कह दिया कि कल सुबह भेंट होगी ।"

"क्या बोला ?"

"बोला कुछ नहीं । एक पर्चा छोड़ गया है ।" बद्रीपंडित ने

वह पर्चा नज़मा को दिया।

"बड़ा सीधा आदमी मालूम देता है बेग़म ! लेकिन अंग्रेज़ तो इतने सीधे नहीं होते। यह कैसा रूसी अंग्रेज़ है ?"

"रूसी अंग्रेज़ नहीं, वह रूसी है। वह इङ्गलेण्ड का नहीं रूस का रहनेवाला है। रूस भी एक ऐसा ही देश है जैसे इङ्गलेण्ड और फ्रांस। रूस बहुत बड़ा देश है।"

"इस दुनियाँ में भी बहुत से देश हैं बेग़म ! पहिले मैं यही समझता था कि बस हिन्दुस्तान ही एक देश है दुनियाँ में।"

तभी लिबिदेव आपहुँचा। बद्री पंडित कमरे से बाहर गया और लिबिदेव को नज़मा के पास लिवालाया। नज़मा ने लिबिदेव को आदरपूर्वक बिठा कर पूछा, "कहिये मिस्टर लिबिदेव ! आपका मन लगा स्तीफ़ेन के नाचघर में ? कोई तकलीफ़ तो नही है ?"

"आपने काफ़ी रुपया दिला दिया था, इस लिये मन लग गया। इतना रुपया मुझे पहिले कभी किसी ने नहीं दिया। देता शायद स्तीफ़ेन भी नहीं, अगर आप न कहतीं।"

"में कला को प्यार करती हूँ।"

"कलाकार को नहीं ?"

नज़मा कुछ लजा सी गई लिबिदेव की बात सुनकर।

लिबिदेव के मुख से यह बात अनायास ही निकल गई थी। कुछ देर बाद वह समझा कि उसने कुछ अनुचित बात कहदी। वह सरल भाव से बोला, "मेरी बात को अन्यथा न लेना मिस मेरी ! मेरा मतलब वैसा कुछ नहीं था जैसा मिस्टर स्तीफ़ेन और क्लिक का होता है।"

नज़मा मुस्करादी।

"सचमुच मेरा यह मतलब नहीं था।"

"तब क्या मतलब था तुम्हारा ?"

"मेरा मतलब था कि जब आप किसी चीज़ को पसंद करती हैं तो उसे बनानेवाला भी आपको अच्छा लगेगा। क्या वस्तु से वस्तु के बनानेवाले कलाकार का महत्व अधिक नहीं है ?"

"है क्यों नहीं ?"

"यही मतलब था मेरा।"

नजमा बातों की दिशा बदल कर बोली, "आप वायलन खूब बजाते हैं। और हाँ, आपने अपने आरचेस्ट्रा में जो ये हिन्दुस्तानी साज जोड़े हैं, इससे आपका आरचेस्ट्रा बड़ा सुरीला होगया है। आख़िर, यह सब आपने कहाँ से सीखा ? आपके आरचेस्ट्रा में हिन्दुस्तानी साजिन्दा तो एक भी नहीं है।"

लिबिदेव एक क्षण मौन रहा। फिर बोला, "मुझे पसंद आया और मैंने सीख लिया।"

"आख़िर किसी ने तो सिखाया ही होगा। इतना मुश्किल साज बिला सिखाये तो आ नहीं सकता। काफ़ी मुश्किल है इसे बजाना।"

लिबिदेव को बेग़म की याद आगई। वह बोला, "मद्रास में मैं संडे की छुट्टी में समुद्र के किनारे सैर को निकल जाता था। वहाँ मुझे वायलन बजाने में बहुत आनन्द आता था।"

"हाँ-हाँ, बड़ी प्यारी जगह है वह घूमने के लिये। मेरे पिता मद्रास में काफ़ी दिन रहे हैं। मैं भी वहाँ अक्सर जाया करती थी। बड़ी ख़ूबसूरत जगह है।"

"एक दिन मैं वहाँ बैठा वायलन बजा रहा था। मुझे मालूम नहीं कब और कहाँ से दो आदमी, स्त्री पुरुष, मेरे नज़दीक आकर खड़े होगये। जब मैंने वायलन बजाना बन्द किया तो वह स्त्री बोली, 'ख़ूब वायलन बजाते हो।' मैंने उसकी ओर देखा तो

मैं ठगा सा रहगया। मैं कुछ देर एक टक उसकी ओर देखता रहा। कुछ बोल न सका।"

"क्यों, ऐसी क्या ख़ास बात थी उस औरत में? क्या वह बहुत ख़ूबसूरत थी?"

लिबिदेव बोला, "ख़ूबसूरत तो थी ही, मिठास भी बहुत था उसकी बातों में। वह बहुत अच्छा सितार बजाती थी। यह सितार मुझे उसी ने दिया था। मुझे सितार बजाना भी उसी ने सिखाया।"

"क्या वह औरत हमसे अधिक ख़ूबसूरत थी? तुम हमारी ओर ग़ौर से देखो और मिलान करो दोनों की ख़ूबसूरती का। शायद तुमने अभी तक हमारी ओर को कभी ग़ौर से नहीं देखा।"

लिबिदेव पहिले तो ज़रा भयभीत हुआ कि कहीं मिस मेरी बुरा न मान जायें। स्त्रियोचित स्वभाव से वह परिचित था। स्त्रियाँ अपने सामने अन्य किसी को सुन्दर नहीं समझतीं। परन्तु वह अपने मन की भावना को दबा न सका। वह बोला, "मिस मेरी! सुन्दर और असुन्दर किसी चीज़ के बाहरी रूप की अपेक्षा देखनेवाले की मन की भावना पर अधिक निर्भर करते हैं। यों आप चाहे उससे अधिक ही सुन्दर हैं परन्तु मुझे वही सुन्दर लगीं।"

नज़मा हँस पड़ी। फिर बोली, "मिस्टर लिबिदेव! मुझे आपकी यह बात बहुत पसंद आई और खुशी भी हुई।"

"वह किस लिये?" लिबिदेव ने पूछा।

"तुम्हारी इस बात से मुझे यकीन होगया कि तुम अपना नाम क्लिक और स्तीफ़ेन की सूची में शामिल नहीं करोगे। सच बात यह है मिस्टर लिबिदेव! मुझे अपने हुस्न पर भिनभिनाती हुई ये मक्खियाँ निहायत नापसंद हैं। ये लोग ख़ुद

भी परेशान होते हैं और मुझे भी परेशान करते हैं ।"

लिबिदेव मुस्कराकर बोला, "ऐसा क्यों मिस मेरी ? क्या ख़ूबसूरत चीज़ को हासिल करने की कोशिश करना गुनाह है ? मिस्टर स्तीफ़ेन आपको बहुत प्यार करते हैं ।"

"यह तुमने कैसे जाना ?"

"उनके कहने से ।"

"तुम कुछ नहीं जानते लिबिदेव ! हाँ, तो वह औरत कौन थी ? क्या वह फिर नहीं मिली तुम्हें ?"

"जी नहीं । वह एक दिन अपने पति के साथ चली गईं । कोई नवाब थे कलकत्ते के । उन्होंने मुझसे कलकत्ते में मिलने का वायदा किया था ।"

"तुमने यहाँ तालाश की उनकी ?"

"वे लोग शायद अभी लौटे नहीं हैं । उन्हें दिल्ली होकर आना था ।"

"तुम्हें हिन्दुस्तानी औरत के चक्कर में नहीं फँसना चाहिये मिस्टर लिबिदेव ! हिन्दुस्तानी औरतें बड़ी अजीब क़िस्म की होती हैं । ये सिर्फ़ एक ही मर्द को प्यार करती हैं ।"

लिबिदेव हँसा । फिर बोला, "मेरी बातों का मतलब आपने ग़लत लगा लिया मिस मेरी ! मैंने उन्हें पसन्द किया, इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं उनके चक्कर में फँस गया या उन्हें अपने चक्कर में फँसाना चाहता हूँ ।"

"फिर क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मेरा मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि वे लोग अच्छे आदमी मालूम दिये । स्त्री और पुरुष दोनों अलमस्त थे और तहज़ीब-याफ़्ता भी । दोनों मियाँ-बीवी बड़े नेक थे । मुझे तीन-चार मुलाक़ातों में ही ऐसा लगने लगा कि मानो उनसे मेरा बहुत

पुराना मेलजोल था। मुझसे उन लोगों ने कोई चक्कर की बात नहीं की।"

नज़मा मुस्कराकर बोली, "अच्छा मिस्टर लिबिदेव! मेरे बारे में आपका क्या ख़याल है?"

लिबिदेव इस बात का उत्तर देता हुआ जरा सकुचाया। फिर बोला, "आप दिल की बहुत अच्छी हैं। आप मिस्टर स्तीफ़ेन पर मुनहसिर नहीं करती हैं। शायद वही आप पर मुनहसिर करता है?"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"इस लिये कि कोई मालिक अपने नौकर की इतनी इज्ज़त नहीं कर सकता, जितनी स्तीफ़ेन आपकी करता है।"

"वह प्यार भी तो करता है मुझे।"

लिबिदेव मुस्करा दिया नज़मा की बात सुनकर।

"क्यों, क्या तुम्हारे ख़याल से स्तीफ़ेन मुझे प्यार नहीं करता?"

"करता क्यों नहीं? जिस चीज़ से किसी आदमी को लाभ होता है, वह उसे प्यारी तो लगती ही है। फिर आप तो सुन्दर भी हैं। इसके अलावा और भी कोई कारण हो सकता है, जिसे शायद मैं न जानता हूँ।"

नज़मा मुस्करादी। फिर बोली, "तुमने मुझसे एक घरेलू नौकर के लिये कहा था। क्या कोई मिल गया है?"

"अभी तो कोई नहीं मिला है मिस मेरी! मुझे आदमी की बहुत आवश्यकता है। अगर आप मुझे विश्वास के क़ाबिल आदमी देसकें तो मैं आभारी हूँगा।"

"इस समय मैं अपने आदमी को आपके यहाँ भेज देती हूँ।"

"नहीं मिस मेरी! मैं अपने आराम के लिये आपको तकलीफ़

नहीं देना चाहता।"

"मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होगी। मेरा दूसरा नौकर आ-गया है।"

"तब ठीक है। आप उसे भेज दीजिये।" इससे मेरी काफ़ी परेशानी दूर होजायेगी।"

समय होगया था। नज़मा और लिबिदेव रिहर्सल के लिये नाचघर चले गये।

इक्कीस

नज़मा रिहर्सल से लौटकर अपनी कोठी पर आई तो बद्री पंडित बोले, "बेग़म ! क्या मुझसे कोई भूल होगई है।" उसका चेहरा बहुत उदास था।

"क्यों ?"

"आप मुझे निकाल जो रही हैं।"

नज़मा हँसकर बोली, "बद्री पंडित ! क्या तुम्हें मैं कभी अपने पास से इस ज़िन्दगी में जुदा कर सकती हूँ ? मैं तुम्हें पिताजी की जगह समझती हूँ। मैं तुम्हें किसी ख़ास काम के लिये लिबिदेव के यहाँ भेज रही हूँ।"

"किस काम के लिये ?"

"लिबिदेव संस्कृत और बँगला सीखना चाहता है। तुम किसी दिन मौका देखकर इसे पंडित गोलकनाथ के पास लेजाना। उनसे मेरा नाम लेकर कहना कि वह इसकी सहायता करें।"

"कौन पंडित गोलकनाथ बेग़म ?"

"वही, जो नवाब साहब के पास चौपड़ खेलने आया करते थे। स्ट्रैण्ड रोड पर चौथा मकान है उनका। तुम पहिले मिल-आना उनसे और बतला देना कि हमारे बारे में वह इससे कोई बात न करें और नवाब साहब का भी इसके सामने ज़िक्र

न करें।"

बद्री पंडित दूसरे दिन प्रातःकाल लिबिदेव के मकान पर चला गया। बद्री पंडित बड़ा समझदार आदमी था। नज़मा के साथ रहकर कुछ अंग्रेज़ी के शब्द भी वह समझने लगा था। अपने मतलब की बात समझने में उसे कठिनाई न होती थी और टूटे-फूटे शब्द भी बोल लेता था। इधर जब से नजमा का सम्पर्क नाचघर से हुआ था तब से काफ़ी अंग्रेज़ उसके पास आने लगे थे और उनकी बातें सुनने-समझने का उसे अवसर मिला था।

बद्री पंडित घर के कामों में निपुण था। उसके काम को देखकर लिबिदेव उससे बहुत प्रसन्न हुआ।

बद्रीपंडित को भारतीय साजों का भी अच्छा ज्ञान था। वह तबला बहुत अच्छा बजाता था और सितार बजाना भी जानता था।

संध्या को नाचघर से लौटकर भोजन के पश्चात् लिबिदेव रियाज़ किया करता था। उस दिन वह वायलन न लेकर सितार पर रियाज़ करने बैठा तो बद्री पंडित भी उसके निकट जा बैठा। लिबिदेव ने सितार की स्वर-लहरियों के साथ जब बद्री पंडित का सिर हिलता देखा तो उसने पूछा, "जानते हो सितार बजाना ?"

बद्री पंडित ने गर्दन हिलाकर जानने का संकेत किया तो लिबिदेव ने मुस्कराकर सितार उसकी ओर बढ़ा दिया। बद्री पंडित ने सितार बजाना आरम्भ कर दिया। यह देखकर लिबिदेव आश्चर्यचकित रहगया। उसका चेहरा खिल उठा। उसने बद्री पंडित को शाबाशी देकर कहा, "बहुत बढ़िया।"

"सर ! अब आप बजावें और मैं तबला बजाऊँगा। तबला है आपके पास ?"

"तबला क्या होता है ?"

बद्री पंडित मुस्कराया। फिर बोला, "सर! बिला तबले के सब साज़ अधूरे हैं। आप ठहरिये, मैं तबला लेआता हूँ।" यह कहकर बद्री पंडित वहाँ से उठकर सीधा नज़मा की हवेली पर पहुँचा। नज़मा उस समय वहीं थी।

"कैसे आये बद्री पंडित !" नज़मा ने पूछा।

"कुछ नहीं, मुझे तबला चाहिये।"

"तबला ! तबले का क्या करोगे ?"

बद्री पंडित मुस्कराया। फिर बोला, "आपके लिबिदेव साहब जानते ही नहीं तबला क्या चीज़ होती है। बिला तबले के भी कहीं सितार बजाया जाता है। बेताल का राग अलापते हैं। क्या इन लोगों के यहाँ तबला नहीं होता बेग़म ?"

"इन लोगों के साज हमारे साजों से अलग तरह के होते हैं बद्री पंडित ! तुमने सितार बजाकर सुनाया लिबिदेव को ?"

"जी सुनाया। वह बहुत खुश हुए।"

"लेजाओ तबला। उनसे कहना कि मैंने उन्हें याद किया है।"

"इस समय यह कहने से तो वह यही समझेंगे बेग़म ! कि मैं ये तबले आपके ही पास से लाया हूँ।"

"तुम बहुत समझदार हो बद्री पंडित ! इस वक्त कुछ न कहना। और हाँ, पंडित गोलकनाथ से मिले तुम ?"

"जी मिल लिया हूँ। कल साहब को उनके पास ले-जाऊँगा।"

बद्री पंडित तबले लेकर वहाँ पहुँचा तो लिबिदेव उसकी प्रतीक्षा में था। बद्री पंडित के हाथों में तबले देखकर लिबिदेव बोला, "तबले लेआये बद्री पंडित !"

बद्री पंडित ने लिबिदेव को तबले दिखाकर कहा, "सर ! इनके बिला हमारे यहाँ कोई साज नहीं बजाया जाता।" यह कहकर बद्री पंडित ने तबले पर ठेका देकर कहा, "अब बजाइये सितार।"

लिबिदेव ने सितार बजाना आरम्भ किया। तबले के साथ सितार बजाने में उसे बहुत आनन्द आया। उसे लगा जैसे सितार का स्वर तबले की ताल पर सवार होकर इस शान से आगे बढ़ा जैसे सवार घोड़े पर चढ़कर घोड़े को दुलकी चलाता है।

"वण्डरफुल बद्रीपंडित ! तुम्हारे तबले ने हमारे सितार की चाल को बाँध दिया।"

बद्री पंडित बोले, "सर ! तबले का यही काम है। जैसे हुस्न से आँखें और दिलरुबा से दिल बँध जाते हैं, वैसे ही तबले की ताल से साजों का संगीत जुड़ जाता है।"

बद्री पंडित की बात सुनकर लिबिदेव ने बड़े आश्चर्य से उसकी ओर देखा। वह बोला, "बद्री पंडित ! क्या तुम कुछ पढ़ना-लिखना भी जानते हो ?"

"बहुत कम जानता हूँ सर ! यह बात जो मैंने आपके सामने कही, यह पंडित गोलकनाथ कहाकरते हैं।"

"पंडित गोलकनाथ कौन ?"

"वह अंग्रेज़ी, बंगला और संस्कृत के विद्वान् हैं।"

"अंग्रेजी भी जानते हैं ?"

"बहुत अच्छी जानते हैं ?"

"तुम उनसे किसी दिन हमारी मुलाक़ात कराना।"

"आपकी जब इच्छा हो, तब चलें। बहुत अच्छे आदमी हैं।"

"तुम पहिले उनसे जाकर समय निश्चित करलो।"

बद्री पंडित बोला, "आप अपना समय देखलें। वह तो हर समय अपने घर पर ही रहते हैं। वह कहीं जाते नहीं हैं। हम जब भी चलेंगे, वह हमें घर पर ही मिलेंगे।"

"तो फिर कल चलेंगे बद्री पंडित! कल सुबह हम पहिला काम यही करेंगे। मैं तो ऐसे आदमी की खोज में था।"

दूसरे दिन बद्री पंडित लिबिदेव को अपने साथ लेकर पंडित गोलकनाथ के पास गये।

"अरे बद्री पंडित! तुम कहाँ हो आजकल?"

"मैं साहब के पास हूँ। साहब बहुत अच्छे साज बजाना जानते हैं। आप रूस देश के निवासी हैं। बहुत अच्छे आदमी हैं।"

"क्या करते हैं तुम्हारे साहब?"

"जी, स्तीफ़ेन साहब के नाचघर में साज बजाते हैं। यह सितार बहुत अच्छा बजाते हैं।"

पंडित गोलकनाथ ने फिर लिबिदेव से सीधी बातें करनी आरम्भ करदीं। उन्होंने पहिले लिबिदेव का नाम पूछा। फिर यह पूछा कि वह हिन्दुस्तान में कब आया और कहाँ-कहाँ रहा। अन्त में कहा, "आपने बड़ी कृपा की, जो दर्शन दिये। कहिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

लिबिदेव विनम्रतापूर्वक बोला, "आप से मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मुझे भारत में आये क़रीब तीन वर्ष होचुके हैं। मैं जब से यहाँ आया हूँ, मेरी यह इच्छा रही है कि यहाँ की भाषा सीखूँ।"

"आप यहाँ की भाषा किस लिये सीखना चाहते हैं?"

"यहाँ की भाषा जाने बिला मैं यहाँ के बारे में कुछ नहीं जान सकता। न मैं यहाँ की संस्कृति को समझ सकता हूँ, न यहाँ के इतिहास से परिचित हो सकता हूँ और न ही मैं यहाँ

के लोगों से बातें करके उनके विचारों और भावों को समझ सकता हूँ।"

"यह सब आप किस लिये करना चाहते हैं?"

"इस लिये कि जब मैं अपने देश को लौटूँ तो वहाँ जाकर अपने देशवासियों को हिन्दुस्तान के विषय के जानने योग्य बातें बता सकूँ। मैं देखना चाहता हूँ कि हमारे देश में रहने वालों में और इस देश के रहने वालों में क्या-क्या समानतायें हैं और क्या-क्या भिन्नतायें। ये बातें मैं उस समय तक नहीं जान सकता जब तक मैं यहाँ की भाषा को सीख कर यहाँ के लोगों के सम्पर्क में न आसकूँ। यहाँ की भाषा सीखकर मैं यहाँ के साहित्य को पढ़ना चाहता हूँ।"

"यह उद्देश्य तो बुरा नहीं है। हम लोग ज़रा डरते हैं यूरोप वालों से। एक विलियमजोन्स है यहाँ। बड़ा विद्वान् समझता है अपने आपको। वह खाक नहीं जानता हमारी भाषा और साहित्य के विषय में और समझता यह है कि उससे बड़ा कोई विद्वान् आज तक पैदा ही नहीं हुआ। वह मेरे पास अक्सर आता रहता है। वह भाषा और साहित्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिये भी हथियार बाँधकर चलता है, जैसे शिकारी शिकार खेलने जाता है।"

लिबिदेव को हँसी आगई इस बात पर।

"मैं सच कह रहा हूँ आपसे। वह यही करता है और जहाँ कहीं उसे फटी-पुरानी कोई किताब दिखाई देजाती है उसे ज़बरदस्ती उठा लाता है।"

"वह किस लिये?"

पंडित गोलकनाथ हँसकर बोले, "बेवक़ूफ़ों और महाबुद्धिमानों, यानी चालाकों और मक्कारों की दुनियाँ में कभी नहीं

है मिस्टर लिबिदेव ! यह आदमी बड़ा चालाक और मक्कार है और बेवक़ूफ़ भी ।"

"ये दो विपरीत बातें कैसे हो सकती हैं पंडित गोलकनाथ जो !" अब दोनों परस्पर कुछ खुलते जारहे थे ।

पंडित गोलकनाथ लिबिदेव की इस बात पर ख़ूब हँसे । फिर बोले, "बात तो आपने सिद्धान्त की कही मिस्टर लिबिदेव ! परन्तु कुछ विद्वान् ऐसे भी होते हैं जो सिद्धान्तों की सीमा का उल्लंघन कर जाते हैं । हमारे विलियमजोन्स उसी कोटि के विद्वान् हैं । बेवक़ूफ़ मैं उसे मानता हूँ जो उस चीज़ में हस्ताक्षेप करे जिसका उसे ज्ञान न हो । संस्कृत का काला अक्षर उसके लिये भैंस के बराबर है और समझता वह अपने आपको वेद व्यास है ।"

"वेद व्यास कौन थे ?"

"आर्य-संस्कृति के चार आधार-ग्रन्थ हैं ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद । इन्हें सर्वप्रथम आचार्य वेद व्यास ने ही लिपिबद्ध किया था । क्या ख़याल है आपका ? मेरे विचार से आप भी ऐसे आदमी को मूर्ख ही कहेंगे ना । अब रही महाबुद्धिमान होने की बात । बुद्धिमान वह व्यक्ति है जो सत्य को सत्य प्रमाणित कर सके और महाबुद्धिमान मैं उसे कहता हूँ जो डंके की चोट पर असत्य को सत्य घोषित करे । हमारे विलियम जोन्स महोदय ने रिवालवर के दम पर प्राप्त कूड़ा करकट ब्रिटिश म्यूज़िम को लाखों रुपये में बेच डाला ।

वह जानता है कि वहाँ इन्हें पढ़ने और समझने वाला कोई नहीं है ।"

पंडित गोलकनाथ की इस बात पर लिबिदेव को बहुत हँसी आई । वह बोला, "विलियमजोन्स, इसका मतलब है, अपने

राष्ट्र को भी धोखा देरहा है।"

"यह कोई बात नहीं है मिस्टर लिबिदेव ! राष्ट्र और देश तो बाद में आते हैं, पहिले रुपये की आवश्यकता होती है आदमी को। जब वह देखता है कि मामूली-मामूली अंग्रेज़ भी यहाँ आकर लखपति बन गये, तो उसे सोचना पड़ा कि वह इतना बड़ा विद्वान् होकर ख़ाली हाथ कैसे रहा ? यह एक दम फटे हाल आया था हिन्दुस्तान में। आज लाखों में खेल रहा है।"

वह दिन इसी प्रकार की बातों में निकल गया। बातों-बातों में दोनों ने एक दूसरे को समझने का प्रयास किया।

दूसरे दिन लिबिदेव पंडित गोलकनाथ के पास अकेला ही चला आया। अब उसे बद्री पंडित को साथ लाने की आवश्यकता नहीं थी।

पंडित गोलकनाथ बोले, "कल मैंने आपको थोड़ा विलियम जोन्स का परिचय दिया। मैं समझता हूँ आप हमारी भाषा का अध्ययन उस विचार से नहीं करना चाहते, जिस विचार से मिस्टर जोन्स करना चाहता है। हमारी भाषा सीखने के लिये आपको श्रम करना होगा और विशेष रूप से संस्कृत के लिये।"

"मैं पूरी तरह तय्यार हूँ उसके लिये।" लिबिदेव ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"तब ठीक है। मैं आपको संस्कृत और बँगला सीखने में सहयोग दूँगा।" यह कहकर गोलकनाथ ने लिबिदेव को संस्कृत का व्याकरण दिया और उसका पहिला पाठ पढ़ाया।

लिबिदेव का अध्ययन-कार्य चलने लगा। पहिले वह कभी-कभी नज़मा की कोठी पर हो आता था, परन्तु अब उसके पास अवकाश नहीं रहा कहीं जाने का। नाचघर में वह अवश्य

जाता था, क्योंकि उसके बिला उसका जीवन नहीं चल सकता था। नाचघर के अतिरिक्त वह और कहीं नहीं जाता था।

पंडित गोलकनाथ लिबिदेव को केवल भाषा ही नहीं सिखाते थे वरन् समय-बे-समय भारतीय संस्कृति, दर्शन और इतिहास को लेकर भी बातें करते थे और लिबिदेव की कठिनाइयों का समाधान करते थे।

लिबिदेव को पंडित गोलकनाथ ने संस्कृत के प्रमुख नाटककार कालिदास, हर्ष, शूद्रक, विशाखदत्त, भास और भवभूति का परिचय देते हुए अभिज्ञान शाकुन्तलम्, नागानन्द, उत्तररामचरित्, स्वप्नवासवदत्तम्, मुद्राराक्षस इत्यादि नाटकों के विषय में भी बतलाया। लिबिदेव यह सब जानकर आश्चर्यचकित रहगया।

"क्या संस्कृत में इतने बड़े-बड़े नाटककार हुए हैं?"

पंडित गोलकनाथ मुस्कराकर बोले, "विलियमजोन्स को यह सब कुछ पता नहीं है। ये नाटककार शेक्सपीयर के ही समान प्रतिभासम्पन्न थे।" यह कहकर उन्हें हँसी आगई।

"आप हँसे क्यों?"

"मुझे विलियमजोन्स की एक दिन की बात याद आई। वह मेरे पास एक दिन कहीं से अपभ्रंश की एक साधारण पाण्डुलिपि लाया और बोला, 'वेल पंडित! हमें एक क्लासिक का ओरिजिनल (मूल) मिला है। यह हमको बड़ी मुश्किल से मिला है। एक पंडित के पास था। हमने उसे गिरफ़्तार करा दिया और उससे यह ज़बरदस्ती छीन लिया। इतनी बढ़िया किताब वह बेवक़ूफ़ लिये बैठा था। तुम देखो, यह क्या है?'

मैंने पांडुलिपि देखी तो वह एक साधारण धार्मिक कथाओं का संग्रह था। मैंने गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर कहा, 'विलियम

जोन्स ! तुम्हें तो यह ख़ज़ाना मिल गया। बहुत बढ़िया नाटक है। यह संस्कृत का पहिला नाटक है ?'

'तब तो इसका हपको बहुत रुपया माँगना होगा म्यूज़ियम से।'

'बिलकुल' मैंने कहा। 'इसका तो तुम जो माँगलो वही कम है। इसकी कोई क़ीमत नहीं है।'

विलियमजोन्स ने मुझे कुछ दिन बाद बतलाया कि उसके उसे पचास हज़ार रुपये मिले। उसने विलायत को लिखा कि उसने वह पाण्डुलिपि अपनी जान पर ख़तरा मोल लेकर प्राप्त की थी।"

लिबिदेव हँसकर बोला, "इसका मतलब यह है कि विलियमजोन्स को भाषा का ज्ञान तो है ही नहीं, स्क्रिप्ट का साधारण ज्ञान भी नही है। नाटक और कथाओं की तो लिखाई और वाक्यों की बनावट में भी अन्तर होता है।"

"पाण्डुलिपि पर नज़र डालने की फ़ुर्सत किसके पास है मिस्टर लिबिदेव ! जोन्स ने तो शायद उसे खोलकर भी नहीं देखा।"

जब ये बातें चल रही थीं तभी विलियमजोन्स वहाँ आगया, एकदम टिपटाप। देखने में लगता था मानो कोई सार-जेण्ट आगया।

"कहाँ से आरहे हैं मिस्टर जोन्स ?"

"मुर्शिदाबाद से।"

"क्या लेआये मुर्शिदाबाद से ?"

जोन्स ने एक बस्ता उनके सामने रखकर कहा, "ज़रा देखिये तो इसमें क्या है। बड़ी मुश्किल से हाथ लगा है। कम्बख्त ने ज़मीन में गाड़ा हुआ था। तुम्हारे हिन्दुस्तानी इन चीज़ों की क़द्र

करना नहीं जानते। इसी लिये हमको इस काम में इतनी तकलीफ़ होती है।"

पंडित गोलकनाथ ने बस्ता खोलकर देखा। उसमें एक पुराना हिसाब-किताब का बहीखाता था और दूसरी भाट की पोथी। पंडित गोलकनाथ गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर बोले, "ये किसने दबारखे थे मिस्टर जोन्स ?"

विलियमजोन्स ख़ूब हँसा। ख़ूब हँसा। फिर बोला, "एक तिलकधारी पण्डे ने। इन्हें दिखा-दिखाकर वह लोगों को ठगता था। हमको हमारी सी. आई. डी. ने इसकी ख़बर दी। हम फ़ौरन पुलिस लेकर वहाँ पहुँचे और उसका सब सामान उठा-लाये। तुमने देखा, क्या चीज़ है यह ?"

"चीज़ें तो तुम लाजवाब खोजकर लाते हो मिस्टर जोन्स !" फिर लिबिदेव की ओर मुँह करके पंडित गोलकनाथ बोले, "देखा मिस्टर लिबिदेव ! विलियम जोन्स कितना बड़ा काम कर रहे हैं। यह काम हर आदमी नहीं कर सकता। इन्हें जिधर भी किसी पांडुलिपि की बू आती है यह उधर ही झपट पड़ते हैं और जब तक उसे प्राप्त नहीं कर लेते हैं तब तक इन्हें चैन नहीं आती। यह अब तक हज़ारों ग्रन्थों की खोज कर चुके हैं।'

"इनका यह क्या करते हैं ?"

"करते क्या हैं ? इन्हें यह इङ्गलैंड भेज देते हैं। वहाँ से इन्हें इनाम मिलता है। इन्हें लाखों रुपया मिल चुका है।" फिर विलियमजोन्स की ओर देखकर लिबिदेव की ओर इशारा करते हुए बोले, "आप इनसे परिचित नहीं हैं मिस्टर जोन्स ! मिस्टर लिबिदेव, प्रसिद्ध वायलनिस्ट। इन्हें भी भारतीय भाषा सीखने का शौक है।"

जोन्स ने बड़े ध्यान से लिबिदेव की ओर देखा। फिर बोला,

"हमने शायद तुम्हें कहीं देखा है।"

"जी मैं आपसे मिला था एक बार।"

"ओ, येस। तुमने संस्कृत और बँगला सीखने की बात की थी।" फिर हँसकर गोलकनाथ से बोला, "पंडित गोलकनाथ, इन्हें बतलाइये यह काम कितना मुश्किल है। हमने कितना ख़तरा मोल लिया है इस काम को करने में।" रिवालवर हाथ में लेकर बोला, "इसके लिये इसकी मदद चाहिये। बिला इसकी मदद के यह काम नहीं किया जा सकता।"

"तुम्हारे आने से पूर्व मैं इन्हें यही बतला रहा था मिस्टर जोन्स! इन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ यह बात सुनकर। यह हिन्दुस्तान के हालात से परिचित नहीं है।"

"तुमने बतलाया नही, ये किताबें क्या हैं?" जोन्स ने पूछा।

पंडित गोलकनाथ ने उन्हें फिर उलट-पलट कर देखा। वह बोले, "तुमने बिलकुल नई खोज की है मिस्टर जोन्स! एक गणित की पुस्तक है और दूसरी महाकाव्य है।"

"अरिथमेटिक तुम्हारा मतलब है और क्लास्कि, वण्डरफुल, न्यू फाउण्ड (नई खोज)"

"इसमें कोई संदेह नहीं। इनपर आपकी सरकार को कम-से-कम एक लाख रुपया देना चाहिये।"

"देगी, ज़ुरूर देगी। हमारी सरकार हमारे काम की क़ीमत पहिचानती है।" फिर लिबिदेव की ओर देखकर बोला, "तुम्हारी सरकार बहुत पिछड़ी हुई है। यह बड़ा मुश्किल काम है। हर आदमी यह काम नहीं कर सकता। तुम अपना वायलन बजाओ। हमने तुमको स्तीफ़ेन के नाचघर में देखा था।"

"जी हाँ, मैं वहीं काम करता हूँ।"

"हम स्तीफ़ेन को बोलकर तुम्हारी तरक्की करा देगा। तुम इस बेकार काम में मत पड़ो। यह काम तुम्हारे लिये करना बहुत

मुश्किल है ।"

"वह तो कृपा है आपकी । मुझे मेरी ज़ुरूरत के लिये काफ़ी रुपया मिल रहा है। इससे अधिक लेकर क्या करूँगा ?"

"रुपये का काफ़ी क्या होता है ? रुपया आदमी जितना कमाये उतना ही कम होता है ? स्तीफ़ेन को देखो, कितनी दौलत कमाई है उसने । वह जब यहाँ आया था तो भूखा मरता था। अब लाखों रुपया है उसके पास ।"

"फिर भी वह रुपये के लिये परेशान रहता है ?"

पंडित गोलकनाथ विलियमजोन्स की पुस्तकों को उसे देकर बोले, "मिस्टर जोन्स ! चीज़ें आपको बहुत नायाब मिल गईं । इन्हें आप फ़ौरन विलायत भेज दें । इन ग्रन्थों से आपकी ख्याति को चार चाँद लग जायेंगे । आपकी योग्यता का सिक्का बैठ जायेगा ।"

"ऐसी बात है ।" जोन्स बोला ।

"बिलकुल मिस्टर जोन्स !"

जोन्स के चले जाने पर पंडित गोलकनाथ बोले, "देखी आप ने जोन्स की विद्वता और इसका भाषयिक ज्ञान । इस मूर्ख को भारतीय भाषाओं का कोई ज्ञान नहीं है । यह अपनी इसी लूट-पाट के कारण भाषा वैज्ञानिक बनाबैठा है । मूर्ख कहीं का ।"

"मेरा विचार ऐसा भाषयिक ज्ञान प्राप्त करने का नहीं है । मुझे इस तरह की पाण्डुलिपियों की भी आवश्यकता नहीं है और न ही मुझे यहाँ का कोई ग्रन्थ अपने देश भेजना है । मैं तो यही चाहता हूँ कि मैं यहाँ की भाषा का ज्ञान प्राप्त कर यहाँ के साहित्य का अध्ययन कर सकूँ और यदि सम्भव होसके तो उनका रूसी भाषा में अनुवाद कर सकूँ ।"

पंडित गोलकनाथ से लिबिदेव का परिचय धीरे-धीरे घनिष्ट होकर मित्रता में परिणत होगया ।

बाईस

नज़मा को पंडित गोलकनाथ ने लिविदेव के कार्य का ज्ञान कराया तो उसे बहुत प्रसन्नता हुई। पंडित गोलकनाथ ने लिवि-देव के विषय में बतलाया, "लिविदेव बड़े कर्मनिष्ठ और सज्जन व्यक्ति हैं। उनके अन्दर अंग्रेज़ों का जैसा छल-छिद्र नहीं है। उनका भारतीय भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने का उद्देश्य भी प्रशंसनीय है।"

"इसमें कोई शक नहीं है पंडितजी! मैंने इस आदमी को परखकर ही आपके पास भेजा है। इसका हमारी भाषा के सीखने में कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं है। यह राजनीति का आदमी है ही नहीं। हमारी भाषा के प्रति इसके सम्मान का कारण यह है कि यह हिन्दुस्तानियों में हिल मिलकर उनके नज़दीक आना चाहता है और उनसे बातें करके उनके जीवन से परिचित होना चाहता है।"

"कल जब लिबिदेव मेरे पास आया तो अनायास ही विलियम जोन्स भी आगया।"

"बड़ा मक्कार आदमी है। इसने काफ़ी रुपया बना लिया है। इङ्गलैंड के लोग काफ़ी चालाक हैं, लेकिन यह उनका भी उस्ताद निकला। यह उन्हें भी उल्लू बना रहा है। यह उन्हें

कूड़ा-करकट भिड़ाकर रुपया ऐंठ रहा है।"

"उस्ताद नहीं महाउस्ताद है बेग़म! जैसे हम लोगों के यहाँ महाब्राह्मण होते हैं, जो मुर्दों का कफ़न लेते हैं, वैसा ही यह महाउस्ताद है जो यहाँ बैठा इङ्गलैंड के विद्वानों के कान काट रहा है। इसने अपनी भाषा-विज्ञता का ऐसा ढोंग रचा हुआ है कि बस कमाल है।"

नज़मा हँसकर बोली, "आप भी इसे खूब बेवकूफ़ बनाते हैं। इस वक्त यह पैसा अवश्य कमा रहा है लेकिन जब दूसरे कुछ अंग्रेज़ हमारी भाषाओं को सीखकर उन किताबों को देखेंगे जो यह इङ्गलैंड के म्यूज़ियम में भर रहा है, तो तब इसकी पोल खुलेगी।"

"तब भी कुछ नहीं होगा बेग़म!"

"क्यों नहीं होगा?"

"अपनी मूर्खता को कौन स्वीकार करता है बेग़म? भाषा वैज्ञानिकों में तो इसका नाम दर्ज हो ही गया।"

"लिबिदेव के कैसे हाल-चाल हैं। कुछ समझ में आती है उसके हमारी भाषा?"

"बड़ा परिश्रमी आदमी है बेग़म! अब तो वह बहुत कुछ समझने लगा है। अच्छी ख़ासी बँगला बोल और लिख लेता है। मुझे आशा नहीं थी कि वह इतना शीघ्र हमारी भाषा सीख लेगा।"

"यह तो आपने बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी दी। इसी लिये उसे इन दिनों मेरे पास आने का समय नहीं मिला।"

"आपकी लिबिदेव से कहाँ भेंट हुई थी बेग़म?"

"मद्रास में यह एक दिन समन्दर के किनारे बैठा वायलन बजा रहा था। मैं और नवाब साहब घूमते हुए उधर जा निकले,

बस भेंट होगई। कलकत्ते में इससे नज़मा के रूप में मैं अभी नहीं मिली हूँ। बँगला और संस्कृत सीखने की इच्छा इसने मद्रास में ही ज़ाहिर की थी और मैंने वायदा कर लिया था कि इसके कलकत्ता आने पर मैं इसकी सहायता करूँगी।"

पंडित गोलकनाथ के लौटने पर नज़मा अपनी कोठी पर गई। उस दिन उसे नाचघर के रिहर्सल में नहीं जाना था, क्यों कि नाचघर में वही नृत्य होना था जो पहिले दिन हुआ था। नज़मा ने इस्माइल से कहा, "इस्माइल! काफ़ी दिन से नबाब साहब की कोई ख़बर नहीं मिली। मन बड़ा बेचैन सा होरहा है।"

"बेचैनी की तो बात ही है बेग़म! मैं तो यही सोचता हूँ कि आप लोग इस तरह रह कैसे रहे हैं?"

"इस्माइल! नवाब साहब इस वक्त जो काम कर रहे हैं उसकी क़ीमत को आँकना बहुत मुश्किल है। उस काम का अन्दाज़ लगाओ इस्माइल! जिसके लिये कोई इन्सान घर-बार, ऐशोआराम और सब कुछ छोड़कर देश-परदेश में भटकता फिर रहा है।।"

"वह क्या काम है बेग़म?"

"अपने देश की हिफ़ाज़त। अपने देश की आज़ादी। नवाब साहब उसी के लिये अपने ऐशोआराम को लात मारकर देश-परदेश में भटक रहे हैं। इस भटकने में उनका कोई ज़ाती फ़ायदा नहीं है। वह जो कुछ कर रहे हैं, अपनी क़ौम की ख़ातिर कर रहे है।"

"नवाब साहब ने भी ज़िन्दगी में ज़बरदस्त पलटा खाया है बेग़म! कहाँ एक दिन अंग्रेज़ों का इनसे बड़ा कोई दोस्त नहीं था और कहाँ आज शायद ही इनसे बड़ा अंग्रेज़ों का कोई दुश्मन हो।"

"उस वक्त यह अंग्रेज़ों की असलियत को नहीं समझते थे इस्माइल ! इसी लिये इनके जाल में फँस गये थे । इन्सान को ठोकर खाकर अक्ल आती है। जब तक उसे ठोकर नहीं लगती, तब तक उसे सही रास्ता दिखाई नहीं देता । उस समय अंग्रेज़ों ने इनकी आँखों पर परदा डाला हुआ था। उस पर्दे में आँखें बन्द किये यह ख़न्दक की ओर बढ़ते गये । खुदा बन्देताला का लाख-लाख शुक्रिया अदा करती हूँ कि उसने इन्हें बचा लिया ।" कहते-कहते नज़मा की आँखें बन्द होगई और उसके दोनों हाथ आकाश की ओर जुड़ गये । तभी, किसी ने द्वार पर दस्तक दी ।

इस्माइल ने द्वार खोले तो उसने देखा लिबिदेव सामने खड़ा था ।

"मिस मेरी हैं ।"

"जी हैं, तशरीफ़ लाइये ।"

इस्माइल ने लिबिदेव को बैठक में लेजाकर बिठाया और फिर नज़मा को उसके आने की सूचना दी । नज़मा बोली, "मैं सोच ही रही थी कि आज लिबिदेव को आना चाहिये ।"

नज़मा वस्त्र बदलकर बैठक में गई । वह बोली, "मिस्टर लिबिदेव ! कहिये, खुश तो हैं ।"

"इधर काफ़ी दिन से मैं आपके पास नहीं आसका । कुछ ऐसा काम में फँस गया कि समय ही नहीं मिला कहीं जाने का ।"

कोई और साज बजाना सीख रहे होगे या रियाज़ में फँसे रहे होगे । रियाज़ न किया जाये तो अँगुलियाँ इधर-उधर पड़ने लगती हैं । नाच की भी यही हालत है मिस्टर लिबिदेव ! अगर मैं दो-चार दिन के लिये भी नाचना बन्द करदूँ तो पैर जकड़े-जकड़े से होजाते हैं और नाचते समय लड़खड़ाने लगते हैं ।"

"जी हाँ, कुछ रियाज़ जैसी ही चीज़ में फँसा रहा। आपने मेरे पास जो आदमी भेजा था……।"

"क्यों, क्या उसने कोई ग़लती करडाली ?"

"जी नहीं। वह बड़ा काम का आदमी निकला।"

"काम का तो वह है ही। इसी लिये तो मैंने उसे तुम्हारे पास भेजा था। घर का कोई काम उसे समझाने की ज़ुरूरत नहीं। सब काम ख़ुद कर लेता है।"

"सिर्फ़ यही नहीं, वह और भी बड़े काम का आदमी है।"

"हाँ-हाँ, मैं तो भूल ही गई थी आपको बतलाना। बद्री पंडित को गाने-बजाने का भी शौक है। कुछ साज भी वह बजा लेता है। लेकिन हिन्दुस्तानी साज बजाने जानता है वह।"

"बहुत अच्छे साज़ बजाता है। वह कई ऐसे साज़ भी बजाने जानता है जो मैंने देखे ही नहीं थे।"

"सच !"

"सच मिस मेरी ! आपने मुझे जो आदमी दिया, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।"

नज़मा मुस्कराई। फिर बोली, "अच्छा यह बतलाओ मिस्टर लिविदेव ! जिन लोगों का तुमने जिक्र किया था, क्या वे लोग कलकत्ता आगये ?"

"अभी नहीं आये मिस मेरी ! रास्ते में कहीं किसी आफ़त में न फँस गये हों बेचारे।"

"क्यों, आफ़त की क्या बात है ?"

"इतने लम्बे सफ़र में हज़ार मुसीबतें आसकती हैं। वह कह भी रही थीं।"

"क्या कहा था उन्होंने ?"

लिविदेव मुस्कराया। फिर बोला, "आप हर बात की तह

तक पहुँचना चाहती हैं मिस मेरी ! जिस तरह यहाँ आकर मेरी इच्छा यहाँ के साज सीखने की हुई। उसी तरह मेरी इच्छा यहाँ की भाषा सीखने की भी थी। मेरे इस काम में उन्होंने मेरी सहायता करने का वचन दिया था। उन्होंने कहा था, "आप यकीन रखें मिस्टर लिबिदेव ! जब आप कलकत्ता आयेंगे तो मैं आपका सब प्रबन्ध करदूँगी। शर्त यही है कि मैं वहाँ पहुँच जाऊँ।"

"यह बात तो सच कही उन लोगों ने। रास्ते आजकल बहुत खतरनाक होगये हैं। किस मज़हब के लोग थे वे ? मुसलमान तो नहीं थे।"

"मुसलमान ही थे।" लिबिदेव बोला।

"बिलकुल ठीक। उन्हें दिल्ली आने के लिये मराठा-राज में से होकर गुज़रना पड़ा होगा और मराठा-राज में होकर मुसलमानों का गुज़रना एक ख़तरे की बात है।"

"यह क्यों मिस मेरी ?"

"आप नहीं जानते मिस्टर लिबिदेव ! इस देश के हिन्दू और मुसलमानों में, आपस में बड़ी फूट है। ये दोनों एक दूसरे के दुश्मन हैं। लेकिन हाँ, आप यहाँ की भाषा क्यों सीखना चाहते हैं ?"

लिबिदेव ने नज़मा के चेहरे पर बड़े ध्यान से देखा। यह एक अंग्रेज़ औरत का प्रश्न था, जिसका उत्तर लिबिदेव उस तरह नहीं देसकता था जैसे खुले दिल से उसने अपने भाव बेग़म या पंडित गोलकनाथ पर व्यक्त कर दिये थे। वह बोला, "आप जानती ही हैं कि मुझे गाने-बजाने और नाटक का शौक है जब मैंने यहाँ के साज बजाने सीखे तो सोचा कुछ गाने भी सीखलूँ। गाने सीखने के लिये यहाँ की भाषा को जानना

आवश्यक है।"

नज़मा मुस्कराई। उसने अपने मन में कहा, 'नज़मा! तू इस रूसी को जितना भोला समझ रही थी, उतना भोला नहीं है यह। सरल अवश्य है, लेकिन वक्त के मुताबिक अपने आपको ढालना जानता है।' अब उसे संदेह न रहा कि लिबिदेव की सरलता उसे कभी कोई हानि पहुँचा सकती है। वह बोली, "तो तुम हिन्दुस्तानी गाने सीखना चाहते हो।"

"जी इरादा तो यही है।"

"तुम विलियमजोन्स से मिलो। वह हिन्दुस्तान की इतनी भाषा जानता है जितनी हिन्दुस्तान के लोग भी नहीं जानते। उसने यहाँ की सब अच्छी-अच्छी किताबें इङ्गलेण्ड के म्यूज़ियम में भेज दी हैं। अब यहाँ कुछ नहीं रहा है। सीखने के लिये।"

लिबिदेव ने नज़मा की इस बात को मूर्खतापूर्ण समझा क्यों कि वह उसे मिस मेरी के ही रूप में देख रहा था। वह बोला, "मिस्टर जोन्स से भी मैं मिल चुका हूँ। बहुत योग्य आदमी है।"

"येस, मिस्टर लिबिदेव! मास्टर माइण्ड। बड़ा ही आला दिमाग़ का आदमी है। क्या कहने हैं उसके? उससे तुम्हें बड़ी मदद मिलेगी।"

"हमने सुना है उन्होंने बड़ा पैसा कमाया है इस काम में। उनके पास लाखों रुपया है।"

"ओ येस, लेक्स। विलियमजोन्स ने लाखों रुपया कमाया है। जब वह हिन्दुस्तान आया था तो उसके पास एक कौड़ी भी नहीं थी। मैं इस आदमी की बहुत इज्ज़त करती हूँ।"

"इज़्ज़त करने के योग्य तो वह हैं ही।" लिबिदेव ने व्यंग्य-भाव से कहा। नज़मा लिबिदेव के व्यंग्य के समझकर भी गम्भीर

बनी रही। उसने प्रदर्शित किया कि वह लिबिदेव के शब्दों को वास्तविक प्रशंसा मान रही थी।

जब ये बातें चल रही थीं तभी इस्माइल ने मिस्टर क्लिक के आने की सूचना दी।

"उन्हें अन्दर लिवालाओ।" नज़मा बोली।

लिबिदेव खड़ा होता हुआ बोला, "मुझे आज्ञा दीजिये। आप लोगों की बातों में मेरे यहाँ रहने से बाधा उपस्थित होगी।"

नज़मा मुस्कराकर बोली, "आप बहुत समझदार आदमी हैं मिस्टर लिबिदेव!"

लिबिदेव चला गया। इस्माइल क्लिक को अन्दर लिवालाया।

"हलो मिस्टर क्लिक! तुम मद्रास नहीं गये। मैं तो समझ रही थी कि तुम मद्रास चले गये होगे और तुमने टीपू पर हमला बोल दिया होगा।"

"हमें कॉर्नवालिस ने कुछ ज़रूरी काम के लिये रोक लिया मिस मेरी! उसी काम की वजह से हम आपसे भी नहीं मिल सके। आप जानती हैं गवर्नरजनरल हमारे अलावा पॉलेटिक्स पर और किसी से सलाह नहीं लेते।"

"स्तीफ़ेन भी यही कहता था।"

"डेम स्तीफ़ेन। वह समझता था कॉर्नवालिस भी हेस्टिंग्स की तरह उसके हाथ का खिलौना बन जायेगा। डेम फूल। बिला हमारी मर्ज़ी के अब वह गवर्नरजनरल की शक्ल भी नहीं देख सकता।"

"स्तीफ़ेन भी यही कहता था।"

"ईडियट! कहने से क्या होता है मिस मेरी! इस दुनियाँ का हर काम पैसे से होता है। बिला पैसे कोई काम नहीं हो

सकता। स्तीफ़ेन बिला पैसे सब काम करना चाहता है।"

"यह बुरी बात है। पैसा उसे खर्च करना चाहिये।"

"वैरी बैड मिस मेरी! वैरी बैड। हम लोग भी हिन्दुस्तान में रुपया कमाने के लिये आये हैं। रुपये की हमें भी उतनी ही ज़ुरूरत है जितनी उसे। फिर वह हमें पैसा क्यों नहीं दे ?"

"तुम्हें तो ज़ियादा ज़ुरूरत है मिस्टर क्लिक ! तुम पॉलेटिक्स के आदमी हो। पॉलेटिक्स में रुपया पानी की तरह बहाया जाता है।"

"राईट मिस मेरी ! हमको हर वक्त ख़तरे से खेलना पड़ता है। हमको टीपू से लड़ना है। इसके लिये हमें पैसा चाहिये।"

नज़मा ने क्लिक के लिये इस्माइल को एक गिलास शराब लाने को कहा।

क्लिक शराब लेकर ज़रा सुधरकर आरामकुर्सी पर बठ गया। मिस मेरी के यहाँ उसकी यह ख़ातिरदारी आज पहिली बार हुई थी। शराब काफ़ी तेज़ थी। थोड़ी ही देर में क्लिक सुरूर में आगया।

नज़मा बोली, "वेरी बैड मिस्टर क्लिक ! जब स्तीफ़ेन ख़ुद रुपया कमाता है तो उसे रुपया देना भी चाहिये।"

"यही तो मैं भी कहता हूँ मिस मेरी ! उसे रुपया देना चाहिये। यह क़ायदे की बात है।"

"ऐसे वक्त पर जब तुम टीपू से जंग की तय्यारी कर रहे हो तो स्तीफ़ेन को रुपया ज़ुरूर देना चाहिये।"

"तय्यारी कर ही नहीं रहा हूँ मिस मेरी ! तय्यारी पूरी होचुकी है। निज़ाम से समझौता होगया है। जब हम टीपू पर हमला करेंगे तो हम निज़ाम की सबसीडियरी फ़ौज को इस्ते-

माल कर सकेंगे।"

"वैरी गुड" मिस मेरी ने कहा। दिल में उसके इस बात को सुनकर बेचैनी पैदा होगई परन्तु ऊपर से उसने यही प्रकट किया कि उसे बहुत प्रसन्नता हुई।

नज़मा ने पूछा, "मराठों का क्या बना?"

"टीपू बड़ा चालाक है, परन्तु हम लोग भी कुछ कम नहीं हैं मिस मेरी! वह अन्दर-ही-अन्दर मराठों से समझौता करने की कोशिश कर रहा था। हमने जार्ज फ़ॉर्सटर को नागपुर भेज कर मूदाजी की फ़ौजी ताकत का अन्दाज़ लगवाया और उसे मराठों को टीपू से समझौता न करनेदेने की सलाह दी। हम जानते थे कि अगर एक बार मराठों से टीपू का समझौता होगया तो फिर मराठे आसानी से टीपू का साथ नहीं छोड़ेंगे। जार्ज फ़ॉर्सटर को अपने मिशन में पूरी-पूरी कामयाबी मिली। उसने मूदाजी को यकीन दिलादिया कि टीपू अंग्रेज़ों और मराठा, दोनों का दुश्मन है।"

यह सुनकर नज़मा का दिल टूट गया, परन्तु वह चेहरे पर उसी तरह मुस्कान लिये क्लिक की ओर देखती रही।

"इसी तरह का एक ख़त हमने अपने पूना के रेज़ीडेण्ट मैलेट को लिखा, जिसमें पेशवा को टीपू के ख़िलाफ़ फोड़ने के लिये कहा गया था। उसे हमने साफ़ लिख दिया है कि अगर पेशवा हमारी मदद करेगा तो इस जीत में टीपू से जो कुछ हासिल होगा वह अंग्रेज़, पेशवा और निज़ाम आपस में बराबर-बराबर बाँट लेंगे।"

नज़मा ने अपने मन में कहा, 'इतनी बड़ी डकैती।' वह अन्दर-ही-अन्दर तिलमिला उठी। उसे टीपू पर क्रोध भी आया परन्तु फिर भी वह क्लिक के सामने हँस पड़ी। वह बोली, "तुमने कमाल

कर दिया क्लिक ! जो काम आज तक कोई गवर्नरजनरल नहीं कर पाया वह तुमने कॉर्नवालिस से कराके दिखा दिया। तुमने कॉर्नवालिस को अमर कर दिया।"

"एक और खुशखबरी देता हूँ आपको मिस मेरी, लेकिन वह राज़ की बात है!" अपने बड़प्पन की झोंक में क्लिक कह गया।

"वह क्या ?"

क्लिक ने बात को फिर दबाने का प्रयास किया परन्तु नज़मा के कानों में इतनी भनक पड़ने के पश्चात् उससे किसी रहस्य को छिपाना सम्भव नहीं था। क्लिक बोला, "मिस मेरी ! यह बात अगर किसी को पता चलगई तो मेरी नौकरी जाती रहेगी।"

"मैं तुम्हें लव करती हूँ मिस्टर क्लिक ! तुम्हारी बात क्या कभी मुझसे बाहर जासकती है ? नामुमकिन। "यह कहकर नज़मा ने इस्माइल को दूसरा गिलास शराब लाने को कहा।

क्लिक शराब पीकर बोला, "मिस मेरी ! जिस टीपू ने तुम पर ज़ुल्म किया है उसे ख़त्म करने का सब इन्तज़ाम होचुका है।"

"वह क्या ?"

"इङ्गलेण्ड से हमारी सरकार ने बहुत बड़ी फ़ौज रवाना करदी है और कम्पनी को पाँच लाख पौंड कर्ज़ दिया है इसी काम के लिये।"

"पाँच लाख पौंड ! टीपू को ख़त्म करने के लिये ?"

"हमारी फ़ौज काफ़ी गोला बारूद अपने साथ लारही है। इसी महीने के आख़ीर तक वह मद्रास पहुँच जायेगी।"

"वैरी गुड़ मिस्टर क्लिक ! अब मुझे यकीन होगया कि

तुम टीपू पर फ़तह हासिल कर सकोगे । मैं तुम्हें रीयली (वास्तव में) लव करने लगी हूँ मिस्टर क्लिक !"

"फ़तह हासिल करने में अब देर नहीं है मिस मेरी ! अब तो हम टीपू पर हमला करने का बहाना खोज रहे हैं। हमारी तय्यारी पूरी होचुकी है। हमने टीपू की फ़ौज के सब अफ़सरों को अपनी ओर मिला लिया है।"

क्लिक को अपने कार्यालय में पहुँचना था। नज़मा से बातें करने में उसका पर्याप्त समय लग गया था। उसने खड़ा होकर नज़मा से विदा ली। क्लिक के वहाँ से चले जाने पर नज़मा सोचने लगी कि ऐसी स्थिति में उसे क्या करना चाहिये। उसे रात भर नींद नहीं आई।

"आज आप बहुत बैचेन मालूम देरही हैं बेग़म !" इस्माइल ने पूछा।

नज़मा ने इस्माइल की ओर देखा। इस्माइल को नज़मा की आँखी में आँसू दिखाई दिये। उसने घबराकर पूछा, "क्या बात है बेग़म ! ख़ादिम से राज़ न छिपाइये। जहाँ आपका पसीना गिरेगा वहाँ ख़ादिम अपना ख़ून बहादेगा।"

"मैं जानती हूँ इस्माइल ! लेकिन यह भी जानती हूँ कि श्रीरंगपट्टन यहाँ से कम दूर नहीं है।"

"क्या वहाँ चलने का इरादा है आपका ?"

"हाँ।" नज़मा ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"एक मल्लाह से मेरी दोस्ती होगई है। बड़ी लम्बी-चौड़ी डींगें मारता है वह। देखता हूँ क्या कुछ कर सकता है।"

"पानी के रास्ते से हम लोग जल्द पहुँचसकते हैं। इस्माइल ! तुम उसे किसी भी क़ीमत पर चलने को तय्यार करो।"

इस्माइल उसी समय हुगली की ओर चल दिया।

तेईस

इस्माइल ने रात्रि में ही पानी के रास्ते से मद्रास तक जाने का प्रबन्ध कर लिया। वहाँ से लौटकर उसने सामान भी बाँधकर तय्यार कर दिया।

नज़मा ने प्रातःकाल इस्माइल को भेजकर लिबिदेव को अपनी हवेली पर बुलवाया। उसके साथ ही उसने बद्री पंडित को भी लिवालाने के लिये कहा।

इस्माइल ने लिबिदेव को दीवानखाने में बिठाकर नज़मा को उसके आने की सूचना दी। नज़मा अपने भारतीय लिबास में, जिसमें उसने लिबिदेव से मद्रास में भेंट की थी, जाकर लिबिदेव से भेंट की तो लिबिदेव भावुकतावश खड़ा होकर बोला, "आप आगईं बेग़म!"

"आगई लिबिदेव! और जाने की भी तय्यारी है।"

"क्यों, ऐसी क्या जल्दी है? आप कब आईं? मैं तो काफ़ी दिन से आपकी प्रतीक्षा में था। आपने जो पता बतलाया था, वहाँ जाकर मैंने आपकी खोज की, परन्तु कुछ पता न चल सका।"

"मैंने मद्रास में आपसे वायदा किया था कि अगर मैं कलकत्ता पहुँचगई तो आपका हिन्दुस्तानी भाषा सीखने का इन्तज़ाम कर

दूँगी। वह इन्तज़ाम आपका होगया। पंडित गोलकनाथ से आपको इस काम में काफ़ी मदद मिली होगी और मिलती रहेगी। इनके अलावा पंडित जगमोहन वैद्य, पंचानन्द भट्टाचार्य और जगन्नाथ ठाकुर से भी आप अपने ताल्लुकात बना सकते हैं। बद्री पंडित आपकी उन लोगों से मुलाक़ात करा देगा।

मैं शायद आपसे इस समय बिला मिले ही चली जाती, लेकिन मैंने यह इस लिये ठीक नहीं समझा कि कहीं आप हिन्दुस्तानियों को ग़लत न समझने लगें।"

लिबिदेव आश्चर्य चकित होकर नज़मा की ओर देख रहा था। नज़मा मुस्कराकर बोली, "विदेशियों के साथ हिन्दुस्तानियों का बरताव आमतौर पर अच्छा ही रहता है। अंग्रेज़ों के साथ भी हम लोगों ने आरम्भ में बहुत अच्छा बरताव किया था, लेकिन इन लोगों ने हमारी भलमंसाहत का नाजायज़ फ़ायदा उठाया।"

अब लिबिदेव रहस्य को समझता जारहा था। वह धीरे से बोला, "क्या आप ही मिस मेरी थीं ?"

"यह बात दुबारा ज़ुबान पर नहीं आनी चाहिये। अहद करो लिबिदेव। कि मेरा यह राज़ किसी पर ज़ाहिर नहीं होगा। तुम पर विश्वास करके यह राज़ खोला गया है।"

"वचन देता हूँ।" लिबिदेव ने गम्भीरतापूर्वक कहा उसकी आँखों के सामने मिस मेरी के उन सब कामों की सूची आ-गई जो उसने लिबिदेव के साथ सहानुभूतिपूर्वक किये थे। स्तीफ़ेन के नाचघर में उस को रखाना, अग्रिम रुपया दिलाना, मकान का प्रबन्ध करना, बद्री पंडित को उसके पास भेजना, बद्री पंडित का उसे पंडित गोलकनाथ के सम्पर्क में लाना—एक शृङ्खला थी उस वायदे की, जो नज़मा ने मद्रास में अपनी अंतिम भेंट के

दौरान उससे किया था।

लिबिदेव ठगा सा रहगया। वह बोला, "परन्तु आप जा क्यों रही हैं ? मैं तो आपसे बातें भी नहीं कर पाया।"

"क्यों ? बातें तो हम लोग रोज़ाना ही करते रहे हैं और काफ़ी नज़दीक से करते रहे हैं।"

"उन बातों में हम नज़दीक रहकर भी एक दूसरे से काफ़ी दूर थे बेग़म ! आपने बीच में एक ऐसी दीवार खड़ी करदी थी जिसे लाँघना मेरे लिये सम्भव न होसका।" यह कहकर लिबिदेव ने हवेली में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाकर पूछा, "नवाब साहब कहाँ हैं ? दिखाई नहीं देरहे।"

"वह कलकत्ता नहीं लौट सके।"

"तो क्या आप अकेली ही यहाँ रहरही थीं ?"

"क्यों, अकेली कैसे हूँ ? आप हैं, मेरे पास इस्माइल और बद्री पंडित हैं। इनके अलावा मिस्टर क्लिक और स्तीफ़ेन हैं। पंडित गोलकनाथ भी नवाब साहब के बहुत पुराने दोस्तों में से हैं। आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई हमारी भाषा के सीखने में ?"

"नवाब साहब कहाँ हैं ?"

"उन्हें दिल्ली से फिर श्रीरंगपट्टन लौटना पड़ा।"

"इस समय आप कहाँ जाने का विचार कर रही हैं ?"

"नवाब साहब के पास।"

"क्या कोई विशेष काम है ?"

"हाँ, जाना ज़रूरी है, इसी लिये जारही हूँ।"

लिबिदेव मौन होगया। नज़मा का ज़रूरी काम क्या था, यह ज्ञात करने का उसने प्रयत्न नहीं किया। उसने निराशपूर्ण दृष्टि से नज़मा की ओर देखा। वह बोला, "आप कब तक कलकत्ता लौटेंगी ?"

नज़मा हँसदी। फिर बोली, "कलकत्ता मेरा घर है। यह हवेली और वह कोठी, जो तुमने देखी है, अपनी ही हैं। इस नाते मेरा कलकत्ता लौटने में कितना मोह होसकता हैं इसका अन्दाज़ तुम आसानी से लगा सकते हो। लेकिन इन्सान जो कुछ सोचता है, वह सब क्या कभी पूरा होता है ? तुम्हें हिन्दुस्तानी भाषा सीखने का मौक़ा मिल गया। पंडित गोलक नाथ कहरहे थे कि तुम अब अच्छी-खासी बँगला लिख लेते हो और बँगला की किताब पढ़ने में भी तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होती।"

"पंडित गोलकनाथ का मैं बहुत आभारी हूँ बेग़म ! और आपका उनसे भी अधिक। मैंने जिस दिन हिन्दुस्तान की ज़मीन पर क़दम रखा था, उसी दिन यह निश्चय किया था कि मैं हिन्दुस्तानी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करूँगा। आपकी कृपा से मैं उस काम को करसका।"

"आजकल क्या कर रहे हो तुम ? मुझे यकीन है कि तुम हिन्दुस्तानी भाषा सीखकर कुछ ऐसा काम करोगे जो हमारे देश के साहित्य को विदेशों तक लेजासके।"

लिबिदेव प्रसन्नतापूर्वक बोला, "आपका अनुमान ठीक ही है बेग़म ! मैं एक ग्रामर (व्याकरण) लिख रहा हूँ। उसकी सहायता से अंग्रेज़ी पढ़े-लिखों को हिन्दुस्तानी भाषा सीखने में आसानी होगी।"

"तब तो तुम विलियमजोन्स की कमाई के रास्ते में बहुत बड़ी दिक्कत पैदा करदोगे।"

"वह कैसे ?"

"तुम्हारी ग्रामर की सहायता से इङ्गलैंड के कुछ लोग हिन्दुस्तानी भाषा सीख लेंगे। अगर उनमें से कोई एक ब्रिटिश म्यू-

ज़ियम में नौकरी पागया तो वह विलियमजोन्स की पोल खोल देगा।"

"तो क्या इसके लिये मैं अपना काम बन्द करदूँ ?"

"तुम अपना काम करना बन्द न करो लेकिन विलियमजोन्स को इस बात की ख़बर नहीं होनी चाहिये।"

नज़मा की इस बात से लिबिदेव ने बहुत परेशानी महसूस की।

नज़मा लिबिदेव के चेहरे पर परेशानी देखकर बोली, "क्यों, क्या विलियमजोन्स को इस बात की खबर देंना ज़रूरी है ?"

"ज़रूरी तो नहीं है बेग़म ! लेकिन इस तरह मैं जोन्स से कौन-कौन सी बातें छिपाकर रखूँगा ?"

"क्यों, और ऐसा क्या काम कररहे हो तुम जिसकी ख़बर जोन्स के पास पहुँच जायेगी ?"

"मैं एक अंग्रेज़ी नाटक का बँगला में अनुवाद कररहा हूँ और मेरा इरादा उसे मंच पर प्रस्तुत करने का है।"

"क्या तुम बँगला-नाटक स्टेज पर करने की बात सोच रहे हो लिबिदेव ?"

"विचार तो यही है।"

"ख़याल तो बहुत नेक है और मेरी दिली हमदर्दी भी है इसके साथ लेकिन इससे तुम्हारे लिये ख़तरा पैदा होसकता है। यह काम तुम्हें सोच-समझकर करना चाहिये।"

"ख़तरे की बात मेरी समझ में नहीं आई बेग़म ! ग्रामर की बात जो आपने कही, वह मेरी समझ में आगई लेकिन नाटक से तो विलियमजोन्स की कोई हानि होनेवाली नहीं है।"

नज़मा को हँसी आगई लिबिदेव के भोलेपन पर। वह बोली, "मिस्टर लिबिदेव ! हिन्दुस्तान की सियासत को मैं तुमसे

ज़ियादा समझती हूँ। तुम एक कलाकार हो और कलाकार की ही हैसियत से हर चीज़ पर नज़र डालते हो। तुम्हारे मक़सद और काम की मैं तहेदिल से क़द्र करती हूँ, लेकिन मैं यह नहीं चाहती कि तुम यहाँ परदेश में आकर किसी मुसीबत में मुबतला होजाओ। तुम्हारे इस काम में दो चीज़ें हायल होंगी और वे दोनों ही अहम हैं।"

"वे क्या ?" लिबिदेव ने पूछा।

"पहिली बात तो यह है कि अंग्रेज़ अन्य यूरोपियनों को शक की नज़र से देखते हैं। उन्हें हर वक्त यह डर रहता है कि कोई दूसरी यूरोपियन ताक़त हिन्दुस्तान में आकर उनके जमते हुए असर को उखेड़ न डाले। तुम रूस के रहने वाले हो। तुम्हारे हिन्दुस्तानियों से मेल-जोल को शक की नज़र से देखा जायेगा। हिन्दुस्तानी नाटक स्टेज करके तुम्हारा हिन्दुस्तानियों में मिलना-जुलना अंग्रेज़ पसंद नहीं करेंगे।

दूसरी बात जो इससे भी अहम है, वह यह है कि विलियम-जोन्स, जो इस समय अपने आपको हिन्दुस्तानी भाषाओं का सबसे आलिम आदमी समझता है, उससे तुम्हारी टक्कर हो जायेगी। जोन्स बड़ा मक्कार आदमी है। मैं डरती हूँ कि कहीं वह तुम्हें किसी परेशानी में न डालदें।"

लिबिदेव ने नज़मा की बात पर ग़ौर किया तो उसे लगा कि नज़मा ने स्थिति पर बहुत गम्भीरता से विचार किया है। वह बोला, "बेग़म ! आपने इस समस्या पर काफ़ी गम्भीरता से विचार किया है। आपने जो कठिनाइयाँ मेरे सामने रखीं वे विचार करने योग्य हैं, परन्तु इन परेशानियों से डरकर मैं अपने काम को बन्द नहीं करूँगा।"

नज़मा ने बड़े ध्यान से लिबिदेव की ओर देखा। उसे लगा जैसे

उसके सामने फूँक से उड़ने वाला कोई फूल नहीं पड़ा था, एक चट्टान थी, जिसे हिलाया नहीं जा सकता। नज़मा बोली, "लगता है तुम अपने इरादे से हटने वाले नहीं हो। मेरा काम तुम्हें मौजूदा हालात से आगाह करना था। वह मैंने कर दिया।"

"आप कलकत्तो से कब रवाना होंगी?"

"अभी कुछ देर बाद। मैंने मिस्टर स्तीफ़ेन को भी बुलवाया है। उनसे भेंट करके मैं कलकत्ता छोड़दूँगी।"

लिबिदेव का मन कुछ भारी होगया।

नज़मा बोली, "मैं तुम्हारे काम में बड़ी दिलचस्पी लेरही थी मिस्टर लिबिदेव! लेकिन अचानक ही मेरे सामने एक बहुत ज़रूरी काम आगया, जिसके लिये मुझे कलकत्ता छोड़ना पड़-रहा है। मैं कह नहीं सकती कि इस बार यहाँ से जाने पर मेरा लौटना मुमकिन भी होगा या नहीं, लेकिन मेरी दिली हमदर्दी हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी।"

"आपने मेरे काम में जो सहायता दी, उसे मैं इस जीवन में कभी भुला नहीं सकूँगा बेग़म! नतीजा चाहे जो भी हो, मैंने जो निश्चय कर लिया है, उसे मैं अवश्य पूरा करूँगा। मैं राजनीति के मक़सद को लेकर यहाँ नहीं आया हूँ और न ही किसी राजनीति के मक़सद के लिये मैंने यहाँ की भाषा सीखने का प्रयास किया है। मेरा मक़सद सिर्फ़ यही है कि मैं जिस देश में आया हूँ उसकी सही जानकारी लेकर अपने देश को लौटूँ और अपने देशवासियों को जाकर यहाँ की सही जानकारी कराऊँ।"

लिबिदेव को विदा करके नज़मा अपनी कोठी पर पहुँची। बद्री पंडित हवेली से नज़मा के साथ कोठी पर गये। नज़मा बोली, "बद्री पंडित! मुझे फिर किसी ज़रूरी काम से बाहर जाना पड़ रहा है। जब तक मैं लौटकर न आऊँ तब तक तुम

लिबिदेव के पास रहना। कभी-कभी ताले खोलकर हवेली ग्रौर कोठी की सफ़ाई कराते रहना।"

बद्री पंडित की ग्राँखों में ग्राँसू ग्रागये।

नज़मा बोली, "मन भारी न करो बद्री पंडित! मैं बहुत जल्द लौटने की कोशिश करूँगी। तुम फ़िक्र न करना।"

"क्या ग्राप मुझे ग्रपने साथ नहीं लेचलसकतीं बेग़म?"

"तुम्हें ग्रपने साथ लेचलने से लिबिदेव का काम ख़राब होजायेगा बद्री पंडित! उन्हें तुम्हारी बहुत ग्रावश्यकता है। ग्रगर वह यहाँ न होते तो मैं तुम्हें ग्रपने साथ लेजाती। उनका जो काम तुम कर सकते हो वह इस्माइल नहीं कर सकता।"

इस्माइल तभी स्तीफ़ेन को ग्रपने साथ लेकर वहाँ ग्रापहुँचा। उसने स्तीफ़ेन को बैठक में बिठाकर नज़मा को उसके ग्राने की सूचना दी। नज़मा ने स्तीफ़ेन के पास जाकर कहा, "मिस्टर स्तीफ़ेन! मैं किसी ख़ास काम से बाहर जारही हूँ। बहुत ज़रूरी काम है।"

"बाहर! यानी कलकत्ते से बाहर।"

"जी, कलकत्ते से बाहर। मेरे वालिद साहब दिल्ली में एक ग्रादमी को कुछ रुपया देगये थे। उस ग्रादमी ने वह रुपया ग्रदा करने के लिये मुझे बुलवाया है।"

"लेकिन मिस मेरी! मैंने तो लॉर्ड कार्नवालिस को नाचघर में इनवाइट किया है। उस वक्त ग्रगर ग्राप न रहेंगी तो क्या होगा? ग्रापके ऊपर ही तो सारा दारोमदार है।"

"यह तो चलता ही रहता है मिस्टर स्तीफ़ेन! दस लाख रुपये की रक़म को इस तरह नहीं छोड़ा जासकता। थोड़े बहुत रुपये की बात होती तो मैं ग्रापके लिये छोड़ भी बैठती।"

"दस लाख रुपया!'

"जी, दस लाख ! देखिये कितना ईमानदार आदमी निकला। मुझे तो पता भी नहीं था इस रुपये का। बेचारे ने ख़ुद अपना आदमी भेजकर मेरे पास ख़बर की है।"

स्तीफ़ेन बहुत परेशान हुआ परन्तु दस लाख रुपये के लिये वह न जाने के लिये भी कैसे कह सकता था। बोला, "आल राइट मिस मेरी ! आप होआयें वहाँ, लेकिन लौटने में देर न करना। हमें इस वक्त यह प्रोग्राम पोस्टपोन (स्थगित) करना होगा।"

"हाँ, इस वक्त यही ठीक रहेगा। जब मैं लौटआऊँगी तो मिस्टर विलक से कहकर दोबारा एरेंज (निश्चित) कर लूँगी। आप फ़िक्र न करें।"

स्तीफ़ेन निराश होकर मिस मेरी की कोठी से चला गया।

नज़मा ने इस्माइल को सामान नौका पर पहुँचाने की आज्ञा दी और स्वयँ चलने से पूर्व एक बार फिर लिबिदेब के पास गई। लिबिदेव अपनी कोठी में उदास मन बैठा था। नज़मा को आते देखकर वह कमरे से बाहर निकल आया और उसे आदरपूर्वक अन्दर लिवाकर लेगया।

"मिस्टर लिबिदेव ! मैं इस वक्त बैठूँगी नहीं। मेरा सामान बोट (किस्ती) पर पहुँच चुका है। बद्री पंडित आपका पंडित जगमोहन वैद्य, पंचानंद भट्टाचार्य और जगन्नाथ भट्टाचार्य से परिचय करा देंगे। ये सभी बड़े आलिम लोग हैं। इनसे तुम्हें तुम्हारे काम में काफ़ी मदद मिलेगी। फिर भी इस बात का ध्यान रखना कि वह जो ग्रामर (व्याकरण) तुम लिख रहे हो, उसके बारे में विलियनजोन्स से ज़िक्र न आये। जोन्स बड़ा भारी बदमाश है।"

लिबिदेव और बद्री पंडित नज़मा को नौका तक छोड़ने

गये। नज़मा और इस्माइल नौका पर सवार होगये। नज़मा ने कहा, "खुदा हाफ़िज मिस्टर लिबिदेव! समझदारी से काम लेना। तुम यहाँ की पॉलेटिक्स से नावाक़िफ़ हो, इसी लिये मैं डर रही हूँ कि कहीं मेरे बाद तुम किसी मुसीबत में न फँस जाओ।"

लिबिदेव मुस्कराकर बोला, "मैं आपकी सहानुभूति का आदर करता हूँ।"

मल्लाह ने लंगर खोल कर पालें आकाश में उडादीं। दक्खिनी हवा चलरही थी। नौका तीव्र गति से आगे बढ़ गई। लिबिदेव और बद्री पंडित किनारे पर खड़े रह गये।

नज़मा ने मद्रास तक की यात्रा पानी से की और फिर ख़ुश्की के रास्ते श्रीरंगपट्टन पहुँची। नगर में पहुँचकर नज़मा ने देखा तो वहाँ हर प्रकार की शांति थी। युद्ध के जैसा वातावरण उसे कहीं दिखाई न दिया। सम्पूर्ण नगर उसे लगा, जैसे दिन में भी सोरहा था। नज़मा की दृष्टि के सामने एक भयंकर तूफ़ान उठा चलाआरहा था। चारों ओर से युद्ध की काली घटायें उमड़ रही थीं। विनाश के काले बादल मँडरा रहे थे और चमाचम बिजली चमक रही थी, परन्तु श्रीरंगपट्टन में किसी को उसका किंचित मात्र भी पता नहीं था। वहाँ युद्ध की कोई तय्यारी नहीं थी। सभी लोग आनन्द और मस्ती की छान रहे थे।

नज़मा ने शहर में प्रवेश करके एक पहरेदार से ज्ञात किया, "क्यों भाई, क्या हमें आप नवाब मोहम्मदरज़ाखाँ के महल का रास्ता बता सकेंगे?"

पहरेदार ने नज़मा को महल का रास्ता बतलाया तो नज़मा को समझने में विलम्ब न हुआ कि वह वही महल था, जिसमें वह वर्षों रहचुकी थी।

नज़मा ने महल में प्रवेश किया तो देखा नवाब साहब अपने दीवानख़ाने में बैठे सुलतान से बातें कर रहे थे। उनकी नज़मा पर दृष्टि गई तो वह खड़े होते हुए बोले, "अरे बेग़म !" और वह द्वार की ओर को बढ़ आये।

टीपू सुलतान भी वहाँ बैठे न रह सके। वह भी खड़े होगये और नज़मा की ओर को बढ़कर बोले, "आदाबेअर्ज़ चची-जान !" परन्तु उन्होंने देखा बेग़म का चेहरा भयंकर रूप से गम्भीर था। उसपर चिंता और परेशानी के चिन्ह अंकित थे।

"सुलतान ! इतनी ग़फ़लत ! सुलतान हैदरअली के फ़रज़न्द होकर इतनी नादानी।"

"क्या हुआ चचीजान ?" हड़बड़ाकर टीपू सुलतान ने पूछा।

"आप लोग सोरहे हैं क्या ? श्रीरंगपट्टन पर हमला हो रहा है। जनरल मीडरोज़ फ़ौज लेकर मद्रास से रवाना होचुका है और आपको कुछ पता ही नहीं।"

"मीडरोज़ रवाना होचुका। यह आप क्या कहरही हैं ?"

"जी हाँ। इसके अलावा विलायत से गोरा-फ़ौज ज़बरदस्त जंगी सामान के साथ इधर आरही है। कॉर्नवालिस को इङ्गलैंड से आपको मटियामेट करने के लिये पाँच लाख पौंड का कर्ज़ मिला है। आपकी फ़ौज के जितने भी अंग्रेज़ अफ़सर हैं उनमें से एक भी यकीन के काबिल नहीं हैं। वे सब आपको जंग के मैदान में धोखा देंगे। उन सब को घूस देकर फोड़ लिया गया है। बहुत से हिन्दुस्तानी अफ़सर भी उनसे मिले हुए हैं।"

"यह आप क्या कह रही हैं चचीजान ?"

"मैं सो नहीं रही हूँ सुलतान ! मेरी आँखें खुली हुई हैं। मुझे मीडरोज़ की फ़ौज श्रीरंगपट्टन की ओर आती दिखाई

देरही है। मुझे गोरों के जहाज़ समुद्र के किनारे पर लगते दिखाई देरहे हैं। सिर्फ़ इतना ही नहीं सुलतान ! मुझे निज़ाम और मराठा फ़ौजें भी अंग्रेज़ों के साथ मिलकर श्रीरंगपट्टन की जानिब बढ़ती दिखाई देरही हैं। ख़तरनाक तूफ़ान आरहा है। क्या आप लोगों को कुछ भी दिखाई नहीं देरहा ? क्या आपकी आँखें बिलकुल बन्द हैं सुलतान ? आपने ज़बरदस्त ग़फ़लत से काम लिया है। आपने धोखेबाज़ अंग्रेज़ों का यकीन करके अपने राज को ही नहीं, हिन्दुस्तान की इज्ज़त को भी ख़तरे में डाल दिया है। आपसे मुझे बहुत-बहुत उम्मीदें थीं।"

टीपू सुलतान चौकन्ना होगया। उसे लगा जैसे वह चारों ओर से शत्रुओं से घिर गया। उसके भुजदण्ड फड़क उठे। उसके नेत्रों से अंगारे बरसने लगे, जिन्हें देखकर नज़मा के दिल को थोड़ी राहत मिली। वह बोली, "अपने जहाज़ी बेड़े को मद्रास के निकट समुद्री किनारे पर भेजदो। इङ्गलेण्ड से आनेवाला एक भी गोरा सिपाही खुश्की पर न उतरने पाये सुलतान !"

"यही होगा बेग़म !" कहकर सुलतान ने तुरन्त अपने जहाज़ी बेड़े के कमाण्डर को मद्रास का निकटवर्ती समुद्र-तट घेर लेने की आज्ञा दी।

नज़मा बोली, "मैक्सवेल और मीडरोज मद्रास से रवाना होचुके हैं। आप फ़ौरन फ़ौजी तय्यारी करें और अंग्रेज़ जनरलों के हाथों से सब अधिकार छीनलें।"

"इस वक्त यह कैसे होगा चचीजान ? क्या ये वालिद साहब के ज़माने के जनरल मुझे धोखा देंगे ?"

"ये सब धोखा देंगे सुलतान ! पाँच लाख पौंड इङ्गलेण्ड से इन्हीं लोगों को फोड़ने के लिये भेजा गया है। ये लोग बहुत मोटी

मोटी रक़में लेचुके हैं। अफ़सोस यह है कि इनमें कुछ हिन्दुस्तानी अफ़सर भी शामिल हैं, जिनका पता लगाना इस वक्त मुश्किल है। लेकिन ख़ुदा के लिये यह ग़लती न कर बैठना कि कहीं इन्हीं के मातहत फ़ौज को रवाना करदो। अगर ऐसा किया तो ज़बरदस्त ग़लती खाओगे और आपकी सारी फ़ौज बे-मौत मारी जायेगी।"

टीपू सुलतान सशंकित होउठा। उसने रातों रात अंग्रेज़ अफ़सरों के स्थान पर उनके नायबों की पदोन्नति कर के कार्य-भार उन्हें सँभलवाया और सूर्योदय से पूर्व मद्रास की दिशा में कूच करदिया।

मीडरोज़ की सेना बिला किसी शंका के श्रीरंगपट्टन की ओर बढ़ रही थी। उसे स्वप्न में भी यह ध्यान नहीं था कि टीपू सुलतान को उसके प्रस्थान की सूचना मिल जायेगी।

टीपू सुलतान मीडरोज़ और मेक्सवेल की सेनाओं पर बाज़ की तरह टूट पड़ा और देखते-ही-देखते उनकी सेना को तहस-नहस कर दिया। मीडरोज़ और मेक्सवेल मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए।

टीपू सुलतान ने आगे बढ़कर करनाटक पर आक्रमण किया और करनाटक के काफ़ी भाग पर अधिकार कर लिया।

टीपू सुलतान विजयी होकर श्रीरंगपट्टन लौटा तो उसका शानदार स्वागत हुआ।

टीपू सुलतान ने नगर में प्रवेश करने के पश्चात् अपने महल में जाने से पूर्व नज़मा के महल पर जाकर उससे भेंट करके कहा, "चचीजान ! मैं आपका तो ज़िन्दगी भर अहसानमन्द रहूँगा।"

नज़मा की आँखों में स्नेह-जल उमड़ आया। उसने आगे

बढ़कर कहा, "सुलतान ! बहुत बड़ी ग़फलत कर चुके हो। नाना फ़ड़नवीस से न मिलकर तुमने सियासत का गला घोंट दिया। लार्ड कॉर्नवालिस ख़ुद बहुत बड़ी फ़ौज लेकर इधर आ-रहा है। निज़ाम की सबसिडियरी फ़ौज हैदराबाद से चल चुकी है। अगर मराठे भी उनके साथ मिल गये तो ग़ज़ब हो जायेगा। लेकिन अब वक्त नहीं है यह सोचने का। मेरे ख़याल से ये लोग पहिले बेंग्लौर पर हमला करेंगे।"

टीपू सुलतान ने अपने महल में प्रवेश किये बिला ही बेंग्लौर की ओर कूच कर दिया।

नज़मा का अनुमान ठीक निकला। टीपू सुलतान के बेंग्लौर पहुँचने से पूर्व ही कॉर्नवालिस की सेना वहाँ पहुँच चुकी थी। टीपू सुलतान ने शत्रु का जमकर सामना किया परन्तु अकेले टीपू को अंग्रेज़, निज़ाम और मराठों की सेना का मुक़ाबिला करना सम्भव नहीं था। टीपू को हार कर पीछे हटना पड़ा।

कॉर्नवालिस की अंग्रेज़-फ़ौज ने बेंग्लौर में भयंकर कत्ले-आम किया। उसके सैनिकों ने घरों में घुस-घुस कर लोगों को लूटा और स्त्रियों को अपमानित किया।

नज़मा ने क़िले की दीवार से टीपू की लौटती हुई सेना को देखा तो उसका कलेजा धक्क-धक्क करने लगा। नवाब मोहम्मदरज़ाख़ाँ नज़मा के निकट खड़े थे। नज़मा बोली, "ग़ज़ब होगया नवाब साहब ! अब सलामती के आसार दिखाई नहीं देते।"

"क्यों बेग़म ?"

"सुलतान की फ़ौज़ लौट रही है। अकेला कॉर्नवालिस सुलतान को नहीं हरा सकता था। निज़ाम की सबसिडियरी फ़ौज का बूता भी नहीं था कि सुलतान को हरा पाती। लगता है मराठा-फ़ौज की इमदाद कॉर्नवालिस को मिल गई है।"

टीपू सुलतान क्रोध से पागल होउठा था। उसे विश्वास नहीं था कि मराठे अंग्रेज़ों का साथ देंगे, क्योंकि उसने अपना दूत पूना भेजा हुआ था और सुलह की बातचीत चल रही थी।

टीपू सुलतान ने श्रीरंगपट्टन के दुर्ग की चारदीवारी रातों रात दुरुस्त करवाई और सब मोर्चों का स्वयं निरीक्षण किया। यह सब करने के पश्चात् सुलतान ने बेग़म नज़मा से भेंट की। वह बोला, "चचीजान ! नाना फड़नवीस भी ग़द्दार साबित हुआ। उसने भी अंग्रेज़ों की लूट में हिस्सा लेलिया।"

"यह वक्त इन बातों के सोचने का नहीं हैं सुलतान ! पेशवा-दरबार में इस वक्त नाना फड़नवीस की क्या हालत है, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि नाना फड़नवीस के रहते मराठा-फ़ौज आपके ख़िलाफ़ मैदान में नहीं आनी चाहिये थी।"

"मेरे ख़याल से ऐसी हालत में जंग की तय्यारी तो करनी ही चाहिये और साथ-साथ सुलह की कोशिश में भी कुछ उठा नहीं रखना चाहिये। हमें फ़ौरन एक दूत नाना फड़......।"

"ठहरिये।" नज़मा कुछ सोच कर बोली। "नवाब साहब आप फ़ौरन नाना फड़नवीस के पास जाइये। हमें इस नाज़ुक वक्त में किसी तरह अपना वजूद क़ायम रखने की कोशिश करनी चाहिये।"

मोहम्मदरज़ाखाँ बोला, "बेग़म ! इस नाज़ुक हालातों में नाना साहब पर क़ाबू पाना मेरे बूते की बात नहीं है। मौजूदा हालात में आप ही जायें तो कुछ काम बन सकता है।"

नज़मा ने सुलतान की ओर देखा। उसने देखा भंयकर विनाश की आशंका थी। वह सोचकर बोली, तब "मैं ही

जाती हूँ सुलतान!" यह कहकर नज़मा तुरन्त जाने के लिये उद्यत होगई।

नज़मा चली गई। सुल तान क़िले की हिफ़ाज़त में लग गया। मोहम्मदरज़ाखाँ उनके साथ थे।

कई दिन और रात क़िले की मरम्मत का काम चलता रहा। टीपू सुलतान ने हर मोर्चे से अपना सीधा सम्पर्क रखा और स्थिति का सामना करने के लिये तय्यार होकर बैठ गया।

चौबीस

नज़मा ने श्रीरंगापट्टन से पूना जाकर नाना फड़नवीस से भेंट की। नाना फड़नवीस ने नज़मा का विशेष आदर के साथ स्वागत किया और वह उसी समय दरबार से उठकर नज़मा को अपने महल पर लेगये।

नज़मा ने उनसे कहा, "नाना साहब ! यह सब क्या होरहा है ?"

"क्या आपने टीपू सुलतान से नहीं पूछा कि यह सब क्या हो रहा है ?"

"वक्त नहीं था यह सब पूछने का।"

"तो क्या तुम मैसूर में नहीं थीं।"

"जी नहीं। मैं आससे विदा होकर दिल्ली चली गई थी और दिल्ली से कलकत्ता। कलकत्ते में मुझे यह ख़बर मिली तो मैं सीधी श्रीरंगापट्टन पहुँची। लेकिन आपने अपनी सियासत के ख़िलाफ़ यह सब कैसे किया ?"

"जब भारत में विदेशी ही ताक़तों की टक्कर होनी थी तो मैं क्या करता ? टीपू ने हम पर यकीन न करके फ्रांसीसियों पर यकीन किया। उसकी सेना ने हमारी सीमा पर भयंकर उत्पात मचाया। आख़िर यह सब किस लिये ?"

"नाना साहब ! यह सब अंग्रेज़ों की चालें हैं। टीपू सुलतान का आपकी सीमा पर झगड़ा करने का कोई इरादा नहीं है। यह जो कुछ भी हुआ है वह सब सुलतान की फ़ौज के उन जनरलों ने किया है, जिन्हें अंग्रेज़ों ने घूस देकर अपनी ओर फोड़ लिया है। सुलतान को मालूम भी नहीं कि उनकी फ़ौज में किस क़दर गद्दारी चल रही है और कितने गद्दार लोग भरे हुए हैं।"

नाना साहब मुस्कराकर बोले, "लगता है बेग़म ! सुलतान पर आपके कहने का कोई असर नहीं हुआ।"

नज़मा को शरमिन्दा होना पड़ा। वह समझ गई कि नाना फड़नवीस का अभिप्राय क्या था। टीपू सुलतान ने नाना फड़-नवीस से भेंट करने के महत्व को नहीं समझा। नज़मा बोली, "सुलतान ने आपसे मुलाक़ात न करके ज़बरदस्त ग़लती की। उनके बारे में आपके दिमाग़ के अन्दर जो ख़यालात पैदा हुए, उनकी वजह सिर्फ़ यही है कि उन्होंने वक्त की नज़ाकत का अन्दाज़ नहीं लगाया और आपसे मुलाक़ात नहीं की। वैसे मैं यकीन दिला सकती हूँ कि सुलतान ने आपके ख़िलाफ़ कोई साज़िश नहीं की।"

"यह मैं भी जानता हूँ लेकिन सुलतान ने मुझे यह अवसर भी तो नहीं दिया कि जिससे मैं मराठा-मण्डल में शक्तिशाली ढंग से मराठा-सुलतान संधि के प्रश्न को क्रियान्वित करा सकता।

तुम जानती हो, मराठा-मण्डल में भी अंग्रेज़ों ने फूट डाली हुई है। सिंधिया, भोंसले और गायकवाड़ को अंग्रेज़ों ने फोड़ा हुआ है और मैसूर-राज्य में हिस्सा देने का लालच देदिया है। इस लालच के सामने मेरे सिद्धान्त फीके पड़ गये। यदि इस बीच में टीपू सुलतान पूना आगये होते तो मैं यहाँ उनका स्वागत कराता। इससे यहाँ का वातावरण बदलता और मराठों की

सुलतान से संधि होगई होती।"

"सुलतान की भूल को मैं स्वीकार करती हूँ, लेकिन अंग्रेज़ों के साथ मिलकर मैसूर को मटियामेट करने के बाद क्या अंग्रेज़ों से मराठों को सीधा मुक़ाबिला नहीं करना होगा ? क्या उस वक्त अंग्रेज़ मराठा-राज को ख़त्म करने का ख्वाब नहीं देखेंगे ?"

"अवश्य देखेंगे। इस भावी आपत्ति को मैं स्पष्ट देख रहा हूँ, परन्तु वर्तमान स्थिति में जब निज़ाम और अंग्रेज आक्रमण करने को कटिबद्ध थे और मराठा-मण्डल के तीन सदस्य उनके साथ थे, तो हम उनसे प्रथक कैसे रह सकते थे ?"

"तो क्या आपने मैसूर को ख़त्म करने का आख़री फ़ैसला कर लिया है ?" नज़मा ने गम्भीर वाणी में पूछा।

यह सुनकर नाना फड़नवीस गम्भीर चिन्ता में डूब गये। वह कुछ सोचकर बोले, "बेग़म ! मुझे इस समस्या पर विचार-विमर्श करना होगा। तुम यहीं विश्राम करो। मैं पेशवा से बातें करके अपने प्रमुख सामन्तों की राय लेता हूँ।"

नाना फड़नवीस उसी समय दरबार में पहुँचे और पेशवा से सलाह करके उन्होंने अपने प्रमुख सामन्तों को बुलवाया। हरिपन्त फड़के ने कहा, "नानासाहब ! टीपू सुलतान का विनाश मराठों के लिये गम्भीर विपत्ति का कारण बनेगा। अंग्रेज़ हमारे मित्र नहीं होसकते। जिस तरह वे सुलतान हैदरअली और टीपू की शत्रुता को नहीं भूले हैं उसी तरह गॉडार्ड की पराजय को भी कभी नहीं भूल सकते।"

परशुराम भाऊ बोले, "हमें इस वक्त अंग्रेज़ों के हाथों में नहीं खेलना चाहिये। बँगलौर का जो समाचार यहाँ आया है, वह बहुत भयंकर है। सुना है कि कॉर्नवालिस ने वहाँ जो अमानुषिक दृश्य प्रस्तुत किया है उसने नादिरशाह दुर्रानी और

अहमदशाह अब्दाली की क्रूरता को भी मात कर दिया है। यह स्थिति बहुत भयंकर है। यदि टीपू सुलतान के राज को समाप्त कर दिया गया तो फिर अंग्रेज़ों का सीधा आक्रमण मराठा-राज्यों पर होगा और वह भी सबसे पहिले पूना पर।"

नाना फड़नवीस बोले, "इसका तात्पर्य यह हुआ कि आप सब इस विचार से सहमत हैं कि टीपू सुलतान को सम्पूर्ण विनाश से बचाया जाये।"

"निश्चित रूप से।" हरिपन्त फड़के ने कहा। "यदि आज्ञा हो तो मैं सेना लेकर श्रीरंगपट्टन की दिशा में कूच करूँ। बिना सेना की सहायता के यह कार्य सम्पन्न न होगा।"

"यह न हो कि अंग्रेज़ों की और हमारी युद्ध की स्थिति पैदा होजाये और सुलतान रंग बदलने लगे।"

"इस बात का ध्यान रखा जायेगा। प्रयत्न यही किया जायेगा कि संधि भी होजाये और सुलतान की शक्ति भी कम करदी जाये।"

"बस यही ध्यान में रखना। विलम्ब करने का समय नहीं है। हरिपन्तफड़के! तुम तुरन्त कूच करो। कहीं तुम्हारे वहाँ पहुँचने से पूर्व ही सब समाप्त न होजाये।"

हरिपन्तफड़के को श्रीरंगपट्टन जाने की आज्ञा देकर नाना फड़नवीस अपने महल पर आये। नज़मा उनकी प्रतीक्षा में थी।

"क्या सलाह की आप लोगों ने?" नज़मा ने पूछा।

"बेग़म! विरोध तो इस समय बहुत था परन्तु तुम्हारे उद्देश्य के महत्व को मैं अस्वीकार न कर सका। जिस भारतीय सुरक्षा की भावना को लेकर तुमने निस्वार्थ भाव से इतना श्रम किया, उसका आदर करना मेरे लिये अनिवार्य होगया।"

"तब क्या उपाय किया आपने ? क्या आप श्रीरंगपट्टन को अपना दूत भेज रहे हैं ?"

"जो उपाय सम्भव था, वह किया जाचुका है बेग़म ! हमने हरिपन्तफड़के को एक विशाल सेना लेकर भेज दिया है। उसे आदेश दिया गया है कि किसी भी तरह यह संधि सम्पन्न हो और सुलतान को विनाश से बचाया जाये।"

यह समाचार प्राप्त कर नज़मा के मस्तिष्क को कुछ शान्ति मिली। वह बोली, "नानासाहब ! आपने इस वक्त जो यह काम किया है इससे मुझे अज़हद खुशी हुई। तवारीख़ में आपका यह काम 'एक ज़बरदस्त ग़लती को ठीक करने की कोशिश' के रूप में लिखा जायेगा। टीपू सुलतान में वक्त की नज़ाकत और सियासत की पेचीदगियों को समझने की क़ाबलियत नहीं है। उन्हें पूना आकर आपसे मुलाक़ात करनी चाहिये थी। आप यकीन करें, मैंने इसी काम के लिये नवाब साहब को दिल्ली से उनके पास भेजा था और फिर उनके दूत मौमिन को कलकत्ते में हिदायत की थी कि सुलतान अपनी फ़ौज से अंग्रेज़ अफ़सरों को निकालदें और फ़ौरन नानासाहब से पूना जाकर भेंट करें लेकिन अफ़सोस कि उन्होंने मेरी एक बात पर भी ग़ौर नहीं किया।"

"तब फिर तुम्हें कैसे विश्वास है कि सुलतान भविष्य में हमसे संधि करेगा और हमारे कहने के अनुसार कार्य करेगा ?"

"मैं इसके बारे में आपको अपनी ओर से कोई यकीन नहीं दिलासकती क्यों कि इस बीच में सुलतान ने जो कमअक्ली का सुबूत दिया है उसे देखकर यकीन नहीं होता कि मुझे अपने मक़सद में कामयाबी मिलेगी। फिर भी मैं कोशिश करने में कोई कसर नहीं रहने दूँगी। मुझे यकीन है कि सुलतान को इस हादिसे से नसीहत मिलेगी। सुलतान ने अगर मेरी सलाह

पर काम किया होता तो शायद यह बदनसीब दिन देखना न पड़ता।"

"बेग़म ! टीपू सुलतान की दिलेरी की मैं दाद देता हूँ लेकिन उसकी समझदारी के विषय में मुझे शक है। सुलतान हैदरअली की जैसी समझदारी टीपू में नहीं है। वह अंग्रेज़ों की नस-नस को समझते थे। टीपू सुलतान ने अंग्रेज़ों से संधि करके यह समझ लिया कि अंग्रेज़ उसके मित्र होगये।"

"इस बात से मैं सुलतान को आगाह करके गई थी और कृष्णराव ने हर बात उन्हें ख़ुलासा करके समझादी थी, लेकिन उनके अंग्रेज़ रेज़ीडेंट ने उनपर वह रंग चढ़ाया कि वह अपनी और अपने वालिद साहब की पुरानी सब बातों को भूल गये। उन्हें इस बात का ध्यान ही न रहा कि उनके हाथों अंग्रेज़ों को कितना नुक़सान उठाना पड़ा था। अंग्रेज़ टीपू सुलतान के नाम से भी नफ़रत करते हैं।"

नाना फड़नवीस ने पूछा, "क्या तुम अब यहाँ से श्रीरंग-पट्टन जाओगी बेग़म ?"

"जाना तो मुझे वहीं होगा नानासाहब ! नवाबसाहब वहीं हैं। सुलतान की सुलह होने के बाद हम लोग कलकत्ता चले जायेंगे।"

"क्या फिर इधर आना नहीं होगा ?"

"आप हुक्म करेंगे तो ख़ादिमा ज़रूर आयेगी।"

"बेग़म ! तुम्हारी देशभक्ति को देखकर दिल उमड़ने लगता है। काश टीपू सुलतान समझदारी से काम लेता तो हमने अब तक अंग्रेज़ों को दक्षिण-भारत से विदा कर दिया होता। विश्वास नहीं होता कि टीपू सुलतान कभी समझदारी से काम लेगा।"

नज़मा ने उसी समय पूना से प्रस्थान किया और नाना

फड़नवीस को वचन दिया कि वह श्रीरंगपट्टन से लौटते समय नवाब साहब के साथ पूना आयेगी। नाना फड़नवीस ने नज़मा को पच्चीस हज़ार रुपया भेंट स्वरूप दिया और श्रीरंगपट्टन जाने की व्यवस्था की।

नज़मा इस्माइल को अपने साथ लेगई थी। मार्ग में नज़मा बोली, "इस्माइल! देखा तुमने दक्खन का इलाक़ा? यही वह नाना साहब थे, जिनका ज़िक्र तुमने अक्सर मेरी ज़ुबान से सुना होगा।"

"इनके दूत तो नवाब साहब के पास कलकत्ते में अक्सर आया करते थे?"

"हाँ-हाँ, आते क्यों नहीं थे। नवाब साहब ने इनकी बड़ी इमदाद की है। यह उनकी बड़ी इज्ज़त करते हैं।"

"आदमी बड़ा जचीला है बेग़म!"

"एक ही आदमी है इस वक्त हिन्दुस्तान में इस्माइल! यही वह शक्स है जिसने अंग्रेज़ों को नाकों चने चबाये हैं, लेकिन इस वक्त इन्होंने जो सुलतान के खिलाफ़ अंग्रेज़ों की मदद की, इसे चाहे अपने खयाल से यह सही समझते हों, लेकिन हिन्दुस्तान की तवारीख़ इसे नानासाहब की ग़द्दारी के ही नाम से पुकारेगी। सुलतान को कमज़ोर करके इनका ताक़तवर बना रहना नामुमकिन है। टीपू सुलतान ढाल है इनकी। इन लोगों ने ख़ुद अपनी ढाल को तोड़ने की कोशिश की है। इसका ख़मियाज़ा आज नहीं तो कल, इन्हें उठाना अवश्य होगा।"

"ज़रूर उठाना होगा बेग़म! जरूर उठाना होगा। अंग्रेज़ किसी को बख़्शने वाले नहीं हैं। मौक़ा हाथ में आने पर ये कभी नहीं चूकते। मौक़ा ही क्या बेग़म! मौक़ा निकाल लेना इनके लिये कौन बड़ी बात है? झूठे-सच्चे इलज़ाम लगा

कर ये मौक़ा ढूँढ निकालते हैं। अवध की बेज़ुबान बेग़मों पर देखिये इन ज़ालिमों ने कैसा झूठा इलज़ाम लगाया था। उन बेचारियों का भला बनारस के राजा चेतसिंह से क्या वास्ता? शायद कभी उन्होंने चेतसिंह का नाम भी नहीं सुना था, साज़िश करना तो बहुत दूर की बात रही। फिर उससे साज़िश करके वे बेचारी करतीं भी क्या? कौन उन्हें सल्तनत क़ायम करनी थी जो साज़िश करतीं और वह भी चेतसिंह के साथ, जो वैसे ही मुर्दा था।"

"मैं बड़ी इज्ज़त करती थी नाना फड़नवीस की इस्माइल! और यह भी समझती थी कि इन जैसा समझदार आदमी इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है, लेकिन इनके इस काम ने मेरे दिल को ज़बरदस्त ठेस पहुँचाई। हो सकता है इनकी भी इसमें मज़बूरी रही हो, लेकिन बावजूद सब मजबूरियों के इन्हें अपनी फ़ौज सलतान के ख़िलाफ़ मैदानेज़ंग में नहीं भेजनी चाहिये थी। इन्हें किसी भी हालत में अंग्रेज़ों का साथ नहीं देना चाहिये था।"

इस्माइल बेचारा इस फ़ौज को भेजने न भेजने के महत्व को नहीं समझता था परन्तु फिर भी उसने नज़मा के भाव को समझकर कहा, "हर्गिज़ नहीं भेजनी चाहिये थी बेग़म! जब सुलतान का कोई क़ुसूर नहीं था तो उसपर हमला करना ठीक वैसी ही डकैती है जैसी हमारी बेग़मों पर अंग्रेज़ों ने डाली थी।"

"बड़ी ज़बरदस्त डकैती है इस्माइल! बँगलौर शहर को जैसी बेरहमी के साथ लूटा गया है, उसे सुनकर रौंगटे खड़े होजाते हैं। अंग्रेज़ी फ़ौज के सिपाहियों ने बेक़ुसूर शहर के बाशिन्दों को गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया, उनके घरों को लूटा और बेहयाई की इन्तहा करदी। नाना साहब को क्या मालूम

कि इनकी इस इमदाद ने हिन्दुस्तान की आज़ादी की जड़ों को हमेशा-हमेशा के लिये काट कर फेंक दिया। उफ़ ! ग़जब कर दिया नानासाहब ने। मुझे इनसे ख्वाब में भी यह उम्मीद नहीं थी।"

"फ़िर भी आपकी बात तो मान ही ली बेग़म !"

नज़मा दर्द भरे स्वर में बोली, "क्या मानली इस्माइल ! यह तो किसी का सिर फोड़कर उसपर मरहम लगाने वाली बात है। इनके इस काम से सुलतान के दिल में जो नफ़रत पैदा हो चुकी होगी, उसे मराठों की यह हमदर्दी कभी बाहर नहीं निकाल सकती। यह हिन्दुस्तान की बदक़िसमती की इबतदा है। अब लगता है जैसे बदक़िस्मतियों का एक सिलसिला बन जायेगा। वह कहाँ जाकर रुकेगा और रुकेगा भी या नहीं, इसके बारे में कुछ नही कहा जासकता।"

इतनी गम्भीर बात इस्माइल की समझ में नहीं आई। उसने कोई उत्तर न दिया।

नज़मा और इस्माइल तीव्र गति से श्रीरंगपट्टन की दिशा में बढ़रहे थे।

उधर कॉर्नवालिस की सेना श्रीरंगपट्टन के निकट आ-चुकी थी। टीपू सुलतान यह समझ चुका था कि इस सेना को परास्त करना उसकी शक्ति में नहीं था। इस लिये उसने अपने मंत्री पंडित कृष्णराव, नवाब मोहम्मदरज़ाखाँ और सय्यद ग़फ़्फ़ार की सलाह से कॉर्नवालिस के पास संधि-संदेश भेजा और कुछ ऊँटों पर लदवाकर फल भिजवाये परन्तु कॉर्नवालिस मैसूर-राज्य और टीपू सुलतान को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प कर चुका था। उसने उन फलों से लदे ऊँटों और संधि-संदेश को लेने से इंकार कर दिया।

क़ासिद लौटकर क़िले में आया और टीपू सुलतान को यह समाचार दिया तो उसने कहा, "कॉर्नवालिस को लूट के लोभ और मैसूर राज की फ़तह की इज्ज़त हासिल करने की ख्वाहिश ने अन्धा बना दिया है।

कोई बात नहीं, हम भी ज़ालिम के ज़ुल्म की इन्तहा देखना चाहते हैं।"

यह कहकर टीपू सुलतान ने सय्यद ग़फ्फार की ओर देखकर कहा, "सय्यद ! यह आख़री जंग है अपनी ज़िन्दगी का। सोमरपीठ के बुर्ज़ का मोर्चा सँभालो और जब तक एक भी सिपाही में जान बाक़ी रहे दुश्मन से जंग करते रहो। सोमरपीठ नाक है श्रीरंगपट्टन की, जिसकी हिफ़ाजत के लिये तुम्हें भेजरहा हूँ।"

"ख़ुदा हाफ़िज़ !" कहकर सय्यद गफ्फ़ार ने प्रस्थान किया और सोमरपीठ-बुर्ज़ का मोर्चा सँभाल लिया।

कॉर्नवालिस ने अपने सबसे बड़े जनरल मीडोज़ को दस हज़ार सैनिकों के साथ सोमरपीठ पर आक्रमण करने के लिये भेजा।

मीडोज़ ने सोमरपीठ के सामने जाकर अपना तोपख़ाना लगा दिया और क़िले पर बमबारी आरम्भ की। दिन भर तोपें आग उगलती रहीं। तोपों के गोले क़िले की दीवारों से जाकर टकराते रहे और भंयकर जंग होता रहा, परन्तु अंग्रेज़-फ़ौज का एक भी सिपाही क़िले की दीवार तक पहुँचने का साहस न कर सका।

रात्रि में टीपू सुलतान ने क़िले के उन सब भागों की मरम्मत करादी जो दिन में तोपों के गोलों से टूट गये थे। रात भर मरम्मत का काम चलता रहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल नवाब मोहम्मदरज़ाखाँ ने कहा,

"सुलतान ! आज आप सुलह के पैग़ाम अंग्रेज़, मराठा और निज़ाम तीनों खेमों में जुदा-जुदा भेजें।"

टीपू सुलतान ने नवाब साहब की बात पर ग़ौर किया। फिर बोले, "सलाह तो आपकी माक़ूल है।" और फ़ौरन तीन क़ासिदों को संधि-पत्र देकर तीनों खेमों में भेजा गया।

कॉर्नवालिस ने टीपू का संधि-पत्र बिला देखे ही लौटा दिया, परन्तु मराठा सरदारों ने ऐसा नहीं किया। निज़ाम ने भी संधि-पत्र लेकर रख लिया, लौटाया नहीं।

दूसरे दिन प्रातःकाल से ही मीडोज़ ने मोर्चे पर गर्मी दिखानी आरम्भ की परन्तु उस रोज़ सय्यद गफ्फार ने मीडोज़ पर करारी चोट की। मीडोज़ ने रात्रि में अपनी सेना को ठीक क़िले की दीवारों के पास तक धकेल दिया था। उसका ख़याल था कि वह रात में अपने कुछ सैनिकों को क़िले पर चढ़ाने में सफल हो जायेगा, परन्तु ऐसा हो न सका, क्यों कि सय्यद इस दिशा में काफ़ी सतर्क था। उसने क़िले की दीवारों पर खौलते हुए तेल के ड्रम रखवा दिये थे और जैसे ही अंग्रेज़-सैनिक दीवार के निकट आये वैसे ही खौलते हुए तेल की धार उनके ऊपर पड़ने लगी।

इसी आगे बढ़ने और पीछे हटने में सवेरा होगया। दूसरे दिन अंग्रेज़ी तोपख़ाने ने फिर आग उगलनी आरम्भ की और संध्या तक उसी तरह गोलाबारी करता रहा, परन्तु क़िले की दीवारें टस-से-मस न हुईं।

दूसरे दिन रात्रि में सय्यद गफ्फ़ार ने पीछे के द्वार से दो हज़ार सैनिकों को निकालकर उन्हें अंग्रेज़ी सेना के पीछे पहुँचने का आदेश देकर उनके सरदार से कहा, "तुम्हें हमला ठीक पेली के फटाव पर करना है।"

तीसरे दिन प्रातःकाल से ही भयंकर युद्ध आरम्भ होगया। अंग्रेज़-फ़ौज दोनों ओर से घिर गई। सय्यद की सेना ने अंग्रेज़ों की तबाही बोलदी। लाशों पर लाशें पट गईं। मीडोज़ के पैर उखड़ गये और मैदान छोड़कर भागने के अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई चारा न रहा।

मीडोज़ लौटकर अपने ख़ेमे में पहुँचा तो वह लज्जा से गड़ा जारहा था। उसने अपना रिवालवर निकालकर अपने आप को समाप्त करने का प्रयास किया परन्तु उनके निकट खड़े एक सैनिक ने उनका हाथ पकड़ लिया।

मीडोज़ जब सोमरपीठ को न लेसका तो कॉर्नवालिस ने लालबाग़ पर हमला बोल दिया। लालबाग़ कोई सैनिक दुर्ग नहीं था और न ही वहाँ कॉर्नवालिस का मुक़ाबिला करने वाली कोई सेना थी। वह तो एक बाग़ था, जिसमें हैदरअली की क़ब्र बनी हुई थी। कॉर्नवालिस ने इस बाग़ पर कब्ज़ा करके उसके वृक्षों और पौदों को उजाड़ दिया तथा हैदरअली की क़ब्र पर जूते लेकर चढ़ गया।

इस समाचार को प्राप्त कर टीपू आग होउठा। उसने चाहा कि वह दुर्ग का द्वार खोलकर कॉर्नवालिस पर टूट पड़े और उसके टुकड़े-टुकड़े करदे परन्तु नवाब साहब ने उसे शान्त रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा, "सुलतान! यह वक्त किसी भी तरह निकालदेने का है और बेइज्ज़ती के कड़ुवे घूँट को शहद मानकर पीजाने का है। अगर बेग़म को कामयाबी मिल गई और यह सुलह होगई तो फिर आपको एक दिन जंग में अपना जौहर दिखाने का मौक़ा ज़रूर मिलेगा। यह वक्त गर्मी खाने का नहीं है।"

नवाब मोहम्मदरज़ाखाँ टीपू सुलतान को उसके ख़ेमे में ले-

गये । वहाँ जाकर ये लोग बैठे ही थे कि तभी इस्माइल ने नवाब साहब को नज़मा के लौटने की सूचना दी ।

"क्या चचीजान लौट आईं ?"

"जी लौट आईं लेकिन रास्ते की थकान की वजह से उनकी तबीयत कुछ नासाज़ होगई, कुछ बुख़ार और सिर में दर्द है । इसी लिये सीधी यहाँ तशरीफ़ न लासकीं । आप को याद फ़रमाया है बेग़म साहिबा ने ।"

"चलिये हम भी चलते हैं नवाब साहब ! चचीजान का कर्ज़ हम इस ज़िन्दगी में नहीं उतार सकेंगे ।"

"आप यह क्या बात कहने लगे सुलतान ? हम लोगों का और कर्ज़ ! हमारा तो फ़र्ज़ है तुम्हारे काम आना । बेग़म आपको कितना प्यार करती हैं इसका अन्दाज़ आप नहीं लगा सकते । दिल्ली से मुझे यहाँ भेजकर वह अकेली कलकत्ता गईं और दो साल तक वहाँ अकेली ही रहती रहीं । फिर जब उन्हें पता चला कि उनका सुलतान मुसीबत में मुबतला है तो फ़ौरन यहाँ आईं और आपको हर बात की सही-सही इत्तला दी । मुझे यकीन है कि बेग़म को इस काम में भी कामयाबी मिली होगी ।" यह कहकर उन्होंने इस्माइल की ओर देखकर पूछा, "इस्माइल ! क्या कुछ हुआ ?"

"वाक़यात तो वही बतलायेंगी नवाब साहब ! लेकिन उनकी गुफ़्तगू से तो यही ज़ाहिर होता था कि उन्हें अपने मक़सद में कामयाबी मिली है ।"

इस्माइल के ये शब्द सुनकर टीपू सुलतान और नवाब साहब के उद्विग्न मन को थोड़ी शान्ति मिली । डूबतों को तिनके का सहारा मिल गया । वे दोनों तुरन्त नवाब साहब के महल पर पहुँचे ।

नज़मा को तीव्र ज्वर था। उसका बदन अंगार के मानिन्द जल रहा था। फिर भी उसने कहा, "कोई फ़िक्र की बात नहीं है, थकान से बदन टूट गया है। आप फ़ौरन अपना सफ़ीर मराठा-कैम्प में भेजदें। नाना साहब ने हरिपन्तफड़के को रवाना कर दिया है। मुझे यकीन है कि वह आपहुँचे होंगे। इस काम में एक लहमे की भी देर न करें।"

"आप यहीं ठहरें नवाब साहब! मैं अभी इसका इन्तज़ाम करता हूँ।" इस्माइल को टीपू सुलतान अपने साथ लेगये।

सुलतान ने पहिले इस्माइल के साथ हकीम को नवाब साहब के महल पर भेजने का प्रबन्ध कराया और फिर अपने सफ़ीर को संधि-पत्र देकर मराठा-कैम्प में भेजा।

कॉर्नवालिस के पास मद्रास से गोरा फ़ौज की नई कुमुक आ-गई थी। वह श्रीरंगपट्टन पर उस दिन भंयकर आक्रमण करने का विचार कर रहा था। उसने सोमरपीठ के सामने अपना तोप-ख़ाना लगाकर निज़ाम और मराठा-कैम्पों में उत्तर और दक्षिण-दिशा से क़िले को घेरने का सन्देश भेज दिया था।

हरिपन्तफड़के ने कार्नवालिस के दूत को सूचना दी, "सुल-तान का दूत सुलह के लिये हमारे पास आया हुआ है। अब और रक्तपात करने की आश्यकता नहीं है। नानासाहब का आदेश मिला है कि अगर सुलतान संधि करने को उद्यत हो, तो संधि करली जाये।"

कॉर्नवाबिस के दूत की दृष्टि मराठों की नई-सेना की ओर गई तो उसने स्थिति की गम्भीरता को समझा और कॉर्नवा-लिस को जाकर सूचना दी, "नानासाहब ने हरिपन्तफड़के को बहुत बड़ी सेना लेकर भेजा है। वह अब युद्ध को बढ़ाने के हक़ में नही हैं।"

"ह्वाट ! हम टीपू को ज़िन्दा नहीं देखना चाहते। हमें श्री-रंगपट्टन की दौलत हासिल करनी है।"

"सर ! श्रीरंगपट्टन को फ़तह करना आपके और निज़ाम की फ़ौज के बूते की बात नहीं है। दूसरी बात यह है कि अगर आपने नानासाहब की बात पर ग़ौर न किया तो यह भी मुमकिन है कि मराठा फ़ौज आपका साथ न देकर सुलतान की मदद में हथियार उठाले। तब और भी मुश्किल होगी।"

"ऐसा होसकता है ?"

"हो क्यों नहीं सकता सर ! अगर न होसकता तो नाना-साहब को इतनी बड़ी फ़ौज भेजने की क्या ज़रूरत थी ?"

"इसका मतलब है मराठों ने हमारे साथ ग़द्दारी की। इसका नतीजा मराठों को भुगतना होगा। ख़ैर ! इस वक्त हम मराठों को अपना दुश्मन नहीं बना सकते। पहिले टीपू को खत्म करना होगा। उसके बाद मराठों को ठीक करेगा।"

कॉर्नवालिस ने अपने तोपख़ाने को सोमरपीठ के सामने से पीछे लौटाने की आज्ञा दी और अपने दूत को फिर मराठा-कैम्प में भेजकर कहलवाया कि संधि की शर्तों पर ग़ौर कर लिया जाये।

निज़ाम के सेनापति, हरिपन्तफड़के और कॉर्नवालिस ने संधि की शर्तों पर विचार-विमर्श किया। युद्ध के हरजाने के बतौर टीपू सुलतान पर तीन करोड़ तीस लाख रुपये का तावान डाला गया। इसके अलावा उसका लगभग आधा राज उससे लेकर मराठा, निज़ाम और अंग्रेज़ी राज में मिलाने का प्रस्ताव रखा गया।

ये संधि की शर्तें लिखकर टीपू सुलतान के पास भेजदीगई। टीपू सुलतान ने शर्तों को पढ़ा तो वह क्रोध से आग होउठा

इन शर्तों पर विचार करने के लिये टीपू सुलतान को एक दिन का समय दिया गया था। पंडित कृष्णराव, सय्यद गफ्फ़ार और टीपू सुलतान ने परस्पर विचार-बिमर्श किया। सय्यद गफ्फ़ार बोला, "शर्तें निहायत ज़लालत की हैं, लेकिन अगर इस वक्त इन्हें न माना गया तो मैसूर राज का अभी ख़ात्मा समझना चाहिये। इस लिये मेरा ख़याल है कि इस वक्त दबकर काम निकालना चाहिये और अपनी ताक़त को मज़बूत करके फिर इसका बदला लेना चाहिये।"

"इसमें कोई सन्देह नहीं है सुलतान! यह समय निकालने की बात है। इस वक्त यदि किसी प्रकार यह युद्ध टल जाये तो हमें साँस लेने का अवसर मिलेगा। हम दुबारा अपनी शक्ति को संगठित कर सकेंगे। राजनिति है यह तो। हम अपना खोया हुआ इलाक़ा फिर वापस लेसकते हैं और तीन करोड़ की जगह छः करोड़ वसूल करसकते हैं। वर्तमान स्थिति में युद्ध को बढ़ाना आत्महत्या के समान होगा।"

"यह बात आपकी ठीक है पंडित कृष्णराव! लेकिन ख़ज़ाने में तीन करोड़ रुपया है कहाँ इन्हें देने के लिये?" टीपू सुलतान बोला।

"इसका इन्तज़ाम बाद में भी होसकता है।"

"तब बात चलाइये। इस वक्त और कोई बात सोची भी नहीं जासकती। किसी तरह इस जंग को टालना चाहिये, यह बात आपकी ठीक है और इसके बारे में मैं चचीजान से भी मशवरा करके देख लेता हूँ। अब कैसी तबियत है उनकी?"

"इस समय तो ठीक हैं। अभी-अभी मैं उनके पास से ही आ-रहा हूँ।"

"उनसे मशवरा करना ठीक होगा। इस वक्त उन्होंने ही

हमें इस मुसीबत से निजात दिलाई है। अगर हमने उनका कहा पहिले ही मान लिया होता तो शायद यह आफ़त हमारे सिर पर न आती।"

"हम लोगों ने उनकी सलाह न मानकर ही इस आपत्ति को मोल लिया है सुलतान ! अगर आप उसी समय पूना जाकर नानासाहब से भेंट कर लेते तो यह भी मुमकिन था कि अंग्रेज इधर क़दम बढ़ाने की ज़ुरत ही न करते। हम लोगों ने अंग्रेज़ों का यक़ीन करके सबसे बड़ी भूल की। बेग़म ने हमें बार-बार इस ख़तरे से आगाह किया था।"

टीपू सुलतान स्वयँ नज़मा के पास गये। वह उनकी प्रतीक्षा में थी।

"सुलह की शर्तें आईं ?" नज़मा ने पूछा।

"आईं बेग़म !" टीपू ने कहा।

"क्या शर्तें हैं ?"

"तीन करोड़ तीस लाख रुपया और आधा राज माँगा है।"

यह सुनकर नज़मा सन्न सी रहगई। उसकी ज़ुबान से निकला, "तीन करोड़ तीस लाख और आधा राज !' नज़मा के नेत्र डब-डबा आये। फिर कुछ सँभल कर बोली, "क्या सोचा आपने ?"

"सोचने की इस वक्त गुन्जाइश कहाँ है बेग़म ? दूसरा कोई चारा भी तो नहीं है। मैं जानता हूँ कि इससे जियादा शर्मनाक सुलह की शर्तें और हो नहीं सकतीं, लेकिन मौजूदा हालात में मुझे ये शर्तें मंज़ूर करनी होंगी। मंज़ूर न करने का मतलब होगा मैसूर राज का ख़ात्मा।"

"ठीक है, तो सफ़ीर भेज दीजिये हरिपन्तफड़के के पास। कॉर्नवालिस और निज़ाम के पास सफ़ीर भेजने की ज़ुरुरत नहीं है।"

"मैं अभी इन्तज़ाम करता हूँ।"

सफ़ीर भेज दिया गया और सुलहनामा लिखा गया।

टीपू सुलतान का आधा राज अंग्रेज़ों, निज़ाम और मराठों ने अपने अधिकार में लेलिया।

कॉर्नवालिस ने पूछा, "रुपये की अदायगी किस तरह होगी ?"

"तीन किश्तों में रुपया बेबाक़ कर दिया जायेगा।" टीपु सुलतान ने कहा।

"उसकी ज़मानत !" निज़ाम का सेनापति बोला।

टीपू सुलतान चुप रहा।

कॉर्नवालिस बोला, " कोई बात नहीं। जब तक रुपया अदा नहीं होजाता है तब तक शहज़ादे अब्दुल ख़ालिक और मुईज़ुद्दीन हमारी हिफ़ाजत में रहेंगे। रुपया अदा होने पर उन्हें श्रीरंग-पट्टन भेज दिया जायेगा।"

टीपू सुलतान के कलेजे पर भीषण आघात हुआ परन्तु उसने एक क्षण की भी देर न करके अपने दोनों पुत्रों को कॉर्नवालिस के हवाले कर दिया।

नज़मा को जिस समय वह समचार मिला तो वह अचेत हो गई। टीपू सुलतान यह समाचार पाते ही तुरन्त नज़मा बेग़म के महल में पहुँचे। उस समय तक उसे चेतना नहीं लौटी थी। कुछ देर पश्चात् उसे कुछ होश आया तो उसकी ज़ुबान से निकला, 'या ख़ुदा ! तूने यह क्या किया ?'

"फ़िक्र की कोई बात नहीं है चचीजान ! मैं यही समझूँगा कि शहज़ादे अब्दुलख़ालिक और मुईज़ुद्दीन जंग के मैदान में काम आगये। मेरी बाज़ुओं में दम होगा तो मैं बहुत जल्द अपना खोया हुआ राज, दौलत और शहज़ादों को वापस लौटा लूँगा।

आपने हम लोगों की इस वक्त जो इमदाद की है उसके लिये हम आपके हमेशा अहसानमंद रहेंगे। अगर आप न आतीं तो श्रीरंगपट्टन की भी वही हालत होती जो बंगलौर की हुई।"

नज़मा की आँखों से आँसू बह रहे थे। उसने टीपू सुलतान की ओर देखकर कहा, "सुलतान! शरमिन्दा न करो। जब मैं शहज़ादों की भी हिफ़ाज़त न कर सकी तो मैंने क्या किया? आप हरिपन्तफड़के के पास इत्तला करें कि उन्हें मैंने याद किया है। उन्हें लिखना कि मैं खुद उनके ख़ेमे में हाज़िर होती, मगर तबीयत ख़राब होने की वज़ह से मजबूर हूँ।"

हरिपन्तफड़के यह सूचना मिलते ही नज़मा से मिलने के लिये आये। नज़मा ने कहा, "मराठा सरदार! हम लोग आपके एहसानमन्द हैं कि आपने इस ख़तरे के वक्त हमारी इमदाद की, लेकिन कॉर्नवालिस ने जो शहज़ादों की बन्धक के बतौर माँग की है यह निहायत ग़लत है। रुपये की अदायगी रुपये से होगी, शहज़ादों से नहीं।"

"बेग़म! इस समय संधि को सम्पन्न होने दीजिये। मैं नहीं चाहता कि कॉर्नवालिस के मस्तिष्क में इस समय कोई संदेह पैदा हो। मैं इस संधि की अन्य शर्तों से भी सहमत न था परन्तु इस समय विरोध करना भी मेरे लिये सम्भव नहीं था। हमारी सेना में सिंधिया और भोंसले के भी सेनापति मौजूद हैं। अगर वे हमसे अलग होकर कॉर्नवालिस से जामिले तो यह संधि समाप्त होजायेगी और भयंकर स्थिति पैदा होने की सम्भावना है। इस समय सुलतान को अपना दबा हुआ हाथ निकालने का प्रयत्न करना चाहिये। ये लोग पेशवा-राज्य के विरुद्ध भयंकर षडयंत्र रच रहे हैं।"

नज़मा ने स्थिति की गम्भीरता को समझकर आँखें बन्द

कर लीं। टीपू सूलतान चुप खड़ा रहा। पंडित कृष्णराव, सय्यद ग़फ्फार और नवाब साहब भी मौन रहे।

नज़मा बोली, "नानासाहब को मेरा आदाब कहकर शुक्रिया अदा कीजिये और कहिये कि ख़ादिमा यहाँ से लौटते वक्त उनसे मुलाक़ात करने का नियाज़ हासिल करेगी।"

संधि सम्पन्न होगई। अंग्रेज, निज़ाम और मराठों की सेनायें श्रीरंगपट्टन से वापस लौटगईं।

